पवित्रता, ब्रह्मचर्य और श्रीमत

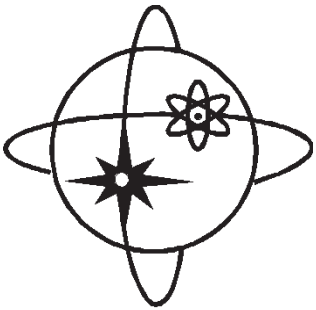

कृति

(संकलन)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC)

स्पार्क (SpARC) एक अनुसन्धान प्रभाग (Research Wing) है जो कि देश तथा विदेश के अनेक स्थानों पर कार्य कर रहा है। स्पार्क (SpARC) शब्द का विस्तार (Fullform) Spiritual Applications Research Centre है और इसका लक्ष्य है विश्व नव-निर्माण के कार्य में अध्यात्म एवं विज्ञान को एक-दूसरे का सहयोगी बनाना। इसी लक्ष्य-पूर्ति के लिये स्पार्क मनन-चिंतन और विचार सागर मंथन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान को वैज्ञानिक पृष्ठभूमि और विज्ञान के विरोधोक्ति युक्त शाखाओं को आध्यात्मिक पृष्ठभूमि प्रदान करते हुए दोनों को एक-दूसरे के समीप लाकर आपस में मिलकर कार्य करने के लिए तैयार कर रहा है।

इस कार्य में तीव्र गति से अग्रसर होने के लिए तथा जीवन के समस्त पहलुओं में आध्यात्मिकता का प्रयोग और उपयोग से प्राप्त परिणामों को सर्वमान्य बनाने के लिए प्रभावशाली विधि, साधन और तकनीक का विकास करने आदि कार्य में **स्पार्क सर्व प्रकार के अनुसन्धानों को प्रोत्साहित करता है।**

लोकल चैप्टर:

स्पार्क की गतिविधियों को और अधिक गतिशील बनाने के लिए देश-विदेश में स्पार्क के लोकल चैप्टर्स चल रहे हैं। एक अथवा एक से अधिक सेवाकेन्द्र, शहर, राज्य अथवा देश के 5 से अधिक बी.के. भाई-बहनों के समूह जब मिलकर स्पार्क के गतिविधि को कार्यान्वित करते हैं उसे स्पार्क लोकल चैप्टर (Local Chapter) कहा जाता है। किसी भी स्थान पर लोकल चैप्टर शुरू करने के लिए यह आवश्यक है कि उस स्थान के सेवाकेन्द्र की प्रभारी बहन की स्वीकृति से सेवाकन्द्र पर 5 से अधिक दैवी भाई-बहनों का एक ग्रुप तैयार किया जाए। सभी भाई-बहनें सप्ताह में, 15 दिन में या मास में कम से कम एक बार आपस में मिलकर ईश्वरीय ज्ञान बिन्दु पर रूह-रिहान, विचार-सागर मंथन करें तथा कार्यशाला और परिचर्चा आदि कार्यक्रम का आयोजन करें। ब्र.कु. भाई-बहनों के आध्यात्मिक उन्नत्ति के साथ-साथ अन्य आत्माओं की सेवा करने के लिए नवीन विधियों का निर्माण कर सकें।

इसके तहत कई वर्षों से गांधीनगर, गुजरात मुख्य सेवाकेन्द्र के भाई-बहनों का एक ग्रुप एवं बी.के महेश भाई, अकाउण्टस् आफिस, पाण्डव भवन, साकार एवं अव्यक्त मुरलियों का गहन अध्ययन कर उस पर अभ्यास कर रहे है। इस पुण्य पुरुषार्थ के फल स्वरूप इस ग्रुप ने 85 से अधिक विषयों पर साकार एवं अव्यक्त बापदादा के महावाक्यों को सुनियोजित तरीके से संकलन किया है। उनमें से **'पवित्रता, ब्रह्मचर्य और श्रीमत'** एक है।

प्रस्तावना

पवित्रता ही जीवन है। गायन है देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल पर मृत्यु को जीता है। परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है। पतित से पावन कैसे बनते हैं, वह रास्ता बाप ही आकर बताते हैं। बाप आकर सब बातें अच्छी रीति समझाते हैं, तो हमको भी उन पर विचार करना चाहिए। विचारणीय है कि पवित्रता और ब्रह्मचर्य एक ही बात है या दोनों में कोई मूलभूत अन्तर है।

वास्तविकता पर विचार करेंगे तो समझ में आयेगा कि पवित्रता बहुत विशाल है, ब्रह्मचर्य उसका एक अंशमात्र है, उसकी सहयोगी है अथवा कहें कि पवित्रता एक भवन है, जिसका फाउण्डेशन ब्रह्मचर्य है। भले भवन के निर्माण में फाउण्डेशन का महत्वपूर्ण स्थान है, परन्तु फाउण्डेशन को ही भवन मान लेना भूल है। इस उद्देश्य से ही यहाँ दोनों बातों पर विस्तार से विचार किया गया है और पढ़ने वालों को भी विचार करने के लिए दे रहे हैं और आशा करते हैं कि वे अवश्य ही इस पर विचार करके अपने विचारों से हमको भी अवगत करायेंगे।

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और परमात्मा

विषय सूची

विषय

पेज नं.

पवित्रता और ब्रह्मचर्य ... .

पवित्रता और ब्रह्मचर्य परिभाषा एवं स्पष्टीकरण

पवित्रता और ब्रह्मचर्य एवं दोनों में अन्तर

Q. पवित्रता और ब्रह्मचर्य में क्या अन्तर है?

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और परमात्मा ... .

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और प्रजापिता ब्रह्मा

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और आध्यात्मिक ज्ञान

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और मुरली

पवित्रता और ब्रह्मचर्य का महत्व ... .

सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता

सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता

Q. सम्पन्न पवित्रता से बाबा का भाव-अर्थ क्या है? सम्पन्न पवित्रता की स्थिति क्या है, उसकी अनुभूति क्या है?

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सारे कल्प की गौरवमय स्थितियाँ ... .

Q. बाबा ने हमको सारे कल्प की हमारी गौरवमय (Graceful) स्थितियों की स्मृति दिलाई है, उन सब स्थितियों का आधार क्या है?

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और चढ़ती कला और उतरती कला का राज़

ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और निश्चय ... .

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वर्ग-नर्क

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और विश्व-नाटक

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सतयुग-त्रेता

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वर्ग की स्थापना अर्थात् स्वर्ग की राजधानी की स्थापना ....

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और द्वापर-कलियुग

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पुरुषोत्तम संगमयुग ... .

संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सन्यासी

II

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और धर्म-पितायें ... .
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सन्यास धर्म एवं विभिन्न धर्म
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और बालक
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और कुमार-कुमारी जीवन
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और संगमयुगी ब्राह्मण
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और फरिश्ता स्वरूप
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और योग एवं योगबल ... .
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और योगबल-भोगबल
योगबल - भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति
योगबल से देह-धारण करने और देह-त्याग
योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसके विश्व पर प्रभाव ....
श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पाप-पुण्य
Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है? आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?
Q. हमारा पाप का खाता खत्म हो गया है या हो रहा है और पुण्य का खाता जमा हो रहा है, उसकी निशानी क्या है?
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सम्पूर्णता ... .
सम्पूर्णता और समर्पणता का सम्बन्ध
सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनका सम्बन्ध
सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान स्थिति
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और श्रीमत ... .
श्रीमत और विकार
काम विकार
क्रोध
लोभ
मोह एवं लगाव-झुकाव
अहंकार
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और दृष्टि-वृत्ति ... .

III

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और वातावरण ... .
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और भारत
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और गीता
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वप्न ... .
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और त्रिलोक
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और डबल सिरताज एवं सिंगल ताज राजायें
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और अन्न एवं संग
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पुरुषार्थ ... .
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सुख-दुख
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और विश्व-कल्याण
विविध प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर ... .
Q. माया से हारने और माया से युद्ध करने में क्या अन्तर है?
Q. नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कौन करता है, शिवबाबा और ब्रह्माबाबा के पार्ट में क्या अन्तर है या दोनों का पार्ट एक ही है?
Q. पवित्रता की कसौटी क्या है? ... .
Q. क्या सभी देवताओं को पवित्र कहेंगे? यदि कहेंगे तो कैसे और नहीं कहेंगे तो क्यों?
Q. सन्यासियों को पवित्र कहेंगे? यदि कहेंगे तो कब और कैसे और यदि नहीं कहेंगे तो क्यों?
Q. क्या कलियुग में पवित्र आत्मायें हो सकती हैं? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों और कैसे?
Q. क्या सभी बालकों को पवित्र कहा जायेगा? यदि कहा जायेगा तो क्यों और नहीं तो कैसे?
Q. योग साधना के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक क्यों? ... .
Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है? क्या ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले को पवित्र कहेंगे? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों? क्या देवताओं को सम्पूर्ण पावन कहेंगे? यदि देवतायें सम्पूर्ण पावन हैं तो कब तक और कहाँ तक? क्या सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण पवित्र में कोई अन्तर है? सतयुग में जो आत्मा दूसरा जन्म लेती है, उसको सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे? निर्विकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी में कोई अन्तर है?
Q. पवित्रता में ब्रह्मचर्य समाया है या ब्रह्मचर्य में पवित्रता समाई है? ....
Q. पवित्रता की यथार्थ अनुभूति देवता स्वरूप में होगी या फरिश्ता स्वरूप में होगी या अभी ब्राह्मण स्वरूप में होगी?
विविध ईश्वरीय महावाक्य ... .

8

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और परमात्मा

पवित्रता और ब्रह्मचर्य /पवित्रता और ब्रह्मचर्य परिभाषा एवं स्पष्टीकरण

सम्पूर्णता से सम्पन्नता, सम्पन्नता से सन्तुष्टता और सन्तुष्टता से प्रसन्नता की अनुभूति होती है। सम्पूर्णता ही पवित्रता की सम्पूर्ण स्थिति है, केवल ब्रह्मचर्य की धारणा पवित्रता नहीं है। ब्रह्मचर्य तो पवित्रता का फाउण्डेशन है, पवित्रता आत्मा की सम्पूर्णता है। ब्रह्मचर्य तो पवित्रता का एक अंश मात्र है। पवित्रता अर्थात् देहभान और देहाभिमान सहित 5 विकारों से मुक्त स्थिति, जो आत्मा की परमधाम में ही होती है अथवा जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो पहले-पहले होती है। इसलिए बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है - सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, श्री नारायण को भी नहीं क्योंकि 25-30 साल में पवित्रता की कुछ डिग्री कम हो जाती है। दुनिया में अनेक मनुष्य ब्रह्मचर्य में रहते हैं परन्तु उनको पवित्र नहीं कहा जा सकता है क्योंकि पवित्रता तो आत्मा का मूल स्वरूप है। आत्मा जब परमधाम से आती है तो पूर्ण पवित्र होती है, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते पतित बनती है। पहले जन्म से ही आत्मा की देहभान के कारण पवित्रता की कलायें गिरती जाती है और फिर देहाभिमान के कारण विकारों की जंक चढ़ती जाती है अर्थात् आत्मा पतित बनती जाती है। एक आत्मा अनेक पुनर्जन्म लेते पतित बनती है। आत्मा जब एक शरीर छोड़कर बच्चा बनती है तो जब तक वह बच्चा शादी न करे तो उस बच्चे को ब्रह्मचारी कहा जा सकता है परन्तु पवित्र नहीं कह सकते हैं क्योंकि पुनर्जन्म लेते-लेते कलायें कम हो गई हैं।

''यह भी समझाना है कि सतयुग में डबल सिरताज देवी-देवतायें थे। इस समय पवित्रता का ताज तो कोई को है नहीं। हम अपने को भी लाइट का ताज नहीं दे सकते हैं। अभी हम लाइट के ताज के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। ... ज्ञानी तो बने हो परन्तु कम्पलीट पवित्र बनें तो लाइट का ताज दे सकते हैं। अन्त में जब कर्मातीत अवस्था होगी, तब लाइट हो सकती है। परन्तु तुम सम्पूर्ण बनते ही चले जायेंगे सूक्ष्मवतन में।'' सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

बाबा ने अनेक स्थानों पर पवित्रता शब्द का प्रयोग ब्रह्मचर्य की धारणा के लिए भी किया है और कहीं-कही पर सम्पूर्ण सतोप्रधान अवस्था के लिए भी किया है। जैसे बाबा ने कहा है लक्ष्मी-नारायण को भी सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे, सम्पूर्ण पवित्र तो श्रीकृष्ण को ही कहेंगे। लक्ष्मी-नारायण ने तो शादी की और 25-30 वर्ष के बाद गद्दी पर बैठते हैं तो विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार सेकण्ड-बाई-सेकण्ड कलाओं में तो कमी आ ही जाती है, जिस कमी के

कारण त्रेता के अन्त में द्वापर की आदि में आत्मायें अपनी दैवी शक्ति को खो देते हैं, भले वे त्रेता के अन्त तक विकार में नहीं जाते हैं। सतयुग से त्रेता के अन्त तक पहुँची हुई आत्माओं को काम-विकार में न जाने के कारण ब्रह्मचारी ही कहा जायेगा, पवित्र नहीं क्योंकि पवित्र तो आत्मा जब परमधाम से आती है, तब ही कही जा सकती है। आज भी कोई बच्चा, जिसने शादी नहीं की, काम-विकार में नहीं गया तो उसको ब्रह्मचारी तो कहा जायेगा परन्तु पवित्र या सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् सतोप्रधान नहीं कह सकते।

पवित्र आत्मा को ब्रह्मचर्य की धारणा सहज ही होती है क्योंकि उसको देहाभिमान न होने के कारण विकारों की कोई आकर्षण नहीं होती है। बाबा ने कहा है - आत्मा तो बिन्दु है, उसमें इन्द्रियाँ ही नहीं तो विकार की आकर्षण क्यों होगी। आत्मिक स्थिति होने के कारण विकार का आकर्षण न होने के कारण उसकी ग्रन्थियों से कोई विकारी द्रव्य का स्राव नहीं होता है, इसलिए ब्रह्मचर्य की धारणा सहज होती है।

पवित्रता अर्थात् जो चीज जैसी है, उसको उस रूप में जानना और उस स्थिति में रहना, उस अनुरूप व्यवहार करना। आत्मा की पवित्रता अर्थात् आत्मा का अपने मूल स्वरूप में स्थित रहना। हर आत्मा जब अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो परमानन्द का अनुभव करती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्दमय है। जो आत्मा अपने मूल स्वरूप में स्थित होगी, वह कहाँ भी रहते, परमानन्द का अनुभव अवश्य करेगी। अपनी मूल स्थिति में स्थित होकर परमानन्द का अनुभव करना ही मूल पुरुषार्थ है। अभी ज्ञान-सागर, पतित-पावन परमात्मा ने यथार्थ ज्ञान दिया है, इसलिए हम अभी भी अपने स्वरूप में स्थित होंगे तो परमानन्द का अनुभव अवश्य करेंगे। जो अभी परमानन्द का अनुभव नहीं कर सकता, वह भविष्य में कैसे करेगा - यह एक विचारणीय प्रश्न है। भले आत्मा परमधाम में सम्पूर्ण पवित्र, सर्वशक्तियों से सम्पन्न होती है, परन्तु आत्मा को वहाँ कोई अनुभूति नहीं होती है। अनुभूति अभी जब परमात्मा सत्य ज्ञान देते हैं तो आत्मा देह में रहते देह से न्यारे अपने मूल स्वरूप में स्थित होती है तो आत्मा को परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति होती है।

''भारत पहले सबसे पवित्र था फिर जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो फिर अर्थक्वेक आदि में सब स्वर्ग की सामग्री, सोने के महल आदि खलास हो जाते हैं।... जब रामराज्य खत्म होता है और रावण राज्य शुरू होता है, तब भी सृष्टि पर उपद्रव होते हैं। (परन्तु विचारणीय यह है कि उस धरती पर उथल-पाथल होती है परन्तु जन-हानि नहीं होती है क्योंकि उस समय तक आत्माओं ने कोई विकर्म नहीं किया, इसलिए दुख नहीं हो सकता है)''

सा.बाबा 10.2.05 रिवा.

''दुनिया में पवित्र (ब्रह्मचारी) तो बहुत रहते हैं। सन्यासी भी पवित्र (ब्रह्मचारी) रहते हैं। ... ऐसे बहुत हैं जो इस जन्म में बाल ब्रह्मचारी रहते हैं परन्तु वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।''

सा.बाबा 24.09.09 रिवा.

''ये शास्त्र आदि सब भक्ति की सामग्री है, जिससे तुम नीचे ही गिरते आये हो। 84 जन्म लेंगे तो जरूर नीचे उतरेंगे ना। ... बाप ने समझाया है - तुम पुनर्जन्म लेते-लेते देवता से बदल हिन्दू बन गये हो। पतित बन गये ना।... अपवित्र बन गये तो देवी-देवता कहला न सकें। इसलिए नाम पड़ गया है हिन्दू।''

सा.बाबा 25.09.09 रिवा.

''सम्पूर्ण तो अभी कोई को कह नहीं सकते। सोलह कला सम्पूर्ण बनने के लिए बहुत मेहनत चाहिए। अभी तो कोई सम्पूर्ण बन न सके।... बाप जानते हैं कि सब किस-किस प्रकार का पुरुषार्थ कर रहे हैं।''

सा.बाबा 25.09.09 रिवा.

इस समय ब्राह्मण आत्मायें जो बाबा की बनी हैं और पवित्रता के लिए पुरुषार्थ तो करते हैं, ब्रह्मचारी भी रहते हैं परन्तु सम्पूर्ण पवित्र अन्त में ही बनेंगे।

''पवित्र आत्मायें ही वापस परमधाम जा सकती हैं। स्वर्ग में अपवित्र आत्मा तो जा न सके। कायदा नहीं है। ... याद से पवित्र नहीं बनेंगे तो धर्मराज द्वारा मोचरे खाने पड़ेंगे, फिर थोड़ी मानी मिलेगी। मोचरा नहीं खायेंगे तो पद भी अच्छा मिलेगा। यह समझ की बात है।''

सा.बाबा 28.09.09 रिवा.

''आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी तो ये 5 तत्व भी सतोप्रधान नये हो जायेंगे, उनसे शरीर नये सतोप्रधान मिलेंगे। तत्व भी सारे उथल-पाथल हो नये बन जायेंगे। सतयुग में आत्मा बिगर कोई तकलीफ गर्भ महल में जाकर बैठती है, फिर जब समय होता है तो बाहर आ जाती है। यह सब ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 28.09.09 रिवा.

''देवताओं को मनुष्य पूजते हैं क्योंकि वे पवित्र थे। सारा मदार है पवित्रता पर। विघ्न भी इसमें ही पड़ते हैं। ... देवतायें पवित्र हैं, तब तो अपवित्र मनुष्य उनके आगे माथा टेकते हैं। पुकारते हैं - हे पतित-पावन आकर हमको ऐसा पावन बनाओ। बाबा कहते हैं - काम महाशत्रु है, तुम इस पर योगबल से जीत पहनो।''

सा.बाबा 10.10.09 रिवा.

''यह लक्ष्मी-नारायण कितने पवित्र हैं। वास्तव में अपवित्र को उन्होंको हाथ लगाने का भी हुक्म नहीं है। मन्दिरों में पतित जाकर इतने ऊंच पवित्र देवताओं को हाथ लगा न सकें। ... शिव को तो हाथ लगा ही नहीं सकते क्योंकि वह है ही निराकार, उनको हाथ लग ही नहीं सकता। वह तो मोस्ट पवित्र है।''

सा.बाबा 23.10.09 रिवा.

''बापदादा का सभी बच्चों से प्यार है, उसकी निशानी है कि बापदादा चाहते हैं कि सभी बच्चे सहज सिद्धि स्वरूप बन जायें। ... आप चेतन्य में सिद्धि स्वरूप बने हो तब तो आपके जड़ चित्रों द्वारा भी और आत्मायें सिद्धि प्राप्त करती रहती हैं।''

अ.बापदादा 01.02.94

''गृहस्थ व्यवहार में रहते ये अविनाशी कमाई करते रहना है। इसमें मुख्य है पवित्रता की बात। ... कम्पलीट प्योर बन गये तो फिर यहाँ रह नहीं सकते क्योंकि पवित्र आत्मा को शान्तिधाम जरूर जाना है।''

सा.बाबा 29.10.09 रिवा.

''कई ऐसे भी बुद्धू निकलते हैं, जो कहते हैं - बाबा कहते हैं ना कि किसको दुख नहीं देना है। अब वह विष माँगते हैं तो उनको विष देना चाहिए, नहीं तो यह भी किसको दुख देना हुआ ना! ऐसे समझने वाले मूढ़मति हैं। ... बाप कहते हैं - पवित्र जरूर बनना है।''

सा.बाबा 30.10.09 रिवा.

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

''पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवो में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो।... जैसे कर्मों की गति गहन है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है। पवित्रता ही फाउण्डेशन है।''

अ.बापदादा 17.10.87

''सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषतायें चाहिए - एक प्योरिटी और दूसरी युनिटी। अगर प्योरिटी में कमी है तो युनिटी में भी कमी होगी। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता है। संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्योरिटी।''

अ.बापदादा 31.10.75

''आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह सब विकार है। ... पवित्रता के आधार पर ही कर्म की गति-विधि का आधार है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही रहे - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है।''

अ.बापदादा 17.10.87

पवित्रता और ब्रह्मचर्य एवं दोनों में अन्तर

Q. पवित्रता और ब्रह्मचर्य में क्या अन्तर है ?

ब्रह्मचर्य पवित्रता रूपी भवन की आधार शिला है, जिस आधार शिला पर पवित्रता रूपी भवन निर्मित होता है। ब्रह्मचर्य रूपी आधार शिला के बिना पवित्रता रूपी भवन का निर्माण नहीं हो सकता है, परन्तु आधार शिला को ही भवन समझ लेना बड़ी भूल होगी।

ब्रह्मचर्य इस ब्राह्मण जीवन का अर्थात् इस पुरुषार्थी जीवन का मूलाधार है। जैसे आधार के बिना भवन नहीं बन सकता वैसे ही ब्रह्मचर्य के बिना पुरुषार्थ की सफलता हो नहीं सकती परन्तु बाबा ने कहा है - ब्रह्मचर्य केवल काम विकार को छोड़ना ही नहीं लेकिन ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्म में स्थित आत्माओं के समान पवित्र स्थिति। आत्मा के पतित और पावन होने में काम-विकार की मूल भूमिका है, उसके आधार ही आत्मा को पतित या पावन कहा जाता है।

पवित्रता अर्थात् सौ प्रतिशत आत्मिक स्थिति अर्थात् कर्मातीत स्थिति, जो आत्मा की इस सृष्टि रंगमंच से अपना पार्ट पूरा कर कर्मातीत बन परमधाम वापस जाते समय और परमधाम से इस धरा पर आते समय ही होती है और परमधाम में वापस जाते समय भी सूक्ष्म देह से भी मुक्त होने के बाद ही होती है। इस सम्बन्ध में बाबा ने कहा है सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, नारायण को भी नहीं क्योंकि आत्मा में देहभान की प्रवेशता तो देह में आते ही आरम्भ हो जाती है, जो आत्मा में एक प्रकार की खाद है अर्थात् अपवित्रता है।

पवित्रता अर्थात् सतोप्रधान बनना अर्थात् शत प्रतिशत देही-अभिमानी स्थिति और ब्रह्मचर्य अर्थात् काम-विकार से मुक्त स्थिति।

सतयुग में देवताओं को अपवित्र नहीं कहेंगे क्योंकि विकारों के वशीभूत होकर कोई विकर्म नहीं करते हैं परन्तु जन्म लेने के बाद आत्मा की कलायें गिरना तो आरम्भ हो ही जाती हैं अर्थात् उनकी पवित्रता की स्टेज अर्थात् डिग्री कम होने लगती है, इसलिए उनको यथार्थ में सतोप्रधान भी नहीं कहा जा सकता है।

सतयुग-त्रेता में आत्मायें संगमयुग पर परमात्मा की श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म करके जमा किया हुआ फल खाते हैं। वे उस समय न कमाते हैं और न विकर्म करके पाप करते हैं, इसलिए उनमें अपवित्रता भी नहीं कहेंगे। अपवित्रता अर्थात् आत्मिक शक्ति इतनी कम हो जाना, जो आत्मा का माया अर्थात् रावण अर्थात् देहाभिमान के वश होकर विकारों के वशीभूत विकर्मों में प्रवृत्त हो जाये।

देवताओं को अपवित्र क्यों नहीं कहेंगे क्योंकि उनमें कोई राग-द्वेष, भय-चिन्ता,

दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका जनित व्यर्थ संकल्प नहीं होते हैं, इसलिए वे सदा सुखी और शान्त रहते हैं।

पवित्रता अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी, कर्मातीत स्थिति, ब्रह्मचर्य अर्थात् काम विकार से मुक्त स्थिति। आत्मा के पतित और पावन होने में काम-विकार की मूल भूमिका है, उसके आधार ही आत्मा को पतित या पावन कहा जाता है।

ब्रह्मचर्य व्रत और पवित्रता में बहुत बड़ा अन्तर यह है कि पवित्रता की धारणा वाले निश्चित ही ब्रह्मचारी होंगे परन्तु ये आवश्यक नहीं कि ब्रह्मचारी पवित्र भी हो। एक बच्चा ब्रह्मचारी हो सकता है, परन्तु पवित्र नहीं। आत्मा में पूर्ण पवित्रता तो उसी समय होती है, जब आत्मा परमधाम से इस धरा पर आती है तथा जब कल्पान्त में परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देते हैं और आत्मा अभीष्ट पुरुषार्थ कर अपने विकर्मों का खाता खत्म कर कर्मातीत अर्थात् पावन बनती है और घर जाती है। उसके बाद की स्थिति चाहे जाते समय या आते समय नम्बरवार और समय अनुसार ही होती है। बाबा ने अनेक बार कहा है सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, उसके बाद जैसे बड़े होते हैं पवित्रता की कलायें कम होती जाती हैं।

''ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से बाल ब्रह्चारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें श्रीमत पर। बाप को मदद करते ही हैं राद की यात्रा में रहने से।'' सा.बाबा 17.10.69

''आलस्य और अलबेलापन भी विकार है। जो यथार्थ कर्म नहीं है, वह सब विकार है।... पवित्रता के आधार पर ही कर्म की गति-विधि का आधार है। ब्रह्मचारी रहे या निर्मोही रहे - सिर्फ इसको ही पवित्रता नहीं कहेंगे। पवित्रता ब्राह्मण जीवन का श्रृंगार है।''

अ.बापदादा 17.10.87

''स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है ... ईर्ष्या वा आवेश के वश कर्म होता है ... इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा।'' अ.बापदादा 17.10.87

''सफलतामूर्त बनने के लिए मुख्य दो ही विशेषतायें चाहिए - एक प्योरिटी और दूसरी युनिटी। अगर प्योरिटी में कमी है तो युनिटी में भी कमी होगी। प्योरिटी सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को नहीं कहा जाता है। संकल्प, स्वभाव, संस्कार में भी प्योरिटी।''

अ.बापदादा 31.10.75

ब्रह्मचर्य पवित्रता का एक अंशमात्र है परन्तु है पवित्रता रूपी भवन की आधार शिला (Foundation Stone)। पवित्रता ज्ञान की अर्थात् संगमयुगी पुरुषार्थ की अन्तिम स्थिति है। ज्ञान सागर परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, उसका लक्ष्य ही पवित्रता है परन्तु उस लक्ष्य को पाने के लिए ब्रह्मचर्य आधार है। जैसे फाउण्डेशन के बिना किसी भवन का निर्माण सम्भव नहीं है, उसी तरह बिना ब्रह्मचर्य के पवित्रता रूपी भवन का निर्माण सम्भव नहीं है। पवित्रता और ज्ञान की सर्व धारणाओं का आधार ब्रह्मचर्य ही है। ब्रह्मचर्य की धारणा का आधार यथार्थ ज्ञान है। ''शान्ति के लिए जंगल आदि में जाकर कोई उपाय नहीं किया जाता है, आत्मा तो है ही साइलेन्स। ... सुख और शान्ति के लिए पहले तो चाहिए पवित्रता। ... अब तुमको याद करना है एक बाप को, उनकी याद से ही विकर्म विनाश होंगे और आत्मा पवित्र बनेंगी। (Q. पवित्रता क्या है अर्थात् पवित्रता की स्थिति कैसी है ? वास्तव में कर्मातीत स्थिति को ही पवित्रता कहा जायेगा, ब्रह्मचर्य व्रत को धारणा करना पवित्रता नहीं है, वह तो पवित्रता के लिए पुरुषार्थ का आधार है।)''

सा.बाबा 29.12.09 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और परमात्मा

सभी आत्मायें जब दुखी-अशान्त होती हैं तो परमात्मा को याद करती हैं और उनको पतित-पावन, लिबरेटर, गाइड कहकर बुलाते हैं क्योंकि परमात्मा कल्पान्त में पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं और पावन बनाकर घर वापस ले जाते हैं, उसके लिए ज्ञान देते हैं और याद की यात्रा सिखलाते हैं। उस याद की यात्रा का आधार बिन्दु अर्थात् Starting Point ब्रह्मचर्य व्रत है, जिसके लिए बाबा प्रतिज्ञा कराते हैं, राखी बाँधते हैं और उस याद की यात्रा का अन्तिम बिन्दु अर्थात् Finishing Point है पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता।

परमात्मा तो सदा पावन है और उनकी याद से, उनके सानिध्य से अन्य आत्मायें भी पावन बनती हैं, इसलिए परमात्मा के लिए पवित्रता और ब्रह्मचर्य के लिए कोई प्रश्न नहीं उठता है परन्तु उनको नई दुनिया की रचना के लिए जिन आत्माओं का सहयोग लेना होता है, उनके लिए पवित्रता और ब्रह्मचर्य की बात आती है, इसका ज्ञान वे उन आत्माओं को देते हैं। अन्य सभी आत्माओं को भी परमात्मा का सन्देश तो मिलता है, परन्तु वे ज्ञान-योग से पावन नहीं बनते हैं। अन्य सभी आत्मायें अन्त समय विनाश के समय कर्मों का भोग दुख-अशान्ति के रूप में भोगकर पावन बनती हैं, इसलिए वे स्वर्ग में नहीं आती हैं।

एक मुरली में बाबा ने कहा है सन्यासी पवित्र रहते हैं अर्थात् काम विमार में नहीं जाते हैं परन्तु वे बाप को मदद नहीं कर सकते हैं। बाप को पवित्रता की मदद तब हो जब वे बाप को यथार्थ रीति याद करें और याद के वायब्रेशन्स से आत्माओं और वातावरण को पावन बनायें। परमात्मा पवित्रता के आधार पर ही नई दुनिया की स्थापना करने के लिए इस धरा पर आते हैं।

''भगवान से पावन बनने के बिगर हम पावन दुनिया में जा नहीं सकेंगे परन्तु ऐसे नहीं कि पावन बनने बिगर भगवान से नहीं मिल सकते हैं। भगवान को तो कहते हैं आकर पावन बनाओ। पतित ही भगवान से मिलते हैं पावन बनने के लिए। ... यहाँ साक्षात्कार आदि की बात नहीं है। यहाँ मूल बात है पतित से पावन बनने की।'' सा.बाबा 20.11.09 रिवा.

''जो दूसरे धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, वे सब निकल आयेंगे। मूल बात है पवित्रता की, तब तो अपवित्र मनुष्य सन्यासियों को अपना गुरु बनाये माथा टेकते हैं। परमात्मा तो है एवर पवित्र, उनको सम्पूर्ण निर्विकारी भी नहीं कह सकते हैं। परमात्मा की महिमा ही अलग है।... ये सब बातें अच्छी रीति बुद्धि में धारण कर फिर औरों को भी समझाना है।''

सा.बाबा 6.04.12 रिवा.

''पवित्रता आत्मा की सुख-शान्ति का मुख्य आधार है। पवित्र आत्मा को कब दुख-अशान्ति हो नहीं सकती। मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।''

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही पवित्र। ... वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना।''

अ.बापदादा 22.03.86

''सभी आत्मायें लौकिक मात-पिता होते भी दुख में पारलौकिक मात-पिता को याद करती हैं। ... यहाँ सब पतित हैं। पतित उनको कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। सतयुग में सभी पावन, सम्पूर्ण निर्विकारी होते हैं। ... अभी निराकार बाप बच्चों से बात करते हैं। कहते हैं - मैं साधारण तन का लोन लेकर तुमको समझाता हूँ।''

सा.बाबा 27.03.12 रिवा.

''यह बाप सर्व का पतित-पावन है। न सिर्फ मनुष्यात्माओं का, 5 तत्वों को भी पावन बनाने

वाला है। सर्व को गति-सद्गति देने वाला है। सृष्टि में महिमा लायक एक यह बाप ही है। ... और कोई आत्मा की कोई महिमा नहीं हैं, उनका बर्थ डे मनाकर क्या करेंगे। सभी आत्मायें पुनर्जन्म लेते नीचे ही उतरते आते हैं। फिर शिवबाबा ही आकर सर्व की सद्गति करता है।''

सा.बाबा 28.02.12 रिवा.

''ज्ञान और भक्ति कल्ट अलग-अलग है। भक्ति कल्ट आधा कल्प चलता है। जब से रावण राज्य शुरू होता है, तब से भक्ति शुरू होती है। भक्ति में सीढ़ी उतरते जाते हैं। ज्ञान संगमयुग पर एक ज्ञान सागर शिवबाबा ही आकर देते हैं, जिससे चढ़ती कला होती है। ... सच्चा-सच्चा सत्संग यह है, जब सत्य बाप आकर मिलते हैं, जिसका भक्ति मार्ग में गायन होता है।''

सा.बाबा 28.12.11 रिवा.

''अभी तुम बच्चों ने जाना है कि बाप आया है। पतित-पावन बाप आकर अपना परिचय देकर, रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं। बाकी दुनिया में और कोई यह बातें समझ नहीं सकते।... मनुष्य तो समझते कि गृहस्थ व्यवहार रहते कोई पवित्र बनें, यह हो नहीं सकता। सो तो जरूर है, जब तक पतित-पावन भगवान न आये, तब तक पवित्र कैसे बन सकते।''

सा.बाबा 2.11.11 रिवा.

''सन्यासी ज्ञान-योग से पवित्र नहीं बनते हैं, इसलिए उनको ताक़त नहीं मिलती है। ताक़त तब मिले, जब बाप की श्रीमत पर ज्ञान-योग से पवित्र बनें।... परमपिता परमात्मा ही आकर पवित्र गृहस्थ मार्ग स्थापन करते हैं। सतयुग में देवी-देवतायें पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे। उनको पवित्र रहते भी बच्चे आदि थे। मनुष्य यह नहीं जानते कि परमपिता परमात्मा कैसे बैठ, उनको ताकत देते हैं, जो गृहस्थ में रहते भी नंगन नहीं होते हैं।''

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

''बाप को कहा जाता है ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, सत् चित् आनन्द स्वरूप। उनमें ज्ञान है, वह कब विनाश नहीं होता। इसलिए उनको ज्ञान का सागर, प्यार का सागर कहा जाता है। ... बाप कहते हैं - हे बच्चो, मामेकम् याद करो तो तुम्हारे सिर पर जो पापों का बोझा है, वह भस्म हो जायेगा, फिर तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। मुझे बुलाते ही हो कि हे पतित-पावन आओ।''

सा.बाबा 24.03.11 रिवा.

''मुख्य है याद की बात। सच्चाई से कोई चार्ट लिखे तो बहुत फायदा हो सकता है। ... बाप तुमको हर बात यथार्थ रीति अर्थ सहित समझाते हैं। बाप से कई बच्चे कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं, तो बाप दिल लेने के लिए कुछ कह देते हैं। परन्तु बाप कहते हैं - मेरा काम ही है पतित से पावन बनाना। मुझे बुलाते ही हो इसलिए।''

सा.बाबा 19.10.10 रिवा.

''सबसे बड़ा काँटा है काम विकार का। बाप कहते हैं - इस पर जीत पहनों तो जगतजीत बनेंगे। ... बाप तुम बच्चों को कितना सहज समझाते हैं, तो तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। बाकी किसका कर्मभोग का हिसाब-किताब है, कुछ भी है, वह तो हर एक को भोगना ही है। इसमें बाबा आशीर्वाद आदि कुछ नहीं करते हैं।'' सा.बाबा 19.10.10 रिवा.

''बाप पहले से ही सावधान करते हैं। अन्त का स्वरूप शक्तिपन का है। शक्ति रूप रहमदिल का नहीं होता है। शक्ति का रूप सदैव संहारी रूप दिखाते हैं। ... संहार के समय रहमदिल नहीं बनना होता है। ... अभी रहमदिल का पार्ट भी समाप्त हुआ। ... अभी सतगुरु के रूप में किसी भी प्रकार से पावन बनाकर साथ ले जाने का पार्ट है।''

अ.बापदादा 3.05.72

''यह है ज्ञान सागर की दरबार। भक्ति मार्ग में इन्द्र की दरबार गाई जाती है। पुखराज परी, नीलमपरी आदि बहुत नाम रखे हुए हैं क्योंकि ज्ञान डान्स करती हैं ना।... अगर कोई अपवित्र को सभा में ले आये तो दोनों पर दण्ड पड़ जायेगा।''

सा.बाबा 27.05.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और प्रजापिता ब्रह्मा

पतित-पावन परमपिता परमात्मा पवित्रता का राज़ प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा ही समझाया है और उदाहरण के उनको ही निमित्त बनाया है। प्रजापिता ब्रह्मा ही पहले मानव हैं, जो सम्पूर्ण पवित्रता की धारणा कर फरिश्ता बनें और हम सभी आत्माओं के आदर्श स्वरूप हैं।

''जब तक ब्रह्मा की सन्तान न बनें, तब तक पावन बनना बड़ा मुश्किल है। ब्रह्मा की सन्तान बनने से ही बाप से मदद मिलती है। ... ब्रह्मा द्वारा भाई-बहनों की नई रचना होती है। भाई-बहन विकार में जा न सकें। यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, इस एक जन्म के लिए इस विकार का त्याग करो। ... सन्यासी पवित्र बनते तो गृहस्थी उनको बहुत मान देते हैं, परन्तु वे कोई मन्दिरों में पूजन लायक नहीं बनते हैं।'' सा.बाबा 18.03.12 रिवा.

''इस समय सभी जीवात्मायें पतित हैं, तब तो सब बाप को याद करते हैं।... बरोबर भारत पहले सुन्दर था, सतोप्रधान प्रकृति थी। सभी आत्मायें श्याम-सुन्दर हैं। नम्बरवन श्याम-सुन्दर कृष्ण को कहेंगे। शिवबाबा इनके ही तन का आधार लेकर इनको और साथ में तुम बच्चों को श्याम से फिर सुन्दर बनाते हैं। अभी तुम सब सुन्दर बन रहे हो।''

सा.बाबा 23.02.12 रिवा.

''बाप सिर्फ एक बात में न्योछावर होना देखना चाहते हैं।... तो बाप को क्या पसन्द है?

बापदादा कहते हैं कि बच्चे समान बन जायें। ब्रह्मा बाप की विशेषतायें देखो और ब्रह्मा बाप समान ही बनना है, तो विशेषताओं की कितनी बड़ी लिस्ट है। ... मूल फाउण्डेशन है, जो ब्रह्मा बाप समान बनने वा ज्ञान का आधार है, वह है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है।''

अ.बापदादा 7.11.95

''लौकिक बच्ची शादी की हुई थी। उनको ज्ञान मिला तो बोली - वाह, बाप कहते हैं पवित्र बनो तो हम क्यों नहीं बनेंगे! पति को जबाब दे दिया कि हम विष नहीं देंगे। ... बड़े-बड़े घरों की बच्चियाँ निकल आई, कोई की परवाह नहीं की। जिनकी तकदीर में नहीं है तो समझ भी न सकें। पतियों को कह दिया - पवित्र रहना है तो रहो, नहीं तो जाकर अपना प्रबन्ध करो। इतनी हिम्मत भी तो चाहिए ना।''

सा.बाबा 17.10.11 रिवा.

''माया बहुत बलवान है। अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास सर्विस करने वाले, सेन्टर चलाने वालों को भी माया थप्पड़ मारकर गिरा देती है। लिखते हैं - बाबा शादी कर मुँह काला कर दिया, काम-कटारी से हमने हार खा ली। ... फिर लिखते - बाबा सम्मुख आयें। बाबा लिखते हैं - काला मुँह किया, अब यहाँ नहीं आ सकते हो। यहाँ आकर क्या करेंगे, फिर भी वहाँ रहकर ही पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 21.09.11 रिवा.

''बाप इस पराये रावण के देश में, पतित शरीर में आते हैं। उस तन में ही आना पड़े, जिनको पहले नम्बर में जाना है। पूरे 84 जन्म सूर्यवंशी ही लेते हैं। ... पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनना मासी का घर नहीं है। बाप कहते हैं - हे आत्माओं अब देही-अभिमानी बनों, बाप को याद करो और अपनी राजाई को याद करो।''

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

''शिवबाबा कहेंगे मेरे में बिल्कुल जंक नहीं है, इस दादा में तो पूरी जंक थी। इनमें बाप ने प्रवेश किया तो मदद भी मिलती है। मूल बात है आत्मा से 5 विकारों की जंक उतारने की। ... जितना-जितना बाप को याद करेंगे, उतना कट उतारती जायेगी।''

सा.बाबा 20.11.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - मुझे याद करो और चक्र को याद करो। तुमको स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। बाप में ही इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान है, वह तुमको देते हैं। ज्ञान देकर तुमको त्रिकालदर्शी बना रहे हैं। ... शिवबाबा भागीरथ में विराजमान है। यह इनके बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। नम्बरवन पावन, वे ही फिर नम्बरवन पतित बनते हैं, उनको ही फिर नम्बरवन पावन बनना है।''

सा.बाबा 15.10.10 रिवा.

''बापदादा कहते हैं - समान बनना है। समान बनने में तो कई बातें हैं। ब्रह्मा बाप की विशेषतायें देखो और ब्रह्मा बाप समान ही बनना है तो कितनी बड़ी लिस्ट है ... ब्रह्मा बाप वा ज्ञान का

आधार है - पवित्रता। लेकिन पवित्रता की परिभाषा बहुत गुह्य है। जहाँ पवित्रता होगी, वहाँ निश्चय, सच्चाई-सफाई सब आ जाता है।''

अ.बापदादा 7.11.95

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और आध्यात्मिक ज्ञान /पवित्रता-ब्रह्मचर्य और मुरली

पवित्रता का आधार है यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान, जो ज्ञान सागर परमात्मा कल्पान्त में पुरुषोत्तम संगमयुग पर आकर देते हैं, जिस ज्ञान को मुरली कहा जाता है। ज्ञान सागर बाबा ने मुरली में प्रयोग किये गये शब्दों का देश-काल-वातावरण में भिन्न-भिन्न भाव और अर्थ होता है। ऐसे ही पवित्रता शब्द का प्रयोग भी देश-काल-वातावरण के अनुसार भिन्न-भिन्न भाव-अर्थ से किया है, इसलिए किसी देश-काल-वातावरण में पवित्रता से बाबा का भाव क्या है, वह भी उस मुरली की पृष्ठभूमि को ध्यान में रखकर ही समझ सकते हैं। यथा - बाबा कहते हैं - पवित्रता ब्राह्मण जीवन का फाउण्डेशन है और कहाँ-कहाँ कहते हैं कि पवित्रता ही ब्राह्मण जीवन का लक्ष्य है अर्थात् पवित्र बनकर ही घर वापस जाना है। अब दोनों बार के पवित्रता शब्द पर विचार करेंगे तो पहले पवित्रता शब्द का भाव ब्रह्मचर्य से है और दूसरा पवित्रता शब्द का भाव कर्मातीत स्थिति अर्थात् सम्पूर्णता से है। ऐसे ही बाबा कहते हैं - तुमको घर-गृहस्थ में रहते भी पवित्र जरूर रहना है और पवित्र बनकर घर जाना है। दोनों में बहुत अन्तर है। पवित्र रहना है माना ब्रह्मचर्य का पालन जरूर करना है, पवित्र बनना है अर्थात् कर्मातीत बनना है, सम्पूर्ण बनना है।

''निराकार बेहद का बाप आकर बच्चों को कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम पापों से मुक्त हो जायेंगे, पतित से पावन बन जायेंगे। कृष्ण को पतित-पावन नहीं कहा जाता है।... अभी तुमको ज्ञान मिला हुआ है, तुम अपने को देही समझकर बाप को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे। ... इसमें तुम्हारा इम्तहान लेने की कोई दरकार नहीं है, तुम खुद जानते हो - हम मोस्ट बिलवेड बाप को कितना याद करते हैं।''

सा.बाबा 15.08.11 रिवा.

''भगवानुवाच्य - काम महाशत्रु है, उस पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। जो जीत पायेंगे, पावन बनेंगे, वे ही पावन दुनिया में जायेंगे। बाकी सब आत्मायें अपना हिसाब-किताब चुक्तू कर वापस घर चली जायेंगी। यह क़यामत का समय है।... फिर सब आत्माओं को नम्बरवार आकर अपना पार्ट रिपीट करना है। तुम अभी पावन बनने का पुरुषार्थ करते रहते हो।''

सा.बाबा 19.09.11 रिवा.

''सोने से खाद निकालने के लिए आग में लगाते हैं। अगर गलते-गलते आग ठण्डी हो जाती है तो पूरी खाद निकलती नहीं है।... तीव्र वेग से पुरुषार्थ करो तो आत्मा की खाद निकलेगी। पहले-पहले तो बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा करो।... तुम जितना श्रीमत पर चलेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। फिर प्रसिद्ध हो जायेंगे कि कल्प-कल्प यह ऐसे ही पुरुषार्थ करने वाले हैं। यह कल्प-कल्प की बाज़ी है।''

सा.बाबा 19.10.11 रिवा.

''ये सब बातें तुमको अच्छी रीति धारण करना है और नर्कवासी से स्वर्गवासी बनना है। ... अभी तुम शिवबाबा से प्रॉमिस करते हो कि बाबा हम नर्कवासी से स्वर्गवासी जरूर बनेंगे। अभी तुमको शिवालय में जाना है, इसलिए विकार में कभी नहीं जाना है। माया के तूफान तो आयेंगे, परन्तु तुमको नंगन नहीं होना है। पतित बनने से बड़ी खता हो जायेगी, फिर धर्मराज की बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी।''

सा.बाबा 24.11.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं आकर सबको पावन बनाने का कन्ट्रेक्ट उठाता हूँ कि हम पवित्र दुनिया बनाकर ही दिखायेंगे। कल्प-कल्प मुझ कन्ट्रेक्टर को ही बुलाते हैं कि पतित-पावन आओ, आकर पावन बनाओ। सन्यासियों को फिर यह कान्ट्रेक्ट मिला हुआ है कि वे पवित्र रह भारत को थमाते हैं। ... भारत में ही निर्विकारी देवतायें राज्य करते थे, उनकी महिमा गाते हैं। यह गायन दूसरे देशों में नहीं है।''

सा.बाबा 19.12.11 रिवा.

''यह 5 हजार वर्ष का नाटक है, जिसमें हम आधा कल्प राज्य करते हैं, फिर आधा कल्प माया के गुलाम बन जाते हैं। ... अब यह नाटक पूरा होता है, अब हमको पावन बनकर वापस घर जाना है। ऐसे-ऐसे अपने साथ बातें करते-करते तुम पावन बनकर वापस घर चले जायेंगे। ... यह भी व्यापार है। रोज़ रात को सोने के समय अपनी जाँच करो कि हमने सारे दिन में बाप को कितना याद किया, कितनों को बाप का परिचय दिया?''

सा.बाबा 21.12.11 रिवा.

''योग से हेल्थ, ज्ञान से वेल्थ मिलती है। सतयुग में हेल्थ-वेल्थ-हैपीनेस सब होता है। इस पढ़ाई से तुम चक्रवर्ती राजा बनते हो, परन्तु बच्चों को इस पढ़ाई का इतना क़दर नहीं है। ... कहाँ भी रहो पढ़ाई जरूर पढ़नी है, खान-पान भी शुद्ध रखना है और पवित्र भी जरूर रहना है।... मुख्य है काम कटारी चलाने की बात। इस पर ही अबलाओं पर अत्याचार होते हैं।''

सा.बाबा 26.10.11 रिवा.

''इसमें बुद्धि बड़ी पवित्र चाहिए। तुम्हारी बुद्धि को अभी यह नॉलेज मिल रही है। शेरनी के दूध के लिए सोने का बर्तन चाहिए। ... बाप को याद करने से तुम्हारी बुद्धि गोल्डन एज्ड बन जायेगी। पवित्र बुद्धि में ही ज्ञान की धारणा अच्छी होगी। ... धीरे-धीरे यह सेपलिंग लगता

जायेगा। अभी तुम कल्प पहले मुआफिक देवता धर्म का सेपलिंग लगा रहे हो।''

सा.बाबा 3.08.11 रिवा.

''आत्मा अविनाशी है, परमात्मा बाप भी अविनाशी है, यह ड्रामा भी अविनाशी है। आत्मा को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है। बाप को अविनाशी सर्जन कहा जाता है, बाप आकर आत्माओं को ज्ञान-योग का इन्जेक्शन लगाते हैं, जिससे आत्मा सतोप्रधान बनती है और अपने स्वीट साइलेन्स होम में जाती है।''

सा.बाबा 1.08.11 रिवा.

''वास्तव में चन्द्रवंशियों को देवी-देवता भी नहीं कह सकते हैं। देवी-देवता तो सम्पूर्ण निर्विकारी, 16 कला सम्पूर्ण को ही कहा जाता है। ... परमधाम में खाने-पीने, भोगने की कोई चीज़ होती नहीं है। यह ज्ञान तुम बच्चों को एक ही बार मिलता है, फिर कल्प बाद तुम बच्चों को बाप आकर यह ज्ञान देते हैं। तुमको यह नशा होना चाहिए।''

सा.बाबा 14.06.11 रिवा.

''गीता है ही श्रीमत एक शिवबाबा की। अभी तुमको ज्ञान सागर बाप से ज्ञान मिल रहा है, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ज्ञान से तुम स्वर्ग के मालिक बनते हो। ... अभी बाप तुमको अभूल बनाते हैं, अभूल बनने से तुम पुण्यात्मा बन जाते हो। काम कटारी चलाना, विकार में जाना, सबसे बड़ी भूल है। ये सब भूलें रावण कराता है।''

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

''यह बना-बनाया खेल है, हर एक आत्मा में अपना अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। कोई के पार्ट में कोई चेन्ज नहीं हो सकती है। ... यह ज्ञान किसकी बुद्धि में तब बैठे, जब पवित्र होकर समझे। सात रोज़ की भट्ठी गाई हुई है। ... ऊंच पद नहीं पाना होगा तो उसकी बुद्धि में यह ज्ञान बैठेगा नहीं। फिर भी उनका कल्याण तो हुआ ना। प्रजा तो ऐसे ही बनती है। बाकी राज्य-भाग्य लेने में गुप्त मेहनत है।''

सा.बाबा 28.02.11 रिवा.

''हेल्थ की कमजोरी, वेल्थ की कमी वा होली नहीं बनते हो तो सदा हैपी अर्थात् सदा हर्षित नहीं रह सकते हो। हेल्थ अर्थात् आत्मा सदा निरोगी रहे, माया की कोई व्याधि आत्मा पर असर न करे। ... वेल्दी अर्थात् बाप से प्राप्त हुए ज्ञान खज़ाने को वा सर्वशक्तियों के खज़ाने सदा कायम रखो। ... इतना ही फिर होली अर्थात् संकल्प-स्वप्न में भी कोई अपवित्रता न हो तो स्व-स्थिति (हेल्दी-वेल्दी-होली-हैपी) स्वत: ही हो जायेगी।'' अ.बापदादा 14.06.72

''पतित से पावन बनने का ज्ञान सिर्फ मैं ही देता हूँ, जो तुमको दे रहा हूँ। यह ज्ञान फिर प्राय:

लोप हो जाता है, जो फिर बाप को ही कल्प बाद आकर सुनाना पड़ता है। ... कल्प पहले वाले ही आहिस्ते आहिस्ते निकलते रहेंगे। ये हैं बिल्कुल नई बातें, यह है गीता का युग। ... अभी तुम बच्चों को ज्ञान का नशा चढ़ा हुआ है। और सब मनुष्यों को है भक्ति का नशा।''

सा.बाबा 26.10.10 रिवा.

''वह गीता कोई रियल नहीं है क्योंकि तुमको जो ज्ञान मिलता है, वह तो यहाँ ही खत्म हो जाता है। सतयुग-त्रेता में कोई शास्त्र होता नहीं है। ... अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सतयुग से कलियुग अन्त तक सारा ज्ञान है। बाप कहते हैं - अब पावन बनने के लिए पुरुषार्थ करो। आधा कल्प लगता है पतित बनने में। वास्तव में सारा कल्प ही कहेंगे।''

सा.बाबा 7.10.10 रिवा.

''बाप में सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज के संस्कार हैं, इसलिए उनको नॉलेजफुल कहा जाता है। ... आत्मा कैसे पवित्र बनें, यह ज्ञान और कोई दे न सके। बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो आत्मा पवित्र बन जायेगी।... याद से ही आत्मा में जो खाद पड़ी है, वह निकलेगी। ... अभी तुम इन बातों को समझते हो तो फिर औरों को भी समझाना है।''

सा.बाबा 1.07.10 रिवा.

''तुम मुझे पतित-पावन कहते हो। मैं कभी डिग्रेड नहीं होता हूँ। तुम डिग्रेड होते हो। तुम पहले पावन देवता थे, फिर डिग्रेड होकर पतित बने हो।... यह है स्प्रीचुअल नॉलेज, अविनाशी ज्ञान रतन। अभी मैं तुमको यह नई नॉलेज सिखाता हूँ।... अभी बाप ने तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है, अब तुम जानते हो बाप कैसे पार्ट बजाते हैं।''

सा.बाबा 16.03.10 रिवा.

''आपको स्व-धर्म, स्व-देश, स्व का पिता और स्व स्वरूप, स्व कर्म सबकी नॉलेज मिली है तो नॉलेज की शक्ति से मुश्किल अति सहज हो गया।... सारे विश्व के आगे चेलेन्ज से कह सकते हो कि पवित्रता तो हमारा स्व-स्वरूप है।'' अ.बापदादा 22.03.86

''आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही पवित्र। ... वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना।''

अ.बापदादा 22.03.86

''एक दिन भी यह पढ़ाई मिस नहीं करना चाहिए। यह मोस्ट वेल्यूएबुल पढ़ाई है। यह बाबा कभी भी मिस नहीं करेगा। यहाँ तुम बच्चे सम्मुख खज़ानों से झोली भर सकते हो। जितना पढ़ेंगे, उतना नशा चढ़ेगा। ... यहाँ तुमको बहुत नशा चढ़ता है, बाहर जाने से फिर वह नशा

नहीं रहता है। बहुतों को सिर्फ मुरली पढ़ने से ही नशा चढ़ जाता है।''

सा.बाबा 31.05.12 रिवा.

पवित्रता और ब्रह्मचर्य का महत्व

पवित्रता को सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है अर्थात् पवित्रता के द्वारा ही आत्मा सुख-शान्ति प्राप्त करती है, फिर धीरे-धीरे आत्मा पर देहाभिमान की जंक चढ़ती जाती है, जिससे आत्मा अपवित्र बनती है, आत्मिक शक्ति कम हो जाती है, जिससे आत्मा विकारों में प्रवृत्त होती है और विकर्मों के फलस्वरूप दुख-अशान्ति को प्राप्त होती है।

पवित्रता और ब्रह्मचर्य के बल से ही परमात्मा आकर नई दुनिया की स्थापना करते हैं। नई दुनिया में जो देवी-देवतायें होते हैं, उन्होंने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। परमात्मा आकर जब नई दुनिया का विनाश करते हैं तो पुरानी दुनिया का विनाश भी होता है और सभी आत्मायें देह का त्याग कर परमधाम जाती हैं परन्तु परमधाम में कोई पतित आत्मा जा नहीं सकती, इस आत्माओं को योगबल या भोग द्वारा पावन अवश्य बनना होता है।

बाप जिन आत्माओं को ज्ञान देते हैं और योगबल सिखाते हैं, उनकी पवित्रता के आधार पर जड़-जंगम और चेतन प्रकृति भी पावन बनती है।

''यह व्यक्ति या वैभव का लगाव मैजारिटी को पुरुषार्थ में अलबेलेपन की तरफ ले जाता है। ... वास्तव में अगर दिल में परमात्म-प्यार, परमात्म-शक्तियाँ, परमात्म-ज्ञान फुल है, ज़रा भी खाली नहीं है तो कभी भी किसी भी तरफ लगाव व स्नेह जा नहीं सकता। ... आपने पान का बीड़ा उठाया है कि पवित्रता द्वारा हम प्रकृति को भी पावन करेंगे।''

अ.बापदादा 16.11.95

''अभी पुराना चोला, पुराने सम्बन्ध सब खलास हो जाने वाले हैं। खत्म होने वाली चीज को थोड़ेही याद किया जाता है। ... आपही पुराने से दिल हट जाती है। यह फिर है बेहद की बात। अभी सर्व की सद्गति होती है अर्थात् सबको रावण राज्य से छुटकारा मिलता है।... मनुष्य चोरी-ठगी को भ्रष्टाचार कहते हैं, परन्तु बाप कहते हैं - पहला-पहला भ्रष्टाचार है मूत पलीती बनना।''

सा.बाबा 22.04.11 रिवा.

''बाप से वर्सा लेने के लिए अपने को आत्मा निश्चय कर, बाप को याद करना है। तुमको नशा चढ़ा रहना चाहिए कि हम ईश्वर की सन्तान हैं, बाप को याद करने से ही हमारे विकर्म विनाश होते हैं। ... क्रिमिनल आई बड़ा नुकसान करती है। यह बड़ी कड़ी बीमारी है, इसलिए सर्विस

के लिए उछल नहीं आती है।''

सा.बाबा 18.08.10 रिवा.

''सन्यासी भी ब्रह्मचर्य में रहते हैं तो विकारी सब उनको माथा टेकते हैं। पवित्रता का कितना मान है, परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं फिर भी गफलत करते रहते हैं। याद नहीं करते तो बहुत विकर्म बन जाते हैं।''

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता / सच्ची पवित्रता अर्थात् आत्मिक पवित्रता

आत्मा की सच्ची पवित्रता है ब्रह्मचारी अर्थात ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान आत्मिक स्वरूप स्थित। आत्मिक स्वरूप में स्थित आत्मा की दृष्टि-वृत्ति भी आत्मिक होती है। परमात्मा से प्राप्त यथार्थ ज्ञान की धारणा और एक परमात्मा की अव्यभिचारी याद ही सच्ची पवित्रता का एकमात्र साधन और साधना है। यथार्थ आत्मिक ज्ञान और परमात्मा की याद ही पवित्रता का आधार है। परमधाम में पवित्र आत्मायें ही जा सकती हैं। सभी आत्मायें अन्त समय तक योगबल से या सजायें खाकर पवित्र बननी ही हैं परन्तु जो योगबल से पवित्र बनता है, वह वर्तमान समय अर्थात् इस पुरुषोत्तम संगमयुग में परम-शान्ति, परम-शक्ति और परमानन्द का अनुभव करता है और भविष्य नई दुनिया में ऊंच पद पाता है। आत्मा का मूल स्वरूप ही पवित्रता है और जहाँ पवित्रता है, वहाँ सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता अवश्य होगी।

पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: आता है और उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना और शुभ कामना होती है, जिसके फलस्वरूप दूसरों की उसके प्रति शुभ भावना और शुभ कामना स्वत: होती है। उसमें जीवन में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की चिन्ता और चिन्तन से जनित व्यर्थ संकल्पों का नाम-निशान भी नहीं होता है।

''अपनी ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना है। ... कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना-

बनाया ड्रामा। बना हुआ है, सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।''

अ.बापदादा 7.3.05

''जिनको पक्का निश्चय है, वे तो कहते हैं - बरोबर आप हमारे मात-पिता हो, हम आपकी श्रीमत पर चल श्रेष्ठ देवता बनने के लिए यहाँ आये हैं। ... अभी हम अपने को सम्पूर्ण नहीं कहेंगे, अब हम सम्पूर्ण बन रहे हैं। ... बाप कहते हैं - तुम श्रीमत पर नहीं चलेंगे, मुझे याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे, बन्दर के बन्दर ही रह जायेंगे, फिर बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी।''

सा.बाबा 9.04.12 रिवा.

''यहाँ भी अच्छी रीति पढ़ना और पढ़ाना है। जो आप समान न बनाये, तो जरूर उनमें कुछ न कुछ खमियाँ हैं, जिससे धारणा नहीं होती है। काम विकार का अगर सेमी नशा भी होगा तो धारणा होना मुश्किल है। ... बाप कहते हैं - बच्चे, काम महाशत्रु है, उसको योगबल से जीतो। कल्प पहले भी तुमने जीता था।... बाबा को बच्चों पर बड़ा वण्डर लगता है जो इतनी सहज बात भी धारण नहीं सकते हैं।''

सा.बाबा 25.01.12 रिवा.

''आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। पहले-पहले आत्मा सतोप्रधान 16 कला सम्पूर्ण होती है, फिर दिन प्रतिदिन पार्ट बजाते प्योरिटी की डिग्री कम होती जाती है। पतित अक्षर द्वापर के बाद काम में आता है। फिर भी आदि से ही डिग्री कम होने लगती है, आदि से ही थोड़ा-थोड़ा फर्क पड़ना शुरू हो जाता है।''

सा.बाबा 12.08.11 रिवा.

''जो कल्प पहले सतोप्रधान बनें होंगे, उनको समझाने से यह ज्ञान जंचेगा। कहेंगे - बरोबर बात तो ठीक कहते हो। कल्प पहले भी बाप ने कहा था - मन्मनाभव। ... अभी तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनना है। अपने को देखना है - हम कहाँ तक सतोप्रधान बनें हैं और कहाँ तक हम नर्कवासियों को स्वर्गवासी बनाने की सेवा करते हैं।''

सा.बाबा 8.08.11 रिवा.

''आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो। ... इसी प्रकार अगर अपनी कमजारी के कारण कोई भी पुराना तमोगुणी संस्कार वा संकल्प भी टच कर देते हैं तो विशेष रुप से ज्ञान-स्नान करना चाहिए अर्थात् बुद्धि में विशेष रुप से बाप की याद अथवा बाप से रुह-रिहान करनी चाहिए।''

अ.बापदादा 15.5.72

''अभी तुम पवित्र बन रहे हो। पूरा पवित्र बन जायेंगे तो यह पुराना चोला छोड़ना पड़ेगा। ... बाप कहते हैं - बच्चे आत्माभिमानी बनो। बाप आत्माओं से ही बात करते हैं। निराकार बाबा में ज्ञान के संस्कार हैं। वे आकर वह ज्ञान हमको देते हैं। ... हम ही इस 84 के चक्र में

आयेंगे, ऊपर से नीचे उतरेंगे, फिर बाबा आयेंगे। बरोबर यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सृष्टि पुरानी होती है, फिर बाबा आते है नई बनाने।''

सा.बाबा 20.07.11 रिवा.

''आत्मायें परमधाम में पावन रहती हैं। यहाँ आकर पुनर्जन्म लेते पार्ट बजाते पतित बनती हैं। आत्मा में ही खाद पड़ती है। ... आत्मायें जो पतित बनी हैं, अब उनको पावन कौन बनाये। सिवाए परमपिता परमात्मा के और कोई पावन बना न सके। याद से ही आत्मा पावन सतोप्रधान बनती है, पाप भस्म होते हैं, ज्ञान तो सहज है।''

सा.बाबा 13.07.11 रिवा.

''सबसे बड़ी चोट है काम विकार की। इसके लिए बाबा कहते हैं - काम महाशत्रु है। काम विकार को ही पतितपना कहा जाता है, पावन बनने के लिए ही पतित-पावन बाप को बुलाते हैं। ... सम्पूर्ण निर्विकारी सूर्यवशियों को ही कहेंगे। भल रामचन्द्र के राज्य में भी विकार की बात नहीं रहती है, परन्तु कला तो कम हो जाती है। ताक़त तो कम हुई ना, इसलिए उसको सतो कहा जाता है।''

सा.बाबा 5.07.11 रिवा.

''यह श्रेष्ठ भाग्य है कि आप बच्चे ही डबल पवित्र अर्थात् होली बनते हो। वैसे धर्मात्मायें भी पवित्र हैं, लेकिन वे शरीर से पवित्र नहीं बनते हैं। आप ब्राह्मण आत्माओं की भविष्य में आत्मा भी पवित्र होती है और शरीर भी पवित्र बनता है। इस डबल पवित्रता की निशानी डबल ताज प्राप्त होता है। ... संगमयुग का परमात्म-संग डबल पवित्र बना देता है।''

अ.बापदादा 16.03.11

''अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने में बहुत मज़ा है। जितना याद करेंगे, उतना सतोप्रधान, 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे।... जब तक पूरा पावन नहीं बनें, तब तक वापस कोई जा नहीं सकते। नहीं तो अन्त में बहुत सज़ायें खानी होंगी। घर में आत्मायें सतोप्रधान होती हैं, फिर जन्म लेते-लेते पिछाड़ी में तमोप्रधान बनते हैं। दुनिया की वह इज्जत कम होती जाती है।''

सा.बाबा 7.08.10 रिवा.

''शान्तिधाम में जब हम आत्मायें रहती हैं तो वहाँ सब सच्चा सोना हैं, उनमें अलाए हो न सके। भल अपना-अपना पार्ट भरा हुआ है परन्तु आत्मायें सब पूर्ण पवित्र रहती हैं। ... अभी तुम ब्राह्मण कुल भूषण पवित्र बन रहे हो। तुम अभी अपने को देवता नहीं कह सकते हो। देवतायें हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। तुमको थोड़ेही सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे। (Q. क्या जो आत्मा पहले जन्म लेती है, उसे निर्विकारी नहीं कहेंगे ? विकार से जन्म लेने वाले को सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कह सकते हैं क्योंकि जन्म लेते ही आत्मा में देहाभिमान का कुछ न कुछ अंश तो आ ही जाता है।)''

सा.बाबा 8.04.10 रिवा.

''वर्तमान समय समीप आने के कारण बापदादा अभी यही इशारा दे रहे हैं कि समय की समीपता अनुसार व्यर्थ संकल्प, यह भी अपवित्रता की निशानी है। सारे दिन में यह भी चेक करो कि कोई भी व्यर्थ संकल्प अभिमान का वा अपमान का अपने तरफ खींचता तो नहीं है? क्योंकि चलते-चलते अगर बाप की दी हुई विशेषताओं को अपनी विशेषता समझ अभिमान में आते हैं तो यह भी व्यर्थ संकल्प हुआ।'' अ.बापदादा 15.03.10

''चेहरे और चलन से प्योरिटी की झलक तब दिखाई देगी, जब सदा संकल्प में भी प्योरिटी होगी। ... तो सदा चेक करो - अपवित्रता का अंशमात्र भी न हो।... प्योरिटी ब्राह्मण जीवन की विशेषता है।'' अ.बापदादा 9.3.94 पार्टी 3

''स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित होता है ... ईर्ष्या वा आवेश के वश कर्म होता है ... इसको भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा। जब स्वप्न का भी प्रभाव पड़ता है तो साकार में किये हुए कर्म का कितना प्रभाव पड़ता होगा।'' अ.बापदादा 17.10.87

''अभी तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि हम पतित नहीं हैं। हम पतित हैं परन्तु पतित-पावन बाप हमको पावन बना रहे हैं। उनकी श्रीमत है कि तुम मुझ एक साथ अपना बुद्धियोग जोड़ो। ... बेहद का बाप सभी मनुष्य मात्र को कहते हैं - आत्माभिमानी बनो। देवी-देवतायें आत्माभिमानी होते हैं। यह ज्ञान यहाँ किसी मनुष्य मात्र में नहीं है।''

सा.बाबा 16.05.12 रिवा.

Q. सम्पन्न पवित्रता से बाबा का भाव-अर्थ क्या है? सम्पन्न पवित्रता की स्थिति क्या है, उसकी अनुभूति क्या है?

'सम्पूर्ण पवित्रता, सम्पन्न पवित्रता' आदि शब्द अभी संगमयुग पर ही बाबा ने कहे हैं। देवताओं की महिमा 'सर्वगुण सम्पन्न ... अहिंसा परमो देवी-देवता धर्म' कहते हैं परन्तु 'सम्पूर्ण पवित्रता' या 'सम्पन्न पवित्रता' शब्द प्रयोग नहीं करते हैं, जिससे सिद्ध है कि अभी की पवित्रता देवताओं की पवित्रता से भी श्रेष्ठ है। अभी ही पवित्र बनकर फरिश्ता बनते हैं, चढ़ती कला में जाते हैं। अभी की पवित्रता में ज्ञान, गुण, शक्तियां, सुख-शान्ति-आनन्द सब समाया हुआ है, इसलिए फरिश्ते देवताओं से भी ऊंच हैं। जब देवता बनते हैं तो वहीं से ही देहभान आरम्भ हो जाता है, जिससे गिरती कला आरम्भ हो जाती है। देवतायें भी शादी करते हैं, बच्चों को जन्म देते हैं, भले ही वे विकार से जन्म नहीं देते हैं परन्तु दैहिक आकर्षण तो जरूर होता ही है, जिसके आधार पर ही शादी आदि करते हैं परन्तु उनके जीवन में आत्मिक शक्ति होने के कारण इन्द्रियों पर शासन होता है, जिससे प्रकृति उनकी दासी होती है और सुख के अनन्त साधन प्राप्त होते हैं परन्तु ज्ञान और आनन्द उनके जीवन में नहीं होता है। ज्ञान और आनन्द

संगमयुग की ही विशेष प्राप्ति है, जिसके कारण ही आत्मा की चढ़ती कला है। देवतायें भले ही स्वभाविक देही-अभिमानी होते हैं परन्तु वे एक-दूसरे को आत्मा रूप में भी नहीं देखते हैं क्योंकि आत्मा का यथार्थ ज्ञान तो रहता नहीं है। उनकी स्वभाविक आत्मिक स्थिति होती है। इन सब बातों पर विचार करें तो सम्पन्न पवित्रता संगम युग की विशेष प्राप्ति है क्योंकि इसमें ज्ञान, गुण, शक्तियां, आनन्द सब समाया हुआ है। जब हम अपने यथार्थ आत्मिक स्वरूप में स्थित होते हैं तब ही ये सब अनुभव आत्मा को होता है।

सम्पूर्णता-सम्पन्नता बाप का वर्सा है और यथार्थ में बाप अभी मिला है तो बाप का वर्सा भी अभी ही मिलना चाहिए। सतयुग का वर्सा तो इस संगमयुग के वर्से का प्रतिफल है। जब आत्मा इस ईश्वरीय ज्ञान, गुण, शक्तियों के साथ देह में रहते देह से न्यारी बाप समान अव्यक्त स्थिति धारण करती है तो वह देव-दुर्लभ परमानन्द का अनुभव करती है, जो अब के सिवाए त्रिलोक और त्रिकाल में कहाँ भी अनुभव नहीं हो सकता है। इसका अनुभव परमात्मा हर आत्मा को वर्से के रूप में कराता है, जिसको दीर्घकाल और सदा काल बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। यही सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की यथार्थ अनुभूति है। बाप का हाथ सदा हमारे सिर पर है और बाप हमारे साथ है, जो इस सत्य का अनुभव करके निराकार और अव्यक्त बाप की स्मृति में होगा तथा जिसकी दृष्टि-वृत्ति आत्मिक होगी, वही इस सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की अनुभूति कर सकता है। यदि निराकार या अव्यक्त बाप की स्मृति नहीं होगी तो किस न किस वस्तु-व्यक्ति की याद अवश्य होगी क्योंकि मन-बुद्धि कब खाली नहीं होते और वह आत्मा सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता की स्थिति, चढ़ती कला का अनुभव कर नहीं सकती। वास्तविकता ये है कि वह अवश्य ही उतरती कला में होगा क्योंकि वस्तु और व्यक्तियों की याद से आत्मा की उतरती कला अवश्य होती है।

फरिश्ता स्थिति ही सम्पन्न और सम्पूर्ण स्थिति है, सम्पूर्ण पवित्र स्थिति है, जो सतयुगी देवताओं से भी ऊंच है। जब सूक्ष्म वतन में जाते, जैसे ब्रह्मा बाबा हैं, तब तो वह स्थिति सदा काल होती है परन्तु यहाँ स्थूल वतन में जब आत्मा देह में रहते देह से न्यारी आत्मिक स्थिति में स्थित होती है तो उस स्थिति का अनुभव करती है, जिसको सदा काल या दीर्घ काल के लिए बनाने के लिए पुरुषार्थ किया जाता है।

आनन्द, अतीन्द्रिय सुख सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता वाला ही अनुभव कर सकता है। देवताओं के जीवन में सुख होगा लेकिन आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, जो अभी ही अनुभव होती है। वास्तव में यही परमात्मा का वर्सा है।

‘‘यही प्योरिटी सबसे श्रेष्ठ और सहज पब्लिसिटी है और यही अन्तिम पब्लिसिटी का रुप है जो

अन्य कोई भी आत्माएं कर नहीं सकतीं। विश्व परिवर्तन के कार्य में सबसे पॉवरफुल पब्लिसिटी का साधन आप विशेष आत्माओं का यही है।''

अ.बापदादा 24.4.74

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

''अभी तुम पतित से पावन बन रहे हो। फिर तो तुमको नीचे ही उतरना है, कला कमती होनी ही है। सारे कल्प उतरती कला ही होती है। इस समय तुम ईश्वरीय औलाद बनते हो, तो तुम्हारी और सारे विश्व की चढ़ती कला होती है। भक्ति में कोई कितना भी दान-पुण्य करें लेकिन कोई ऊपर चढ़ नहीं सकता है।... अभी भोलानाथ बाप 21 जन्मों के लिए तुम्हारी झोली भर रहे हैं।''

सा.बाबा 22.02.12 रिवा.

''बाप ने आकर तुमको प्रजापिता द्वारा एडाप्ट किया है। तुम शुद्र ब्राह्मण बन रहे हो। अभी तुम हॉफ कास्ट हो। पूरा पवित्र, कर्मातीत पिछाड़ी में बनेंगे, जब सब विकर्म भस्म हो जायेंगे। ... जब तुम पूरा पवित्र हो जायेंगे तो यहाँ रह नहीं सकेंगे। सतयुग में 5 तत्व भी पवित्र हो जायेंगे। ... जितनी बाप की महिमा है, उतनी भारत की भी महिमा है।''

सा.बाबा 18.02.12 रिवा.

''तो ये पवित्रता का फाउण्डेशन पक्का करो। ब्रह्मा बाप ने पवित्रता के कारण ही गालियाँ भी खाई। ब्रह्मचर्य व्रत धारण करना, ये तो एक कॉमन बात है। ... सिर्फ इसमें खुश नही हो जाओ कि ब्रह्मचारी रहता हूँ। अभी दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता को और भी अण्डरलाइन करो, लेकिन मूल फाउण्डेशन है कि अपने संकल्प को शुद्ध बनाओ, ज्ञान स्वरूप बनाओ, शक्ति स्वरूप बनाओ।''

अ.बापदादा 7.11.95

''बच्चों की बुद्धि में पवित्रता की परिभाषा और पवित्रता का गुह्य रहस्य स्पष्ट नहीं है। व्यर्थ संकल्प चलना वा चलाना - क्या ये पवित्रता है? तो संकल्प की पवित्रता का रहस्य सभी बच्चों को प्रैक्टिकल में लाना चाहिए। कोई भी विकार पहले संकल्प में ही आता है। ... अगर किसी आत्मा के प्रति व्यर्थ दृष्टि भी जाती है तो उस समय पवित्रता नहीं मानी जायेगी।''

अ.बापदादा 7.11.95

''आत्मा कब विनाश नहीं होती है, बाकी हाँ आत्मा के ऊपर शैतानी की कट चढ़ती है। गन्दे से गन्दी कट चढ़ती है काम विकार की, फिर क्रोध की।... 5 विकारों को रावण कहा जाता

है। रावण की कट चढ़ने के कारण ही तुम सब विकारी और दुखी बन गये हो। अब मैं तुम्हारी कट उतारता हूँ। इस कट को उतारने वाला सर्जन मैं एक ही हूँ।''

सा.बाबा 17.01.12 रिवा.

''आत्मा पर बुरे संस्कारों के कारण बहुत पापों का बोझ चढ़ा हुआ है, चाहे इस जन्म का वा जन्म-जन्मान्तर का है। अब वह तुमको योगबल से भस्म करना है। काम चिता पर बैठने से पापात्मा बनते हैं और इस योग अग्नि से पाप भस्म होते हैं। ... प्राचीन भारत के योग की बहुत महिमा है परन्तु उस योग को कोई जानते नहीं हैं।''

सा.बाबा 2.01.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सारे कल्प की गौरवमय स्थितियाँ

Q. बाबा ने हमको सारे कल्प की हमारी गौरवमय (Graceful) स्थितियों की स्मृति दिलाई है, उन सब स्थितियों का आधार क्या है ?

ज्ञान सागर परमात्मा पिता ने हमको हमारे तीनों कालों और तीनों लोकों की गौरवमय स्थितियों की स्मृति दिलाई है कि तुम आत्मायें परमधाम में परमात्मा के साथ विशेष चमकते हो, सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग में तुम आत्मायें ही आती हो, और कोई धर्म वाले स्वर्ग में आ नहीं सकते। द्वापर से तुम्हारे मन्दिर बनाकर पूजा होती है, और किसी धर्म वाले के मन्दिर बनाकर पूजा नहीं होती है। संगम पर तुम ही बाप के डॉयरेक्ट बच्चे बनते हो, जिनकी शिव और सालिग्रामों के रूप में पूजा होती है और रिटर्न जर्नी के समय तुम ही पहले-पहले बाप के साथ फरिश्ता बनते हो। तो इन सब स्थितियों का आधार और अनुभूति क्या है, यह विचारणीय विषय है।

वास्तव में तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थितियों की अनुभूति अभी संगमयुग पर ही होती है, जब हमको तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान है। उसके अतिरिक्त परमधाम, सतयुग, भक्ति मार्ग में कोई अनुभूति नहीं होती है। इस अनुभूति का आधार भी वर्तमान संगमयुग के गौरवमय कर्तव्य हैं, जो बाप आकर हमको सिखाता है। जो आत्मायें जितना उन कर्तव्यों को सम्पन्न करते हैं, वे तीनों कालों और तीनों लोकों में उतनी ही गौरवमय स्थिति को प्राप्त करते हैं और अभी उस गौरवमय स्थिति की अनुभूति करते हैं।

इस गौरवमय स्थिति की अनुभूति और गौरवमय कर्तव्यों को सम्पन्न करने के लिए पवित्रता अति आवश्यक है और पवित्रता की आधार शिला ब्रह्मचर्य व्रत है। जो परमात्मा पिता

की श्रीमत अनुसार ब्रह्मचर्य व्रत को धारण कर सम्पूर्ण और सम्पन्न पवित्रता के लिए पुरुषार्थ करता है, वही संगमयुग पर गौरवमय कर्तव्य करने में सफल होता है। हमारे अभी के गौरवमय कर्तव्यों के आधार पर ही जड़-जंगम-चेतन प्रकृति पावन बनती है, इसलिए परमात्मा को पतित-पावन कहा जाता है क्योंकि वह आकर हम आत्माओं के द्वारा ये सारा कर्तव्य सम्पन्न करता है। जो जितना इस कर्तव्य को करके प्रकृति को पावन बनाता है, उतना ही सतयुग-त्रेता में प्रकृति उसको सहयोग करती है।

''याद करो - अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है।... एक तो बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं। बाप के साथ के कारण विशेष चमकती हुई दिखाई दे रही हैं।... याद आया अपना अनादि स्वमान। सेकेण्ड में अपने अनादि स्वरूप में स्थित हो सकते हो ? अभी एक सेकेण्ड में उस अनादि स्वरूप में एक सेकण्ड के लिए स्थित हो जाओ।''

अ.बापदादा 2.02.12

''सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। ... प्रकृति भी कितनी सुन्दर सतोगुणी है। अनुभव करो अपने देवता स्वरूप का। देख रहे हो अपना स्वरूप। कोई भी राजा, महात्मा, नेता हो, किसका ऐसा सर्व प्राप्ति स्वरूप देखा! ... बापदादा यह ड्रिल करा रहा है। फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है।''

अ.बापदादा 2.02.12

''फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। ... सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ऐसे कायदे प्रमाण पूजा और किसी की भी नहीं होती है।... अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो ? तो संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है।''

अ.बापदादा 2.02.12

''अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है। अब चेक करो - पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है। पवित्रता से आप सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बन गये। तो चेक करो सर्वशक्तियाँ प्राप्त हैं ? ... बाप ने सर्वशक्तियाँ वरदान में दी फिर भी शक्ति समय पर नहीं आती है, उसका कारण क्या है ? आप अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो।''

अ.बापदादा 2.02.12

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और चढ़ती कला और उतरती कला का राज़

यह सृष्टि का खेल ही चढ़ने और उतरने का बना हुआ है अर्थात् आत्माओं और प्रकृति की या तो चढ़ती कला होगी या उतरती कला होगी। इसमें कोई चीज़ स्थिर नहीं रहती है। आत्मा और प्रकृति की सारे कल्प उतरती कला ही होती है अर्थात् आत्मा और प्रकृति की पवित्रता की कलायें कमती होती जाती है, संगमयुग पर परमात्मा आकर पवित्रता और ब्रह्मचर्य का राज समझाते हैं और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं, तब ही आत्माओं और प्रकृति की चढ़ती कला होती है।

''सतोप्रधान से तमोप्रधान भी धीरे-धीरे बनते हैं, धीरे-धीरे दिन-प्रतिदिन कलायें कम होती जाती हैं। अभी तुमको जम्प लगाना है, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है, उसके लिए भी टाइम तो लगेगा ना। ... अपने से आपही पूछना है कि हमने बाप को यादकर भविष्य के लिए कितनी कमाई जमा की, कितने अन्धों की लाठी बना ? घर-घर में बाप का पैग़ाम देना है।''

सा.बाबा 25.02.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - तुम सालिग्राम आत्माओं को तो अपना-अपना शरीर है, तुम पुनर्जन्म में आते-आते पतित बन जाते हो। अभी तो सारी दुनिया पतित है। तुम सतोप्रधान थे, फिर खाद पड़ने से सतोप्रधान से तमोप्रधान बने हो। ... तुम अपने जन्मों को नहीं जानते हो, मैं ब्रह्मा तन में आकर तुमको सब राज़ समझाता हूँ, कि तुमने 84 जन्म कैसे लिए।''

सा.बाबा 4.03.11 रिवा.

''जो पहले-पहले आयेंगे, उनका ही 84 का चक्र पूरा होगा। इसमें बुद्धि से काम लेना होता है। ... पतित से पावन और पावन से पतित जरूर बनना है। कोई चीज़ सदैव नई ही रहे, यह तो हो नहीं सकता। पुरानी जरूर होगी। हर चीज़ सतो, रजो, तमो में आती है। ... बरोबर हम पूज्य थे, फिर पुजारी बनें। यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 29.01.11 रिवा.

''नई दुनिया सो जरूर पुरानी होती है। पहले-पहले जो आत्मायें ऊपर से आती हैं, वे गोल्डन एज में आती हैं, फिर धीरे-धीरे उतरती कला होती है। ... आत्मा संस्कारों अनुसार एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती रहती है और आत्मा की दिन-प्रतिदिन प्योरिटी की डिग्री कम होती जाती है। पतित अक्षर द्वापर से काम में लाते हैं।''

सा.बाबा 19.01.11 रिवा.

''देवी-देवतायें पुनर्जन्म लेते हैं, समय भी फिरता रहता है, दिन-प्रतिदिन बुद्धि कमजोर होती

जाती है। बाप के साथ बुद्धियोग लगाने से जो ताक़त मिली, वह फिर खलास होती जाती है। ... बच्चे बाप के पास आते हैं रिफ्रेश होने और विश्राम पाने के लिए। रिफ्रेश भी शिवबाबा करते हैं, विश्राम भी बाबा के पास लेते हो।... बाप को याद करने से ही तुम रिफ्रेश होगें, तमोप्रधान से सतोप्रधान बनेंगे।''

सा.बाबा 21.01.11 रिवा.

''अभी तुम पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम ही पूरी सीढ़ी उतरते हो और चढ़ते हो। ... कोई-कोई कहते - भगवान को क्या हुआ, जो ऐसी चढ़ने-उतरने की सीढ़ी बनाई। बाप समझाते हैं - यह तो अनादि बना-बनाया खेल है। तुमको 5 हजार वर्ष में 84 जन्म लगते हैं सीढ़ी उतरने में। अब ऊपर एक सेकेण्ड में चढ़ जाते हो। यह तुम्हारे को योगबल की लिफ्ट है।''

सा.बाबा 15.01.11 रिवा.

''अभी तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है, फिर सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है। तुम्हारी बुद्धि में यह सीढ़ी है। कैसे 84 का चक्र लगाये सीढ़ी नीचे उतरे हैं। अभी तुम समझते हो - हमको सतोप्रधान बनकर घर वापस जाना है।... तुम ऐसे नहीं कहेंगे कि कैसे निश्चय करें। अगर संशय है तो विनश्यन्ति।''

सा.बाबा 7.12.10 रिवा.

''तुम जानते हो यह दुनिया भी पहले नई होती है, फिर धीरे-धीरे पुरानी होती है। वहाँ भी हर चीज़ पहले सतोप्रधान फर्स्ट क्लास होती है, फिर पुरानी होती है। धीरे-धीरे कलायें कम होती जाती हैं। ... तुम सम्पूर्ण बनते हो तो तुम्हारे लिए फिर सृष्टि भी ऐसी ही चाहिए। ये पाँच तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं, इसलिए शरीर भी नेचुरल ब्युटी वाले होते हैं।''

सा.बाबा 12.11.10 रिवा.

''आत्मा पतित से पावन बनती है, फिर पावन से पतित कैसे बनती है। यह कोई नहीं जानते हैं। ... पतित-पावन बाप को पुकारते रहते हैं परन्तु आत्मा कैसे पावन बनेंगी, उसके लिए चाहिए अविनाशी सर्जन। ... आत्मा को पावन बनाने की दवाई परमात्मा के पास ही है। तो तुम बच्चों के रोमांच खड़े हो जाने चाहिए कि भगवान हमको पढ़ाते हैं, तो जरूर भगवान-भगवती ही बनायेंगे।''

सा.बाबा 7.10.10 रिवा.

''सतयुग में आत्मा की कलायें धीरे-धीरे कम होती हैं, फिर द्वापर से रावण राज्य में जल्दी-जल्दी कलायें कम होती जाती हैं क्योंकि माया रावण का ग्रहण लग जाता है। ... अब बाप कहते हैं - याद से ही तुम्हारा ग्रहण उतरेगा। ... यह ज्ञान एक ही बार इस संगम पर मिलता है, बस। एक ही बार ज्ञान सागर बाप आकर यह ज्ञान देते हैं।''

सा.बाबा 2.10.10 रिवा.

''फट से कोई सम्पूर्ण नहीं बन सकता है, उसके लिए टाइम भी मिला हुआ है। चन्द्रमा भी

थोड़ा-थोड़ा करके आखिर में सम्पूर्ण बनता है।... तुम अभी बेहद के बाप के बने हो। तुम कितने खुशनसीब हो।... तुमको दिल ही दिल में खुशी होती है, तुम अपने को आपेही मुबारक देते हो कि हमको बाप मिला है, जिससे हम वर्सा ले रहे हैं।''

सा.बाबा 27.09.10 रिवा.

''बाप को भूलने से भूल में भूल होती जाती है और सीढ़ी नीचे उतरते जाते हैं, कला कम होती जाती है। तमोप्रधान बनते जाते हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार जो बाप स्वर्ग का रचयिता है, जिसने भारत को स्वर्ग का मालिक बनाया, उनको ठिक्कर-भित्तर में कह देते हैं। ... रचयिता बाप ही आकर सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान सुनाते हैं।''

सा.बाबा 13.09.10 रिवा.

''यह है युद्ध का मैदान। काम विकार बड़ा दुश्मन है, इस पर जीत पाने से ही जगतजीत अर्थात् राजा-रानी बनेंगे। ... लक्ष्मी-नारायण के बाद उनके तख्त पर जीत, उनके बच्चे की होती है। वे लक्ष्मी-नारायण (पहले वाले) फिर दूसरे जन्म में नीचे चले जायेंगे। भिन्न नाम-रूप से बच्चे को गद्दी मिलती है तो ऊंच नम्बर उनका गिना जायेगा। ... बच्चा तख्त पर बैठेगा तो वह सेकण्ड ग्रेड हो जायेगा। ऊपर वाला नीचे और नीचे वाला ऊपर आ जायेगा।''

सा.बाबा 9.09.10 रिवा.

''कृष्ण का जब जन्म होता है, तब तो स्वर्ग है।... वह है नई दुनिया, वहाँ अशान्ति हो नहीं सकती। ... त्रेता में 25 परसेन्ट पुरानी सृष्टि होगी तो कुछ न कुछ खिट-खिट होगी। दो कला कम होने के कारण शोभा कम हो गई। ... बाप को कहते हैं हेविनली गॉड फादर, परन्तु वे हेविन कैसे रचते हैं, यह किसको भी पता नहीं है।... कृष्ण फिर आयेगा सतयुग में। कहते हैं देवताओं का परछाया कलियुग में पड़ नहीं सकता।''

सा.बाबा 2.09.10 रिवा.

''मनुष्य देवताओं को वाइसलेस समझ, अपने को विशश समझ उनकी पूजा करते हैं। सतयुग में भारत वाइसलेस था। ... भारत ही स्वर्ग, मोस्ट सॉलवेन्ट था, अभी भारत ही नर्क, मोस्ट इन्सॉलवेन्ट बन गया है। ... अभी बाप समझाते हैं कि भारत की और आत्माओं की चढ़ती कला और उतरती कला कैसे होती है। यह है ज्ञान, और सब है भक्ति।''

सा.बाबा 2.07.10 रिवा.

ब्रह्मचर्य व्रत और ब्रह्मचारी जीवन / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और ब्रह्मा मुख-वंशावली ब्राह्मण

सम्पूर्ण पवित्रता ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों के पुरुषार्थ का लक्ष्य है और उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ब्रह्मचर्य की धारणा अति आवश्यक है, इसलिए ही शिवबाबा ने ब्रह्मा मुखवंशावली बनाया है। बाबा कहते हैं - यह पवित्र अर्थात् ब्रह्मचर्य में रहने की एक युक्ति है।

धर्म की स्थापना और जीवन में दिव्य गुणों की धारणा के लिए ब्रह्मचर्य का पालन परमावश्यक है। जो भी परमात्मा के बच्चे बनते हैं, उनके लिए इस व्रत की धारणा परमावश्यक है। बिना ब्रह्मचर्य की धारणा के कोई भी ब्रह्मा कुमार-कुमारी कहला नहीं सकता और जब तक ब्रह्मा के बच्चे नहीं बनें तब तक परमात्मा से स्वर्ग का वर्सा भी नहीं मिल सकता है अर्थात् कोई स्वर्ग में नहीं जा सकता है। सभी धर्मपिताओं और महापुरुषों ने ब्रह्मचर्य को अपनाया है और उसके लिए दूसरों को भी प्रेरणा दी है, जिसके आधार पर ही उनके धर्मवंश की स्थापना होती है। कोई महान कार्य करने वाले भी ब्रह्मचर्य के आधार पर ही समर्थ हुए हैं। हम ब्राह्मणों के लिए ब्रह्मचर्य एक व्रत ही नहीं है लेकिन हमारी जीवन ही ब्रह्मचारी जीवन है अर्थात् यह व्रत सारी जीवन के लिए है।

''कहते हैं तुम मात-पिता, परन्तु परमात्मा तो फादर है, फिर माता किसको कहा जाये? इसको गुह्य बातें कहा जाता है। ... शिवबाबा ब्रह्मा द्वारा ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मणों को रचते हैं। ब्राह्मणों को ही राजयोग की पढ़ाई पढ़ाते हैं। उसमें सरस्वती भी आ गई। यह ब्राह्मणों का कुल वण्डरफुल है। ब्रह्मा मुखवंशावली ब्राह्मण भाई-बहन हो गये, भाई-बहन कब शादी कर न सकें।''

सा.बाबा 28.01.12 रिवा.

''कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, खुद तुम्हारी दिल है।... शिव बाबा को याद करते मर भी गये तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद होगा।''

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

''बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे और तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे। अभी और कोई विकर्म नहीं करो।... बाप आया हुआ है पतितों को पावन बनाने। बाप कहते हैं - तुम्हारा भी यही धन्धा है। रात-दिन यही चिन्तन रहे कि पतितों को रास्ता कैसे बतायें!''

सा.बाबा 29.10.11 रिवा.

''तुम्हारी बुद्धि में आना चाहिए - बाप ज्ञान का सागर, मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। वह इस ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। वही पतित-पावन। जो बाप का धन्धा है, वही तुम

बच्चों का भी धन्धा है। तुम भी पतित से पावन बनाते हो।... तुम सबको यह लक्ष्य दो कि शिवबाबा कहते हैं - मुझे याद करो।''

सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

''कोई-कोई पूछते हैं - आपके पास निर्विकारी ब्राह्मण कितने हैं? बोलो ... ब्राह्मणों में कोई सच्चे भी हैं तो कोई झूठे भी हैं। जो आज सच्चे हैं, कल झूठे बन जाते हैं। विकार में गया तो वह ब्राह्मण नहीं ठहरा। वह तो फिर शूद्र का शूद्र हो गया। अब ये बातें कहाँ तक बैठ सुनायेंगे। इनसे पेट नहीं भरेगा, न मुख मीठा होगा। यहाँ तो हम बाप को याद करते हैं और बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं।''

सा.बाबा 23.09.10 रिवा.

''बाप बैठ गीतों का सार समझाते हैं। वह है सभी आत्मओं का बाप, तो सब बच्चे आपस में भाई-भाई हो जाते हैं। बाप जब प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा नई दुनिया रचते हैं तो तुम भाई-बहन हो जाते हो। यह बुद्धि में रहने से स्त्री-पुरुष का भान निकल जाता है। ... क्रिमिनल दृष्टि निकल जाती है। ... तुम बुलाते भी आये हो कि हे पतित-पावन आओ।''

सा.बाबा 18.06.10 रिवा.

''अभी बाप ने तुमको समझाया है कि ज्ञानी और अज्ञानी किस-किस को कहा जाता है। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। ज्ञान है पढ़ाई, जिससे तुम जान गये हो कि हम आत्मा हैं, वह परमपिता परमात्मा है। ... बाबा कल्प-कल्प हमसे मिलते हैं और हमको बेहद पवित्र बनाये, बेहद का वर्सा देते हैं।''

सा.बाबा 5.06.10 रिवा.

''अभी प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन बनते हो विकार की बांस निकल जाती है। एक बाप के बच्चे भाई-बहन विकार में कैसे जा सकते हैं। यह तो महान पाप है। पवित्र बनने की यह युक्ति भी ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 29.05.10 रिवा.

''पहली-पहली मुख्य बात बाप समझाते हैं कि तुम अपने को आत्मा समझो और मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जायेंगे। असुल में तुम आत्मायें भाई-भाई हो, फिर ब्रह्मा की सन्तान कुमार-कुमारियाँ भाई बहन हो गये।... जबकि तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हो तो क्रिमिनल एसॉल्ट हो न सके। नहीं तो बड़ी कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी।''

सा.बाबा 12.03.10 रिवा.

''बाप आकर पवित्र दुनिया स्थापन करते हैं। ... यह बड़ा भारी यज्ञ है, सारे विश्व में प्योरिटी लाने का। तो यज्ञ को सम्भालने वाले पवित्र ब्राह्मण चाहिए। ... ब्रह्मा की सन्तान तो पवित्र मुख वंशावली थे ना।''

सा.बाबा 31.01.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे इस ब्राह्मण कुल को कलंकित नहीं करना। बाप पवित्र रहने की युक्तियाँ बताते हैं। ... स्त्री-पुरुष दोंनों मन्मनाभव रहें, शिवबाबा को याद करते रहें, अपने को ब्राह्मण समझें तो साथ में रहते भी विकार की दृष्टि नहीं जायेगी। मनुष्य इन बातों को न समझने के कारण हंगामा मंचाते हैं। धर्म स्थापना में गालियाँ भी खानी पड़ती हैं।''

सा.बाबा 24.12.09 रिवा.

''कलियुग है, यहाँ भाई-बहन भी खराब हो पड़ते हैं। परन्तु लॉ मुजिब भाई-बहन के बुरे ख्यालात नहीं रहेंगे। ... तुम ब्रह्माकुमार-कुमारियां हो तो यह ज्ञान पक्का हो जाना चाहिए कि हम भाई-बहन हैं। हम आत्मायें भगवान के बच्चे भाई-भाई हैं। ... हम आत्मा इन कर्मेन्द्रियों से अलग हैं।''

सा.बाबा 29.7.05 रिवा.

''वास्तव में याद वा सेवा की सफलता का आधार है - पवित्रता। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचारी नहीं लेकिन पवित्रता का सम्पूर्ण रूप है - ब्रह्मचारी के साथ-साथ ब्रह्माचारी बनना। ... आचरण में फालो ब्रह्मा बाप को करना है।''

अ.बापदादा 20.2.87

''इस ज्ञान में तो सदा पवित्र रहना है और हर्षित रहना है। पतित-पावन बाप का बच्चा बनकर बाप को मदद देनी है पवित्रता की। ... सदैव समझना चाहिए कि हम रुद्र ज्ञान यज्ञ के ब्राह्मण हैं, हमारे से ऐसा कोई काम नहीं होना चाहिए, जो दिल को खाता रहे। अपने दिल रूपी दर्पण में देखना है कि हम कहाँ तक लायक बने हैं। ... सदा स्वदर्शन चक्र फिरता रहे तो सदा मुस्कराते रहें।''

सा.बाबा 18.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और निश्चय

निश्चयबुद्धि विजयन्ति कहा गया है अर्थात् ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर जब सत्य ज्ञान देते हैं, उस ज्ञान को समझकर जो निश्चयबुद्धि बनते हैं, वे ही उस ज्ञान के अनुसार अपना जीवन बनाने में सफल होते हैं। अभी हमको पतित-पावन परमात्मा ने सत्य ज्ञान देकर ब्रह्मचर्य का जो महत्व बताया है, उस पर निश्चय होगा तो हम सहज ब्रह्मचर्य की पालना कर सकेंगे और सम्पूर्ण एवं सम्पन्न पवित्रता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकेंगे अर्थात् 16 कला सम्पूर्ण बन सकेंगे।

''जो समझते हैं हम ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ हैं, शिवबाबा हमारा दादा है। ऐसे निश्चय वालों को ही ईश्वरीय औलाद कहा जाता है। ... भाई-बहन होने से विकार में नहीं जा सकते हैं। वे विकार में गये तो वह क्रिमिनल एसाल्ट हो जाता है, उसको बहुत खराब कहा जाता है। ब्रह्मा कुमार-कुमारी बनकर अगर विकार में गये तो उनको बहुत कड़ी सज़ा भोगनी पड़ेगी।''

सा.बाबा 6.01.12

''पवित्र बनने का सबको हक़ है। सन्यासी भी विकारों से घृणा करते हैं, पवित्र रहना तो अच्छा है। देवतायें भी पवित्र थे। पतित से पावन बाप ही आकर बनाते हैं। स्वर्ग में सब निर्विकारी रहते हैं। ... तुम अभी निश्चय करते हो कि हम प्रजापिता ब्रह्मा के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारी हैं। ब्राह्मणों को ही दान दिया जाता है।''

सा.बाबा 17.01.12 रिवा.

''काम विकार के लिए ही झगड़ा होता है। इसमें हिम्मत बहुत चाहिए। जब कोई बाप की शरण में आते हैं तो फिर माया भी लड़ना शुरू करती है, पाँच विकारों की बीमारी उथल खाती है। इसलिए पहले तो पक्का निश्चयबुद्धि और पूरा नष्टोमोहा होना चाहिए। समझना है कि हम जीते जी मरे हुए हैं, हमारा लंगर इस कलियुगी दुनिया से उठ चुका है।''

सा.बाबा 20.08.11 रिवा.

''अभी तुमको बाप द्वारा सारी नॉलेज मिली है। सारी दुनिया में ऐसा कोई नहीं है, जिसको परमात्मा की नॉलेज हो। ... मनुष्य तो परमात्मा को जानी-जाननहार समझ लेते हैं। वे समझते हैं कि वह हमारे दिल की बात को जानते हैं। परन्तु बाप कहते हैं - हमको क्या पड़ी है, जो मैं हर एक के दिल को बैठ रीड करूँ। हम आये ही है पतितों को पावन बनाने। अगर कोई पवित्र नहीं रहते, झूठ बोलते हैं, वे अपना ही नुकसान करते हैं।''

सा.बाबा 11.08.11 रिवा.

''पहले तो वृत्ति चंचल होने का कारण क्या है, वह जानना है। वृत्ति चंचल वा साधारण होने का कारण यही है कि आने से ही जो पहला व्रत लेते हो वा प्रतिज्ञा करते हो, उससे नीचे आ जाते हो। व्रत को भंग कर लेते हो वा प्रतिज्ञा को भूल जाते हो। पहला-पहला व्रत है कि मन-वाणी-कर्म में पवित्र रहेंगे और दूसरा व्रत है - एक बाप, दूसरा न कोई।''

अ.बापदादा 6.08.72

''अभी तुमको बाप का हाथ मिला है। बाप के सहारे बिगर तुम विषय वैतरणी नदी में गोते खाते रहते थे। ... तुमको निश्चय है कि हम बाप को याद करते-करते पवित्र बन जायेंगे, फिर पवित्र राज्य में आयेंगे। यह ज्ञान भी अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर तुमको मिलता है।''

सा.बाबा 1.01.11 रिवा.

''दुनिया की और आत्माओं की जितनी कलायें कम होती गयीं, उतना दुख बढ़ता गया। अब फिर जितनी कलायें बढ़ेंगी, उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। ... पण्डित की कहानी है ना। निश्चय में ही विजय है। बाप में संशय आने से विनश्यन्ति हो जाते हैं। बाप की याद से ही पाप कटते हैं और आत्मा पावन बन जाती है, कर्मेन्द्रियों की चंचलता बन्द हो जाती है।''

सा.बाबा 7.08.10 रिवा.

''जो पक्के निश्चयबुद्धि बन जाते हैं वे कोई की परवाह नहीं करते। बिल्कुल ही नष्टोमोहा हो जाते हैं। एकदम नष्टोमोहा सेकेण्ड में। जो स्वर्गवासी नहीं बनते तो जहन्नुम में जाने दो। राजाई को भी थूक मार देंगे। भक्ति मार्ग में मीरा का मिसाल है। ... कहेंगी हमको तो पवित्र बनना है, फट से कहेंगी हमको राजाई की कोई परवाह नहीं है। जैसे उन राजाओं की रानियों को परवाह नहीं रही, छोड़ दिया। वैसे अब रानियाँ निकलेंगी, जो राजाओं की परवाह नहीं करेंगी। बस हम तो स्वर्ग की मालिक बनती हैं। भक्ति मार्ग में राजाओं का नाम है, जिन्होंने सन्यास किया है। अभी यह तो है ज्ञान मार्ग।''

सा.बाबा 14.4.73 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वर्ग-नर्क

गायन है देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। इससे स्पष्ट होता है कि ब्रह्मचर्य ही स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा है, परन्तु पवित्रता उससे ऊपर की बात है। पवित्रता अर्थात् सम्पूर्ण स्थिति, जो आत्मा की परमधाम जाते और परमधाम से आते समय होती है, उसके बीच में आत्मा में कुछ न कुछ कमी रहती ही है या आने से ही हो जाती है। परमधाम से आकर जैसे ही आत्मा देह में प्रवेश करती है, उसकी पवित्रता अर्थात् सतोप्रधानता की कलायें गिरने लगती हैं और गिरते-गिरते आत्मा तमोप्रधान बनती है।

''इस समय तुम ब्राह्मण सम्प्रदाय हो, जो फिर जाकर दैवी सम्प्रदाय बनते हो, इसलिए इस जन्म में ही दैवी गुण धारण करने हैं। नम्बरवन दैवी गुण है पवित्रता। ... बाप ने तुम बच्चों को स्मृति दिलाई है कि तुम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे, चक्र लगाकर आये, अब फिर तुमको वही बनना है। यह मीठी स्मृति आने से आत्मा में पवित्र बनने की हिम्मत आती है।''

सा.बाबा 20.08.10 रिवा.

''यह पतित पुरानी दुनिया है, मनुष्य विषय वैतरणी नदी में गोता खाते रहते हैं। मनुष्य यह भी नहीं समझते कि विकार में जाना पाप है। ... बुलाते भी हैं - हे पतित-पावन आकर इस पतित दुनिया को पावन बनाओ। आत्मा जब पतित बनी है, तब तो पुकारती है। स्वर्ग में एक भी पतित होता नहीं है।''

सा.बाबा 21.08.10 रिवा.

''तुमको कोई से लड़ाई आदि नहीं करनी है। तुमको तो अपने स्वधर्म में टिकना है और बाप को याद करना है। इसमें भी टाइम लगता है। ऐसे नहीं कि सिर्फ कहने से टिक जाते हैं। अन्दर में यह स्मृति रहनी चाहिए कि मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ। ... पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान

बनी है, अभी फिर पवित्र बनकर हमको वापस घर जाना है।''

सा.बाबा 18.08.10 रिवा.

''सन्यासी पहले सतोप्रधान होते हैं तो पवित्रता के बल से भारत को थमाते हैं। भारत जैसा पवित्र देश और कोई होता ही नहीं है। जैसे बाप की महिमा है, वैसे ही भारत की भी महिमा है। भारत ही हेविन था, जहाँ लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे, फिर वे कहाँ गये। हम ही पूज्य देवी-देवता बनते हैं, फिर हम ही पुजारी बनते हैं, यह भी तुम अभी जानते हो।''

सा.बाबा 12.08.10 रिवा.

''तुम कहेंगे - हम कल्प-कल्प इस भारत को पवित्र बनाये पवित्र भारत पर राज्य करते हैं। ... साधू-सन्यासी अपने को श्री-श्री कहते और मनुष्यों को श्री कहते हैं क्योंकि खुद पवित्र रहते हैं, इसलिए अपने को श्री-श्री कहते हैं। भल वे विकार में नहीं जाते हैं परन्तु हैं तो वे भी विकारी दुनिया में ही। तुम भविष्य में निर्विकारी दुनिया में राज्य करेंगे।''

सा.बाबा 14.08.10 रिवा.

''नम्बरवन अवगुण है, जो बाप को नहीं जानते और दूसरा अवगुण है जो विषय सागर में गोता खाते हैं।... अब मैं ज्ञान सागर तुमको क्षीर सागर में ले जाता हूँ। तो तुमको क्षीर सागर में चलने के लिए पुरुषार्थ करना है। फिर तुम आधा कल्प विषय सागर में गोता नहीं खायेंगे।''

सा.बाबा 14.08.10 रिवा.

''इस समय मनुष्य कितने बेसमझ बन गये हैं। जब कोई मरता है तो कहते हैं स्वर्ग पधारा। लेकिन अभी स्वर्ग है कहाँ। यह तो नर्क है। जब कोई मरता तो कहते स्वर्गवासी हुआ तो जरूर यहाँ नर्क है। ... इस एक अन्तिम जन्म में पवित्र बनो तो स्वर्ग के मालिक बनेंगे। तुम अपने लिए ही मेहनत करते हो। दूसरा कोई स्वर्ग में आ नहीं सकता।''

सा.बाबा 5.08.10 रिवा.

''बाप इन द्वारा हमको ज्ञान और योग सिखला रहे हैं। ज्ञान तो बहुत सहज है। अभी नर्क का फाटक बन्द हो स्वर्ग का फाटक कैसे खुलता है।... मैं बच्चों को पतित से पावन बनने की युक्ति बताता हूँ। बाप को याद करो तो जन्म-जन्मान्तर के पाप नाश हो जायेंगे, इस जन्म के पाप भी बाप को बताने हैं।''

सा.बाबा 06.05.10 रिवा.

''विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है। देवतायें पावन हैं, इसलिए उनकी महिमा गाई जाती है। ... देहाभिमानी बनने से तुम्हारे से पाप हुए हैं। अब तुमको देही-अभिमानी बनना है। ... तुम बच्चे पुरुषार्थ करते-करते जब बिल्कुल पवित्र बन जायेंगे, तब यह माला बन जायेगी। पुरुषार्थ नहीं किया तो प्रजा में चले जायेंगे।''

सा.बाबा 19.04.10 रिवा.

''स्वर्ग को नर्क और नर्क को स्वर्ग कौन बनाता है, यह भी तुम जान गये हो। ... सारा मदार पवित्रता पर है। भाई-बहन बनने बिगर पवित्रता कहाँ से आये।''

सा.बाबा 12.09.09 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और विश्व-नाटक

यह सृष्टि एक अनादि-अविनाशी नाटक है, जिसमें आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का खेल चलता है। इसके विधि-विधान अनुसार हर चीज सतोप्रधान से तमोप्रधान अर्थात् पवित्र से अपवित्र बनती है। कल्पान्त में सर्वशक्तिवान ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर यथार्थ ज्ञान देकर पवित्रता का पाठ पढ़ाते हैं, जिससे आत्मायें पवित्र बनती हैं और उनके योगबल से जड़-जंगम प्रकृति भी पवित्र बनती है अर्थात् अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में आ जाती है।

आत्मायें पावन बनकर परमधाम वापस जाती हैं और वहाँ से नम्बरवार पार्ट बजाने के लिए आती रहती हैं। पहले-पहले जो भी आत्मा परमधाम से आती है, वह सतोप्रधान होती है, इसलिए वह सुख भोगती है, फिर विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार उसमें पहले देहभान और फिर देहाभिमान की खाद पड़ती जाती है और आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाती है।

यह विश्व-नाटक दो बराबर भागों में विभाजित है, जिसको विभाजन करने वाली रेखा है ब्रह्मचर्य। सतयुग-त्रेता दिन कहलाता है, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य चलता है, जिनके लिए गायन है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल से मृत्यु को जीता है। फिर जब आधा कल्प बीत जाता है तो त्रेता के अन्त और द्वापर की आदि का संगम आता है। जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् देहाभिमानी बन जाते हैं, जिससे उनकी ब्रह्मचर्य की शक्ति खत्म हो जाती है और वे काम विकार में प्रवृत्त हो जाते हैं, जहाँ से रात का आरम्भ होता है। जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् काम विकार में प्रवृत्त होते हैं तो इस विश्व-नाटक में अनेक अभूतपूर्व घटनायें होती हैं, जिससे दैवी सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जाते हैं।

''विकार में जाकर छिप कर सभा में आकर बैठते हैं, वे बहुत कड़ी सज़ा के भागी बन जाते हैं। यह भी ड्रामा में उनका पार्ट है। कल्प पहले भी ऐसे असुर थे, अब भी हैं। वे अपना भी घात करते हैं और औरों को भी नुकसान पहुँचाते हैं।... मुख्य बात है काम विकार की। कल्प पहले भी द्रोपदी ने पुकारा था कि हमको नगन करते हैं। पुकारा भी तब था, जब सुनने वाला आया था।''

सा.बाबा 11.06.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - देखो काम कटारी चलाते-चलाते तुम्हारी यह हालत हो गयी है, अभी ज्ञान चिता बैठ गोरे बनो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की युक्ति बाप ही बताते हैं। ... यह किसकी भी समझ में नहीं आता है कि बाप कैसे आकर फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना कराते हैं। अभी तुम इन बातों को समझते हो और किसको भी समझा सकते हो।''

सा.बाबा 26.05.11 रिवा.

''बाप स्वर्ग बनाते हैं फिर रावण नर्क बना देती है।... अभी तुमको इस रावण पर जीत पानी है। गाया भी जाता है - दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी तुम्हारे ऊपर 5 विकारों रूपी रावण का ग्रहण लगा है, ये 5 विकार दान में दे देने हैं। पहला तो दान दो कि हम कब विकार में नहीं जायेंगे। यह काम कटारी ही मनुष्य को पतित बनाती है।''

सा.बाबा 26.05.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, यह आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। अब इस पर जीत पाए पावन बनो। तुमने जन्म-जन्मान्तर बहुत पाप किये हैं, तुम ही सबसे ज्यादा तमोप्रधान बने हो। ... मैं कल्प-कल्प आकर भारत को स्वर्ग बनाता हूँ, फिर रावण इसको नर्क बनाते हैं। यह भी ड्रामा बना हुआ है। इन सब राज़ों को बाप ही समझाते हैं।''

सा.बाबा 23.05.11 रिवा.

''आत्मा में ही खाद पड़ती है, आत्मा ही सतो, रजो, तमो में आती है। अब आत्मा में जो खाद पड़ी है, वह निकले कैसे ? ... पावन बनने का रास्ता बाप ही बताते हैं। तुम रोज याद का स्नान वा यात्रा करो। बाप ज्ञान-स्नान भी कराते हैं और योग की यात्रा भी सिखाते हैं। बाप जो ज्ञान देते हैं, उसमें योग का ज्ञान और सृष्टि-चक्र का ज्ञान भी आ जाता है।''

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं स्वर्गवासी नहीं बनता हूँ। मैं तो परमधाम में रहता हूँ, स्वर्गवासी-नर्कवासी तुम बनते हो। आत्मा का निवास स्थान शान्तिधाम है। फिर सुखधाम में आते हैं। यह है दुखधाम, इसका अब विनाश होना है। ... सारे कल्प कुछ भी करें, लेकिन सीढ़ी नीचे उतरनी ही है, सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है।'' सा.बाबा 4.05.11 रिवा.

''सतयुग में पहले जब सतोप्रधान होते हैं तो सुख का नाता होता है, फिर नीचे उतरते जाते हैं, तो जो सुख का नाता है, वह अहिस्ते-आहिस्ते कम होता जाता है। ... बच्चे जानते हैं - जिसको परमपिता परमात्मा सर्वशक्तिवान कहा जाता है, वह भी ड्रामा अनुसार सर्विस करते हैं, वह भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ है।'' सा.बाबा 21.04.11 रिवा.

''अभी बाप ने तुमको नई दुनिया का साक्षात्कार करा दिया है। इसलिए अभी तुम सारी पुरानी

दुनिया का सन्यास करते हो। नई दुनिया है वाइसलेस वर्ल्ड। ... नम्बरवन काँटा है काम कटारी। काम के लिए कटारी कहते हैं, क्रोध को भूत कहेंगे। देवी-देवतायें डबल अहिंसक थे। निर्विकारी देवताओं के आगे विकारी मनुष्य माथा टेकते हैं।''

सा.बाबा 19.11.10 रिवा.

''तुम बाप द्वारा देही-अभिमानी बनते हो तो बिल्कुल समझदार बन जाते हो। ... आधा कल्प लगा है बेसमझ बनने में। इस अन्तिम जन्म में फिर समझादार बनना है। ... देहाभिमान में आकर ड्रामा प्लेन अनुसार तुम गिरते आये हो। अभी तुमको समझ मिली है, फिर पुरुषार्थ बहुत करना है। (Q. बेसमझ बनने में आधा कल्प लगा है या पूरा कल्प कहेंगे ? वास्तव में तो पूरा ही कल्प कहा जायेगा।)''

सा.बाबा 19.10.10 रिवा.

''अभी तुम हो ईश्वरीय सन्तान, फिर होंगे दैवी सन्तान। डिग्री कम हो गई ना।... सीढ़ी नीचे उतरना ही है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सीढ़ी का ज्ञान है। धीरे-धीरे उतरती कला होती है। शुरू से लेकर सारे सृष्टि-चक्र को अच्छी रीति समझना है। इस समय तुम्हारी चढ़ती कला है क्योंकि बाप साथ है।''

सा.बाबा 16.09.10 रिवा.

''पावन बनने बिगर निर्माणधाम में कोई आ न सके। रचना के आदि-मध्य-अन्त को भी समझना है। पूरा समझने से ही ऊंच पद पायेंगे। ... तुम जानते हो, अभी यह दुनिया खत्म होनी है, इसलिए अब इस बेहद की दुनिया का सन्यास करना है। पवित्र बनने बिगर घर वापस जा न सकें। पवित्र बनने के लिए याद की यात्रा चाहिए।''

सा.बाबा 20.09.10 रिवा.

''सब आत्माओं में अपना-अपना पार्ट नूँधा हुआ है। जैसे कठपुतलियाँ होती हैं, नाचती रहती हैं। ऐसे आत्मायें भी नाचती रहती हैं। यह भी ड्रामा है, हर एक का इस ड्रामा में पार्ट है। पार्ट बजाते-बजाते तुम तमोप्रधान बने हो।... तुम भी ऐसे चढ़ते हो, फिर उतरते-उतरते नीचे आ जाते हो।... उतरती कला और चढ़ती कला का राज़ अभी बाप ने ही समझाया है।''

सा.बाबा 9.09.10 रिवा.

''अभी यहाँ पतित दुनिया है, इसलिए पावन दुनिया को याद करते हैं। पावन दुनिया में जब जायेंगे तो पतित दुनिया को याद नहीं करेंगे।... हर चीज नई से पुरानी स्वत: होती है। नई दुनिया बनानी होती है। नई दुनिया का रचयिता है परमपिता परमात्मा। वही पतित-पावन है।... दुनिया पावन सो पतित, पतित सो पावन बनती है। यह एक खेल है।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सतयुग-त्रेता

सतयुग में सभी आत्मायें घर-गृहस्थ में रहते ब्रह्मचारी तो रहती हैं क्योंकि वहाँ कोई काम विकार में नहीं जाता अर्थात विषय-भोग नहीं करता है। वहाँ सन्तानोत्पत्ति भी योगबल की होती है परन्तु सभी को 100 प्रतिशत पवित्र या कर्मातीत नहीं कहा जा सकता है क्योंकि जब से आत्मा इस धरा पर आकर देह में प्रवेश करती है, तब से ही उसमें देहभान की खाद पड़ना आरम्भ हो जाती है और उसके फलस्वरूप उसकी उतरती कला आरम्भ हो जाती है परन्तु वहाँ आत्माओं में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए कर्मेन्द्रियों पर नियन्त्रण होता है, इसलिए वे काम-विकार में नहीं जाती हैं।

सतयुग के बाद त्रेता आता है, जहाँ आत्मा में पवित्रता की दो कलायें कम हो जाती हैं। त्रेता के पूरा होते-होते दो कलायें और कम हो जाती हैं। इस सम्बन्ध में बाबा ने मुरली में कहा है कि त्रेता के अन्त तक आते-आते आत्माओं कुछ न कुछ खिटखिट जरूर होती होगी परन्तु वे विकार में नहीं जाते हैं। विकार में त्रेता के बाद द्वापर आरम्भ होता है, तब जाते हैं। ''तुम किसको भी पूछ सकते हो कि ये लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक हैं, इनको यह राज्य कैसे मिला। ... दिन-प्रतिदिन सेवा के लिए नई-नई युक्तियाँ निकलती रहेंगी, अच्छे-अच्छे चित्र बनते जायेंगे, जिनसे कोई झट समझ जाये। यह सीढ़ी बहुत अच्छी है। इस समय कोई ऐसे कह नहीं सकते कि हम पावन हैं। पावन दुनिया तो सतयुग को कहा जाता है, जिसके मालिक यह लक्ष्मी-नारायण हैं।''

सा.बाबा 13.09.11 रिवा.

''कृष्ण का भी जन्म होगा। कृष्ण का कितना नाम गाया जाता है, उनके बाप का इतना नाम नहीं गाया जाता है। कृष्ण जरूर किसी राजा का बच्चा होगा। ... परन्तु वह पतित राजा होने के कारण उनका इतना नाम नहीं है। कृष्ण जब है तब थोड़े पतित भी रहते हैं। जब वे बिल्कुल खलास हो जाते हैं, तब वह गद्दी पर बैठते हैं। वे जब अपना राज्य ले लेते हैं, तब ही उनका सम्वत् शुरू होता है। सम्वत् लक्ष्मी-नारायण से शुरू होता है।''

सा.बाबा 16.08.11 रिवा.

''हर चीज पहले सतोप्रधान होती है, फिर सतो, रजो, तमो बनती है। भक्ति भी पहले अव्यभिचारी होती है, फिर व्यभिचारी होती है। ... आत्मा में ही खाद पड़ती है और सतो, रजो, तमो में आती है। पवित्र बनने बिगर कोई नई दुनिया में जा नहीं सकते। बाप की याद से ही आत्मा की खाद निकलेगी।... अगर अच्छी रीति याद नहीं करेंगे तो आत्मा पर जो कट है, वह नहीं निकलेगी।''

सा.बाबा 9.05.11 रिवा.

''सतयुग के देवी-देवतायें पावन थे, इसलिए उनके खास मन्दिर बनते हैं। देवताओं को पतित मनुष्य छू भी न सकें।... अभी सबको वापस घर जाना है। यह है क़यामत का समय। सबको पवित्र बनकर ही वापस जाना है। भारत में ही होलिका मनाते हैं।''

सा.बाबा 22.04.11 रिवा.

''आपकी होली दुनिया से न्यारी, परमात्मा की प्यारी है। तो नशा रहता है ना कि हमारी होली प्रभु-संग के रंग के कारण आधा कल्प ऐसा पवित्र बनाती है, जो अब तक भी हमारे चित्र कायदे प्रमाण पूजे जाते हैं। और कोई के चित्र ऐसे प्रेम पूर्वक पूजे नहीं जाते हैं। ... जो कहते हैं - हम सदा उमंग-उत्साह में रहते हैं और दूसरों को भी उमंग-उत्साह दिलाते हैं, वे हाथ उठाओ। कभी-कभी नहीं, सदा।''

अ.बापदादा 16.03.11

''अभी तुम्हारी रिटर्न जर्नी है। जैसे सतयुग से त्रेता, द्वापर, कलियुग तक नीचे उतरते आये हो, वैसे ही अब तुमको आइरन एज से ऊपर चढ़कर गोल्डन एज तक जाना है। जब सिलवर एज तक पहुँचेंगे तो इन कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म हो जायेगी। जितना बाप को याद करेंगे, उतना कट निकलती जायेगी और जितना कट निकलती जायेगी, उतना बाप चुम्बक की तरफ कशिश बढ़ती जायेगी।''

सा.बाबा 18.01.11 रिवा.

''कोई-कोई तो औरों को दुबन से निकालने के निमित्त बन, खुद ही डूब जाते हैं। ... यह काम विकार की है सबसे बड़ी दुबन। सतयुग में ये बातें होती नहीं है। ... कलियुग में हैं सब पापात्मायें, सतयुग में होते हैं सब पुण्यात्मायें। दोनों में रात-दिन का फर्क है। अभी तुम हो संगम पर। तुम अभी कलियुग और सतयुग दोनों को जानते हो।''

सा.बाबा 29.11.10 रिवा.

''ऐसे अपने आप से भी पूछो कि अगर कोई भी साधारण संकल्प करते हैं तो क्या हाइएस्ट कहा जायेगा? संकल्प भी साधारण न हो। जब संकल्प श्रेष्ठ हो जायेगे तो बोल और कर्म ऑटोमेटिकली श्रेष्ठ हो जायेंगे। ऐसे अपने को होलीएस्ट और हाइएस्ट, सम्पूर्ण निर्विकारी बनाओ। विकार का नाम-निशान न हो।... तब वहाँ अनेक जन्मों तक इस स्थिति में चलते रहेंगे।''

अ.बापदादा 9.05.72

''ईश्वर का बनकर फिर पतित नहीं बनना चाहिए। सतयुग में सब पवित्र थे। गाते भी हैं वाइसलेस वर्ल्ड और विशश वर्ल्ड। पतित ही बुलाते हैं आकर पावन बनाओ, क्रोधी नहीं बुलाते हैं। बाप भी फिर ड्रामा प्लेन अनुसार अपने समय पर आते हैं। ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता है।... ड्रामा के पास्ट-प्रैजेन्ट-फ्युचर को जानने वाले को ही त्रिकालदर्शी कहा जाता है।''

सा.बाबा 23.07.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वर्ग की स्थापना अर्थात् स्वर्ग की राजधानी की स्थापना

परमपिता परमात्मा राजयोग सिखलाकर धर्म और राज्य दोनों की स्थापना करते हैं। कलियुग के अन्त में प्राय: सभी देशों में प्रजातन्त्र अर्थात् प्रजा का प्रजा पर राज्य हो गया है। जब ऐसी स्थिति हो जाती है तब परमात्मा आकर दैवी राज्य की स्थापना करते हैं। दुनिया में तो राज्य की स्थापना के लिए अनेक प्रकार से रक्तपात होता है परन्तु परमात्मा जिस राज्य की स्थापना करते हैं वह किसी हिंसक लड़ाई या रक्तपात से नहीं स्थापन होती, वह राजयोग की पढ़ाई से स्थापन होती है अर्थात् वह योगबल अर्थात् पवित्रता के बल पर स्थापन होती है। जो आत्मायें राजयोग का अभ्यास कर पवित्र बनती हैं और अपने तन-मन-धन से परमात्मा के इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनती हैं और राजयोग के सतत अभ्यास के कर्मेन्द्रियों के राजा बनती हैं, वे ही सतयुगी और त्रेतायुगी राजाई में ऊंच पद पाती हैं परन्तु सभी नम्बरवार पुरुषार्थ ही पद पाते हैं। जो आत्मायें परमात्मा की श्रीमत पर चलकर सृष्टि-चक्र के ज्ञान को धारण कर अन्य आत्माओं की सेवा करती हैं, वे आत्मायें ही नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार अपनी त्याग-तपस्या-सेवा के फलस्वरूप सतयुग का राजभाग प्राप्त करती हैं अर्थात् राजा बनती हैं। बाबा ने कहा है - द्वापर-कलियुग में राजा स्थूल धन का दान करने से बनते हैं और सतयुग-त्रेतायुग के राजायें इस राजयोग की पढ़ाई और अविनाशी ज्ञान रत्नों के दान करने से बनते हैं। यह विशेष बुद्धि में धारण करने की बात है कि दैवी दुनिया में राज्य सत्ता और धर्म सत्ता एक के ही हाथ में होती है, उसके लिए ज्ञान और योग दोनों की धारणा से होती है। ज्ञान-योग की धारणा कर जो जितना पवित्र बनते हैं, वे उतना ही सेवा में सफल होते हैं अर्थात् उतनी ही उनकी प्रजा बनती है।

''एक बार भी काम विकार में गिरा तो ऐसे नहीं कि फिर राजाई पद पा लेंगे। कहा जाता है ना - चढ़े तो चाखे बैकुण्ठ रस, गिरे तो चकनाचूर अर्थात् एकदम चण्डाल बन पड़ते, हड्डु-गुड्डु टूट पड़ते हैं। ... इन्द्रप्रस्थ की परियों का भी मिसाल है ना। यह है सारी ज्ञान की बात। इस सभा में किसी पतित को बैठने का हुक्म नहीं है।''

सा.बाबा 21.09.11 रिवा.

''पतित अक्षर विकार पर ही कहा जाता है। सतयुग में वाइसलेस वर्ल्ड थी, यह है विशश वर्ल्ड। सभी पतित विकारी हैं। कृष्ण को 16108 रानियाँ दे दी हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है।... बाप समझाते हैं - बच्चे, तुमको अन्धों की लाठी बनना है। जो खुद ही सज्जे नहीं हैं, वे फिर

औरों की लाठी क्या बनेंगे! ... हर एक की चलन से मालूम पड़ जाता है कि यह क्या पद पायेंगे।''

सा.बाबा 23.04.12 रिवा.

''तुमको काम विकार पर जीत पानी है। मातेले और सौतेले बच्चे भी हैं। मातेले कब विकार में नहीं जा सकते। ... देवताओं की महिमा और शिवबाबा की महिमा एकदम अलग है। देवताओं की महिमा है सम्पूर्ण निर्विकारी, शिवबाबा के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। शिवबाबा को कहा जाता है मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, सत् चित् आनन्द स्वरूप, ज्ञान का सागर।''

सा.बाबा 28.04.12 रिवा.

''तुम योगी हो, विकार में जाने से एकदम नाम बदनाम कर देते हैं। बाप समझाते हैं - बच्चे योग में रहना है। जो अच्छे योगी होते हैं, वे 4-5 दिन भी भोजन न खायें तो भी उनको परवाह नहीं रहती है, बहुत खुशी में रहते हैं। अवस्था ऐसी रहनी चाहिए। ... कल्प-कल्पान्तर की बाजी है। अपनी आप ही जाँच करनी चाहिए कि हम राजाई लेने के लायक बना हूँ!''

सा.बाबा 21.04.12 रिवा.

''भल इन लक्ष्मी-नारायण के लिए कहेंगे कि ये आत्माभिमानी थे, फिर देह-अभिमानी बनें। वहाँ भी देह-भान तो रहता है ना। यह ज्ञान, ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ही आकर देते है। ... बाप कहते हैं - इन विकारों पर जीत पाने से तुम विश्व का मालिक बनेंगे। बच्चे बाप से यह ज्ञान सुनकर फिर औरों को समझाते हैं कि अभी इस पुरानी दुनिया का विनाश सामने खड़ा है।''

सा.बाबा 30.08.11 रिवा.

''परमपिता परमात्मा ब्रह्मा तन द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। विनाश स्थापना के बाद ही हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि वह पुरानी दुनिया में ही आते हैं। ... अभी बाप कहते हैं - तुम सतोप्रधान थे, फिर तमोप्रधान पतित बन गये हो, अब 84 जन्म पूरे हुए, अब फिर तुमको सतोप्रधान बनना है, तब ही तुम पावन सतोप्रधान दुनिया में चल सकेंगे।''

सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

''तुम जानते हो - भारत स्वर्ग था, हमारी राजाई थी। हमारी राजधानी कैसे चली, फिर कैसे पुनर्जनम लेते-लेते नीचे उतरते हैं। ... परन्तु जब तक तमोप्रधान से सतोप्रधान न बनें, योग से पावन न बनें, तब तक स्वर्ग की राजाई का वर्सा मिल न सके। बाप कहते हैं - मुझे याद करने से ही तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे, तुम विकर्माजीत बनेंगे।''

सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

''बाप अपने को बचाने के लिए युक्तियाँ तो बहुत बताते हैं। तुम कह सकती हो - भगवानुवाच काम महाशत्रु है, पवित्र बनो तो तुम सतोप्रधान बन जायेंगे। बोलो क्या हम भगवान की नहीं

मानें। हर एक को युक्ति से अपने को बचाना। विश्व का मालिक बनने के लिए थोड़ा सहन किया तो क्या हुआ! वहाँ राजा के लिए लड़ते हैं, यहाँ तुम अपने लिए ही सब कुछ करते हो।''

सा.बाबा 19.04.11 रिवा.

''बाप पतित दुनिया, पतित शरीर में आकर सबको विश्व का मालिक बनाते हैं। बाकी जो स्वर्ग के लायक नहीं हैं, विष पीना छोड़ते नहीं हैं, वे स्वर्ग में आ नहीं सकेंगे। ... पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना करना बाप का ही काम है। ... बाप एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म की फिर से स्थापना कर रहे हैं, और सब धर्म विनाश हो जायेंगे।''

सा.बाबा 7.02.11 रिवा.

''सतयुग में बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं, इसलिए उसको निर्विकारी दुनिया कहा जाता है। अब बाप कहते हैं - तुम पवित्र बनो, यह पतित दुनिया खलास होनी है। जो श्रीमत पर पवित्र रहते हैं, वे ही बाप की मत पर चल विश्व की बादशाही का वर्सा पाते हैं। ... सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य रहते हैं। देवी-देवताओं का राज्य होता है।... देवतायें कभी विकार से पैदा नहीं होते हैं।''

सा.बाबा 5.02.11 रिवा.

''इस एक जन्म पवित्र रहने और बाप को याद करने से तुम भविष्य 21 जन्म पवित्र दुनिया का मालिक बनेंगे। ... अभी तुम बच्चे समझते हो कि यह ड्रामा रामराज्य और रावणराज्य का खेल है, रामराज्य में सुख और रावण राज्य में दुख होता है। ... स्वर्ग की स्थापना करने वाला है परमपिता परमात्मा है, उसमें सुख घनेरे होते हैं।''

सा.बाबा 28.08.10 रिवा.

''अगर कोई विकार में गिरा तो बुद्धि में धारणा हो नहीं सकती। ... ऐसे भी स्वर्ग में तो आयेंगे लेकिन पाई-पैसे का पद पायेंगे। राजधानी स्थापन हो रही है ना। ... बाप गद्दी पर हो और बच्चा दास-दासी बनें तो कितनी लज्जा की बात है। पिछाड़ी में तुमको सब साक्षात्कार होंगे, फिर बहुत पछतायेंगे।''

सा.बाबा 19.08.10 रिवा.

''मुक्तिधाम में तो सबको पवित्र होकर ही जाना है, वहाँ सब पवित्र रहते हैं।... भल पवित्र तो सभी बनते हैं परन्तु फिर भी नाटक में पार्ट तो नम्बरवार है। कोई महाराजा, कोई दास-दासी और कोई प्रजा भी बनते हैं।... सभी पुरुषार्थ अनुसार ही नम्बरवार पद पाते हैं, फिर भी पुरुषार्थ तो करना ही पड़े। ड्रामा में सबको नम्बरवार पार्ट मिला हुआ है। यह बना-बनाया ड्रामा है।''

सा.बाबा 3.07.10 रिवा.

''चेक करो अभी स्व-राज्य है, स्व-राज्य में माया दखल तो नहीं करती है? ... भविष्य की विशेषता है ही एक राज्य और एक धर्म की। धर्म कौनसा है? आपकी विशेष धारणा कौनसी

है ? सम्पूर्ण पवित्रता। तो चेक करो एक धर्म है ? बीच में दूसरा धर्म अपवित्रता का दखल तो नहीं देता है ? साथ में यह भी चेक करो कि लॉ एण्ड ऑर्डर एक का है या माया भी बीच में दखल तो नहीं करती है ?''

अ.बापदादा 15.11.09

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और द्वापर-कलियुग

सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग अर्थात् रामराज्य के बाद द्वापर-कलियुग अर्थात् नर्क अर्थात् रावणराज्य आता है। द्वापर-कलियुग में भी आत्मायें पवित्र हो सकती हैं क्योंकि जो आत्मा परमधाम से इस धरा पर आती है, उस क्षण तो वह पवित्र ही होगी, आने के बाद उसमें देहभान की खाद पड़ना आरम्भ होगी परन्तु उनका जन्म तो काम-विकार से ही होगा और बाद में उनको भी किसी को जन्म देने के लिए काम-विकार में जाना ही होगा, इसलिए उनको उस समय ब्रह्मचारी नहीं कहा जा सकेगा। ब्रह्मचर्य के आधार पर ही देवताओं की पूजा होती है और पतित मनुष्य उनकी पूजा करते हैं।

''झाड़ के चित्र में आधा-आधा कल्प का माप पूरा है। उससे एक्यूरेट समझाने में आयेगा। यह ज्ञान बेहद के बाप के सिवाए और कोई समझा न सके। ... देवतायें भी पुनर्जन्म लेते नीचे उतरते आये हैं, यह किसको भी पता नहीं है। अभी तुम जानते हो - सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में कैसे आते हैं। आत्मा में खाद पड़ती जाती है और कलायें कम होती जाती हैं।''

सा.बाबा 3.10.11 रिवा.

''यह बेहद की पाठशाला है। यह है ही राजाई स्थापन करने के लिए राजयोग की पाठशाला। नई दुनिया की स्थापना फिर इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है। ... इस समय पाँच तत्वों सहित सब तमोप्रधान बने हैं। बाप आकर तत्वों सहित सारी दुनिया को सतोप्रधान बनाते हैं।... अब तुम मुझे याद करो तो पावन बन जायेंगे और विश्व के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 29.10.10 रिवा.

''यह सब बातें जो समझदार हैं, वे ही समझ सकते हैं। बाप ने समझाया है - ऐसी कोई युक्ति रचो, जो मनुष्य सहज समझ जायें कि कैसे हम पूज्य सो पुजारी और पुजारी से पूज्य बनते हैं। ... पावन को पूज्य, पतित को पुजारी कहा जाता है। यहाँ तो सब पतित हैं क्योंकि विकार से पैदा होते हैं। मुख्य है याद की बात।''

सा.बाबा 19.10.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पुरुषोत्तम संगमयुग

संगमयुग पर ही ज्ञान सागर बाप आकर पवित्रता और अपवित्रता का यथार्थ राज़ बताते हैं और आत्माओं को पवित्र बनने के लिए ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखलाते हैं, इसलिए उनको पतित-पावन कहा जाता है। पवित्रता और ब्रह्मचर्य का यथार्थ ज्ञान और महत्व वे आत्मायें ही समझती हैं, जो परमात्मा के डॉयरेक्ट बच्चे बनते हैं और परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनते हैं। पवित्रता के आधार पर ही परमात्मा पुरानी दुनिया से नई दुनिया की कलम लगाते हैं। पवित्रता और ब्रह्मचर्य के आधार पर आत्मायें संगमयुग में परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द और परम-सुख का अनुभव करती हैं।

अपवित्रता आत्मा में सतयुग से ही आना आरम्भ हो जाती है, जबकि ब्रह्मचर्य का खण्डन अर्थात् विकारीपन द्वापर से आरम्भ होता है। यह ज्ञान भी संगमयुग पर ही होता है।

''देवताओं के शरीर तो पवित्र निर्विकारी हैं, वे हैं पूज्य। यथा राजा-रानी, तथा प्रजा पूज्य हैं। यहाँ सब हैं पुजारी। ... बाप सुखधाम का मालिक बनाने, मनुष्य से देवता बनाने के लिए तुमको पुरुषार्थ करा रहे हैं। तुम्हारा यह है संगमयुग। ... यह है कल्याणकारी संगमयुग, जब सबका कल्याण होता है। बाप सबको रावण की जेल से छुड़ाते हैं, इसलिए उनको दुख-हर्ता सुख-कर्ता कहते हैं।''

सा.बाबा 8.03.11 रिवा.

''बाबा को विचार आया कि बच्चों को ऐसे समझाना चाहिए कि पतित-पावन बाप का फरमान है - पवित्र बनो, यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, जो पवित्र बनने का युग है। ... तो तुमको डीटी वर्ल्ड सॉवरण्टी बाप से वर्से में मिल सकती है।... योगबल से अपने को तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनाओ, वह बाप बतलाते हैं।''

सा.बाबा 6.02.11 रिवा.

''अभी यह पुरुषोत्तम संगमयुग है। इसको नव-युग नहीं कहेंगे। संगम को संगमयुग ही कहा जायेगा। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग, जबकि पुरानी दुनिया खत्म हो, नई दुनिया स्थापन होती है। ... सबसे उत्तम दैवी गुण पवित्रता है, तब तो मनुष्य देवताओं के आगे जाकर माथा टेकते हैं। ये सब प्वाइन्ट्स धारण उनकी बुद्धि में होंगी, जो सर्विस करते रहते हैं। कहा जाता है - धन दिये, धन न खुटे।''

सा.बाबा 17.11.10 रिवा.

पवित्रता और विश्व की राजाई

''बच्चे जानते हैं - हम सत्य तीर्थवासी हैं। बाप सच्चा पण्डा है और हम उनके जो बच्चे हैं, वे सच्चे तीर्थ पर जा रहे हैं। ... यह भी यात्रा है, इसमें जाना तब होता है जब सत्य पण्डा बाप खुद आये। वह आता है कल्प के संगम पर। ... सच्ची-सच्ची यात्रा करने वाले जो होते हैं, वे यात्रा पर पवित्र रहते हैं। ... तुम्हारे में भी सच्चे-सच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ वे हैं, जो कभी विकार में नहीं जाते हैं।''

सा.बाबा 23.09.10 रिवा.

''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है तो अपनी कट याद से उतारनी है। अभी कट उतरती भी है और चढ़ती भी है। याद भूल जाती है, कोई पाप कर्म कर लेते हैं तो सौगुणा दण्ड पड़ जाता है। बाप को याद नहीं करते तो कुछ न कुछ पाप कर्म जरूर होता है। ... अभी बाप स्वर्ग की स्थापना करते हैं, तुम्हारी चढ़ती कला है, फिर तो सीढ़ी नीचे ही उतरना है।''

सा.बाबा 4.09.10 रिवा.

''आत्मा अविनाशी है, यह शरीर तो 5 तत्वों से बना हुआ है, जो बनता है, छूटता है, फिर बनता है। अभी अविनाशी आत्माओं को अविनाशी बाप पढ़ा रहे हैं। अभी यह है संगमयुग। ... ज्ञान तो सहज है, उसमें इतना टाइम नहीं लगता है, जितना याद की यात्रा में लगता है। याद की यात्रा से ही आत्मा पावन बनती है।''

सा.बाबा 10.06.10 रिवा.

संगमयुग की पवित्रता और उसका भक्ति मार्ग के पूज्य स्वरूप से सम्बन्ध

जो आत्मायें संगमयुग पर जितनी पवित्र बनती हैं, वे उतने ही सतयुग में श्रेष्ठ पद के अधिकारी बनते हैं और मक्ति मार्ग में उतने ही पूज्य बनते हैं क्योंकि अभी की पवित्रता की धारणा से ही स्वर्ग की प्रजा और भक्ति मार्ग के भक्त बनते हैं। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति। आत्मिक स्वरूप की स्थिति में स्थित होने से ही आत्मायें हमारे जीवन से प्रेरणा लेते हैं। जो प्रेरणा लेकर धारणा करते वे प्रजा और जो उसकी महिमा मात्र करते हैं, वे भक्त बन जाते हैं। इस विधि-विधान का राज भी परमात्मा ने अभी बताया है।

''आप पूज्य आत्मायें संसार के लिए नई रोशनी हो। ... ब्राह्मण बनना अर्थात् पूज्य बनना

क्योंकि ब्राह्मण सो देवता बनते हैं और देवतायें अर्थात् पूजनीय। ... पूजनीय बनने का विशेष आधार पवित्रता के ऊपर है। जितना सर्व प्रकार की पवित्रता को अपनाते हो, उतना ही सर्व प्रकार से पूजनीय बनते हैं। ... सर्व प्रकार की पवित्रता क्या है? हर संकल्प, बोल, कर्म में सर्व ज्ञानी-अज्ञानी आत्माओं के सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा पवित्र वृत्ति-दृष्टि, वायब्रेशन सहज और स्वत: हो। ... स्वप्न में भी ब्रह्मचर्य खण्डित न हो। ... क्रोध के अंश को भी पवित्रता का खण्डन माना जायेगा।''

अ.बापदादा 17.10.87

''भक्त आप प्राप्ति-स्वरूप आत्माओं का सुमिरण करते-करते उसमें खो जाते हैं ... वह अल्पकाल का अनुभव उन आत्माओं के लिए कितना न्यारा और प्यारा होता है अर्थात् लवलीन हो जाते हैं। ... क्योंकि आप आत्मायें बाप के स्नेह में सदा लवलीन रही हैं, प्राप्तियों में सदा खोई हुई रही हैं।''

अ.बापदादा 14.10.87

''84 जन्मों का राज़ भी बाप ने समझाया है। कौन 84 जन्म लेते हैं, यह भी अभी तुम समझते हो। सब तो 84 जन्म नहीं लेंगे। ... यह भी गायन है कि आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... जो पहले-पहले बिछुड़े हैं, उनको ही पहले परमात्मा मिलेंगे। आत्मा ही तमोप्रधान बनी है, आत्मा को ही सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 19.11.10 रिवा.

''पहली मुख्य बात किसको भी समझाओ - ज्ञान अलग है और भक्ति अलग चीज है। आधा कल्प है दिन और आधा कल्प है रात। ... गुरुओं में भी भक्ति की ताक़त है, तब तो इतने फालोअर्स बनते हैं। फालोवर्स को भक्त पुजारी कहेंगे।''

सा.बाबा 2.09.10 रिवा.

''यहाँ बाग़वान भी बैठा है, माली भी है और फूल भी हैं। यह नई बात है ना। ... भक्ति मार्ग में बाग़वान-खिवैया को याद करते हैं। अब वह यहाँ आये हैं, यहाँ से पार ले जाने के लिए। ... अपने को आपही चेक करो कि हम कितना सतोप्रधान अवस्था तक पहुँचे हैं। सारा मदार है याद की यात्रा पर।''

सा.बाबा 16.06.10 रिवा.

''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने की बाप युक्ति बताते हैं। बाप कहते हैं - तुम मुझे याद करो और कुछ करना नहीं है। अभी तुम बच्चों को माथा आदि भी नहीं टेकना है। बाबा को कोई हाथ जोड़ते हैं तो बाबा कहते हैं - न तुम आत्मा को हाथ हैं और न बाप को, फिर हाथ किसको

जोड़ते हो। तुम्हारे में भक्ति मार्ग का एक भी चिन्ह नहीं होना चाहिए।''

सा.बाबा 22.03.10 रिवा.

''तुम अभी किसको माथा नहीं टेक सकते हो, कायदा नहीं। बाकी युक्ति से चलना होता है। पवित्र को सब माथा टेकते हैं। ... तुम भल जानते हो कि हम सबसे ऊंच हैं परन्तु अगर कोई हाथ जोड़े तो रेस्पॉण्ड तो देना पड़े।''

सा.बाबा 9.03.10 रिवा.

''देवी-देवताओं के कितनी शुद्धता से मन्दिर बनाते हैं, कितनी शुद्धता से पूजा करते हैं। ... ब्राह्मण भी विकारी होते हैं, निर्विकारी कहाँ से आयें। निर्विकारी होते ही सतयुग में हैं। वहाँ 5 विकार होते नहीं हैं। ऐसे नहीं कि जो विकार में नहीं जाते हैं, उनको निर्विकारी कहेंगे। शरीर तो उनका भी विकार से ही पैदा होता है।''

सा.बाबा 02.01.10 रिवा.

''सतयुग का पहला पत्ता कृष्ण को ही कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण को नहीं कहेंगे। नया पत्ता छोटा होता है। ... मूल बात है हमको दैवी गुण धारण कर इन जैसा बनना है। चित्र भी हैं। ... ये चित्र बहुत काम में आते हैं। भक्ति मार्ग में इन चित्रों की पूजा होती है और ज्ञान मार्ग में तुमको इनसे ज्ञान मिलता है कि हमको इन जैसा बनना है।''

सा.बाबा 17.12.09 रिवा.

''पतित मनुष्य पवित्र देवताओं के आगे जाकर नमन करते हैं। भल बहुत भक्त हैं, जो वेजीटेरियन हैं परन्तु ऐसे नहीं कि वे विकार में नहीं जाते हैं। ऐसे तो बहुत बाल ब्रह्मचारी भी रहते हैं। ... परन्तु क्या वे पतित से पावन बन सकते हैं? नहीं, पतित-पावन बाप की श्रीमत बिगर कोई पतित से पावन बन नहीं सकते। भक्ति है उतरती कला का मार्ग।''

सा.बाबा 26.12.09 रिवा.

''वहाँ सतयुग में कोई किसको ज्ञान नहीं देते हैं। ज्ञान उनको मिलता है, जो अज्ञान में हैं।... भक्ति बिल्कुल अलग चीज है, ज्ञान अलग चीज है। भक्ति में ज़रा भी ज्ञान नहीं होता है।... अपवित्र मनुष्य, पवित्र देवताओं को माथा टेकते हैं। ... माया रावण तुमको पूज्य से पुजारी बनाता है, फिर बाप ड्रामा प्लैन अनुसार तुमको पूज्य बनाते हैं।''

सा.बाबा 20.11.09 रिवा.

''भक्ति में भगवान को पुकारते हैं कि आकर हमको पावन बनाओ। पतित ही भगवान से मिलते हैं, पावन होने के लिए। पावन से तो भगवान मिलता ही नहीं है। सतयुग में थोड़ेही इन लक्ष्मी-नारायण से भगवान मिलता है। भगवान आकर तुम पतितों को पावन बनाते हैं।''

सा.बाबा 20.11.09 रिवा.

''यह बड़ी जबरदस्त कमाई है। अभी तुम बच्चे बाप से सच्ची कमाई करते हो, जिससे सचखण्ड में सदा सुखी रहते हो। ... यह है सच्चा-सच्चा आत्मा और परमात्मा का मेला, इससे तुम पावन बनते हो, दुनिया नई बनती है। यह मेला मशहूर है। गाते भी हैं आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... यह मेला अभी संगम पर ही लगता है, जिसका भक्ति मार्ग में यादगार मनाते हैं।''

सा.बाबा 11.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सन्यासी / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और धर्म-पितायें पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सन्यास धर्म एवं विभिन्न धर्म

यहाँ विचारणीय है कि सन्यास धर्म अलग है और सन्यासी जीवन अलग है क्योंकि सन्यासी तो प्राय: सभी धर्मों में बनते हैं परन्तु सन्यास धर्म, जो शंकराचार्य के द्वारा स्थापन हुआ है, वह अलग है। यथा नन्स, जैन साध्वी, बौद्ध-भिक्षु आदि सन्सासी हैं परन्तु सन्यास धर्म के नहीं है। सन्यास धर्म वालों की मान्यतायें और अन्य धर्म के सन्यासियों की मान्यतायें अलग-अलग हैं। प्राय: दोनों ही ब्रह्मचर्य व्रत का पालन अपने-अपने हिसाब से करते हैं। सन्यास धर्म भी भारत विशेष धर्म है, जिसके आधार पर भारत विशेष मान है क्योंकि उनके ब्रह्मचर्य व्रत की धारणा के आधार पर भारत के पतन की गति मन्द रहती हैं।

सन्यासी जो बनते हैं, वे ब्रह्मचर्य का पालन तो करते ही हैं, इसलिए वे ब्रह्मचारी हैं परन्तु पवित्र नहीं कहे जा सकते हैं क्योंकि उनमें भी परमधाम से आने और जन्म लेने के बाद देहभान और बाद में देहाभिमान की खाद तो पड़ ही जाती है अर्थात् उनकी पवित्रता डिग्री कम हो जाती है। क्रिश्चियन धर्म में नन्स, जैन धर्म में साध्वी और साधू, बौद्ध धर्म में बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणियाँ भी सन्यासी ही हैं। ये सभी अपने आत्म-कल्याण के संकल्प और अपने धर्मवंश के प्रसार-प्रचारार्थ सन्यासी बनते हैं और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

ऐसे ही किसी धर्म विशेष की स्थापनार्थ उसके धर्म-स्थापक की आत्मा प्रवेश करती है तो वह पवित्र आत्मा होती है और उस पवित्र आत्मा की प्रवेशता से जिसमें वह प्रवेश करती है, वह ब्रह्मचर्य का पालन करती है, जिससे उस धर्म-वंश की स्थापना होती है और वह आगे वृद्धि को प्राप्त होता है। जैसे नानक में गुरु की आत्मा ने प्रवेश किया तो वह गुरु नानकदेव कहलाये, गौतम की आत्मा में बुद्ध की आत्मा ने प्रवेश किया तो वे गौतमबुद्ध कहलाये और जब से उस धर्मपिता की आत्मा ने प्रवेश किया तब से उन्होंने ब्रह्मचर्य को पालन किया है और

कुछ हद तक ब्रह्मचर्य के महत्व को भी बताया। ऐसे ही अन्य धर्म-वंशों की स्थापना का भी इतिहास है। उस धर्म विशेष की स्थापना के लिए उस धर्म-पिता की पवित्र आत्मा ने प्रवेश होकर अपने धर्म की स्थापना तो की परन्तु वह आत्मा परकाया प्रवेश होते ही और बाद में जन्म लेकर धीरे-धीरे तमोप्रधानता की ओर अग्रसर होती है अर्थात् उसमें पवित्रता की कलायें कम होती जाती हैं भले वे ब्रह्मचर्य की पालना करते हैं।

हर आत्मा में ये संस्कार सूक्ष्म में नीहित है कि पवित्रता ही सुख-शान्ति को देने वाली है क्योंकि सबको संगम पर परमात्मा से ये सन्देश मिला है और वे ये भी जानते हैं कि परमात्मा की याद से ही पवित्रता आयेगी और पवित्रता की धारणा के लिए ब्रहमचर्य व्रत का आधार आवश्यक है। इसलिए ही सन्यासी, क्रिश्चियन धर्म में नन्स, जैन धर्म में जैन साधू-साध्वी, बौद्ध भिक्षु-भिक्षुणियाँ आदि-आदि। परन्तु परमात्मा को यथार्थ रीति न जानने के कारण देह और देह की दुनिया को भूलकर परमात्मा को याद करने का पुरुषार्थ करते हैं, सन्यास भी करते हैं, ब्रह्मचर्य व्रत को भी धारण करते हैं परन्तु यथार्थ रीति परमात्मा को न जानने के कारण, उनके साथ सम्बन्ध और याद न होने के कारण पवित्र बन नहीं सकते अर्थात् पवित्रता की चढ़ती कला में नहीं जा सकते। उन सभी आत्माओं को सदा ही इस देह और देह की दुनिया के व्यक्ति और पदार्थ ही याद आते रहते हैं, जिससे पवित्रता की कलायें और भी गिरती जाती हैं और परिणाम स्वरूप दुख-अशान्ति बढ़ती ही जाती है। अभी संगमयुग पर जब परमात्मा यथार्थ ज्ञान देते हैं और पवित्रता का राज़ बताते हैं और उसके लिए ब्रह्मचर्य व्रत का महत्व बताते हैं और आत्माओं का अपने साथ सम्बन्ध जुटाते हैं, तब ही आत्मायें पवित्र बनती हैं। कोई भी आत्मा बिना पवित्र बने घर वापस जा नहीं सकती। पवित्रता को पाने के दो रास्ते हैं - एक देह और देह की दुनिया को भूलकर पतित-पावन, सदा पावन बाप को याद कर पवित्र बनें और दूसरा - विनाश के समय दुख-अशान्ति भोगकर पवित्र बनना।

सन्यासी जीवन और सन्यास धर्म का राज़ भी अच्छी रीति समझना है। सन्यासी प्राय: सभी धर्मों में होते हैं परन्तु सन्यास धर्म अलग है, जो भारत में ही है और शंकराचार्य के द्वारा स्थापित हुआ है। अन्य धर्मों के सन्यासियों के लिए ब्रह्मचर्य की धारणा अपने हिसाब से होती है।

विचारणीय है कि परमधाम में जाने के पहले तक और परमधाम से आने के बाद आत्मा में कुछ न कुछ कमी होती ही है। परमधाम में ही आत्म सम्पूर्ण पवित्र होती है। परमधाम में जाने से पहले जो ज्ञान और स्मृति आत्मा में होती है, वह स्मृति बाद में अपवित्रता और उसके फलस्वरूप प्राप्त दुख-अशान्ति के समय आत्मा में जागृत होती है।

जिस तरह त्रेता को स्वर्ग नहीं कह सकते क्योंकि 25 परसेन्ट पुराना हो गया, ऐसे ही कोई आत्मा जैसे ही देह धारण करती है, उसकी कलायें कम होने लगती हैं, इसलिए उसको पवित्र नहीं कह सकते, भले वह 1 परसेन्ट ही पुरानी हुई हो अर्थात् कलायें कम हुई हों, परन्तु उसको पतित नहीं कह सकते क्योंकि उसने कोई पाप कर्म नहीं किया है। इस तरह जो भी आत्मायें सतयुग-त्रेता में परमधाम से आकर पार्ट बजाने के लिए देह धारण करती हैं, वे सब ब्रह्मचारी तो हैं क्योंकि वहाँ कोई विकार में नहीं जाते हैं, परन्तु पूर्ण पवित्र नहीं कह सकते हैं। पवित्रता और ब्रह्मचर्य के राज़ को समझने के लिए इस सत्य को भी यथार्थ रीति समझना है। ''तुम यहाँ आये हो स्वर्ग में जाने के लिए। बाप तुमको स्वर्ग में जाने का रास्ता बताते हैं। वास्तव में त्रेता को भी स्वर्ग नहीं कहेंगे क्योंकि वह 25 प्रतिशत पुराना हो गया। ... ड्रामा अनुसार कल्प पहले जिन्होंने पूरा इम्तहान पास किया है, वे ही अब भी करेंगे। त्रेता में जाने वालों को नापास ही कहेंगे। कल्प कल्पान्तर, जन्म-जन्मान्तर संगम पर वे ही इम्तहान पास करते हैं, जो अब कर रहे हैं।''

सा.बाबा 10.04.12 रिवा.

''सन्यासी भी विकारों को छोड़ते हैं तो उनका मान होता है। उनका है हद का सन्यास, हमारा है बेहद का सन्यास अर्थात् सारी पुरानी दुनिया का सन्यास।... सारी दुनिया का परमपिता एक ही परमात्मा है। वह बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, तुम इन पर जीत पहनो। इसमें कोई सुख नहीं है। पवित्र देवी-देवताओं के आगे पतित जाकर सिर झुकाते हैं।''

सा.बाबा 1.04.12 रिवा.

''बाप ही आकर तुमको पापात्मा से पुण्यात्मा बनाते हैं। देवतायें पुण्यात्मा थे, पापात्मायें पुण्यात्माओं का पूजन करती हैं। सबसे बड़ा पाप है विकार में जाना। विकारी को ही पतित कहा जाता है और निर्विकारी को पावन कहा जाता है। सन्यासी भी पावन बनने के लिए घरबार का सन्यास करते हैं, तो पतित उनको माथा झुकाते हैं।''

सा.बाबा 29.03.12 रिवा.

''गुरु नानक की आत्मा ने सिक्ख धर्म स्थापन किया। वह नई आत्मा आई तो जरूर किसी के शरीर में प्रवेश किया होगा। पवित्र आत्मा तो कब दुख नहीं भोग सकती है क्योंकि उसने कोई विकर्म तो किया नहीं है, इसलिए पहले उनको सुख मिलेगा, फिर दुख। हर एक आत्मा का ऐसे होता है।... यह ज्ञान उनकी बुद्धि में बैठेगा, जो पहले देवी-देवता धर्म के थे।''

सा.बाबा 30.03.12 रिवा.

''अभी बाप कहते हैं तुम श्रीमत पर चल रावण पर जीत पहनों तो जगतजीत बन जायेंगे। ...

बाप कहते हैं - जन्म-जन्मान्तर यह काम कटारी चलाने से तुम्हारी यह हालत हो गई है, दुखी हो गये हो। पवित्रता में ही सुख है। सन्यासी भी पवित्र बनते हैं, तब तो पूजे जाते हैं। ... यहाँ रहते अगर विकर्म करते हैं तो प्रजा में भी बहुत कम पद पायेंगे।''

सा.बाबा 15.03.12 रिवा.

''पतित उनको कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। सन्यासी विकार में नहीं जाते, इसलिए उनको पतित नहीं कहेंगे। उनको कहा जाता है पवित्र आत्मा क्योंकि 5 विकारों का सन्यास किया हुआ है। नम्बर वन विकार है काम। ... देवताओं की महिमा है - सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिंसा परमोधर्म।''

सा.बाबा 18.03.12 रिवा.

''बाप कहते हैं - यह नॉलेज जो मैं तुमको देता हूँ, यह प्राय: लोप हो जाती है। यह सब मन्दिर आदि सब खत्म हो जाने हैं। भक्ति मार्ग की एक भी चीज़ वहाँ नहीं रहती है। ... पावन से पतित और पतित से पावन तुमको बनना ही है। सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। सन्यासियों का भी ड्रामा अनुसार पार्ट है। वे न होते तो भारत और ही दुखी हो जाता। मुख्य बात है पवित्रता की।''

सा.बाबा 4.02.12 रिवा.

''अमृतवेले से लेकर स्मृति, वृत्ति-दृष्टि और कृत्ति सबके लिए सब मर्यादायें बनी हुई हैं, क्या वे सबकी बुद्धि में सदा स्पष्ट रहती हैं? क्या हर संकल्प को मर्यादा प्रमाण प्रैक्टिकल में लाते हो? ... फर्स्ट चेलेन्ज है प्योरिटी की। सम्बन्ध-सम्पर्क में रहते संकल्प में भी इस फर्स्ट चेलेन्ज की कमजोरी न हो।... वायदा है 'और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे' ... मेरा तो एक, दूसरा न कोई।''

अ.बापदादा 28.04.74

''वे सन्यासी भी विकारों का सन्यास करते हैं तो पवित्रता मनुष्यों को खींचती है। उनमें भी नम्बरवार होते हैं। इसमें भी ज्ञान-योग बल की ताक़त चाहिए। जितना योग में रहेंगे तो इन सब बातों की परवाह नहीं रहेगी। योग है तन्दुरुस्ती की निशानी। भल पुराने विकर्मों की भोगना तो भोगनी पड़ती है, फिर भी योग पर आधार रहता है।''

सा.बाबा 19.01.12 रिवा.

''तत्व योगियों में भी ताक़त रहती है। तुम्हारा सारा मदार है योग पर। तुम्हारा योग एक बाप से है, जिससे तुमको इतना भारी पद मिलता है।... उनको कोई ईश्वरीय मत नहीं मिलती है। तुमको तो ईश्वर आकर मत देते हैं, जिससे तुमको 21 जन्मों के लिए प्राप्ति होती है।''

सा.बाबा 19.01.12 रिवा.

''भारत में ही श्याम और सुन्दर, पतित और पावन कहते हैं। दूसरे कोई खण्डों में ऐसे नहीं

कहेंगे कि हम पतितों को आकर पावन बनाओ। ... विवेक भी कहता है कि हम भारतवासी पावन थे, इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। भल कितने भी बड़े आदमी हैं, वे भी गुरु के पाँव में गिरते हैं क्योंकि गुरु ने सन्यास किया हुआ है, 5 विकारों को छोड़ा है। यह विकारी, निर्विकारियों को मान देते हैं।''

सा.बाबा 17.11.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, तुमको इस पर जीत पानी है। ... ऐसे बहुत हैं जो ब्रह्मचर्य में रहते हैं, सारी आयु शादी नहीं करते हैं। नन्स भी कब विकार में नहीं जाती हैं, सन्यासी भी विकार में नहीं जाते हैं। परन्तु उससे कोई प्राप्ति नहीं है। यहाँ तो बात है पवित्र बनकर जन्म-जन्मान्तर स्वर्ग के मालिक बनने की।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

''अभी बाप जो बच्चों को प्रैक्टिकल में पढ़ाते हैं, उनकी फिर हिस्ट्री बनाई है। यादव, कौरव, पाण्डव संगमयुग पर ही होंगे। पीछे फिर उनका यादगार चलता है। ... बाप पवित्रता की प्रतिज्ञा कराते हैं, उसकी यादगार यह राखी है। सिक्खों में कंगन, हिन्दुओं में जनेऊ पहनते हैं, यह भी पवित्रता की निशानी है परन्तु वे न पवित्रता का अर्थ समझते हैं और न पवित्र रहते हैं।''

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

''यह प्रवृत्ति मार्ग है, सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। वह अलग है। यह भी बाबा ने समझाया है - अगर शंकराचार्य नहीं आता तो भारत में पवित्रता का अंश भी नहीं रहता, भारत बिल्कुल ही जल मरता। यह भी ड्रामा में नूँध है भारत को थमाने के लिए। ... बाबा प्रतिज्ञा करते हैं - अगर तुम निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे, तुम पावन बन जायेंगे।''

सा.बाबा 9.07.11 रिवा.

''आत्मा में ही खाद पड़ती है, आत्मा की ही सफाई चाहिए। यह किसको भी पता नहीं है। कहा भी जाता है पापात्मा, पुण्यात्मा ... सन्यासियों के लिए कहेंगे पवित्र आत्मा क्योंकि सन्यास किया हुआ है। ऐसे नहीं कहेंगे महान परमात्मा। आत्माओं को पावन बनाने वाला एक परमात्मा बाप के सिवाए और कोई हो नहीं सकता है।''

सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

''मनुष्य सन्यासियों को कफनी पहना देख कितना मान देते हैं। बौद्ध धर्म में भी सन्यासियों को कफनी पहनी देख मान देते हैं। सन्यासी तो बाद में होते हैं। बौद्ध धर्म में शुरू से कोई सन्यासी नहीं होते हैं। बौद्ध धर्म में जब पाप बढ़ जाता है, तब सन्यास करना शुरू होता है। शुरू में

सन्यास सिखलाकर क्या करेंगे। शुरू में तो उनके धर्म की आत्मायें ऊपर से आनी हैं।''

सा.बाबा 6.01.11 रिवा.

''आसुरी सम्प्रदाय वाले दैवी सम्प्रदाय को नमन करते हैं क्योंकि वे सम्पूर्ण निर्विकारी हैं। मनुष्य सन्यासियों को भी नमन करते हैं क्योंकि वे घरबार छोड़कर जाते हैं, पवित्र रहते हैं। सन्यासियों और देवी-देवताओं में रात-दिन का फर्क है। देवताओं का जन्म भी योगबल से होता है। इस बात को कोई जानते नहीं हैं।... बाप किसको गाली नहीं देते हैं परन्तु समझाने के लिए कहते हैं। वे हैं कौरव सम्प्रदाय अर्थात् आसुरी सम्प्रदाय, तुम हो ईश्वरीय सम्प्रदाय।''

सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

''इस दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं, जिससे विकर्म न होता हो। मनुष्य समझते हैं साधू-सन्यासियों से विकर्म नहीं हो सकता है क्योंकि वे पवित्र रहते हैं, सन्यास किया हुआ है। वास्तव में पवित्र किसको कहा जाता है, यह वे बिल्कुल नहीं जानते हैं। कहते भी हैं, हम पतित हैं, पतित-पावन आओ। जब तक वह न आये, तब तक दुनिया पावन बन नहीं सकती।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

''बाप समझाते हैं - बच्चे, अच्छे गुण धारण करो, कुल का नाम बाला करो। तुम जानते हो - अभी हम ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण कुल के हैं। ... तुम्हारा धन्धा ही यह है। सब धर्म वालों को बोलो - बाप के साथ यह पवित्रता की प्रतिज्ञा करो, बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे।... हम आपको यह राखी बाँधने के लिए आये हैं, तुमको भी यह समझने का हक़ है।''

सा.बाबा 31.08.10 रिवा.

''भल कोई पवित्र बनते हैं परन्तु पढ़ाई नहीं करते तो फँस पड़ते हैं। सिर्फ पवित्रता (ब्रह्मचर्य) भी काम नहीं आती है। ऐसे बहुत सन्यासी भी ब्रह्मचारी रहते हैं। ... जितना जास्ती याद करेंगे, उतना पवित्र होते जायेंगे क्योंकि अग्नि से ही सोने की खाद निकलती है। ... भारत का प्राचीन राजयोग गाया हुआ है। ... अभी हम जैसे कि याद की अग्नि में पड़े हैं।''

सा.बाबा 01.05.10 रिवा.

''बाप ने प्रवृत्ति मार्ग का धर्म स्थापन किया है, सन्यासी निवृत्ति मार्ग के हैं। प्रवृत्ति मार्ग वाले ही फिर पतित बनते हैं, तो सृष्टि को थमाने के लिए सन्यासियों का पवित्र बनने का पार्ट चलता है। ... यह भी पहले पतित पुजारी था, अभी श्रीमत पर चलकर पावन बन रहे हैं, बाप से वर्सा लेने का पुरुषार्थ कर रहे हैं। तब कहते हैं - फॉलो फादर।''

सा.बाबा 3.04.10 रिवा.

''पहले जो आत्मायें आती हैं, वे सभी पवित्र आत्मायें होती हैं क्योंकि वे ऊपर से नई आती हैं।

पवित्र को महान अत्मा कहते हैं। वे भी धर्म स्थापन करते हैं तो उनको महान आत्मा कहेंगे। सुप्रीम तो एक बाप को ही कहा जाता है।... पहले सतोप्रधान होते हैं, फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं। ... जो नई आत्मा ऊपर से आती है, उसको दुख तो हो नहीं सकता है। लॉ नहीं कहता कि उसको दुख हो।... ड्रामा का लॉ भी है ना।''

सा.बाबा 27.11.09 रिवा.

''मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। ... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

''पतित उसे कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। ऐसे बहुत हैं, जो विकार में नहीं जाते हैं। ब्रह्मचारी रहते हैं। जैसे पादरी हैं, मुल्ले-काजी हैं, बौद्धी हैं। ... उनको पतित पावन बाप पावन नहीं बनाते हैं, इसलिए वे पावन दुनिया का मालिक नहीं बन सकते। ... सन्यासियों की भी पवित्रता के कारण मान्यता है।''

सा.बाबा 1.9.06 रिवा.

''तुम यहाँ सन्यासी बनने के लिए नहीं आये हो। तुम तो आये हो विश्व का मालिक बनने। वह तो फिर गृहस्थ में जन्म लेते हैं, फिर सन्यासी बनते हैं।... बाप पवित्र गृहस्थ आश्रम बनाते हैं।''

सा.बाबा 29.08.09 रिवा.

''बाप आकर सारा हिसाब बताते हैं। सन्यासियों का धर्म ही अलग है। झाड़ में अनेक प्रकार के धर्म हैं, पहला-पहला फाउण्डेशन है देवी-देवता धर्म। देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो गया है, अभी फिर से देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। ... फिर भी भारत में इन सन्यासियों का धर्म अच्छा है। भारत को गिरने से थमाने के लिए सन्यास धर्म स्थापन होता है।''

सा.बाबा 11.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और बालक / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और कुमार-कुमारी जीवन

पवित्रता का क्षेत्र बहुत विस्तृत है, ब्रह्मचर्य उसका एक अंशमात्र है। बालक ब्रह्मचारी होता है परन्तु उसको पवित्र नहीं कहा जा सकता है क्योंकि परमधाम से आने के बाद पहले जन्म के पहले क्षण से ही उसमें देहभान की खाद पड़नी आरम्भ हो जाती है और उस आत्मा में इस विश्व-नाटक के पार्ट के आधे समय के बाद देहाभिमान की खाद भी पड़ने लगती है। सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग में सभी आत्मायें ब्रह्मचारी होती हैं क्योंकि वहाँ कोई विकार में नहीं जाता है, परन्तु जो आत्मायें जन्म-पुनर्जन्म लेते आ रही हैं, उनको पूर्ण पवित्र नहीं कहा जा सकता है। सतयुग से आने वाली आत्मायें जब द्वापर में प्रवेश करती हैं, तब से ही उनकी सन्तानोत्पत्ति काम-विकार से होने लगती है अर्थात् वे देहाभिमान में आ जाती हैं, जबकि कलियुग के अन्त में भी जो आत्मा परमधाम से आयेगी, वह पहले पूर्ण पवित्र होगी, बाद में उसमें अपवित्रता अर्थात् देहभान और देहाभिमान की खाद पड़ना आरम्भ होगी। द्वापर से यह देहाभिमान एक साथ आत्मा में नहीं आता है, धीरे-धीरे आता है। ऐसे ही कुमार-कुमारियों को ब्रह्मचारी तो कह सकते हैं परन्तु पवित्र नहीं। पवित्र कुमार-कुमारी उसी समय होते हैं, जब उनकी आत्मा परमधाम से आती है और उनका पहला जन्म होता है। कुमार-कुमारी तो बाद के जन्मों में भी होते हैं।

''बच्चे में नॉलेज नहीं होती है और कोई अवगुण भी नहीं होता है, इसलिए उसको महात्मा कहा जाता है क्योंकि पवित्र है। जितना छोटा बच्चा, उतना नम्बरवन फूल। बिल्कुल ही जैसे कि कर्मातीत अवस्था है। कर्म-अकर्म-विकर्म को कुछ भी नहीं जानते हैं। इसलिए वह फूल है, सबको कशिश करते हैं।''

सा.बाबा 14.12.09 रिवा.

''तन से ब्रह्मचारी अर्थात् देह के लगाव से न्यारा। सिर्फ तन से ब्रह्मचारी बनना, इसको सम्पूर्ण पवित्रता नहीं कहते हैं। मन से भी ब्रह्मचारी हो अर्थात् मन भी सिवाए बाप के और किसी भी प्रकार के लगाव में नहीं आये।''

अ.बापदादा 16.3.92

''कई कुमारियाँ अथवा कुमार कहते हैं बाबा मात-पिता बहुत नाराज होते हैं शादी न करने पर। बाबा कहते हैं जाकर शादी करो। पूछते हो ना, खुद तुम्हारी दिल है। .... शिव बाबा को याद करते मर भी गये तो तुम्हारा बहुत ऊंच पद होगा।''

सा.बाबा 20.6.72 रिवा.

''ऐसे बहुत हैं, जो जन्म से बाल ब्रह्चारी रहते हैं। वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते। मदद तब हो जब पावन बन दुनिया को भी पावन बनायें श्रीमत पर। बाप को मदद करते ही हैं याद की यात्रा में रहने से।''

सा.बाबा 17.10.69 रिवा.

''इस समय सब तमोप्रधान हैं। भल कोई कुमार-कुमारियाँ हैं पवित्र (विकार में नहीं जाते) रहते हैं, सन्यासी भी पवित्र (विकार में नहीं जाते) रहते हैं परन्तु आजकल वह पवित्रता नहीं है। पहले-पहले जब आत्मायें परमधाम से यहाँ आती हैं तो वे पवित्र (सतोप्रधान) होती हैं। फिर अपवित्र बन जाती हैं क्योंकि तुम जानते हो कि सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो से सबको पास होना होता है। अन्त में सब तमोप्रधान बन जाते हैं।''

सा.बाबा 17.09.09 रिवा.

''गृहस्थ व्यवहार में रहते कमलफूल समान पवित्र बनो। कुमार-कुमारियों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे, वे तो हैं ही पवित्र। उनको फिर समझाया जाता है - ऐसे गृहस्थ में तुमको जाना ही नहीं है, जो फिर पवित्र होने का पुरुषार्थ करना पड़े। ... बेहद के बाप का तो मानना चाहिए ना। ... इसमें लोक-लाज, कुल की मर्यादा भी छोड़नी पड़े।''

सा.बाबा 17.09.09 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और संगमयुगी ब्राह्मण

संगमयुगी ब्राह्मण जो बनते हैं, वे ब्रह्मचर्य का पालन तो करते हैं अर्थात् वे काम-विकार में जाना बन्द कर देते हैं परन्तु पवित्रता के लिए उनको योग साधना करनी पड़ती है, जो इस जीवन के अन्त तक तो चलती ही है, इस जन्म के बाद भी एडवान्स जन्म लेने वाली आत्मओं को सम्पूर्ण पवित्रता के लिए जाने-अन्जाने उनका पुरुषार्थ चलता ही है।

सारे कल्प के स्वमानों का आधार पवित्रता है, जो पतित-पावन बाप संगमयुग पर आकर आत्माओं को वरदान और वर्से के रूप में देते हैं अर्थात् सर्वात्माओं को पूर्ण पवित्र बनाकर वापस घर परमधाम ले जाते हैं, जहाँ से आत्मायें नये कल्प में आकर नये सिरे से अपना पार्ट बजाती हैं।

''याद करो - अनादि स्वरूप में आपका स्वमान कितना बड़ा है।... एक तो बाप के साथ-साथ चमकती हुई आत्मा हैं।... सृष्टि-चक्र के आदि अर्थात् सतयुग आदि में अपना स्वरूप देखो, कितना श्रेष्ठ सुख स्वरूप है, कितना सर्व प्राप्ति स्वरूप है। ... फिर नीचे आओ तो द्वापर में भी

आपका स्वमान पूज्य का है अर्थात् पूज्य स्वरूप है। सभी कितनी भावना से कायदे प्रमाण पूजा करते हैं। ... अब आओ संगम में, सब चक्र लगा रहे हो ? तो संगम पर स्वयं भगवान आपकी जीवन में पवित्रता की विशेषता भरता है, जो पवित्रता आपके सर्व अविनाशी सुखों की खान है।''

अ.बापदादा 2.02.12

''आप इस कल्याणकारी संगम में बाप के संग के रंग में रंगे रहते हो, उसको उन्होंने स्थूल रंग बना दिया है। ... आप बाप के संग के रंग से होली अर्थात् पवित्र बनते हो। ब्राह्मण बनना अर्थात् पवित्रता का व्रत लेना क्योंकि बाप सदा पवित्र है।... और होली का दूसरा अर्थ है 'हो ली' अर्थात् हो गया अर्थात् जो बीता सो बीता।''

अ.बापदादा 5.03.12

''आप परमात्मा के संग के रंग से डबल पवित्र बनते हो अर्थात् आप जब राज्य अधिकारी बनेंगे तो आपकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होंगे। सारा चक्र घूमों और देखो तो आपके जैसा डबल पवित्र और कोई नहीं बना है! ... अभी भी अगर कोई पुराने संस्कारों अनुसार संकल्प आता है तो अभी तीव्र पुरुषार्थ से उसको जला दो।''

अ.बापदादा 5.03.12

''तुम ब्राह्मण पूजा के लायक नहीं हो, गायन लायक हो। पूजन लायक देवतायें हैं। तुम श्रीमत पर विश्व को स्वर्ग बनाते हो, इसलिए तुम्हारा गायन होता है। तुम्हारी पूजा नहीं हो सकती है। गायन ब्राह्मणों का है, देवताओं का नहीं। बाप तुमको शूद्र से ब्राह्मण बनाते, फिर ब्राह्मण से देवता बनते हो। देवताओं की आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होता है। तुम्हारी आत्मा भल पवित्र बनती है, परन्तु शरीर पवित्र नहीं है।''

सा.बाबा 4.11.11 रिवा.

''भारतवासी अच्छी तरह जानते हैं कि यह देवी-देवतायें निर्विकारी थे, स्वर्ग में इन्होंका प्रवृत्ति मार्ग था। ... विकारी को पतित भ्रष्टाचारी कहेंगे, क्रोधी को पतित भ्रष्टाचारी नहीं कहा जाता है। क्रोध तो सन्यासियों में भी होता है।... स्वर्ग में हैं दैवीगुण वाले मनुष्य, यहाँ कलियुग में हैं आसुरी गुण वाले मनुष्य। यह भी पीछे समझाना है, पहले तो बाप का परिचय देना है और सही करानी है।''

सा.बाबा 8.11.11 रिवा.

''कोई भी ब्राह्मण, सन्यासी को कभी राखी नहीं बाँधेगे। वे कहेंगे - हम तो हैं ही पवित्र। ... तुम बच्चे भी कोई से राखी नहीं बँधवा सकते हो। ... अन्त तक इस काम विकार पर जीत रहे तो पवित्र जगत का मालिक बनेंगे। पवित्र दुनिया सतयुग को कहा जाता है, सो अब स्थापन हो रही है। तुम सब पवित्र हो। तुम विकार में गिरने वाले को राखी बाँध सकते हो।''

सा.बाबा 9.09.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और फरिश्ता स्वरूप

वास्तविकता को देखा जाये तो फरिश्ता स्वरूप भी पूर्ण पवित्र नहीं कहा जा सकता है क्योंकि जब आत्मा पूर्ण पवित्र बन जायेगी तो वह परमधाम जायेगी, जहाँ आत्मा को सूक्ष्म शरीर भी नहीं होता है। सूक्ष्म शरीर में भी आत्मा में प्लस होता है अर्थात् वहाँ रहते भी आत्मा जो कर्म करती है, उससे उसका खाता जमा होता है। फरिश्ता स्वरूप में आत्मा को ब्रह्मचर्य धारण करने या न करने करने का प्रश्न नहीं होता है।

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और योग एवं योगबल

योग अर्थात आत्मा का परमात्मा से सम्बन्ध। योग-साधना का आधार ब्रह्मचर्य है परन्तु योग की सफलता अर्थात् लक्ष्य पवित्रता है। पवित्रता अर्थात् आत्मा की सम्पूर्ण आत्मिक शक्ति सम्पन्न स्थिति। इसलिए योगी आत्मा को अन्त तक अर्थात् परमधाम जाने तक योग-साधना करनी ही होती है। आत्मा का जब परमात्मा से योग होता है तो उसको बल मिलता, जिस योगबल से आत्मा विकारों पर अर्थात् देहाभिमान रूपी रावण पर विजय प्राप्त कर पावन बनती है अर्थात् आत्मा पर जो देहभान और देहाभिमान की जंक चढ़ी हुई है, वह उतरती है और आत्मा अपने सम्पूर्ण स्वरूप में स्थित हो जाती है।

विचारणीय विषय यह है कि अन्त में परमधाम घर जाने के पहले आत्मायें पवित्र तो सभी बनती हैं, परन्तु स्वर्ग में वे ही आत्मायें जाती हैं, जो योगबल से पवित्र बनती हैं। इसलिए बाबा ने कई बार कहा है कि जो ब्राह्मण बनेंगे, वे ही स्वर्ग में जायेंगे अर्थात् जो ब्राह्मण बनेंगे, उनका परमात्मा से अवश्य ही योग होगा और उनमें योगबल की शक्ति होगी। भले योगबल की शक्ति सभी आत्माओं में नम्बरवार ही होती है, इसलिए स्वर्ग में नम्बरवार आते भी हैं और पद भी नम्बरवार पाते हैं।

''पुरानी दुनिया का विनाश हो, नई दुनिया की स्थापना कैसे होती है, यह संगमयुग पर ही बाप बताते हैं। ... रामराज्य स्थापन होने के बाद रावण राज्य खत्म हो जायेगा। तुम सब रामराज्य के भाती हो तो तुम्हारे में कोई भूत नहीं होना चाहिए। ... यह काम की आग सबसे तीखी और बिल्कुल गन्दी है, जो सिवाए योगबल के बुझा नहीं सकते।''

सा.बाबा 6.03.12 रिवा.

''योगी कभी भोग नहीं करते। अगर भोगी बनें, विकार में जायें तो योग सिद्ध हो न सके। अभी

तुम योग सीख रहे हो। भोगी बनने अर्थात् विकार में जाने से योग लग न सके।... तुमको याद शिवबाबा को करना है, दलाल को नहीं। यह ब्रह्मा भी दलाल हो गया। यह दलाल भी उनको याद करते हैं। उनकी ही सारी महिमा है, इनकी नहीं। यह तो पतित हैं, पावन बन रहे हैं।''

सा.बाबा 1.03.12 रिवा.

''बाबा की याद में रहेंगे तो फिर कोई कर्मेन्द्रियों की चंचलता आदि नहीं होगी। बाप को भूलने से ही कर्मेन्द्रियाँ चंचल होती हैं। ... बाप ने बताया है - इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी अनेक प्रकार के पड़ेंगे, परन्तु तुमको विघ्नों से डरना नहीं है। ... यह हार और जीत का खेल है, माया से बॉक्सिंग है। माया घूँसा लगाती है, तो फाँ हो जाते हैं। बाप कहते हैं - तुमको माया से कभी हारना नहीं है।''

सा.बाबा 9.08.11 रिवा.

''कितना भी दान-पुण्य आदि करें, कितनी भी मेहनत करें, चाहे कोई आग से भी आते-जाते रहें, कुछ भी काम नहीं आ सकता, सिवाए एक बाप की याद के। एक बाप की याद से ही पावन बनेंगे। ... बाप कहते हैं - सिर्फ मुझे याद करो तो तुम्हारे में जो चाँदी, तांबा, लोहे की अलाए पड़ी है, वह निकल जायेगी और तुम पावन बन जायेंगे।''

सा.बाबा 27.06.11 रिवा.

''बाप का आर्डिनेन्स है - बच्चे खबरदार, विकार में नहीं जाना है, काम पर विजय पानी है। तूफान आदि तो बहुत आयेंगे। इसमें फाँ नहीं होना चाहिए। अभी माया के इतने विकल्प आयेंगे, जो अज्ञान काल में भी नहीं आये होंगे। ... तुम शान्तिधाम में शिवबाबा को याद करो। सिर्फ शान्तिधाम को याद नहीं करना है। शान्तिधाम में शिवबाबा को याद करना है। बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 17.05.11 रिवा.

''सोने को आग में डालकर उससे किचड़ा निकालते हैं, फिर सोने में खाद डालने के लिए भी आग में डालते हैं। बाप कहते हैं वह है काम चिता और यह है ज्ञान चिता। इस योग अग्नि से ही आत्मा की खाद निकलेगी। ... बाप तुम बच्चों को ये सब बातें समझाते हैं। अब तुम समझते हो तो औरों को भी समझाना है।''

सा.बाबा 26.03.11 रिवा.

''बाप ने समझाया है - आत्मा ने 84 का पार्ट बजाया है, तो उसमें जो सतोप्रधानता की ताक़त थी, वह दिन-प्रतिदिन कम होती जाती है। हर आत्मा को पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बनना ही है। ... आत्मा की बैटरी फुल डिस्चार्ज नहीं होती है। कुछ न कुछ ताक़त रहती है। ... एकदम खत्म हो जाये तो शरीर ही न रहे।''

सा.बाबा 20.01.11 रिवा.

''बाप है सर्वशक्तिवान। हम आत्माओं का उनसे योग नहीं होगा तो बैटरी कैसे चार्ज होगी ? सारा कल्प लगता है बैटरी को डिस्चार्ज होने में। अभी अपनी बैटरी को चार्ज करना है। ... बाप कहते हैं - मेरे साथ बुद्धियोग लगाओ तो तुम्हारी आत्मा में पॉवर भरकर सतोप्रधान बन जायेगी। यह पढ़ाई भी है तो कमाई भी है।''

सा.बाबा 15.09.10 रिवा.

''आत्मा चेतन है, यह शरीर विनाशी है। आत्मा अविनाशी है। बाकी बैटरी चार्ज-डिस्चार्ज होती है। आत्मा सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती है। फिर बाप से योग लगाने से तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती है। ... जितना बाप को याद करेंगे, उतना ताक़त आयेगी। उसके लिए बाप से बहुत लव चाहिए।''

सा.बाबा 15.09.10 रिवा.

''यह योग अग्नि है, जिससे विकर्म विनाश होंगे, पतित से पावन बनेंगे। नॉलेज से धन मिलता है। योग से हेल्दी, पवित्र बनते हैं, ज्ञान से वेल्दी अर्थात् धनवान बनते हैं। ... बाप ने कर्म-अकर्म-विकर्म की गति भी समझाई है। विकार में जाना, यह है सबसे बड़ा पाप।... भगवान के बच्चे भाई-भाई होकर क्रिमिनल एसॉल्ट कैसे कर सकते हैं।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

''तुमको मालूम है कि नांगे लोग हैं, उनके ख्याल विकारों की तरफ नहीं जायेंगे। वे रहते अलग हैं। ... कर्मेन्द्रियों की चलायमानी सिवाए योग के कभी निकलती नहीं है। काम शत्रु ऐसा है, जो किसको भी देखेंगे, यदि योग में पूरा नहीं होंगें तो चलायमानी जरूर होगी। अपनी आपही परीक्षा लेनी होती है।''

सा.बाबा 12.02.10 रिवा.

''मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। ... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और योगबल-भोगबल

जैसे आत्माभिमानी और देहाभिमानी शब्द हैं, वैसे ही योगबल और भोगबल शब्द भी हैं। सतयुग में देहाभिमान होता नहीं, सभी आत्माभिमानी होते हैं, उनमें पवित्रता की शक्ति होती है, इसलिए वहाँ सारे कार्य योगबल से सम्पन्न हुए माने जाते हैं और द्वापर से जब देहाभिमानी बनते तो आत्मा में पवित्रता की शक्ति कम हो जाती है, आत्मायें देहाभिमान के

वशीभूत होने के कारण विषय-भोग में प्रवृत्त होती हैं, इसलिए सारे कार्य भोगबल से होते हैं अर्थात् सबमें देहाभिमान भरा होता है, स्थूल-सूक्ष्म में विषय-भोग की वासना भरी होती है। द्वापर से जन्म भी काम विकार अर्थात् भोगबल से होता है।

सतयुग आदि से लेकर त्रेता अन्त तक जो भी आत्मायें इस धरा पर जन्म लेती हैं, उन सबका जन्म योगबल से होता है और वे सब देवी-देवता कहलाते हैं। जब द्वापर से भक्ति मार्ग आरम्भ होता है तो पहले तो एक शिवबाबा की अव्यभिचारी भक्ति होती है, फिर समयान्तर में देवी-देवताओं की भक्ति आरम्भ होती हैं, देवी-देवताओं के मन्दिर बनते हैं और पूजा होती है। द्वापर से भले अनेक महानात्मायें, धर्मात्मायें हुये हैं, अनेक धर्म-पितायें हुए हैं, जिन्होंने महान कर्तव्य भी किये हैं परन्तु किसके मन्दिर बनाकर पूजा नहीं होती है, उन सबका गायन होता है, महिमा होती है। अभी संगमयुग पर जो आत्मायें परमात्मा के डॉयरेक्ट बच्चे बनते हैं और ज्ञान-योग से पवित्र बनने का पुरुषार्थ करते हैं और अन्त में सम्पूर्ण पवित्र भी बनते हैं, उनकी ही पूजा होती है। जो योगबल से पवित्र नहीं बनते हैं, उनकी पूजा नहीं होती है, उनका गायन होता है अर्थात् महिमा ही होती है। इस सत्य का ज्ञान सागर परमात्मा ने हमको राज़ बताया है कि योगबल वालों के ही मन्दिर बनाकर पूजा हो सकती है क्योंकि उनकी आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होते हैं अर्थात् उनमें देहाभिमान नहीं होता है, किसी भोगबल वाले के मन्दिर बनाकर पूजा नहीं हो सकती है, भल द्वापर से जो आत्मायें परमधाम से आती हैं, वे सभी पवित्र तो होती हैं परन्तु उनका शरीर तो भोगबल से ही पैदा होता है।

''पावन देवी-देवतायें मन्दिरों में पूजे जाते हैं, पतित उनके आगे जाकर माथा टेकते हैं। इससे सिद्ध होता है कि वे पवित्रता में सबसे ऊंचे हैं। सन्यासी भी पवित्र बनते हैं परन्तु उनके मन्दिर थोड़ेही बनते हैं। ... यह भी ड्रामा बना हुआ है कि सबको सतो, रजो, तमो में आना ही है। यहाँ भी ऐसे है। सदा काल सतोप्रधान कोई रह नहीं सकता।''

सा.बाबा 22.12.11 रिवा.

''मैं ही आकर ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना और शंकर द्वारा अनेक धर्मों का विनाश कराता हूँ। दूसरे धर्म-पितायें आकर अपने धर्म की स्थापना करते हैं, परन्तु वे किसकी गति-सद्गति नहीं कर सकते। गति-सद्गति दाता तो मैं एक परमात्मा ही हूँ। ... तुम्हारी अभी पूजा नहीं हो सकती क्योंकि तुम अभी पूजन लायक बन रहे हो, बनें नहीं हो।''

सा.बाबा 16.01.12 रिवा.

''तुम योगबल से विश्व पर राज्य करते हो। ... तुम कहते हो - बाबा, हम कल्प-कल्प आपसे सतयुग का स्वराज्य लेते हैं, फिर गँवाते हैं, फिर लेते हैं। ... यह रचता और रचना का ज्ञान

तुमको अभी मिला है। इन लक्ष्मी-नारायण को भी यह ज्ञान नहीं होगा।''

सा.बाबा 2.5.05 रिवा.

''यह है क़यामत का समय, अभी सबको हिसाब-किताब चुक्तू कर वापस घर जाना है। इसमें कोई तो योगबल से अपना हिसाब-किताब चुक्तू करते हैं और कोई फिर सज़ायें खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करते हैं। पाप का हिसाब-किताब सबको चुक्तू कर, पावन होकर ही वापस जाना है।... बाप कहते हैं - मैं सबकी ज्योति जगाकर वापस ले जाऊंगा, फिर सबको अपने समय पर आकर अपना-अपना पार्ट बजाना है।''

सा.बाबा 31.01.12 रिवा.

''अभी भी प्रत्यक्ष प्रमाण आपको पवित्रता की जायदाद बाप से प्राप्त हो गई है। अब चेक करो - पवित्रता सर्व प्राप्तियों का आधार है। पवित्रता से आप सभी मास्टर सर्वशक्तिमान बन गये। तो चेक करो सर्वशक्तियाँ प्राप्त हैं? ... बाप ने सर्वशक्तियाँ वरदान में दी फिर भी शक्ति समय पर नहीं आती है, उसका कारण क्या है? आप अपने मास्टर सर्वशक्तिमान के स्मृति की सीट पर नहीं होते हो।''

अ.बापदादा 2.02.12

''शास्त्रों में असुर और देवताओं की लड़ाई दिखाई है, परन्तु असुरों और देवताओं की कब लड़ाई लगी नहीं है। यह आत्मा की 5 विकारों रूपी रावण से युद्ध है। तुम योगबल से इन आसुरी 5 विकारों पर जीत पाते हो। ... तुम हो डबल अहिंसक। काम कटारी चलाना, यह तो सबसे बड़ा पाप है। बाप कहते हैं- यह काम कटारी आत्मा को आदि-मध्य-अन्त दुख देती है।''

सा.बाबा 12.10.11 रिवा.

''अभी तुमको पवित्र रहना है, पवित्र बन पवित्र दुनिया का मालिक बनना है। पतित से पावन एक बाप ही बनाते हैं। साधु-सन्त आदि भी विकार से ही पैदा होते हैं। देवी-देवताओं के लिए ऐसे थोड़ेही कहेंगे कि वे विकार से पैदा होते हैं। सतयुग-त्रेता में विकार होता ही नहीं है। वहाँ पाप का नाम नहीं होता है।''

सा.बाबा 11.08.11 रिवा.

''अभी फिर अपनी बैटरी को भरो। सिवाए बाप की याद के आत्मा कभी पवित्र हो नहीं सकती। एक ही सर्वशक्तिवान बाप है, जिनसे योग लगाना है। बाप खुद ही आकर अपना परिचय देते हैं कि मैं क्या हूँ, कैसा हूँ। कैसे तुम्हारी आत्मा की बैटरी डल हो जाती है। ... मुख्य बात है योग में रहना है और पवित्र बनना है।''

सा.बाबा 12.10.10 रिवा.

''मुख्य है काम की बात, इस पर ही पतित कहा जाता है। हम पतित बनते हैं, फिर बाप आकर पावन बनाते हैं, ड्रामा अनुसार। अभी इस चक्र का तुमको पता पड़ा है कि यह चक्र

फिरता रहता है। ... कल्प पहले भी कहा था कि यह योग अग्नि है, जिससे तुम्हारे पाप दग्ध होते हैं। खाद निकलने से आत्मा पवित्र बन जाती है।''

सा.बाबा 9.06.10 रिवा.

''अभी बाप ने तुमको ज्ञान दिया है। ज्ञान से ही तुम बच्चों की सद्गति हो रही है। तुम कितना दूर जाते हो। बाप ने ही घर जाने का रास्ता बताया है। सिवाए बाप के कोई वापस अपने घर ले नहीं जा सकते।... यह भी तुम समझते हो कि हम आत्मा पशित्र बनेंगे, तब ही अपने घर जा सकेंगे। फिर या तो योगबल से पावन बनें या सजाओं के बल से पावन बनेंगे।''

सा.बाबा 28.11.09 रिवा.

योगबल - भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति

योगबल अर्थात् आत्मिक बल और भोगबल अर्थात् शारीरिक बल अर्थात् भौतिक बल। इस विश्व के व्यवहार में सारे कल्प में दोनों प्रकार के बलों का प्रभाव आधा-आधा समय चलता है। सतयुग-त्रेता में योगबल प्रधान होता है और द्वापर-कलियुग में भोगबल प्रधान होता है। वास्तव में योगबल संगमयुग की विशेष प्राप्ति है क्योंकि उस समय ही आत्माओं का योग परमात्मा से होता है। उस समय योगबल से जो आत्मिक शक्ति का विकास होता है, वही आत्मिक शक्ति सारे कल्प में काम करती है परन्तु सतयुग-त्रेता में वह आत्मिक शक्ति प्रधान होती है, इसलिए सतयुग-त्रेता की दुनिया को और वहाँ के क्रिया-कलापों को योगबल से सम्पन्न हुये कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में आत्मिक शक्ति का ह्रास हो जाता है अर्थात् योगबल कम हो जाता है तो भोगबल प्रधान हो जाता है।

इन दोनों शब्दों का प्रयोग और स्पष्टीकरण के लिए इन दोनों का प्रयोग सन्तानोत्पत्ति के क्षेत्र में विशेष रूप से जाना जाता है। सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति योगबल से होती है अर्थात् मन्सा शक्ति से होती है और द्वापर-कलियुग में सन्तान भोगबल अर्थात् विषय-भोग के द्वारा होती है। योगबल से सन्तानोत्पत्ति के विषय को समझने के लिए बाबा ने मोर का, पपीते आदि का उदाहरण भी दिया है। बाबा ने मुख के प्यार आदि से सन्तानोत्पत्ति की बात भी कही है। कहने का तात्पर्य कि सतयुग-त्रेतायुग में सन्तानोत्पत्ति विषय-भोग से नहीं होगी, योगबल अर्थात मन्सा शक्ति के द्वारा होती है, इसीलिए उसको स्वर्ग कहा जाता है और द्वापर से

सन्तानोत्पत्ति भोगबल अर्थात विषय-भोग के द्वारा होती है, इसलिए उस दुनिया को नर्क कहा जाता है। योगबल की दुनिया को अमरलोक कहा जाता है क्योंकि वहाँ मृत्यु का भय और मृत्यु का दुख नहीं होता है और भोगबल की दुनिया को मृत्युलोक कहा जाता है क्योंकि आत्माओं को मृत्यु का दुख और मृत्यु का भय होता है, इसलिए कोई आत्मा वर्तमान देह को छोड़ना नहीं चाहता है। वास्तव में यह योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति ही स्वर्ग और नर्क की सीमारेखा है।

''जीवनमुक्त और जीवनबन्ध यह दोनों इस स्थूल वतन की ही बातें हैं। सतयुग में रावण राज्य ही नहीं तो मूतपलीती कैसे हो सकते हैं! योगबल और भोगबल भी गाया जाता है। सतयुग-त्रेता में बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं।... हम सतयुग के रहने वाले हैं, हमारी रस्म-रिवाज अपनी है, जिसको दूसरे धर्म वाले समझ नहीं सकते हैं।''

सा.बाबा 20.04.12 रिवा.

''समझते हैं देवतायें भी तो बच्चे पैदा करते हैं, वे भी तो विकारी ठहरे। उनको यह पता ही नहीं है कि देवताओं को गाया ही जाता है - सम्पूर्ण निर्विकारी। तब तो उनको पूजा जाता है। ... तुम्हारे संस्कार हैं ही पवित्रता के। अब अपवित्र बने हो, फिर पवित्र बनना है।''

सा.बाबा 28.08.09 रिवा.

Q. निम्नलिखित महावाक्यों में बाबा का भाव-अर्थ क्या है, क्योंकि अभी जो आत्मायें परमधाम से आ रही हैं, उनको पतित कहा जायेगा या पावन ?

''पतित दुनिया में एक भी पावन नहीं हो सकता और पावन दुनिया में एक भी पतित नहीं हो सकता है। ... ज्ञान भी एक परमात्मा के सिवाए और कोई में नहीं है। ये वेद-शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के, जिनसे सीढ़ी उतरनी ही है।... जो बातें पास्ट हो जाती हैं, भक्ति मार्ग में उनका यादगार बनाते हैं। शिवबाबा अभी पढ़ा रहे हैं, भक्ति मार्ग में उनका यादगार मन्दिर बनायेंगे।''

सा.बाबा 26.07.10 रिवा.

वास्तव में जो भी आत्मायें परमधाम से आती हैं, वे सब पूर्ण पवित्र होती हैं, परन्तु द्वापर-कलियुग में सभी का शरीर विकार से ही पैदा होता है, इसलिए बाबा ने ये महावाक्य कहे हैं। बाबा का भाव-अर्थ विकार से जन्म लेने से ही है क्योंकि अभी सब विकार से जन्म लेते हैं।

''सतयुग में जन्म भी योगबल से होता है। योगबल से जन्म कैसे होगा, योगबल किसको कहा जाता है, यह पूछने की दरकार नहीं है। वह है सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। मोर और डेल का भी मिसाल है। ... अन्त में सब साक्षात्कार होंगे। सतयुग में जब बूढ़े होते हैं तो साक्षात्कार होता

है अब यह शरीर छोड़ जाकर बच्चा बनूँगा, माता के गर्भ में जाऊंगा परन्तु यह नहीं मालूम होता कि फलाने घर में जाऊंगा।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

''पपीते के झाड़ में भी मेल, फीमेल होता है। एक-दो के बाजू में होने से फल देते हैं। यह भी वण्डर है। जब जड़ चीजों में भी ऐसा है तो चेतन्य में सतयुग में क्या नहीं हो सकता है! आगे चल सब डिटेल समझ में आ जायेगा। मुख्य बात है, तुम बाप को याद कर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन, बाप से वर्सा लेने की।''

सा.बाबा 6.10.11 रिवा.

''जीवनमुक्त और जीवनबन्ध यह दोनों इस स्थूल वतन की ही बातें हैं। सतयुग में रावण राज्य ही नहीं तो मूतपलीती कैसे हो सकते हैं! योगबल और भोगबल भी गाया जाता है। सतयुग-त्रेता में बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं। ... हम सतयुग के रहने वाले हैं, हमारी रस्म-रिवाज अपनी है, जिसको दूसरे धर्म वाले समझ नहीं सकते हैं।''

सा.बाबा 20.04.12 रिवा.

''तुमको बाप की याद में रहकर सतोप्रधान बनना है। आत्मा जो अपवित्र है, उसको परमपिता परमात्मा को याद कर पवित्र बनना है।... हठयोग से किसका भी कल्याण नहीं होना है। सच्चा-सच्चा योग बेहद का बाप ही आकर सिखलाते हैं। बाप तुम बच्चों को आप समान बनाते हैं। कहते हैं - जैसे मैं निराकार हूँ, टेम्प्रेरी इस तन में आया हूँ, वैसे तुम भी इस शरीर में रहते अपने को निराकार आत्मा समझो और देही-अभिमानी बनो।''

सा.बाबा 16.11.10 रिवा.

''वास्तव में तुम्हारा पूजन नहीं हो सकता है, तुम्हारा सुमिरन होता है। तुम्हारे ऊपर फूल नहीं चढ़ सकते हैं। फूल तब चढ़ें, जब आत्मा और शरीर दोनों पवित्र हो। यहाँ कोई का भी शरीर पवित्र नहीं है क्योंकि सब विष से पैदा होते हैं।... इन लक्ष्मी-नारायण को कहेंगे सम्पूर्ण निर्विकारी। बच्चे तो वहाँ भी पैदा होते होंगे ना परन्तु विकार से नहीं।''

सा.बाबा 21.07.10 रिवा.

योगबल से देह-धारण करने और देह-त्याग

जैसे श्रीकृष्ण का जन्म योग बल से होता है, भोगबल से नहीं, ऐसे ही सतयुग में मृत्यु शब्द नहीं होता है अर्थात् कर्मभोग के वशीभूत देह का त्याग नहीं करते। देह का त्याग भी योगबल से करते हैं अर्थात् देह के त्याग के समय भी त्यागने वाले को साक्षात्कार होता है कि

अब हमको ये पुराना वस्त्र छोड़कर नया धारण करना है और सहर्ष देह का त्याग करते हैं तथा उसके परिवार वाले भी सहर्ष उनको विदाई देते हैं। दोनों को ही दुख की कोई अनुभूति नहीं होती है। इस सत्य का ज्ञान भी परमात्मा ने अभी दिया है कि कैसे स्वर्ग में योगबल से देह धारण करते और देह का त्याग करते हैं। इसलिए उस सृष्टि को नष्टोमोहा सृष्टि कहा जाता है क्योंकि उनको देह का भी मोह नहीं होता है।

काम विकार से मुक्त अर्थात् ब्रहमचर्य का पालन करने से ही आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होने का सफल अभ्यास कर सकती है और आत्मिक स्वरूप के सफल अभ्यास से ही आत्मा काम विकार पर जीत पाकर जगतजीत बनती है। ब्रह्मचर्य के बल से ही देवताओं ने मृत्यु को जीता है।

''यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं और शरीर छोड़ते हैं तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे। नम्बरवार तो हैं ना। जैसे-जैसे कर्म करते हैं, ऐसा जन्म लेते हैं। जब बुरे कर्म करने वाले बिल्कुल खत्म हो जाते हैं, फिर स्वर्ग स्थापन हो जाता है। तमोप्रधान जो भी हैं, वे सब खत्म हो जाते हैं। फिर नये देवताओं का आना शुरू होता है। जब भ्रष्टाचारी सब खत्म हो जाते हैं, तब कृष्ण का जन्म होता है। तब तक बदली-सदली होती रहती है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''जब कोई छी-छी नहीं रहेगा, तब कृष्ण आयेगा। तब तक तुम आते-जाते रहेंगे। कृष्ण को रिसीव करने वाले माँ-बाप भी पहले से चाहिए ना। फिर सब अच्छे-अच्छे रहेंगे, बाकी सब चले जायेंगे, तब ही उसको स्वर्ग कहा जायेगा। तुम कृष्ण को रिसीव करने वाले रहेंगे। भल तुम्हारा छी-छी जन्म होगा क्योंकि रावण राज्य है ना। शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''कहते हैं ऋषि-मुनि आदि तो पवित्र हैं, परन्तु पैदाइश तो फिर भी विष से होती है ना। मूल बात ही यह है। रावणराज्य में पवित्रता हो न सके। ... तुम जानते हो हमको शिवबाबा से 21 जन्म अर्थात् आधा कल्प, 2500 वर्ष के लिए पवित्रता-सुख-शान्ति का वर्सा मिलता है। यह गारण्टी है। आधा कल्प है सुखधाम और आधा कल्प है दुखधाम।''

सा.बाबा 5.10.10 रिवा.

''सतयुग में शरीर भी ऐसे छोड़ते हैं, जैसे सर्प पुरानी खाल छोड़ देता है। अन्त में यह संकल्प आता है कि अब यह पुराना शरीर छोड़ना है। ... तुम जीते जी मरे तो हो परन्तु अभी पुरुषार्थ कर रहे हो कि आत्मा पवित्र बन जाये। पवित्र बनकर फिर यह पुराना शरीर छोड़ कर जाना है।''

सा.बाबा 25.09.10 रिवा.

''समझते हो कि कर्मातीत अवस्था हो जाये तो यह शरीर छूटे परन्तु जब कर्मातीत अवस्था होगी तो आपही शरीर छूट जायेगा। बुद्धि में आयेगा कि बस हम बाबा के पास जाकर रहें। इस पुराने शरीर से जैसे नफरत आती है। सर्प को जब नई खाल आ जाती है तो पुरानी खाल से नफरत आती है। तुम्हारी भी अभी नई खाल तैयार हो रही है।''

सा.बाबा 25.09.10 रिवा.

''अभी तुम बेहद के बाप के पास बैठे हो पवित्र बनने के लिए। पवित्र आत्मा को बनना है। ऐसे नहीं कि शरीर भी यहाँ पवित्र बनना है। नहीं, यहाँ आत्मा पवित्र बनती है। ... आत्मा पवित्र बन जाती है तो पुराना शरीर छोड़ देती है, फिर सतयुग में सतोप्रधान तत्वों से बना नया शरीर धारण करती है।''

सा.बाबा 3.09.10 रिवा.

''आत्मा पवित्र हो जायेगी तो फिर यह शरीर छूट जायेगा। आत्मायें सब भागेंगी। यह ज्ञान तुमको अभी है कि यह नाटक पूरा होता है, अभी हमको बाप के पास जाना है, इसलिए घर को याद करना है। इस देह हो छोड़ देना है।''

सा.बाबा 19.05.10 रिवा.

''सतयुग में हम देही-अभिमानी थे, तो खुशी से एक शरीर छोड़कर दूसरा लेते थे। तुम बच्चों को यह सब ज्ञान धारण कर, फिर औरों को भी समझाने के लायक बनना है तो बहुतों का कल्याण होगा। बाबा जानते हैं - ड्रामा अनुसार नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सर्विसएबुल बन रहे हैं।''

सा.बाबा 14.05.10 रिवा.

''आत्मा ही पवित्र-अपवित्र बनती है। जब आत्मा पवित्र बनती है तो शरीर भी पवित्र मिलता है। आत्मा के पतित बनने से शरीर भी पतित मिलता है। ... हम आत्मा पवित्र थे, फिर ऐसे 84 जन्म लेते-लेते अभी अन्तिम जन्म में अपवित्र बने हैं।''

सा.बाबा 27.12.09 रिवा.

''अन्त में भल तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जाती है, परन्तु शरीर तो पतित ही है ना, इसलिए तुमको स्वदर्शन चक्र नहीं दे सकते हैं। जब तुम सम्पूर्ण बनते हो तब फिर विष्णु की विजय माला के बनते हो। ... ये बड़ी समझने की बातें हैं। पहले-पहले तो यह बात समझानी है कि परमपिता परमात्मा से आपका क्या सम्बन्ध है, सबको बाप का परिचय देना है।''

सा.बाबा 22.05.12 रिवा.

योगबल और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति और उसका विश्व पर प्रभाव

सतयुग में देवतायें स्वेच्छा से शरीर छोड़ते हैं, वहाँ मृत्यु का नाम नहीं होता है और

शरीर धारण भी योगबल से करते हैं, भोगबल से नहीं। इस सत्य का वर्णन रामायण और महाभारत में भी है और अन्य धर्म ग्रन्थों में भी है।

ये विश्व नाटक 5000 वर्ष बाद हू-ब-हू पुनरावृत होने वाला आनादि अविनासी नाटक है जो चार समान भागों अर्थात् सतयुग-त्रेता-द्वापर-कलियुग में विभाजित है। सतयुग-त्रेता स्वर्ग और द्वापर-कलयुग नर्क कहलाता है। सतयुग-त्रेता दिन और द्वापर-कलियुग रात कहलाता है। सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग में आत्मा में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए सन्तानोत्पति योगबल से होती और मृत्यु का नाम नही होता है। द्वापर-कलियुग अर्थात् नर्क में योगबल अर्थात् आत्मिक शक्ति कम हो जाने के कारण आत्मा में योगबल से सन्तान को जन्म देने की शक्ति क्षीण हो जाती है और देहआभिमान के वशीमूत होने से आत्मा में विकारो की प्रवेशता होने के कारण भोगबल से सन्तानोत्पति की प्रथा शुरू हो जाती है और विकारों के वशीभूत कर्म होने से आत्मा को दुख-अशान्ति होती है। ये योगबल और भोगबल ही सृष्टि को अर्थात् सृष्टि-चक्र को दो भागों में विभाजित करता है।

जैसे दुनिया में आत्म-बल और बाहुबल का गायन है, ऐसे ही सन्तानोत्पत्ति के लिए भी विश्व-नाटक में योगबल और भोगबल का गायन है। शास्त्रों में भी दो प्रकार सन्तानों का गायन है, परन्तु उसका यथार्थ अर्थ कोई नहीं जानता है, इसलिए अभी जब परमात्मा योगबल से सन्तानोत्पत्ति का वर्णन करते हैं तो किसको सहज विश्वास नहीं होता है। अभी परमात्मा ने बताया है कि योगबल और भोगबल का विश्व-नाटक में क्या प्रभाव है। स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा को रेखांकित करने वाले ये ही दो शब्द हैं। रेखा के एक तरफ योगबल है, जिसे स्वर्ग कहा जाता है और जब योगबल खत्म हो जाता है तो उस रेखा को लांगते हैं और भोगबल का आरम्भ होता है तो उसको नर्क कहा जाता है। इस सत्य का ज्ञान भी बाबा ने अभी हमको दिया है, जिससे हम भोगबल को छोड़कर योगबल को धारण करने का सफल पुरुषार्थ करते हैं।

योगबल से आत्मा पावन बनती है और पावन आत्मा में ही योगबल होता है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। योगबल से जो आत्मायें पावन बनती हैं, वे स्वर्ग में जाकर जीवनमुक्ति का सुख भोगती हैं और जो भोगबल अर्थात् कर्मभोग को दण्ड के रूप में भोगकर पावन बनती वे द्वापर-कलियुग में अल्पकाल का सुख भोगती हैं।

बाबा ने स्वर्ग और नर्क का जो ज्ञान दिया है, उसके विधि-विधानों का जो ज्ञान दिया है, उसमें यह भी स्पष्ट किया है कि सतयुग में सन्तानोत्पत्ति भोगबल से नहीं होगी। वहाँ सन्तान योगबल से होती है, जिसके लिए बाबा ने पपीते की प्रजनन क्रिया, मोर की प्रजनन क्रिया आदि

का उदाहरण भी दिया है और ये भी कहा है कि मुख के प्यार से भी बच्चा पैदा हो सकता है। अब मुख का प्यार क्या है, यह विचारणीय शब्द है।

भोगबल की विकारी प्रक्रिया का अध्ययन करें तो स्पष्ट होता है कि विकार की उत्पत्ति पहले दृष्टि से ही होती है, उसके बाद ही इन्द्रियों की चंचलता, मुख का प्यार, स्पर्श आदि की चेष्टा और प्रक्रिया होती है। अनेक विकारी प्यार वालों को प्यार में चुम्बन, एक-दूसरे की जिव्हा आदि को टच करते हुये देखा जाता है, जो इस बात का संकेत है कि उससे भी एक-दूसरे के सेल्स ट्रान्सफर होते हैं, जो सन्तानोत्पत्ति का साधन बन जाते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भोगबल द्वारा सन्तानोत्पत्ति के अतिरिक्त योगबल की भी सन्तानोत्पत्ति हो सकती है, जो पहले दृष्टि से, बाद में मुख के प्यार से, उसके बाद स्पर्श आदि से होती होगी अर्थात् इस प्रकार से सेल्स ट्रान्सफर होते होंगे।

हर योनि की मादा में गर्भ धारण के समय नर को अपने संकल्प, दृष्टि, वृत्ति से आकर्षित करने की प्रवृत्ति होती है, जो किसी न किसी रूप में सतयुग में भी अवश्य होती होगी, जिसके कारण नर के अपनी दृष्टि-वृत्ति, मुख के प्यार, स्पर्श आदि से सेल्स ट्रान्सफर होते होंगे, जो द्वापर से विकार के रूप में होते हैं और गर्भ धारण करने का आधार बनते हैं।

''सतयुग को स्वर्ग कहा जाता है। ... सतयुग को कहा जाता है योगी दुनिया क्योंकि वहाँ भोग-विलास होता नहीं। कलियुग है भोगी दुनिया, नर्क।''

सा.बाबा 8.10.04 रिवा.

''जब दो युग पास्ट हुए फिर आता है द्वापरयुग, रावण का का राज्य। देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं तो विकार का सिस्टम बन जाता है। सतयुग-त्रेता में सभी निर्विकारी रहते हैं।''

सा.बाबा 16.11.04 रिवा.

''सतयुग-त्रेता में एक बच्चा और एक बच्ची होती है। फिर पिछाड़ी में थोड़ी गड़बड़ होती है, परन्तु आधा कल्प तक विकार की बात नहीं होती।... परन्तु त्रेता में दो कला कम हो जाने से कुछ न कुछ प्योरिटी कम हो जाती है।''

सा.बाबा 10.12.11 रिवा.

''मन्दिरों में शिवलिंग की व देवताओं की पूजा करते हैं, तो जरूर चेतन्य में थे, तब तो पूजा करते हैं, उनकी महिमा गाते हैं। ... पवित्र की ही पूजा करते हैं। मनुष्य जो विकार से पैदा होते हैं, उनकी पूजा नहीं हो सकती। देवताओं की पूजा होती है, क्योंकि वे पवित्र हैं। देवतायें विकार से नहीं, योगबल से जन्म लेते हैं, इसलिए उनकी पूजा होती है।''

सा.बाबा 26.07.11 रिवा.

''अभी शुद्ध जन्म तो हो न सके। गुल-गुल जन्म पहले-पहले कृष्ण का ही होता है। उसके बाद ही नई दुनिया बैकुण्ठ कहा जाता है। कृष्ण बिल्कुल गुल-गुल नई दुनिया में आयेंगे। रावण सम्प्रदाय बिल्कुल खत्म हो जायेगी। कृष्ण का नाम उनके माँ-बाप से भी बहुत बाला है। ... कृष्ण से पहले जिनका भी जन्म होता है वह योगबल से जन्म नहीं कहेंगे। ऐसे नहीं कि कृष्ण के माँ-बाप ने योगबल से जन्म लिया है। नहीं, अगर ऐसा होता तो उनका भी नाम बाला होता। तो सिद्ध होता है कि उनके माँ-बाप ने इतना पुरुषार्थ नहीं किया है, जितना कृष्ण ने किया है। तुम ये सब बातें आगे समझते जायेंगे।'' सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वे ही पहले सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं, तब उनका जन्म होता है, फिर कहेंगे पावन दुनिया, इसलिए कृष्ण का नाम बाला है। उनके माँ-बाप का इतना नहीं है। आगे चलकर तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। अभी टाइम पड़ा है।'' सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''विनाश की आग शुरू होगी विलायत से, फिर आहिस्ते-आहिस्ते सारी दुनिया उसमें जल जायेगी। पिछाड़ी में तुम बच्चे थोड़े से रह जाते हो। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जाती है तो फिर तुमको वहाँ नई दुनिया मिलती है।... अन्त में तुमको सब साक्षात्कार होंगे। तुम बाबा को और स्वर्ग को देखते रहेंगे। जो बाबा की याद में और ज्ञान में मस्त होंगे, वे ही अन्त में सीन-सीनरियाँ देख सकेंगे।'' सा.बाबा 9.03.10 रिवा.

श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख का राज़

दुनिया में किसी राजकुमार या महाराजा-महारानी के मुकुट में या किसी देवी-देवता के मुकुट में किसी पंक्षी के पंख को नहीं दिखाते हैं परन्तु श्रीकृष्ण के मुकुट में मोर पंख को दिखाते हैं। इसका क्या रहस्य है, यह किसको पता नहीं है, जो अभी बाबा ने बताया है कि मोर एक ऐसा पक्षी है, जिसकी सन्तानोत्पत्ति विकार से नहीं होती। सन्तानोत्पत्ति के लिए मोर-मोरनी विषय-भोग में न जाकर मोरनी, मोर के अस्रु पीकर गर्भ धारण करती है। श्रीकृष्ण ही नई पावन सृष्टि के प्रथम राज़कुमार होते है, जिनका जन्म भोगबल से न होकर योगबल से होता है, उसके बाद उनके समकक्ष सभी राजकुमारों और राजकुमारियों और साधारण प्रजा का जन्म भी योगबल से ही होता है। इसलिए श्रीकृष्ण के मुकुट में मोरपंख दिखाते हैं और श्रीकृष्ण को मोरमुकुटधारी के नाम से पुकारते हैं। आधा कल्प तक सारी सृष्टि में योगबल के जन्म की यह प्रथा चलती है। दो युगों के बाद जब आत्माओं में यह योगबल कम हो जाता है और वे

योगबल से सन्तानोत्पत्ति में असमर्थ हो जाते हैं, तब भोगबल से सन्तानोत्पत्ति की प्रथा आरम्भ होती है। इस सत्य का ज्ञान भी अभी मिला है कि सतयुग में सन्तान योगबल से होगी, भोगबल से नहीं। स्वर्ग और नर्क की पहचान में इस सत्य की अहम् भूमिका है।

''तुम हो डबल अहिंसक। न काम कटारी, न वह लड़ाई। ... श्रीकृष्ण का चित्र तो कॉमन है - मोरमुकुटधारी। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है कि वहाँ जन्म कैसे होता है।''

सा.बाबा 4.2.05 रिवा.

''तुम मुझ ज्ञान सागर के बच्चे काम-चिता पर बैठ एकदम जल गये हो, अब फिर बाप ज्ञान-चिता पर बिठाये, पावन बनाये, स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। इसलिए कृष्ण को श्याम-सुन्दर नाम दिया है। ... अभी बाप तुमको कौड़ी से हीरे मिसल बनाते हैं, तो कितना इस पढ़ाई पर अटेन्शन देना चाहिए। बाप की याद से ही तुम स्वर्ग के मालिक बनेंगे।''

सा.बाबा 25.05.11 रिवा.

''यह है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप ही देते हैं। बाप को रुहानी सर्जन भी कहा जाता है। वह आकर रूहों को इन्जेक्शन लगाते हैं, जिससे आत्मा पतित से पावन बनती है।... बाप अपना भी परिचय देते हैं और आत्मा का भी ज्ञान देते हैं। ... श्रीकृष्ण को श्याम-सुन्दर कहते हैं। कृष्ण की आत्मा पुनर्जन्म लेते-लेते अब श्याम बनी है, फिर बाप सुन्दर बनाते हैं। काम चिता पर बैठने से काले बन जाते हैं।''

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

''जो भी बड़े-बड़े लोग हैं अथवा महात्मा आदि हैं, उनकी तकदीर में ही यह बाप की नॉलेज नहीं है। उन्होंको अपना बहुत घमण्ड रहता है। इसमें बहुत करके गरीब ही आते हैं। उनकी ही तकदीर में यह नॉलेज है। ... मैं आता ही उसके तन में हूँ, जो पूरे 84 जन्म लेते हैं, एक दिन भी कम नहीं। श्रीकृष्ण जब पैदा हुआ, उस समय 16 कला सम्पूर्ण ठहरा। फिर कलायें कम होते-होते सतो, रजो, तमों में आते हैं। ... सतयुग-कलियुग सब में ऐसा होता है।''

सा.बाबा 12.11.10 रिवा.

''यहाँ का फूल होगा, वह जरूर आयेगा। यह झाड़ दिनोदिन बढ़ता रहेगा। बाप ने बीज लगाया है, उनसे एक ब्रह्मा निकला, उनसे फिर ब्राह्मण कुल बढ़ता गया। ... पवित्र भी जरूर बनना है। पुजारी लोग नारायण के चित्र को इतना नहीं मानते, जितना कृष्ण को। कृष्ण का इतना मान क्यों है ? क्योंकि छोटा बच्चा है। छोटे बच्चों को महात्मा से भी ऊंच रखते हैं। ... छोटे बच्चों को विकारों का पता ही नहीं रहता है।''

सा.बाबा 8.07.10 रिवा.

''आत्मा ही सतोप्रधान व तमोप्रधान बनती है। जैसी आत्मा, उसको वैसा ही शरीर मिलता है।

... श्रीकृष्ण की बहुत महिमा है क्योंकि श्रीकृष्ण छोटा बच्चा है, लक्ष्मी-नारायण की इतनी महिमा नहीं है। ... निवृत्ति मार्ग वाले सन्यासी भी दुनिया को कुछ थमाते हैं। ... सन्यासियों की पवित्रता से भारत थमा रहता है। भारत जैसा पवित्र और धनवान खण्ड और कोई होता नहीं है।''

सा.बाबा 12.03.10 रिवा.

''शिवबाबा तो भोजन आदि खाते नहीं हैं। तुम बाप की याद में रह पवित्र भोजन बनाते हो तो उससे बल मिलेगा। ... तुम बाप को याद करते हो फिर बाबा गॉरण्टी करते हैं तुम कृष्णपुरी में जरूर जायेंगे। अभी हम श्रीमत पर अपने लिए कृष्णपुरी स्थापन कर रहे हैं, फिर हम ही राज्य करेंगे। जो श्रीमत पर चलेंगे, वे कृष्णपुरी में जरूर आयेंगे। लक्ष्मी-नारायण से भी कृष्ण का नाम अधिक बाला है। बाल अवस्था सतोप्रधान होती है, इसलिए कृष्ण का नाम जास्ती है।''

सा.बाबा 17.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पाप-पुण्य

बाबा ने कहा है काम-विकार में जाने वाले को पापात्मा कहा, क्रोध वाले को पापात्मा नहीं कहते हैं। इससे सिद्ध होता है कि पाप का मूल कारण काम विकार है, जिसके वशीभूत होने पर ही आत्मा पापात्मा बनती है।

पवित्र आत्मा से सदा ही पुण्य कर्म होता है, उससे पाप कर्म हो नहीं सकता परन्तु एक ब्रह्मचारी पाप-पुण्य दोनों प्रकार के कर्म कर सकता है। इसलिए पवित्र आत्मा कब दुख नहीं भोग सकती, परन्तु ब्रह्मचारी को अपने पाप-पुण्य के कर्मों अनुसार दुख-सुख दोनों भोगने होते हैं।

''सिर्फ घर को याद करेंगे तो भी विकर्म विनाश नहीं होंगे। बाप को याद करेंगे तो पाप विनाश होंगे और तुम अपने घर चले जायेंगे। ... पतित से पावन कैसे बनें - बाप ही आकर यह नॉलेज देते हैं। ज्ञान का सागर बाप ही है।''

सा.बाबा 14.05.10 रिवा.

''तुम जानते हो हम 84 जन्मों का चक्कर लगाए सुन्दर से श्याम बन गये हैं। अब बाप हमको श्याम से सुन्दर बनने के लिए एक ही दवाई देते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप नाश हो जायेगे और तुम्हारी आत्मा पतित से पावन बन जायेगी। ... काम चिता पर चढ़ने से सुन्दर से श्याम अर्थात् काले बन जाते हैं, फिर ज्ञान चिता पर बैठ काम को जीतने से सुन्दर जगतजीत बन जाते हैं।''

सा.बाबा 15.05.10 रिवा.

''सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। ... नम्बरवन पाप है विकार में जाना, उसके बाद और भी बहुत पाप होते रहते हैं। ... बाप का बनकर कोई पाप करते हैं तो उसका सौगुणा दण्ड हो जाता है।''

सा.बाबा 15.05.10 रिवा.

''यहाँ जब बहुत अत्याचार होते हैं, तो पाप का घड़ा भर जाता है, फिर विनाश होता है। ... बाप का बनकर अगर विकार में गिरे तो और भी रसातल में चले जायेंगे, और ही पापात्मा बन जायेंगे। यह है ईश्वरीय गवर्मेन्ट। अगर मेरी मत पर पवित्र नहीं बनें तो धर्मराज द्वारा बहुत कड़ी सज़ा खानी पड़ेगी। जन्म-जन्मान्तर जो भी पाप किये हैं, उस सबका सज़ा खाकर हिसाब-किताब चुक्तू करना होगा।''

सा.बाबा 25.05.12 रिवा.

Q. पुण्य की दुनिया, पाप की दुनिया और पावन दुनिया में क्या अन्तर है?

कलियुग है पाप की दुनिया क्योंकि यहाँ पाप ही होता रहता है, सतयुग है पावन दुनिया क्योंकि वहाँ कोई पतित होता नहीं है। परन्तु सतयुग में कोई पुण्य करने की बात नहीं होती है तो उसको पुण्य की दुनिया कैसे कहेंगे? सतयुग है पुण्यात्माओं की दुनिया क्योंकि संगमयुग पर जो आत्मायें परमात्मा की मत पर पुण्य करते हैं अर्थात् पापात्माओं को पुण्यात्मा बनाने की सेवा करते हैं, वे ही सतयुग में जाते हैं, इसलिए वह पुण्यात्माओं की दुनिया है, परन्तु वहाँ कोई पुण्य कर्म करते नहीं हैं। पुण्य कर्म संगमयुग पर होता है।

''पाप की दुनिया और पुण्य की दुनिया किसको कहा जाता है, यह तुम ब्रह्मा कुमार-कुमारियाँ ही जानते हो। ... पावन दुनिया किसको कहा जाता है, वह कब स्थापन होती है, कौन करता है, यह किसको भी पता नहीं है। पतित-पावन नॉलेजफुल बाप को तुम बच्चे ही जानते हो। पतित दुनिया कैसे पावन बनती है, वह पतित-पावन बाप आकर बताते हैं।''

सा.बाबा 31.10.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे अभी तुमको वापस घर चलना है, तुमको अपना पुराना पाप का खाता चुक्ता करना है। व्यापारी 12-12 मास बाद अपने फायदे-घाटे का हिसाब निकालते हैं। ... अब तुमको फायदे में जाना है, घाटे के खाते को अब योगबल से चुक्तू करना है। अभी तुम्हारे पापों का खाता खत्म होना चाहिए और सुख का खाता जमा होना चाहिए।''

सा.बाबा 26.04.12 रिवा.

''यह एक ईश्वरीय नियम व मर्यादा है कि कोई भी एक मर्यादा का पालन नहीं करते तो वे मर्यादा पुरुषोत्तम नहीं बन सकते। ... बाप के आगे छिपाने से एक के ऊपर लाख गुणा बोझ चढ़े हुए होने के कारण जब तक स्वयं को हल्का नहीं किया है तो एक गलती के पीछे अनेक

गलतियाँ करने से और एक मर्यादा का उलंघन होने से अनेक मर्यादाओं का उलंघन हो जाने के कारण लाख गुणा बोझ चढ़ता जाता है।''

अ.बापदादा 4.07.74

''विकार में जाना नम्बरवन पतितपना है। यह सारी दुनिया पतित है, इसलिए सब पुकारते है - हे पतित-पावन आओ। ... चलते-चलते ग्रहचारी बैठ जाती है तो फेल हो जाते हैं। ... यह इन्द्र सभा है, इसमें गन्दे थोड़ेही आ सकते हैं। जो ब्राह्मणी ले आती है, उस पर भी बड़ी जबाबदारी है। विकार में जाने वाले को ले आई तो ब्राह्मणी पर भी बोझ पड़ेगा, इसलिए किसको भी सम्भाल कर ले आना चाहिए।''

सा.बाबा 19.04.11 रिवा.

''पतितों को पावन बनाने वाले बाप, जिन बच्चों को पतित से पावन बना रहे हैं, उनसे कहते हैं - अपने दिल से पूछो कि हम कहाँ तक पुण्यात्मा बनें हैं? ... तुम भारतवासी देवी-देवता धर्म के थे, अभी पतित होने के कारण अपने को देवता कहला नहीं सकते।... सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, फिर त्रेता में राम-सीता की डॉयनेस्टी चली।''

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

''पूरी कर्मातीत अवस्था वाले राधे-कृष्ण ही हैं। वे ही पहले सद्गति में आते हैं। पाप आत्मायें सब खत्म हो जाती हैं, तब उनका जन्म होता है, फिर कहेंगे पावन दुनिया, इसलिए कृष्ण का नाम बाला है। उनके माँ-बाप का इतना नहीं है। आगे चलकर तुमको बहुत साक्षात्कार होंगे। अभी टाइम पड़ा है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''जब अपने को आत्मा समझें, देही-अभिमानी बनें, तब ही बाप को याद कर सकें। वह है अज्ञान मार्ग, यह है ज्ञान मार्ग। ज्ञान तो एक ही बाप देते हैं, जो सर्व की सद्गति करते हैं। वह है निराकार। ... अपने को आत्मा समझो और आत्मा समझकर बाप को याद करो, तब ही जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म हो। पावन बनने का और कोई उपाय नहीं है।''

सा.बाबा 26.10.10 रिवा.

''दुनिया में मनुष्य बहुत से ऐसे पाप करते हैं, जिसमें वे समझते कि पाप नहीं है, परन्तु पाप होता है। मनुष्य विकार को भी पाप नहीं समझते हैं। अभी बाप ने बताया है कि यह बड़े ते बड़ा पाप है, इन पर जीत पानी है। ... बरोबर हर एक को कर्मों की भोगना तो भोगनी ही होती है। अभी तुम बच्चे कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को समझते हो। बाप की याद में रह जो कर्म करते हैं, वे अच्छे कर्म होते हैं।''

सा.बाबा 24.09.10 रिवा.

''सन्यासियों को कहेंगे पवित्रात्मा और जो दान आदि करते हैं, उनको कहेंगे पुण्यात्मा। इससे

सिद्ध होता है कि आत्मा ही पवित्रात्मा बनती है और आत्थ्मा ही पुण्यात्मा बनती है, शरीर नहीं। आत्मा निर्लेप नहीं है। ... कई सिद्ध कर बताते हैं कि झाड़ में भी आत्मा है। परन्तु बाप समझाते हैं - मनुष्य की जो आत्मा है, वह जड़ तत्व में या झाड़ में जा नहीं सकती।''

सा.बाबा 22.07.10 रिवा.

Q. हमारे सिर पर पापों का बोझा कितना है, उसकी कसौटी क्या है तथा आत्मा पर पापों का बोझा कितने जन्मों से चढ़ा है और आत्मा पर जंक कितने जन्मों से चढ़ी है?

इस सृष्टि-चक्र में दो प्रकार की प्रक्रियायें हर क्षेत्र में होती है। एक है उतरती कला की प्रक्रिया और दूसरी है चढ़ती कला की प्रक्रिया, जो चेतन आत्माओं और जड़-जंगम प्रकृति पर भी प्रभावित होती है। उसके अनुसार जो आत्मा परमधाम से आती है, वह पूर्ण पवित्र होती है परन्तु आते ही उस पर इस साकार सृष्टि का नियम प्रभावित हो जाता है और उसकी पवित्रता की कलायें कम होने लगती हैं और आधे समय वह पाप कार्मों में भी प्रवृत्त हो जाती है, जो प्रवृत्ति सतत बढ़ती जाती है। फिर जब वह संगम पर आती है तो चढ़ती कला की प्रक्रिया प्रभावित होती है और पाप कर्मों की प्रवृत्ति कम होती जाती है और पुण्य कर्मों की प्रवृत्ति बढ़ती जाती है और बढ़ते-बढ़ते वह सम्पूर्ण पवित्र, पुण्यात्मा बनती है। जैसे-जैसे पाप का खाता कम होता जाता है, पुण्य का खाता बढ़ता है आत्मा शान्ति, शक्ति, खुशी की स्वत: अनुभूति होती है। पापों का बोझ आत्मा को उड़ने नहीं देता है अर्थात् आत्मा को देह से न्यारा नहीं होने देता है और देह से न्यारा न होने के कारण आत्मा अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो परम-शान्ति, परम-शक्ति का अनुभव नहीं कर सकती है। आत्मिक स्वरूप परम-शान्त और परम-शक्ति सम्पन्न है परन्तु पापों का बोझ आत्मा को उसे अनुभव करने नहीं देता है। अभी बाबा ने यथार्थ ज्ञान दिया है और अपनी शक्ति से आत्मा को यह अनुभव कराया है, जिस अनुभव के आधार पर आत्मा यथार्थ पुरुषार्थ कर देह से न्यारी होने में समर्थ होती है।

आत्मा पर देहभान और देहाभिमान की जंक 5000 वर्ष की चढ़ी हुई, जो अभी उतारनी है परन्तु पापों का बोझा अर्थात् कर्मभोग, कर्म-बन्धन, विकारों के वशीभूत विकर्मों का बोझ द्वापर से चढ़ा हुआ है, जिस पापों के बोझा को आत्मा को अभी संगमयुग पर परमात्मा की याद अर्थात् कर्मयोग से भस्म करना है और आत्मा पर जो जंक चढ़ी है, वह भी परमात्मा की याद से ही उतारनी है। साथ ही कर्मयोग के द्वारा आधे कल्प के लिए कर्मफल और कर्म-सम्बन्ध का खाता जमा भी करना है।

''विकार में जाने से ही पापात्मा बनते हैं। ... मनुष्यों को पता नहीं है कि देवतायें, जो पुण्यात्मा

हैं, वे ही फिर पुनर्जन्म में आते-आते पापात्मा बनते हैं।... तुम बच्चों को यह बात सबको समझानी है, सर्विस करनी है।''

सा.बाबा 1.11.04 रिवा.

पुण्य क्या है और पाप क्या है, पुण्यात्मायें कहाँ होती हैं और पापात्मायें कहाँ होती है। पुण्यात्मा कैसे बनते हैं, पापात्मा कैसे बनते हैं, ये सब राज़ भी परमात्मा ने अभी बताये हैं। सतयुग में भल आत्मा पवित्र होती है, सुख-शान्ति में होती है परन्तु वहाँ पाप या पुण्य की बात ही नहीं है, इसलिए देवताओं को पाप-पुण्य शब्दों का भी ज्ञान नहीं है। ये शब्द द्वापर से ही निकलते हैं, जब आत्मा देहाभिमान के वशीभूत पाप-कर्म में प्रवृत्त होकर दुख-अशान्ति की अनुभूति करती है। पाप के कारण ही आत्मा को दुख होता है, तब ही पापों से मुक्त पुण्यात्मा बनने के लिए पुरुषार्थ भी करते हैं परन्तु फिर भी दिनोंदिन पापात्मा ही बनते जाते हैं क्योंकि जो भी कर्म करते, उसमें देहाभिमान के कारण विकारों का अंश होता ही है।

पांच विकारों के वशीभूत आत्मा जो भी कर्म करती है, वह पाप ही होता है और उससे आत्मा की गिरती कला होती है। पतित-पावन परमात्मा की याद में जो भी कर्म करते हैं वे ही पुण्य कर्म होते हैं क्योंकि उससे ही आत्माओं की चढ़ती कला होती है, उससे दूसरी आत्माओं का भी कल्याण होता है। केवल आत्मिक स्थिति में जो कर्म होते हैं, वे पाप और पुण्य दोनों से परे होते हैं, इसलिए ही सतयुग-त्रेता में आत्माओं के कर्मों को अकर्म कहा जाता है क्योंकि उनसे न पाप होता है और न ही पुण्य होता है। भक्ति-मार्ग में जो दान-पुण्य, साधना आदि करते हैं, उनसे अल्पकाल के लिए पुण्य होता है परन्तु अन्तिम परिणाम पाप का ही होता है क्योंकि उनसे गिरती कला ही होती है। पुण्य कर्म अभी संगमयुग पर ही होता है, जब आत्मा यथार्थ ज्ञान पाकर परमात्मा की याद में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है और रहमदिल बनकर अन्य आत्माओं को भी वह सुख अनुभव कराने का पुरुषार्थ करती है।

''अभी बच्चे चलते-फिरते अथवा यहाँ बैठे-बैठे जन्म-जन्मान्तर के जो पाप सिर पर हैं, उन पापों को याद की यात्रा से विनाश करते हैं। ... बच्चे समझते हैं - हम याद की यात्रा से अपने पाप काट रहे हैं, गोया अपना कल्याण कर रहे हैं।''

सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

पापात्मा बनने का मूल कारण क्या है ? बाबा ने अनेक बार मुरली में कहा है - क्रोधी को पापात्मा नहीं कहेंगे। भल क्रोध से भी आत्मिक शक्ति का पतन होता है। इसीलिए सन्यासियों में क्रोध होते भी काम विकार को छोड़ने के कारण उनको पतित मनुष्य सिर झुकाते हैं। उनको पतित नहीं कहा जाता है।

''यह भी तुम जानते हो - कब से पाप शुरू किये हैं, जब से काम चिता पर चढ़े हो। तो तुम्हारी बुद्धि में सारा चक्र है।... तुम बाजोली वा 84 के चक्र को भी जानते हो।... यह चक्र बुद्धि में सदैव फिरता रहना चाहिए। यह नालेज अभी तुम ब्राह्मणों के पास ही है, न शूद्रों के पास और न देवताओं के पास है।'' सा.बाबा 9.11.04 रिवा.

''अभी तो अनेक आत्माओं के अनेक जन्मों के बने हुए खाते, जिसको पाप-कर्मों का खाता कहा जाता है, उसको भस्म कराने के आप निमित्त हो। जो अन्य के व्यर्थ खाते को भस्म कराने वाले हैं, वे स्वयं अपना ऐसा खाता बना नहीं सकते। यह तो पुराने खाते हैं। आप तो पुराने खाते समाप्त कर नया जन्म, नये खाते बनाने वाले हो। पुराने खाते सब खत्म हो रहे हैं - ऐसा अनुभव होता है?'' अ.बापदादा 4.2.75

''जैसा संकल्प वैसा स्वरूप बनने वाले सच्चे वैष्णव हो, ऐसे सच्चे वैष्णवों को क्या कोई छू सकने का साहस कर सकता है? अगर छू लेते हैं, तो छोटे मोटे पाप बनते जाते हैं। ऐसे सूक्ष्म पाप, आत्मा को ऊंच स्टेज पर जाने से रोकने के निमित्त बन जाते हैं क्योंकि पाप अर्थात् बोझा, वह फरिश्ता बनने नहीं देते बीज रूप स्थिति व वानप्रस्थ स्थिति में स्थित नहीं होने देते।''

अ.बापदादा 23.5.74

''पाँच विकारों के वश किये हुए कर्म, विकर्म या पाप कहे जाते हैं - यह है पापों का मोटा रूप। ऐसे ही महीन पुरूषार्थ अर्थात् महारथी के सामने पाँच तत्व अपनी तरफ, भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों को समझाना और उन्हों को जीतना सहज है लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरूषार्थ है।'' अ.बापदादा 23.5.74

परमधाम में आत्मा की शान्त-स्थिति पाप-पुण्य दोनों से परे है, सतयुग-त्रेतायुग की शान्ति और स्थिति सुखमय है परन्तु वह भी पाप-पुण्य से परे हैं। द्वापर-कलियुग की स्थिति पाप-पुण्य दोनों से युक्त है लेकिन उसमें पाप की स्थिति अधिक है, पुण्य की कम। संगमयुग की अर्थात् हमारी वर्तमान स्थिति ही पुण्यमय है। संगमयुग अर्थात् जब हमारी बुद्धि का काँटा परमधाम में परमपिता परमात्मा के साथ लटका हुआ हो और हमारे संकल्प, कर्म विश्व-कल्याण के कार्य में रत हों। उसके अतिरिक्त जो स्थिति है, वह तो कलियुग की ही है अर्थात् पापमय ही है, भल हम अभी संगमयुग पर खड़े हो गये हैं। संगमयुग पर हमारी स्थिति दोनों तरफ चलती रहती है परन्तु परमात्मा से मिले यथार्थ ज्ञान और उनके साथ के कारण चढ़ती कला में अधिक और उतरती कला में कम रहती है अर्थात् पुण्य अधिक और पाप कम होता है, इसलिए पुण्य का खाता बढ़ता जाता है। ये पुरुषोत्तम संगमयुग का पुण्य का समय है और

यही परमानन्दमय है।

''कोई चीज छिपाकर खा लेते हैं। समझते थोड़ेही हैं कि यह भी पाप है। चोरी हुई ना। सो भी शिवबाबा के यज्ञ की चोरी करना बहुत खराब है।''

सा.बाबा 21.7.05 रिवा.

''बाबा ने डॉयरेक्शन दिया है कि जब तक जीते हो, तब तक बाप को याद करते रहो। ... बाप कहते हैं - बच्चे बाप की याद में रहो तो तुम्हारे जो जन्म-जन्मान्तर के पाप हैं, जिनकी आत्मा पर कट चढ़ी हुई है, वह निकल जायेगी और तुम आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। तुम्हारी आत्मा असुल में सतोप्रधान थी, फिर पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बन गई हो।''

सा.बाबा 21.10.11 रिवा.

''ड्रामा अनुसार तुम कहाँ से गिरे हो। एकदम ऊंच चोटी से। ज़रा भी बुद्धि में नहीं आता कि हम कौन हैं। ... हर एक मनुष्य एक-दो से जास्ती अजामिल है। मनुष्यों को क्या पता है कि पास्ट जन्म में हमने क्या-क्या किया है। अभी तुम समझते हो पाप ही किये हैं। वास्तव में इस दुनिया में पुण्यात्मा एक भी नहीं है।... भल कोई हॉस्पिटल आदि बनवाते हैं, सो क्या हुआ। उससे सीढ़ी उतरने से थोड़ेही बच जायेंगे। चढ़ती कला तो किसी की भी हो न सके।''

सा.बाबा 14.09.10 रिवा.

''अभी बाप की याद से तुम्हारी कट उतर रही है। जो याद नहीं करते हैं, उनकी कट भी नहीं उतरती है। बहुत कट चढ़ी हुई होगी तो पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। सबसे बड़ी कट चढ़ती ही है विकारों से। पतित भी उनसे बने हैं। अपनी जाँच करनी है - हमारी बुद्धि क्रिमिनल तरफ तो नहीं जाती है। अच्छे-अच्छे फर्स्टक्लास बच्चे भी इसमें फेल हो पड़ते हैं। मुख्य बात है पवित्रता की।''

सा.बाबा 6.09.10 रिवा.

''सिर्फ इस जन्म को नहीं देखना है परन्तु जब से तुम तमोप्रधान बने हो, सीढ़ी नीचे उतरते पतित बने हो, तो जरूर पाप किये होंगे। अब यह समझ की बात है। कितना जन्म-जन्मान्तर का पाप सिर पर रहा हुआ है।''

सा.बाबा 10.04.10 रिवा.

Q. हमारा पाप का खाता खत्म हो गया है या हो रहा है और पुण्य का खाता जमा हो रहा है, उसकी निशानी क्या है ?

जब आत्मा का पाप का खाता खत्म हो जाता है तब -

आत्मा अपने को हल्का अनुभव करती है, जिससे उसको अपने मूल स्वरूप की आकर्षण होती है अर्थात् सहज ही अपने मूल स्वरूप में स्थित हो परम-शान्ति और परम-शक्ति की अनुभूति

करती है।

आत्मा अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, जो संगमयुग की विशेष प्राप्ति है और आत्माओं को परमात्मा का परम वरदान है।

आत्मा की एकाग्रता शक्ति बढ़ जाती है, जिससे उसकी निर्णय शक्ति बढ़ जाती है, इसलिए कृत्य-अकृत्य के विषय में निर्णय करने में उसको देर नहीं लगती है, कोई उलझन नहीं होती है। उसकी कृत्य में अभिरुचि और अकृत्य में अरुचि स्वत: होती है।

व्यर्थ संकल्प-विकल्प नहीं चलते हैं क्योंकि उसको अपने भविष्य के विषय में कोई चिन्ता नहीं रहती है।

उसकी इच्छायें-आशायें नहीं रहती हैं क्योंकि उसके आवश्यकतानुसार और समय पर सब कार्य स्वत: सिद्ध होते हैं।

उसको राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आदि के वशीभूत कोई व्यर्थ संकल्प नहीं चलता है।

उसकी मान-अपमान, निन्दा-स्तुति, जय-पराजय, लाभ-हानि, प्राप्ति-अप्राप्ति, यश-अपयश में समान स्थिति रहती है क्योंकि उसकी बुद्धि में विश्व-नाटक का ज्ञान जागृत रहता है।

उसकी दृष्टि में अपने-पराये, शत्रु-मित्र का भेद नहीं रहता है क्योंकि उसके लिए सब अपने होते हो जाते हैं।

उसकी सहज आत्मिक स्थिति रहती है और सबके प्रति आत्मिक दृष्टि रहती है, जिससे आत्माओं का उसके प्रति आकर्षण बढ़ जाता है।

उसकी सर्वात्माओं के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना रहती है।

वह अपने आत्मिक स्वरूप में संकल्प करते ही सहज स्थित हो जाता है और जब चाहे, जहाँ चाहे अपनी मन-बुद्धि को सहज एकाग्र कर सकता है।

''तुमको हर कर्म ज्ञान युक्त करना है। दान भी पात्र को देना है। पापात्माओं को देने से फिर देने वाले पर भी उसका असर पड़ जाता है। वे भी पापात्मा बन जाते हैं। इसलिए कब ऐसे को दान नहीं देना चाहिए, जो उस पैसे से फिर कोई पाप कर्म करे। पापात्माओं को देने वाले तो दुनिया में बहुत बैठे हैं। अब तुमको ऐसा नहीं करना है।''

सा.बाबा 12.08.10 रिवा.

''हर एक मनुष्य कुछ न कुछ दान-पुण्य आदि जरूर करते हैं। वह है पापात्माओं का पापात्माओं को दान-पुण्य करना। फिर भी उसका अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है।... परन्तु उससे सर्व मनोकामनायें तो सिद्ध नहीं होती हैं। यहाँ तो बेहद के बाप द्वारा तुम्हारी सर्व

मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं। तुम पावन बनते हो तो अपने सब पैसे विश्व को पावन बनाने में लगाना अच्छा है।''

सा.बाबा 16.08.10 रिवा.

''भल वहाँ राजा अथवा प्रजा सब सुखी रहते हैं, फिर भी पुरुषार्थ तो ऊंच पद पाने का करना है ना। ... बाप की याद से ही जमा होगा और पाप कटते जायेंगे। अपना जमा और ना का रोज़ पोतामेल निकालना चाहिए। बाप को बुलाते ही हैं कि आकर हमको पतित से पावन बनाओ। ऐसे थोड़ेही कहते हैं कि आकर विश्व का मालिक बनाओ।''

सा.बाबा 30.09.10 रिवा.

''जितनी अन्दर सफाई होगी, उतना हल्कापन भी होगा और जितना हल्के होंगे, उतना एक-दो के समीप आयेंगे और दूसरों को भी हल्का बना सकेंगे। हल्कापन होने के कारण चेहरे से लाइट दिखाई देगी। ... सर्विस की आदि को स्मृति में लाओ। लाइट दिखाई देती थी, बहुत साक्षात्कार होते थे, देवी का रूप अनुभव करते थे। अभी स्पीकर लगते हो।''

अ.बापदादा 9.10.71

''कितना जन्म-जन्मान्तर का पाप सिर पर रहा हुआ है, यह कैसे पता पड़े ? ... जितना विकर्म विनाश होंगे, उतना बाप के साथ योग अच्छा लगेगा।... जितना हम योग लगायेंगे, पवित्र बनेंगे, पाप कटते जायेंगे, उतना योग बढ़ता जायेगा।... कर्म सम्बन्धियों आदि में बुद्धि जाती है तो समझना चाहिए कि हमारे विकर्मों का खाता बहुत रहा हुआ हैं।''

सा.बाबा 10.04.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सम्पूर्णता

सम्पूर्णता ही पवित्रता है और पवित्रता ही सम्पूर्णता है, ब्रह्मचर्य उसके लिए पुरुषार्थ की पहली सीढ़ी है अर्थात् आधार है।

आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति क्या है, सम्पूर्णता को प्राप्त करने के लिए क्या पुरुषार्थ है, सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा की स्थिति क्या होती है - ये सब ज्ञान भी परमात्मा ही देते हैं। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा ही परमधाम जा सकती है। इस सम्पूर्णता की स्थिति को प्राप्त तो सभी आत्मायें करती हैं परन्तु उनकी सम्पूर्णता उनके पार्ट के अनुसार नम्बरवार ही होती हैं। यदि पार्ट के हिसाब से देखें तो एक ब्रह्मा बाबा का ही आलराउण्ड पार्ट है, उनके ही पूरे 84 जन्म होते हैं। उसके अतिरिक्त सभी आत्माओं का पार्ट और जन्म नम्बरवार ही है। पूरा आलराउण्ड पार्ट नहीं कहा जा सकता है। इसलिए सबकी सम्पूर्णता की स्थिति भी नम्बरवार ही होती है।

इस विश्व-नाटक में जब से आत्मा आती है, तब से ही उसके अन्य आत्माओं और प्रकृति के साथ हिसाब-किताब आरम्भ हो जाते हैं तथा जब कल्पान्त में वापस परमधाम जाती है तो सब हिसाब किताब पूरे करके ही जाना होता है। ये आत्माओं और प्रकृति के साथ हिसाब-किताब का पूरा होना ही आत्मा की सम्पूर्णता है, जिसे कर्मातीत स्थिति, बाप समान स्थिति भी कहा जाता है।

''जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण।... इसलिए लक्ष्य सदैव सम्पूर्णता का रखना है, जो सम्पूर्ण मूर्त प्रत्यक्ष प्रख्यात हो चुके हैं, उनका लक्ष्य रखना है। जो अभी गुप्त हैं, प्रत्यक्षता में नहीं आये हैं, उनका भी लक्ष्य नहीं रख सकते।'' अ.बापदादा 29.6.70

''समय के अनुसार अगर सम्पूर्ण बने तो उसकी इतनी प्राप्ति नहीं होती है। समय के पहले सम्पूर्ण बनना है। समय पर सम्पूर्ण बने तो सम्पूर्णता क्या चीज है, उसका अनुभव कब करेंगे ? ईश्वरीय अतीन्द्रिय सुख निरन्तर क्या होता है, उसका अनुभव यहाँ ही करना है।... अगर अब न करेंगे तो फिर कब करेंगे। फिर कब हो न सकेगा।''

अ.बापदादा 18.6.70

''जितना दूसरों को सन्देश देते हैं, उतना अपने को भी सम्पूर्णता का सन्देश मिलता है क्योंकि दूसरों को समझाने से अपने को सम्पूर्ण बनाने का न चाहते हुए भी ध्यान जाता है। यह सर्विस करना भी अपने को सम्पूर्ण बनाने का मीठा बन्धन है।'' अ.बापदादा 24.1.70

''निन्दा-स्तुति, मेरा-तेरा ... कुछ भी अंगीकार न करना तब ललकार होगी। आप मन में संकल्प पीछे करते हो, आपके मन में संकल्प आते ही वहाँ पहुँच जाता है। क्यों पहले पहुँचता है, यह गुह्य पहेली है। ... क्योंकि सम्पूर्ण बनने से ड्रामा की हर नूँध स्पष्ट देखने में आती है।''

अ.बापदादा 2.4.70

''बापदादा कब व्यर्थ रचना नहीं रचते हैं।... पुरुषार्थ की कमजोरी के कारण व्यर्थ संकल्पों की रचना होती है। ... साकार रूप ने सम्पूर्णता को साकार में लाया। सम्पूर्णता साकार रूप में सम्पन्न (स्पष्ट) देखने में आती थी। सम्पूर्ण और साकार अलग देखने में आता था! ... इस स्थिति को कहा जाता है उपराम। उपराम और साक्षीदृष्टा।''

अ.बापदादा 26.3.70

''सुनाया था ना कि अन्त के समय नई-नई परीक्षायें आयेंगी, जिन परीक्षाओं को पास कर सम्पूर्णता की डिग्री लेंगे। अगर यह पहला पाठ ही स्मृति में नहीं होगा तो सम्पूर्णता की डिग्री भी नहीं ले सकेंगे।... पहली सीढ़ी अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थित।''

अ.बापदादा 28.7.71

''सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुँचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है ? पहला नशा है - कर्मातीत ...और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे।'' अ.बापदादा 4.7.74

''सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल नशा उत्पन्न होता है ? पहला नशा है - कर्मातीत अर्थात् सर्व बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला और करने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ स्वयं से हैं ही अलग।'' अ.बापदादा 4.7.74

''सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुँचने का दूसरा नशा है - विश्व का मालिक बनने का। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि स्थूल चोला व वस्त्र तैयार हुआ सामने दिखाई दे रहा है और निश्चय होगा कि ... और चलते-फिरते यह नशा और खुशी होगी कि कल यह पुराना शरीर छोड़ नया शरीर धारण करेंगे।'' अ.बापदादा 4.7.74

''जब तीनों ही लाइट जगमगाती हुई दिखाई दें तब ही सबको साक्षात्कार करा सकेंगे। प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट - यह तीतों ही सम्पूर्ण बनाने की मुख्य बातें हैं।'' अ.बापदादा 24.4.74

'''अशरीरी भव' - यह वरदान प्राप्त कर लिया है ? जिस समय संकल्प करो कि मैं अशरीरी हूँ, उसी सेकेण्ड स्वरूप बन जाओ। ऐसा अभ्यास सहज हो गया है ? यह सहज अनुभव होना ही सम्पूर्णता की निशानी है।'' अ.बापदादा 8.12.75

''सम्पूर्ण स्टेज की निशानियां - पहली निशानी पुरानी दुनिया की किसी भी व्यक्ति वा वैभव से संकल्पमात्र वा स्वप्न मात्र भी लगाव नहीं होगा ... सर्व आत्माओं को कल्याण और रहम की दृष्टि से देखेंगे। ... हर परिस्थिति वा परीक्षा में सदा स्वयं को विजयी अनुभव करेंगे।... सदा साक्षीपन की सीट पर सेट होंगे।'' अ.बापदादा 7.10.75

''सारा कल्प तुम सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो। उतरते-उतरते तमोप्रधान बन गये हो। अभी तुमको फिर सतोप्रधान बनना है। इसमें ही मेहनत है। सतोप्रधान बनना कोई मासी का घर नहीं है। जनक को सेकेण्ड में जीवन मुक्ति मिली, यह भी गायन है।... अभी परमपिता परमात्मा तुमको ब्रह्मा द्वारा वह ज्ञान दे रहे हैं। इसको ब्रह्म ज्ञान नहीं ब्रह्मा ज्ञान कहा जाता है।''

सा.बाबा 27.12.11 रिवा.

''यह भी समझाना है कि सतयुग में डबल सिरताज देवी-देवतायें थे। इस समय पवित्रता का ताज तो कोई को है नहीं। हम अपने को भी लाइट का ताज नहीं दे सकते हैं। अभी हम लाइट

के ताज के लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। ... ज्ञानी तो बने हो परन्तु कम्पलीट पवित्र बनें तो लाइट का ताज दे सकते हैं। परन्तु तुम सम्पूर्ण बनते ही चले जायेंगे सूक्ष्मवतन में।''

सा.बाबा 19.11.11 रिवा.

''पहले तुमको मालूम नहीं था कि हम ही ऊंच थे, अब हम ही नीच बने हैं। नीच बुद्धि वाले ऊंच बुद्धि वालों को नमन करते हैं। ... सूर्यवंशी जो पहले-पहले आते हैं, उनको ही 16 कला सम्पूर्ण कहेंगे, 14 कला वालों को 14 कला सम्पूर्ण नहीं कहेंगे। 14 कला वालों के पीछे सम्पूर्ण शब्द नहीं आयेगा। अभी तुम फिर 16 कला सम्पूर्ण बनते हो।''

सा.बाबा 5.10.11 रिवा.

''श्रीकृष्ण की महिमा जास्ती है, लक्ष्मी-नारायण की इतनी महिमा नहीं है क्योंकि बच्चे पवित्र सतोप्रधान होते हैं। ... तुम जानते हो - बाप आये हैं हम बच्चों को इन्-पर्टीक्यूलर और सबको इन्-जनरल सुखधाम में ले चलने के लिए। तुम बच्चों में भी नम्बरवार हैं, जिनको यह नशा है। ... बाप को कोई जानते नहीं हैं। अगर बाप को जाने तो बाप की प्रॉपर्टी को भी जान जायें।''

सा.बाबा 1.06.11 रिवा.

''तुम जानते हो हम सतयुग में 16 कला सम्पूर्ण थे, फिर एक दिन भी बीता तो उसको पूर्णमासी थोड़ेही कहेंगे। यह भी ऐसे है। थोड़ा-थोड़ा जूँ के मुआफिक चक्र फिरता रहता है। अभी तुमको 16 कला सम्पूर्ण बनना है। ... पहले तो नशा रहना चाहिए कि ऊंच ते ऊंच बाप हमको पढ़ाते हैं। बाप तो कभी भी आकर बात करते हैं। वह तो जैसे इनमें है ही।''

सा.बाबा 2.12.10 रिवा.

''इन अलंकारों को धारण करने से सदा अपने को वैष्णव समझेंगे। भविष्य में तो विष्णुवंशी बनेंगे लेकिन अभी वैष्णव बनेंगे, तब विष्ण के राज्य में विष्णुवंशी बनेंगे। वैष्णव अर्थात् कोई भी मलेच्छ चीज को टच नहीं करने वाला। ... आप सच्चे वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो।''

अ.बापदादा 15.05.72

''जो सच्चे वैष्णव नहीं बनते हैं, वे विष्णु के राज्य में विश्व के मालिक नहीं बन सकते हैं।... जो सच्चे वैष्णव बनते हैं, वे कोई भी पुरानी बातें, पुरानी दुनिया वा पुरानी दुनिया के कोई भी व्यक्ति वा वैभव को अपनी बुद्धि से टच नहीं करने देंगे, किनारे रहेंगे। तो ऐसे वैष्णव बनो।... अगर टच हो जाता है तो विशेष रूप से ज्ञान स्नान करना चाहिए, बुद्धि में विशेश रूप से बाप की याद अथवा बाप से रूह-रुहान करना चाहिए।''

अ.बापदादा 15.05.72

''गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी। तो इसको ही होलीएस्ट कहा जाता है। सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाये वा उसके वशीभूत न हो। अगर स्वपन में भी किसी भी प्रकार विकार के वश किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे ? अगर स्वप्नदोष भी है वा संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं ... उनको सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे ?''

अ.बापदादा 9.05.72

''अभी यह संगम है। अभी इस पार हो, उस पार स्वर्ग में जाने के लिए पढ़ते हो। वहाँ तो सर्व गुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण बनकर ही जायेंगे। अपने से पूछना है - हम ऐसे लायक बने हैं ? ... वैजन्ती माला में आने के लिए बाप समझाते हैं - पहले तो निरन्तर बाप को याद करो, अपना टाइम वेस्ट मत करो, इन कौड़ियों के पीछे बन्दर मत बनो।''

सा.बाबा 19.04.10 रिवा.

''हमारी एम एण्ड आब्जेक्ट यह राधे-कृष्ण बनने की है, लक्ष्मी-नारायण बनने की नहीं क्योंकि पूरे 5 हजार वर्ष तो राधे-कृष्ण के ही कहेंगे, लक्ष्मी-नारायण के फिर भी 20-25 वर्ष कम हो जाते हैं। (सम्पूर्ण पावन भी राधे-कृष्ण को ही कहा जा सकता है क्योंकि शरीर में प्रवेश होते ही आत्मा की उतरती कला आरम्भ हो जाती है) इसलिए कृष्ण की महिमा जास्ती है।''

सा.बाबा 11.03.10 रिवा.

''पवित्र रहने वालों का मान होता है। सन्यासी पवित्र हैं तो गृहस्थी उनको माथा टेकते हैं।... देवताओं को कहा जाता है सम्पूर्ण निर्विकारी, सन्यासियों को कभी सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहेंगे क्योंकि वे विकार से जन्म लेकर फिर सन्यासी बनते हैं।''

सा.बाबा 11.03.10 रिवा.

''पवित्रता का व्रत जिनको सहज लगता है, वे हाथ उठाओ। ... क्योंकि आप जानते हो कि पवित्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। पवित्रता सिर्फ ब्रह्मचर्य नहीं लेकिन मन-वाणी-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी पवित्रता। पवित्रता के संस्कार सहज धारण करने वाले हो।''

अ.बापदादा 11.02.10

सम्पूर्णता और समर्पणता का सम्बन्ध

सम्पूर्णता हर आत्मा का अभीष्ट लक्ष्य है लेकिन सम्पूर्णता और समर्पणता का गहरा सम्बन्ध है। जितना और जैसे समर्पण करेंगे, उसी विधि से और उतना ही सम्पूर्ण बनेंगे। ब्रह्मा बाबा ने तन-मन-धन, सम्बन्ध-सम्पर्क अंश और वंश सहित समर्पण किया और एक धक से समर्पण किया तो उन्होंने वैसे ही सम्पूर्णता को प्राप्त किया और वे सारे विश्व में पहले मानव हैं, जिन्होंने सम्पूर्णता को प्राप्त कर फरिश्ता रूप धारण किया और साकार में रहते भी सम्पूर्णता को अपने जीवन से प्रत्यक्ष किया, अनुभव कराया।

''सर्व समर्पण के लक्ष्य से ही सम्पूर्ण बने। जितना समर्पण, उतना ही सम्पूर्ण। लेकिन समर्पण का भी विशाल रूप क्या है? ... एक तो हर संकल्प, दूसरा हर सेकेण्ड अर्थात् समय, तीसरा कर्म और चौथा सम्बन्ध एवं सम्पत्ति जो भी है, वह भी समर्पण।... आत्मा और शरीर के सम्बन्ध का भी समर्पण।''

अ.बापदादा 29.6.70

''आप नॉलेज की स्थिति के दर्पण से अपने स्वरूप का साक्षात्कार कराने वाले दर्पण हो। दर्पण जितना पॉवरफुल, उतना ही साक्षात्कार स्पष्ट। ... जितना-जितना स्वयं अर्पणमय होगा, उतना ही दर्पण पॉवरफल होगा।''

अ.बापदादा 11.7.71

''दर्पण के सामने आने से न चाहते हुए भी अपना स्वरुप दिखाई देता है। इस रीति से जब सदैव एक की याद में बुद्वि को अर्पण रखेंगे तो आप चैतन्य दर्पण बन जायेंगे। जो भी सामने आयेंगे वह अपना साक्षात्कार वा अपने स्वरुप को सहज अनुभव करते जायेंगे।''

अ.बापदादा 10.6.71

''पवित्रता पर कितनी मार खाते हैं। भागवत आदि में इस समय का ही गायन हैं। पूतनायें, सूपनखायें भी सब इस समय की बातें हैं, जबकि बाप आकर पवित्र बनाते हैं। ... कोशिश करनी चाहिए आप समान बनाने की। नहीं तो तंग करते रहेंगे। फिर युक्ति से किनारा करना पड़ता है। विघ्न तो पड़ेंगे ही। मीठा भी बनना है और फिर नष्टोमोहा भी होना पड़े।''

सा.बाबा 24.11.10 रिवा.

''आत्मा को कितनों की याद आती है, उन सबसे बुद्धियोग तोड़ एक बाप से जोड़ना है। इसमें ही मेहनत है। जीते जी मरना है। ... यह पक्का करो कि हम शिवबाबा के पास बैठे हैं, बाप हमको 84 जन्मों की कहानी सुनाते हैं। सृष्टि-चक्र का राज़ बताते हैं। ये देवी-देवतायें पहले सतोप्रधान हैं, फिर पुनर्जन्म लेते यही तमोप्रधान बनते हैं।''

सा.बाबा 19.03.10 रिवा.

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, प्रसन्नता और उनका सम्बन्ध

सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता और प्रसन्नता का परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है। यथार्थ ज्ञान और उसकी धारणा ही सम्पूर्णता का आधार है, सम्पूर्णता सम्पन्नता का आधार है, सम्पन्नता सन्तुष्टता का अधार है और सन्तुष्टता प्रसन्नता का आधार है। प्रसन्नता प्राणी मात्र का अभीष्ट लक्ष्य है। परमात्मा यथार्थ ज्ञान का दाता है, ज्ञान का सागर है, इसलिए वह सदा सम्पन्न है। सम्पूर्णता को प्राप्त आत्मा अर्थात् स्व-स्थिति में स्थित आत्मा को सर्व प्राप्तियां स्वत: होती है, उसकी इच्छामात्रम् अविद्या होती है। उसकी ब्रह्मचर्य की धारणा स्वत: होती है। जब आत्मा अपने बीजरूप स्थिति में स्थित होती है तो सम्पूर्णता, सम्पन्नता, सन्तुष्टता, अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती हैं। परमात्मा ही हर आत्मा को इस स्थिति का अनुभव कराता है परन्तु उसे सदाकाल बनाना हर आत्मा का अपना पुरुषार्थ है। अभी की सम्पन्नता ही भविष्य सम्पन्नता का आधार है।

परमधाम है सम्पूर्णता को प्राप्त आत्माओं का घर। हर आत्मा जब इस धरा पर पार्ट बजाने आती है तो उसकी सम्पूर्ण पावन स्थिति होती है, जिसके आधार पर जीवन में पूर्ण सुख-शान्ति का अनुभव करती है और जब वापस घर जाती है तो भी सम्पूर्ण पावन बनकर ही जाती है। भल ये विश्व-नाटक विविधतापूर्ण है, जिसके कारण हर आत्मा की सम्पूर्णता की स्थिति भी अपनी-अपनी होती है अर्थात् सबकी एक समान नहीं होती है।

''पहली मुख्य बात है पावन बनने की। मुझे बुलाते ही हैं कि आकर पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते कि राजा बनाओ। ... जब कि बच्चे समझते हैं कि हम पहले घर जायेंगे, फिर राजाई में आयेंगे, तो बच्चों को अन्दर में कितनी खुशी रहनी चाहिए।... स्थाई खुशी नहीं रहती है क्योंकि माया का ऑपोजीशन बहुत है।''

सा.बाबा 3.11.10 रिवा.

''कृष्ण की इतनी महिमा क्यों है? वह नम्बरवन में कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। वह है नम्बरवन सतोप्रधान, इसलिए उनका नम्बरवन गायन है। ... जिन बच्चों को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है, उनकी बुद्धि और चलन आदि बड़ी रिफाइन होती है।''

सा.बाबा 21.07.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सम्पूर्णता / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सम्पन्नता
पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सन्तुष्टता / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और प्रसन्नता

पवित्रता और सम्पूर्णता को पर्यायवाची ही कहेंगे परन्तु ब्रह्मचर्य को सम्पूर्णता या पवित्रता नहीं कहा जा सकता है। सम्पूर्ण और पवित्र आत्मा परमधाम में ही होती है। जैसे ही वह इस सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाने आती है, उसमें पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता की कलायें कम होने लगती हैं परन्तु सतयुग-त्रेता में सभी आत्मायें ब्रह्मचारी होती हैं क्योंकि वहाँ कोई विकार में नहीं जाता है। इसके विषय में बाबा ने कहा है कि सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहा जा सकता है, लक्ष्मी-नारायण को भी सम्पूर्ण और सम्पूर्ण पवित्र नहीं कह सकते क्योंकि 25-30 साल में आत्मा की कुछ कलायें कम हो ही जाती हैं।

सम्पूर्ण और सम्पूर्ण पवित्र आत्मा पूर्ण सम्पन्नता को अनुभव करती है, सम्पन्न ही सन्तुष्ट रह सकता है और जो सन्तुष्ट होगा, वही प्रसन्न रहेगा। सतयुग में जैसे-जैसे आत्मा की पवित्रता और सम्पूर्णता की कलायें गिरती हैं, वैसे-वैसे उसकी सम्पन्नता और सन्तुष्टता भी कम अवश्य होती है, परन्तु वहाँ कोई कमी न होने के कारण उसकी महसूसता नहीं होती है। बाबा ने कहा है - जब दूसरे लक्ष्मी-नारायण सिंहासन पर बैठते हैं तो पहले वालों की डिग्री कम हो जाती है। विचारणीय है कि सतयुग-त्रेता की आत्मायें द्वापर से एकदम विकार में नहीं चली जाती हैं, उनकी कलायें परमधाम से आते ही कम होने लगती हैं और द्वापर के आते-आते वह आत्मिक शक्ति इतनी कम हो जाती है, कि वे देहाभिमान के वशीभूत हो जाते हैं और उनमें संगम पर संचित योगबल कम हो जाता है, जिससे वे योगबल से सन्तान को जन्म देने में असमर्थ हो जाते हैं और विकार से जन्म देने का विधि-विधान चालू हो जाता है अर्थात् ब्रह्मचर्य की धारणा जो देवताओं में थी, वह खत्म हो जाती है।

बच्चे और सन्यासी ब्रह्मचारी तो होते हैं परन्तु सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण नहीं हो सकते हैं। हाँ जो आत्मायें सारे कल्प में कभी भी परमधाम से जब आती हैं तो वे सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण होती हैं परन्तु समयानुसार उनकी सम्पूर्णता और पवित्रता की कलायें कम होने लगती हैं और यह विधि-विधान विभिन्न समय पर आने वाली आत्माओं के साथ उनके पार्ट के समय अनुसार होता है।

प्रसन्नता, सन्तुष्टता का दर्पण है; सन्तुष्टता, सम्पन्नता का दर्पण है; सम्पन्नता, सम्पूर्णता का दर्पण है और सम्पूर्णता और पवित्रता पर्यायवाची शब्द हैं। बाबा ने हमको क्या दिया है, इस सत्य पर विचार करें और बाबा ने हमको जो दिया है, उसको अनुभव करें तो हम आत्माओं को कभी भी अप्रसन्नता अर्थात् अप्राप्ति की अनुभूति नहीं हो सकती है क्योंकि

परमात्मा पिता ने हमको जन्म लेते ही सर्व प्राप्तियों का जन्मसिद्ध अधिकार दिया है परन्तु विडम्बना ये है कि हम दूसरों की प्राप्तियों को देखकर अपनी प्राप्तियों को भूल जाते हैं और जीवन में अप्राप्ति अर्थात् अप्रसन्नता का अनुभव करके दुखी होते रहते हैं। इसलिए प्यारे ब्रह्मा बाबा ने कहा है - तुम्हारी ऑख दूसरों की कमाई में नहीं जानी चाहिए, तुमको अपनी कमाई करनी है और उसका सुख लेना है। दूसरों की प्राप्तियों को देखना देहाभिमान की निशानी है और देहाभिमान आत्मा की कमी अर्थात् अप्राप्ति अर्थात् अपूर्णता का प्रतीक है। कोई भी आत्मा देह सहित देह के सम्बन्धों से बुद्धि निकालकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित हो जाये तो सम्पूर्णता अर्थात् प्रसन्नता अनुभव अवश्य करेगी।

बाबा ने यह भी कहा है - ब्रह्मचर्य माना ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान आचरण और ब्रह्मचारी अर्थात् ब्रह्म के समान स्थिति। इससे सिद्ध होता है कि ब्रह्म में ही आत्मा सम्पूर्ण पवित्र और सम्पूर्ण होती है, जिसके लिए ब्रह्मा बाबा ने अथक पुरुषार्थ किया और बच्चों के सामने आदर्श रूप बनें।

''थोड़े समय बाद हरेक अपने-अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हो जायेंगे।... विजयी रतन अर्थात् अपने नम्बर प्रमाण सम्पूर्णता को प्राप्त हों। उनके लिए सारे ड्रामा के अन्दर वही सम्पूर्णता की फर्स्ट स्टेज है। ... इसलिए बापदादा सम्पूर्ण स्टेज और वर्तमान समय के पुरुषार्थ को देखते रहते हैं।''

अ.बापदादा 22.1.70

''जब तक यह ज्ञान नहीं है तब तक विनाशी इच्छायें कभी भी पूरी नहीं होती हैं। ... इच्छा कभी भी सदा सन्तुष्टता का अनुभव करने नहीं देती।''

अ.बापदादा 13.03.86

''सन्तुष्टता मानव जीवन का सर्वश्रेष्ठ श्रृंगार है और परमात्मा का परम उपहार है।''

अ.बापदादा 15.12.04

''सभी से बड़े ते बड़ा खज़ाना तो बाप मिला। पहले नम्बर का खज़ाना तो ये है ना! जैसे किसी को खज़ाने की चाबी मिल जाये तो गोया सब मिल गया।... संगमयुग का समय भी बहुत बड़ा खज़ाना है। ... किसी भी बात में यदि सम्पन्न नहीं तो सूर्यवंशी नहीं कहेंगे।''

अ.बापदादा 8.5.73

''अगर अपने पुरुषार्थ के प्रति ही ज्ञान का खज़ाना व शक्तियों का खज़ाना लगाते रहते हो तो वह भी सम्पूर्ण स्टेज नहीं हुई। अब सर्व खज़ाने दूसरों के प्रति लगाने का समय है। ... दूसरों को देने लग जायेंगे तो ही अपने आपको सर्व बातों में सम्पन्न होने का अनुभव करेंगे।''

अ.बापदादा 8.5.73

''हर संकल्प और हर सेकेण्ड विश्व के कल्याण के प्रति ही हो। ऐसी स्टेज को कहा जायेगा-

सम्पूर्ण अर्थात् सम्पन्न। अगर सम्पन्न नहीं तो सम्पूर्ण भी नहीं क्योंकि सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्ण स्टेज है।... आप आत्माओं की सम्पन्न स्टेज ही सम्पूर्णता को समीप लायेगी।''

अ.बापदादा 13.4.73

''सन्तुष्टता का बीज सर्व प्राप्तियाँ है। असन्तुष्टता का बीज है स्थूल वा सूक्ष्म अप्राप्ति है। जब ब्राह्मणों का गायन है - 'अप्राप्त नहीं कोई वस्तु ब्राह्माणों के खज़ाने में अथवा ब्राह्मणों के जीवन में', फिर असन्तुष्टता क्यों?... दाता के भण्डार भरपूर हैं।''

अ.बापदादा 5.10.87

''अल्पकाल की प्राप्ति की इच्छा, बेहद की प्राप्ति के फलस्वरूप जो सदा सन्तुष्टता की अनुभूति हो, उससे वंचित कर देती है। हद की प्राप्ति दिलों में हद डाल देती है इसलिए असन्तुष्टता की अनुभति होती है। ... हद बेहद का नशा अनुभव करने नहीं देता है।''

अ.बापदादा 5.10.87

''प्रसन्नचित्त सदा निस्वार्थी और सदा सभी को निर्दोष अनुभव करेगा, वह किसी और के ऊपर दोष नहीं रखेगा। न भाग्यविधाता के ऊपर,.. न ड्रामा के ऊपर,.. न व्यक्ति पर,.. न प्रकृति के ऊपर,.. न शरीर के हिसाब-किताब के ऊपर। प्रसन्नचित्त अर्थात् सदा निस्वार्थ, निर्दोष वृत्ति-दृष्टि वाले।''

अ.बापदादा 5.10.87

''संगमयुग की विशेषता सन्तुष्टता है और सन्तुष्टता की निशानी प्रसन्नता है। यह है ब्राह्मण जीवन की विशेष प्राप्ति। ... ब्राह्मण जीवन का वर्सा एवं प्रॉपर्टी सन्तुष्टता है और ब्राह्मण जीवन की पर्सनालिटी प्रसन्नता है।''

अ.बापदादा 5.10.87

''आत्मा सम्पूर्णता को पा रही है - यह मुख्य किस बात में सबको अनुभव होता है? मुख्य बात यह है कि ऐसी आत्मा सदा स्वयं से सर्व सब्जेक्ट्स में सन्तुष्ट रहने का अनुभव करेगी और साथ-साथ अन्य आत्मायें भी उनसे सदा सन्तुष्ट रहेंगी। तो सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी हैं।''

अ.बापदादा 7.2.75

''पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख-शान्ति उनके बच्चे कहते हैं। तो जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। इसलिए हैपी भी हो। ... जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति-खुशी स्वत: ही आती है।''

अ.बापदादा 22.03.86

''तुमको कितनी खुशी होनी चाहिए। अभी तुम समझते हो - हम बेहद के बाप की सन्तान हैं। तुम्हारी बुद्धि ज्ञान से भरपूर होनी चाहिए। अभी तुम मास्टर नॉलेजफुल बन रहे हो।... अभी तक किसकी सतोप्रधान बुद्धि नहीं बनी है। जब सतोप्रधान बन जायेगी तो तुम्हारी कर्मातीत

अवस्था हो जायेगी। ... जब यह यज्ञ पूरा होता है तो सारी पुरानी दुनिया की आहुति इसमें पड़ जाती है।''
सा.बाबा 22.10.11 रिवा.

सम्पूर्णता, समाप्ति, सम्पन्नता और बाप समान स्थिति

अन्त में सभी आत्मायें देहाभिमान से मुक्त सम्पूर्ण पवित्र अर्थात् बाप समान सम्पन्न और सम्पूर्ण बनकर वापस परमधाम घर जाती हैं और इस पुरानी दुनिया की समाप्ति होती है। जब तक सभी आत्मायें सम्पूर्ण अर्थात् बाप समान नहीं बनीं, तब तक इस पुरानी दुनिया की समाप्ति नहीं हो सकती है। इसलिए बाबा बार-बार कहते हैं कि सभी आत्माओं को बाप का सन्देश देना है, जब तक सबको सन्देश नहीं मिला, तब पुरानी दुनिया की समाप्ति और नई दुनिया की आदि नहीं हो सकती है।

''ड्रामा प्लैन अनुसार लड़ाई के भी आसार देखने में आते हैं। यह कोई नई बात नहीं है। हर कल्प ऐसे ही भारत 16 कला सम्पूर्ण बनता है और विनाश भी होता है। ... गाते भी हैं - दे दान तो छूटे ग्रहण। बाप कहते हैं विकारों का दान दो तो तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जायेंगे। इसमें भी काम विकार सबसे भारी अवगुण है।''
सा.बाबा 1.10.11 रिवा.

''यह ज्ञान सबको समझाना है, जिससे मनुष्य देवता बन जायें। ज्ञान मार्ग में समझाने की बड़ी मेहनत चाहिए। किसकी जीवन हीरे जैसी बनाने की मेहनत करनी है। ... बाप आकर ईश्वरीय सम्प्रदाय बनाकर, फिर दैवी सम्प्रदाय बनाते हैं। इसमें लड़ाई-झगड़े की कोई बात ही नहीं है। इस ईश्वरीय दरबार में कोई आसुरी रह न सके। मूत-पलीती को यहाँ बैठने का हुक्म नहीं है।''
सा.बाबा 10.03.12 रिवा.

''अब यह सृष्टि रूपी झाड़ तमोप्रधान हो गया है, अब फिर से नाटक रिपीट होना है, हर एक को अपना-अपना पार्ट बजाना है। ... पतित-पावन को बुलाते हैं, परन्तु पतित हम कैसे बनें हैं, यह कोई जानता नहीं है। अभी तुम जानते हो कि हम ही पावन थे, अभी पतित बनें हैं, फिर पावन बनना है। इस सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है।''
सा.बाबा 2.03.12 रिवा.

''इसको क़यामत का समय कहा जाता है। सब आत्माओं का पाप का हिसाब-किताब चुक्तू होना है और अब पुण्यात्मा बनना है योगबल से। विनाश होगा, सब आत्मायें चली जायेंगी वापस अपने घर।... कोई कहे हमको सदा काल के लिए मोक्ष मिले, परन्तु यह हो कैसे सकता है, जबकि यह बना-बनाया ड्रामा है, जो सदैव चलता ही रहता है। यह ड्रामा का अनादि

-अविनाशी चक्र है।''

सा.बाबा 30.05.12 रिवा.

''भारत है अविनाशी परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस। बाप स्वयं कहते हैं - मैं आकर इनमें प्रवेश करता हूँ और फिर बच्चों को ज्ञान सुनाता हूँ।... रुद्र यज्ञ रचते हैं तो शिव और सालिग्रामों की पूजा करते हैं। बाप ने समझाया है कि इन सालिग्रामों की पूजा क्यों करते हैं, क्योंकि तुम सब आत्मायें बाप के साथ इस शरीर द्वारा भारत को श्रेष्ठाचारी बना रहे हो। शिवबाबा ने यह ज्ञान यज्ञ रचा हुआ है।''

सा.बाबा 31.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और श्रीमत

ब्रह्मचर्य ब्राह्मण जीवन का आधार है और सम्पूर्ण एवं सम्पन्न पवित्रता ब्राह्मण जीवन का अभीष्ट लक्ष्य है। बाबा ने कहा है - पवित्रता केवल ब्रह्मचर्य अर्थात् काम विकार में न जाने को ही नहीं कहा जाता है। सम्पूर्ण पवित्रता अर्थात् पूर्ण आत्मिक स्थिति अर्थात् कर्मातीत स्थिति। पांच विकार, आलस्य, अलबेलापन से भी मुक्त सम्पूर्ण निर्विकारी के साथ देह-भान से भी न्यारे। ऐसी पवित्रता को धारणा करने के लिए बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है। ब्रह्मचर्य के लिए बाबा ने कहा है - जीवन के मूल्य पर भी इसको धारण करना है क्योंकि ये ब्राहमण जीवन का आधार है, जहाँ से पवित्रता के भवन का निर्माण आरम्भ होता है। यदि ब्रह्मचर्य की धारणा नहीं तो वह ब्राह्मण नहीं शूद्र है।

पवित्रता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है क्योंकि पवित्र आत्मा ही इस विश्व-नाटक का परमसुख अनुभव कर सकती है अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति का सुख अनुभव कर सकती है। पवित्र आत्मा के जीवन में दुख हो नहीं सकता। यह ब्राह्मण जीवन है ही पवित्र बनने और बनाने कै लिए। पवित्रता क्या है, पवित्रता की धारणा कैसे हो, उसके लिए भी बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है।

पवित्रता और ब्रह्मचर्य के लिए बाबा ने कहा है - ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्माचारी अर्थात् ब्रह्मा बाप के समान जीवन। ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म में रहने वाली स्थिति अर्थात् देहाभिमान और देहभान से परे। इसलिए बाबा देहभान से परे होने की ड्रिल कराते हैं। बाबा ने कहा है - पवित्र आत्मा ही परमधाम जा सकती है, इसलिए तुमको पवित्र जरूर बनना है। बाप की श्रीमत पर पुरुषार्थ कर पवित्र बनेंगे तो नई दुनिया स्वर्ग में आयेंगे और यदि श्रीमत पर पुरुषार्थ कर पवित्र नहीं बनेंगे तो अन्त में सजायें खाकर पवित्र बनेंगे और बहुत समय तक परमधाम में रहेंगे।

''बाप तो सबको नम्बरवन मत देते हैं, परन्तु अपने पुरुषार्थ अनुसार सब नम्बरवार बन जाते हैं। ... बाबा कहते हैं - कदम-कदम पर बाप से मत लेते रहो, बहुत सावधानी रखो। माया भिन्न-भिन्न प्रकार से ठोकर मार देती है। ... यह ब्रह्माकुमार-कुमारी भी युक्ति है पवित्र बनने की। बाप कहते हैं - तुम ब्रह्माकुमार-कुमारी कहलाकर फिर ब्राह्मण कुल को कलंक नहीं लगाना।''

सा.बाबा 13.03.12 रिवा.

''तुम आत्मायें परमधाम में रहती थी तो पावन थी। अब फिर पवित्र बनेंगे तो अपने साथ ले चलूँगा। फिर तुमको स्वर्ग में भेज दूँगा। मीरा ने भी विष का त्याग किया तो उनका कितना नाम

बाला है। ... बाप जानते हैं - जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा, वे ही श्रीमत पर चलेंगे और अभी फिर बाप से वर्सा लेंगे।''

सा.बाबा 3.03.12 रिवा.

''अभी बाबा ने तुमको राइट-राँग को जज करने की बुद्धि दी है। मनुष्यों में यह जज करने की भी बुद्धि नहीं है। ... बाबा जानते हैं - जैसा कर्म मैं करूँगा, मुझे देख और भी करेंगे। कोई विकार में जाकर, फिर आकर छिपकर बैठते हैं, तो बाबा झट सन्देशी को बता देते हैं।... पिछाड़ी में कोई कुछ करता है, तो एकदम मार्शल लॉ चलाते हैं।''

सा.बाबा 15.04.11 रिवा.

''सूर्यवंशी देवी-देवता धर्म वालों के ही 84 जन्म हैं। करेक्ट कर लिखना होता है। बच्चे पढ़ते रहते हैं, लिखत आदि में करेक्शन होती रहती है।... अभी तुम बच्चों को यह चिन्ता लग जानी चाहिए कि हमको तमोप्रधान से सतोप्रधान, पतित से पावन बनना है। पतित-पावन बाप सब बच्चों को पावन बनने की युक्ति बताते हैं - तुम मुझे याद करो और अपना चार्ट रखो तो तुमको बहुत खुशी होगी।''

सा.बाबा 17.05.10 रिवा.

''कई मातायें लिखती हैं - बाबा हमको यह बहुत तंग करते हैं, हम क्या करें ? अरे, तुम कोई जानवर थोड़ेही हो, जो जबरदस्ती करेंगे। अन्दर में दिल है, तब पूछती हो, क्या करूँ ? इसमें तो पूछने की भी बात नहीं है। आत्मा अपना आप ही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। जो चाहे सो करे। पूछना माना दिल है।''

सा.बाबा 28.04.10 रिवा.

श्रीमत और विकार

सतयुग-त्रेता में आत्मायें सम्पूर्ण निर्विकारी होती हैं, भले त्रेता के अन्त तक आत्मा और सारी सृष्टि की पवित्रता की चार कलायें कम हो जाती हैं परन्तु देहाभिमान न होने के कारण आत्मा विकारों में प्रवृत्त नहीं होती है, इसलिए ही उसको स्वर्ग कहा जाता है। विकारों का मूल है देहाभिमान और देहाभिमान का मूल है अज्ञानता अर्थात् अपने आत्मिक स्वरूप की विस्मृति। विकार आत्मा के परम शत्रु हैं, जो आत्मा के दुख के मूल कारण है। इन विकारों का कारण क्या है, इनके आत्मा के ऊपर प्रभावित होने का कारण क्या है और इन पर विजय प्राप्त करने साधन क्या है। इन सब बातों का बाबा ने ज्ञान भी दिया है और उसको धारण कर इन पर विजय प्राप्त करने की श्रीमत भी दी है।

''सबको पहला जन्म ऊंच ही मिलेगा। राजा को भी ऊंच मिलता है तो प्रजा को भी ऊंच मिलता है। राजाई में राजा-प्रजा, दास-दासियाँ आदि सब चाहिए। ... कहते हैं - पहले मनुष्य जंगल

में रहते थे, पत्ते पहनते थे, विकार की दृष्टि नहीं रहती थी। सभी सुखी रहते थे क्योंकि पहला जन्म सबका सतोप्रधान होता है, फिर सतो, रजो, तमो में आते हैं।''

सा.बाबा 2.04.12 रिवा.

''पहले-पहले देहाभिमान आता है, और सब विकार पीछे आते हैं। देही-अभिमानी बनने से सब विकार छूटते जायेंगे। बाप तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं। ... अब तुम बच्चों को तो योग का चिन्तन लगा हुआ है। जीते जी मरना है। देहाभिमान तोड़ना माना मरना। हम आत्मा बाबा को याद कर पतित से पावन बन जायें। पावन बनने की यह युक्ति बाप ने समझाई है।''

सा.बाबा 20.12.11 रिवा.

काम विकार - काम विकार आत्मिक शक्ति के ह्रास और आत्मा के दुख का मूल कारण है। काम विकार से सबसे अधिक आत्मिक शक्ति का ह्रास होता है। काम विकार पर विजय प्राप्त करने के लिए इस बात को समझकर अपने आत्मिक स्वरूप का दृढ़ अभ्यास, भाई-भाई की दृष्टि पक्की करना। भाई-भाई की दृष्टि के विषय में बाबा ने अनेक प्रकार से श्रीमत दी है। बाबा ने यह भी बताया है कि काम विकार भी एक हिंसा है क्योंकि इसके परिणाम में आत्मा दुख ही पाती है, इसलिए इस हिंसा से भी मुक्त होने के लिए श्रीमत दी है। बाबा ने कहा है काम विकार वाले को ही पतित कहा जाता है। स्वर्ग और नर्क की मूल पहचान काम विकार है। द्वापर से जन्म की प्रक्रिया काम विकार से शुरू होती है, इसलिए द्वापर-कलियुग को नर्क कहा जाता है।

बाबा ने भाइयों के स्वप्नदोष और बहनों के मासिक को भी काम विकार का अंश कहा है और बताया है कि सतयुग में ऐसी कोई किचड़पट्टी होती नहीं है। उससे भी मुक्ति पाने की श्रीमत दी है। इनके विषय में यदि हम विचार करेंगे तो ये स्पष्ट हो जायेगा कि उनका कारण कहाँ न कहाँ अन्तर में छिपी काम वासना ही है। हम कोई न कोई ऐसे वासना वाले दृश्य देखते, सुनते हैं, उनकी ओर आकर्षित होते हैं, जिसके कारण ही ये होता है। ऐसा देखने और सुनने से बचने के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है कि ऐसे अवसर पर तुमको वहाँ से हट जाना चाहिए।

''भगवानुवाच काम महाशत्रु है, उन पर जीत पानी है।... अमृत पीते-पीते विष खा लेते हैं तो 100 गुणा काले बन जाते हैं, हड्डी-हड्डी टूट जाती है।''

सा.बाबा 6.9.05 रिवा.

''काम विकार में गिर पड़ते हैं। ऐसे थोड़ेही कि उसने गिराया। गिरना, न गिरना अपने हाथ में

है। ... गिरे तो खाना खराब, जोर से चमाट लगती है।''

सा.बाबा 28.9.05 रिवा.

''जिस आत्मा पर बहुत कट चढ़ी हुई होगी तो उसे पुरानी दुनिया की कशिश होती रहेगी। सबसे बड़ी कट चढ़ती ही है काम विकार से। पतित भी उससे ही बनें हैं। ... विकार में जाना, सबसे बड़ा पाप है।''

सा.बाबा 24.9.05 रिवा.

''अभी तुम जानते हो - याद की यात्रा से हमको पूरा पुण्यात्मा बनना है। ... बाप की श्रीमत पर चलना है। बाप मुख्य बात कहते हैं - एक तो याद की यात्रा में रहो और काम महाशत्रु है, उस पर जीत पानी है।''

सा.बाबा 26.8.05 रिवा.

''यहाँ तुमको शिवबाबा से प्रतिज्ञा करनी है - बाबा हम कभी विकर्म नहीं करेंगे, 5 विकार हम आपको दे देते हैं। यह भी बाप जानते हैं कि विकार कोई फट से नहीं छूटेंगे। अन्दर डर रहना चाहिए कि हम विकारों का दान देकर फिर लेंगे तो बड़ा पाप हो जायेगा। जैसे राजा हरिश्चन्द्र का मिसाल है।''

सा.बाबा 29.7.06 रिवा.

''काला मुँह करने वाले को बाबा लिख देते, तुमको 12 मास तक यहाँ आने की दरकार नहीं है। तुम प्रतिज्ञा कर फिर भी विकार में गिरे।''

सा.बाबा 4.01.06 रिवा.

''देहाभिमानी पतित मनुष्य जो भी कर्तव्य करते, वह पतित ही करते हैं। दुनिया में जो भी दान-पुण्य करते, वह सब पतित ही बनाते हैं।... बाप आकर आर्डिनेन्स निकालते हैं - बच्चे खबरदार, विकार में नहीं जाना, काम पर विजय पानी है। तूफान आदि आयेंगे परन्तु इसमें फाँ नहीं होना है।''

सा.बाबा 9.5.06 रिवा.

''प्योरिटी होगी तो पीस एण्ड प्रॉस्पेरिटी मिलेगी।... थोड़ी भी विकार की टेस्ट बैठी तो वृद्धि हो जायेगी। ... सब छी-छी आदतें मिटानी हैं। ... विकार का ज़रा भी ख्याल नहीं आना चाहिए।''

सा.बाबा 15.9.06 रिवा.

''सबसे मुख्य बात है - बच्चे, नाम-रूप में नहीं फंसना है। काम वश नाम-रूप में फंसते हैं। क्रोध नाम-रूप में नहीं फंसाता है।... जब तुम अच्छे योगी बनेंगे तो कहाँ भी आंख नहीं डूबेगी, फिर तुम्हारी इन्द्रियां शान्त हो जायेंगी। ... तो अपनी आपेही जांच करते रहो।''

सा.बाबा 21.8.06 रिवा.

''सबसे खराब भ्रष्टाचार है काम विकार। विष से पैदा होने वालों को ही भ्रष्टाचारी कहा जाता है। सतयुग में कोई भ्रष्टाचारी होता नहीं है। ... सबसे गन्दा है काम विकार, वह भी तब आता है, जब देहाभिमान आता है, इसलिए बाप कहते हैं - अपने को आत्मा समझो, देही-अभिमानी

बनों। ... भूतों के वशीभूत होकर डिससर्विस करते हैं तो पुण्यात्मा बनने के बदले और ही पापात्मा बन पड़ते हैं।''

सा.बाबा 19.03.12 रिवा.

''शुरू से इस काम विकार के कारण ही विघ्न पड़ते आये हैं। समझते हैं यहाँ जाने से विष का प्याला नहीं मिलेगा। इसलिए विघ्न डालते हैं। इस पर ही मीरा का इतिहास भी है। काम की आश पूरी न होने से क्रोध में आकर हंगामा करते हैं।... कल्प-कल्प की लॉटरी है। अभी वर्सा लिया तो कल्प-कल्प लेते रहेंगे।''

सा.बाबा 16.2.12 रिवा.

''दुनिया में कोई भी मनुष्य इन बातों को नहीं जानते हैं। करके किसी की आत्मा कुछ पवित्र है, तो उसका प्रभाव निकलता है परन्तु उसको भी पतित तो बनना ही है। पतित-पावन एक बाप ही है, वह कहते हैं इन 5 विकारों को छोड़ो, अगर उनकी नहीं मानतेंगे तो तुमको धर्मराज बहुत तंग करेंगे। ... पहले नम्बर का विकार है देहाभिमान, फिर काम-क्रोध। इन सबको छोड़ना है।''

सा.बाबा 22.12.11 रिवा.

''वह दिन भी आयेगा, जब पतित-पावन बाप की इस सभा में कोई पतित बैठ नहीं सकेगा, किसी भी पतित को एलाउ नहीं करेंगे। यह इन्द्र सभा है। ... ऐसे बहुत हैं, जो छिपकर आकर बैठते हैं। ऐसे-ऐसे को बहुत सज़ायें खानी पड़ेंगी। इस सभा में कोई मांसाहारी भी नहीं आ सकते हैं। ... ज्ञान-योग से ही आत्मा पवित्र बनेंगी, इसलिए बाप कहते हैं - सबकुछ भूल एक मुझ बाप को ही याद करो।''

सा.बाबा 22.12.11 रिवा.

''हिंसा दो प्रकार की होती है। नम्बरवन हिंसा है काम कटारी की, जिससे आधा कल्प से अपना भी खून करते आये और दूसरों का भी खून करते आये हो।... बाप कहते हैं - बच्चे, यह काम महाशत्रु है, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देने वाला है। यह भी किसको सिद्ध कर बताना है कि हमारा प्रवृत्ति मार्ग है।... आगे चलकर तुम्हारी प्रत्यक्षता जरूर होगी।''

सा.बाबा 12.11.11 रिवा.

''कोई कहते - बाबा धन्धे में झूठ बोलना पड़ता है। बाप कहते हैं - धन्धे में तो झूठ होता ही है, तुम बाबा को याद करते रहो। ऐसे भी नहीं कि विकार में जाकर फिर कहो - मैं बाबा की याद में था। नहीं, विकार में गये तो मरे। तुमने बाप के साथ पवित्रता की प्रतिज्ञा की है। पवित्रता के लिए ही राखी बाँधी जाती है, क्रोध के लिए कब राखी नहीं बाँधी जाती है।''

सा.बाबा 4.10.11 रिवा.

''बाप तो सब बच्चों को याद करते हैं। समझते हैं हमारे सब बच्चे काम-चिता पर जलकर भस्म हो गये हैं। सभी आत्मायें हमारे बच्चे हैं। बाप भी जब शरीर में आते हैं, तब कहते हैं - यह सब आत्मायें हमारे बच्चे हैं, जो काम-चिता पर चढ़कर भस्मीभूत तमोप्रधान हो गये हैं।

... काम चिता पर चढ़ना गोया सांप पर चढ़ना। बैकुण्ठ में यह काम-चिता के सांप आदि होते नहीं है, जो किसको डसें।''

सा.बाबा 24.09.11 रिवा.

''जब तुम अच्छे योगी बनेंगे तो तुम्हारी कहाँ भी ऑख नहीं डूबेगी, तो फिर तुम्हारी इन्द्रियाँ शान्त हो जायेंगी। मुख्य हैं ये ऑखें, जो धोखा देती हैं। काम महाशत्रु है, इसलिए अपनी आपही जाँच करते रहो और इस काम विकार पर जीत पाओ, यह महाशत्रु है। ''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

''मुख्य बात बाप समझाते हैं - बच्चे कब नाम-रूप में नहीं फंसना। स्त्री-पुरुष काम के वश नाम-रूप में फँसते हैं। क्रोध नाम-रूप में नहीं फँसाता है। ... अपने को आत्मा समझना है, याद रखना है - हम आत्मा अशरीरी आई थी, अब फिर अशरीरी होकर वापस जाना है। इस शरीर का भान तोड़ना है। यह नाम-रूप में फँसने की बहुत खराब बीमारी है, उसके लिए बाप बच्चों को सावधानी देते हैं।''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

''मुख्य बात है विकार में कभी नहीं जाना। थोड़ी भी विकार की टेस्ट बैठी तो फिर वृद्धि होती जायेगी। फिर छोड़ना मुश्किल हो जायेगा। ... सब छी-छी आदतें मिटानी हैं। बाप कहते हैं - जीते जी शरीर का भान छोड़ मुझे याद करो। ... तुम बच्चों को सदा फूल मुआफिक खिला हुआ हर्षित रहना चाहिए। यह लक्ष्मी-नारायण कितने हर्षित रहते हैं।''

सा.बाबा 12.02.11 रिवा.

''मुख्य है काम विकार, जिससे ही मनुष्य पापात्मा बनते हैं। एक काम के कारण ही सब क्वालीफिकेशन बिगड़ जाती है, इसलिए कहते हैं - काम जीतो तो तुम जगतजीत अर्थात् नये विश्व के मालिक बनेंगे। ... विकारों के कारण ही मनुष्य को असुर कहा जाता है। ... इस समय हम ईश्वरीय गवर्मेन्ट हैं। ईश्वरीय गवर्मेन्ट आत्माओं को पवित्र बनाकर देवता बनाती है।''

सा.बाबा 4.01.11 रिवा.

''काम महाशत्रु है, उससे हार नहीं खानी है। हार खाकर फिर पश्चाताप कर क्या करेंगे, एकदम हड्डी-गुड्डी तो टूट जाती है, बहुत कड़ी सजा मिल जाती है। विकार में जाने से कट उतरने के बदले कट बहुत जोर से चढ़ जाती है। योग लगेगा ही नहीं। ... इसमें खुश नहीं होना है कि हम ज्ञान की बहुत सर्विस करते हैं। याद से अपनी गुप्त सर्विस करते रहो।''

सा.बाबा 20.11.10 रिवा.

क्रोध - दूसरे नम्बर का विकार है क्रोध। क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए बाबा ने विश्व-नाटक का यथार्थ ज्ञान दिया है, जिस ज्ञान पर हम विचार करें तो हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है, सभी आत्मायें निर्दोष हैं, इसलिए किसी आत्मा पर क्रोध करने का कोई औचित्य नहीं है परन्तु आत्मा स्वार्थपरता के वशीभूत दूसरों को दोषी मानकर उन पर क्रोध करता है। कर्म और फल पर आधारित इस विश्व-नाटक में हर आत्मा अपना आपही मित्र है और आपही अपना शत्रु है। इस सत्य का ज्ञान और उसकी धारणा से ही आत्मा क्रोध पर सहज विजय प्राप्त कर सकती है। इस सत्य को बाबा ने भिन्न रूप से समझाया है और क्रोध पर विजय प्राप्त करने के लिए श्रीमत भी दी है।

क्रोध के लिए बाबा की श्रीमत है कि अगर कोई तुम्हारे पर क्रोध करता है तो भी तुमको क्रोध नहीं आना चाहिए, उसको सुना-अन्सुना कर देना चाहिए। भूत समझकर उसका सामना नहीं करना चाहिए, किनारा करना चाहिए।

''उसका काम है क्रोध करना और आपका काम है स्नेह देना। ... चाहे सारी दुनिया क्यों नहीं आप पर क्रोध करे लेकिन मास्टर स्नेह के सागर दुनिया की परवाह नहीं करेंगे। ... व्यर्थ से बेपरवाह बादशाह, समर्थ में बेपरवाह नहीं होना, मर्यादाओं में बेपरवाह नहीं होना।''

अ.बापदादा 9.1.95

''क्रोध मुक्त के लिए जिन्होंने अच्छी तरह से दृढ़ संकल्प किया, उनको बापदादा की तरफ से विशेष एक्स्ट्रा मदद भी मिली है।... अभी अगर सम्पूर्ण लगाव मुक्त अनुभव करेंगे तो क्रोध मुक्त ऑटोमेटिकली हो जायेंगे।... जिसने ना की, उसके प्रति व्यर्थ संकल्प जरूर चलेंगे, तो वह पवित्रता तो नहीं हुई ना। अगर पवित्रता का नियम पक्का रखा, लगाव मुक्त हो गये तो यह भी लगाव नहीं रहेगा कि यह होना ही चाहिए।'' अ.बापदादा 16.11.95

''काम महाशत्रु है, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि वह आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। नहीं, काम को जीतना है, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। काम ही पतित बनाता है। पतित अक्षर काम के लिए कहा जाता है, क्रोध के लिए नहीं।''

सा.बाबा 4.11.11 रिवा.

''विषय वैतरणी नदी में मनुष्य, जानवर, पंक्षी आदि सब एक समान दिखाते हैं। यहाँ तो मनुष्य जानवरों से भी ज्यादा खराब हो पड़े हैं। क्रोध कितना है, जो लाखों को एक साथ मार देते हैं। भारत जो शिवालय था, वह वेश्यालय बन गया है। फिर शिवबाबा इसको शिवालय बनाते हैं। ... किसको भी बड़ी युक्ति से समझाना है।''

सा.बाबा 25.03.11 रिवा.

''यह अनेक धर्मों का कल्प-वृक्ष है। पहले-पहले है आदि सनातन देवी-देवता धर्म। अब वह धर्म कहाँ गया ? तुम मन्दिर भी उनके बनाते रहते हो। ... पाण्डवों-कौरवों की लड़ाई दिखाई है। मैं तो तुमको डबल अहिंसक वैष्णव बनाता हूँ। जो न काम कटारी चलाते और न किसको मारते, उनको ही वैष्णव कहते हैं। ये देवी-देवतायें हैं विष्णु की वंशावली।''

सा.बाबा 4.10.10 रिवा.

लोभ - बाबा ने विश्व-नाटक का जो ज्ञान दिया है, उसके अनुसार इस विश्व में न कुछ अपना है और न ही पराया। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। आत्मा के साथ संचित धन-सम्पत्ति तो साथ जाती नहीं है लेकिन वह कैसे अर्जित की उसका फल अवश्य साथ जाता है। बाबा ने इस सत्य का ज्ञान होने से लोभ पर सहज विजय प्राप्त हो सकती है। हमको जो कुछ इस जीवन में मिला है, वह अपना पार्ट बजाने के लिए मिला है, पार्ट पूरा होते ही उस पर हमारा अधिकार खत्म हो जायेगा।

''इस दुनिया का केस बहुत होपलेस है, यह खत्म होनी ही है, सब मर जायेंगे। इसलिए इससे ममत्व मिटाओ। ... लोभ-मोह भी सत्यानाश कर देता है। बच्चे आदि में मोह होगा तो वह याद आते रहेंगे। पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो अन्त में कोई याद न पड़े।''

सा.बाबा 2.9.06 रिवा.

मोह एवं लगाव-झुकाव - इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न ही पराया है। हर आत्मा अपना पार्ट बजा रही है और उस पार्ट के अनुसार जो आज अपना है वह कल पराया होगा और पराये अपने होंगे। इस सत्य के अनुभव के लिए महाभारत में भी उदाहरण है। पुत्र-मोह के वशीभूत अर्जुन और अभिमन्यु का संवाद इसका बड़ा अच्छा उदाहरण है। इस सत्य के प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में इस जगत में अनेक जीते-जागते उदाहरण देखते हैं। कर्म सम्बन्ध के आधार पर भाई-भाई, स्त्री-पुरुष जो आज एक दूसरे के लिए जान देने को तैयार होते हैं, वे ही कल एक दूसरे की जान लेने को तैयार दिखाई देते हैं और एक दूसरे की जान ले भी लेते हैं। बाबा ने कहा है - तुमको इस देह का भी मोह नहीं रखना है परन्तु इसको सम्भालना अवश्य है क्योंकि इससे ही तुम अपने भविष्य के लिए पुरुषार्थ कर सकते हो, परमात्म-मिलन का सुख भी इस देह के द्वारा ही अनुभव कर सकते हो।

अपना बच्चा न होते भी दूसरे का बच्चा गोद लेकर अपना कर्म-बन्धन बना लेते हैं, जो भी श्रीमत के अनुसार यथार्थ नहीं है। ज्ञान में आने के बाद ऐसी परिस्थिति में ईश्वरीय सेवा को ही अपना लक्ष्य बनाकर निर्बन्धन रहना अच्छा है।

''झुकाव तब होता है, जब लगाव होता है ... पूज्य आत्मा सम्पन्न होने के कारण सदा ही अपने रुहानी नशे में रहेगी। उसकी मन-बुद्धि का झुकाव न देह के सम्बन्ध में और न देह के पदार्थ में होगा। सबसे न्यारा और प्यारा।''

अ.बापदादा 24.9.92 पार्टी 4

''जो श्रीमत पर चलते हैं, वे ही विजय माला का दाना बनते हैं। ... बाप कहते - बच्चे देही-अभिमानी बनो, नहीं तो पुराने सम्बन्धी याद पड़ते रहते हैं। नष्टोमोहा नहीं हैं, उसको व्यभिचारी याद कहा जाता है। वे सद्गति को पा न सकें क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते है।''

सा.बाबा 2.03.06 रिवा.

''हम स्वदर्शन चक्रधारी हैं, यह नशा तो रहना चाहिए। हम रचयिता बाप और रचना के चक्र को जानते हैं। ... कोई में भी कोई की रग नहीं रहनी चाहिए। पूरा नष्टोमोहा बनना है, इस शरीर में भी मोह न रहे। ... योगबल से इसको थमाना है।''

सा.बाबा 8.7.06 रिवा.

''बापदादा चाहते हैं कि सारे विश्व में हर एक बच्चा लगाव मुक्त बनें, चाहे साधनों से, चाहे व्यक्ति से। साधनों से भी लगाव नहीं। यूज़ करना और चीज़ है और लगाव अलग चीज़ है। ... ब्रह्मा बाप को इस पवित्रता के कारण ही गाली खानी पड़ी। इस परमात्म ज्ञान की नवीनता ही है पवित्रता। ... आप सारे विश्व को चैलेन्ज करते हो कि पवित्रता के बिना योगी तू आत्मा, ज्ञानी तू आत्मा बन ही नहीं सकते।''

अ.बापदादा 16.11.95

अहंकार - इस विश्व-नाटक के ज्ञान की यथार्थता को देखें तो इसमें अहंकार और हीनता का कोई स्थान नहीं है। इस विश्व-नाटक में सभी आत्मायें अनादि-अविनाशी पार्टधारी हैं और हर पार्टधारी अपने पार्ट के अनुसार सतोप्रधान और तमोप्रधान दोंनों ही पार्ट बजाता है। जो आज राजा है, वह कल अपने पार्ट और कर्मफल के अनुसार क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता। बाबा ने कहा है - तुमको कोई अहंकार नहीं होना चाहिए, निरहंकारी होकर तुम सर्वात्माओं की सेवा करो। बाप भी सर्वेन्ट बनकर आया है तो तुम बच्चों को सर्वेन्ट बनकर सभी की सेवा करनी है।

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और दृष्टि-वृत्ति / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और वातावरण

आत्मा की स्थिति के आधार पर वातावरण बनता है, जो अन्य आत्माओं को भी प्रभावित करता है।

जितना हमको अपने आत्मिक स्वरूप अर्थात् भृकुटी में विराजमान अपने निराकारी बिन्दुरूप में स्थित होने का गहन अभ्यास होगा, उतना ही ब्रह्मचर्य की धारणा सहज होगी क्योंकि निराकारी बिन्दुरूप परम-शान्त, परम-शक्ति सम्पन्न परमानन्दमय है। जब आत्मा को परमानन्द की अनुभूति होती है तो इन्द्रिय सुख की आकर्षण स्वत: खत्म हो जाती है। जब हम बिन्दुरूप में स्थित होंगे तो दूसरे को भी बिन्दुरूप में देखेंगे और बिन्दुरूप में जब इन्द्रियाँ ही नहीं तो विकार का प्रश्न ही नहीं उठता है। भृकुटी में बिन्दुरूप की गहन स्थिति से वीर्य ऊध्वगामी होता है, इसलिए विकार की आकर्षण खत्म हो जाती है। जब देह-दृष्टि होती है तो वीर्य अधोगामी होता है, इसलिए विकार की आकर्षण होती है। जब हम अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होंगे तो दूसरे की वृत्ति-वायब्रेशन का प्रभाव भी हमारे ऊपर नहीं होगा। जैसी दृष्टि-वृत्ति होती है, वैसे ही संकल्प होते हैं और संकल्पों से ही वातावरण का निर्माण होता है। वातावरण में जो संकल्प होते हैं, वे संकल्प भी हमारे संकल्प और स्थिति को प्रभावित करते हैं।

ब्रह्मचर्य व्रत के विषय में भाइयों के स्वप्नदोष और बहनों के मासिक के लिए भी बाबा ने कहा है कि ये दोनों काम विकार के ही अंश है। सतयुग में ये कोई किचड़पट्टी होती नहीं है। इनकी वास्तविकता को विचार करें तो जब तक ये दोनों बातें हैं, तब तक दृष्टि-वृत्ति, स्मृति में काम विकार अंश अवश्य मिलेगा। बिना दृष्टि-वृत्ति की चंचलता के ये प्रक्रियायें हो नहीं सकती।

''कैसा भी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की शक्तिशाली वृत्ति वायुमण्डल को परिवर्तन में ला सकती है। अगर वायुमण्डल का अपनी वृत्ति के ऊपर असर आ जाता है, तो यही भोलापन है। ... कैसा भी विकारी वायुमण्डल हो लेकिन स्वयं की वृत्ति निर्विकारी होनी चाहिए। ... दूसरों को पावन बनाने वाले पतित-पावन कब वायुमण्डल के वशीभूत नहीं होते हैं।''

अ.बापदादा 10.05.72

''अपना कर्तव्य है कि संकल्प में, वृत्ति में, स्मृति में भी कोई पाप का संकल्प न आये, इसको ही कहा जाता है ब्राह्मण अर्थात् पवित्र। अगर कोई भी अपवित्रता वृत्ति, स्मृति वा संकल्प में है तो ब्राह्मणपन की स्थिति में स्थित हो नहीं सकते। वे कहलाने मात्र ब्राह्मण हैं। इसलिए कदम-कदम पर सावधान रहो।''

अ.बापदादा 10.05.72

''अगर अपनी वृत्ति ठीक है तो उस पर वायुमण्डल का असर हो नहीं सकता। अगर होता है तो वृत्ति पॉवरफुल नहीं है। पॉवरफुल वृत्ति का प्रभाव आस-पास के वायुमण्डल पर जरूर पड़ता है। वह कब छिप नहीं सकता। ... अगर वायुमण्डल में और कुछ दिखाई देता है तो समझना चाहिए अपनी वृत्ति में भी कमजोरी है। उस कमजोरी को मिटाना चाहिए।''

अ.बापदादा 10.05.72

''सदा स्मृति में रहे कि सेवाधारी अर्थात् मैं विश्व-परिवर्तन करने वाली पतित-पावनी हूँ। पतित-पावनी के ऊपर किसी पतित आत्मा की नज़र की परछाई भी नहीं पड़ सकती। पतित-पावनी के सामने पतित आकर बदलकर पावन बन जाये, इतनी पॉवर चाहिए। पतित आत्माओं के पतित संकल्प भी न चल सकें। ऐसी अपनी ब्रेक पॉवरफुल होनी चाहिए।''

अ.बापदादा 4.03.72

''यह ज्ञान-सागर से निकली पतित-पावनी नदियों का ज्ञान सागर से मिलन है। ... पतित-पावनी कौन बन सकती है? पतित-पावनी बनने के लिए मुख्य कौनसी बात स्मृति में रखो, जिससे कैसा भी पतित, पावन बन जाये?... मैं सर्वात्माओं के पतित संकल्पों वा वृत्तियों वा दृष्टि को भस्म करने वाली मास्टर ज्ञानसूर्य हूँ।'' अ.बापदादा 15.09.71

''अगर मास्टर ज्ञान-सूर्य बनकर कोई भी पतित आत्मा को देखेंगे तो जैसे सूर्य अपनी किरणों से किचड़ा, गन्दगी के कीटाणु भस्म कर देता है, वैसे कोई भी पतित आत्मा का पतित संकल्प भी पतित-पावनी आत्मा के ऊपर वार नहीं कर सकता है, और ही पतित आत्मायें आप पतित-पावनियों के ऊपर बलिहार जायेंगी।'' अ.बापदादा 15.09.71

''दृष्टि-वृत्ति में पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है? स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति, दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है। जब ... स्मृति है तो वह स्मृति दृष्टि और वृत्ति को अपवित्रता की तरफ खींचती है।... ऐसे ही चैतन्य रूप में यह देवी है - यह स्मृति रखने से संकल्प में भी यह कम्पलेन नहीं रहेगी और कम्पलीट हो जायेंगे।''

अ.बापदादा 15.08.71

''मेरेपन के अशुभ संकल्प - मैं कम नहीं हूँ, ... यह मेरा संकल्प ही यथार्थ है, ऊंचा है, यह मेरेपन का अभिमान का संकल्प भी सूक्ष्म अपवित्रता का अंश है। तो चेक अपने को करो ... अंश तो नहीं रह गया है? क्योंकि अभी पवित्र दुनिया की स्थापना का समय समीप लाने वाले आप परमात्म-प्यारे बच्चे निमित्त हो। निमित्त आत्माओं का वायब्रेशन चारो ओर फैलता है।''

अ.बापदादा 15.03.10

''हरेक के मस्तक की मणि की चमक बापदादा देखते हैं। ऐसे ही अगर आप सभी भी मस्तक

की मणि को ही देखते रहो तो फिर यह दृष्टि और वृत्ति शुद्ध सतोप्रधान बन जायेगी। दृष्टि चंचल होती है, उसका मूल कारण यह है। मस्तक की मणि को न देख शारीरिक रूप को देखते हो।''

अ.बापदादा 16.10.69

''मस्तक की मणि को न देख जब रूप को देखते हो तो ऐसे ही समझो कि सांप को देख रहे हैं। ... सांप को देखा और सांप ने काटा। सांप तो अपना कार्य करेगा ही। सांप में विष होता है।''

अ.बापदादा 16.10.69

''आंखें क्रिमिनल बनती हैं तब शरीर की कर्मेन्द्रियां चंचल होती हैं। ... यहाँ क्रिमिनल आई बिल्कुल नहीं होनी चाहिए। भाई-बहन होकर रहेंगे तब पवित्र रह सकेंगे।''

सा.बाबा 16.9.05 रिवा.

''अपनी ऐसी श्रेष्ठ वृत्ति बनाओ जो कैसा भी विकारी, पतित आपकी वृत्ति के वायुमण्डल से परिवर्तन हो जाये। ... वृत्ति बदल गई है? सम्पन्न पवित्रता, यह सच्चा-सच्चा व्रत लेना वा प्रतिज्ञा करना है। ... कितने बार सम्पूर्ण बने हो, याद है? कोई नई बात नहीं है। कल्प-कल्प बने हो, बनी हुई है, सिर्फ रिपीट करना है। बनी को बनाना है, इसलिए कहा जाता है बना-बनाया ड्रामा। बना हुआ है, सिर्फ अभी रिपीट करना अर्थात् बनाना है।''

अ.बापदादा 7.3.05

''पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है - स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाती है। जब स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खींचती है।''

अ.बापदादा 25.8.71

''बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझाना चाहिए और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं।''

अ.बापदादा 11.7.74

''पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है - स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाते हैं। जब स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खींचती है।''

अ.बापदादा 25.8.71

''बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझाना चाहिए और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं।''

अ.बापदादा 11.7.74

''पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवो में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो। ... जैसे कर्मों की गति गहन है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है। पवित्रता ही फाउण्डेशन है।''

अ.बापदादा 17.10.87

''बाप पवित्र बनाये पवित्र दुनिया की स्थापना करते हैं, अगर तुम विकार में जाते हो तो तुम स्वर्ग की रचना में विघ्न डालते हो। उसकी फिर बहुत सज़ा खानी पड़ेगी। ... यह इन्द्र सभा है। एक कहानी भी है ना कि एक परी किसी पतित को सभा में ले आई तो उसका वायब्रेशन आया। ... बाप को याद करने से आत्मा शुद्ध हो जाती है और वायुमण्डल में साइलेन्स हो जाती है।''

सा.बाबा 25.05.12 रिवा.

''पवित्रता और अपवित्रता का कारण क्या होता है - स्मृति। स्मृति है कि यह देवी है तो स्मृति दृष्टि और वृत्ति को पवित्र बनाते हैं। जब स्मृति है कि यह फीमेल है तो वह स्मृति वृत्ति और दृष्टि अपवित्रता की तरफ खींचती है।''

अ.बापदादा 25.8.71

''बाप से सर्व सम्बन्धों के रस व स्नेह का अनुभव न होने के कारण देहधारी में वृत्ति और दृष्टि चंचल होती है। ऐसे समय में बाप को धर्मराज के रूप में सामने लाना चाहिए और स्वयं को एक रौरव नर्कवासी व विष्ठा का कीड़ा समझाना चाहिए और सामने देखो कि कहाँ मास्टर सर्वशक्तिमान और कहाँ मैं।''

अ.बापदादा 11.7.74

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और कर्मभोग, कर्म-बन्धन, कर्मयोग

किसी भी आत्मा को कोई कर्मभोग है या कर्म-बन्धन है, उसका कारण अपवित्रता ही है क्योंकि जब आत्मिक शक्ति कम हो जाती है तो आत्मा देहाभिमान में आकर विकारों के वशीभूत अनेक प्रकार के विकर्म करती है, जिससे अनेक आत्माओं को दुख होता है, उन आत्माओं के साथ दुखदाई सम्बन्ध बनते हैं, जो कर्म-बन्धन और कर्मभोग का कारण बनते हैं। जब हम बाबा के बनते हैं तो ब्रह्मचर्य की पालना करते भी हमको उस हिसाब-किताब को कर्मभोग और कर्म-बन्धन के रूप में चुक्ता करना ही होता है। कर्म करते भी योग की स्थिति में रहने से कर्मभोग और कर्म-बन्धन सहज चुक्ता हो जाता है। कर्मयोग से ही श्रेष्ठ कर्मों का खाता जमा होता है क्योंकि ये विश्व एक कर्मक्षेत्र है, यहाँ बिना कर्म के न सुख होता है और न ही दुख होता है, इसलिए कर्मयोग का पुरुषार्थ करना अति आवश्यक है।

''मेरा बनकर कोई अवगुण नहीं होना चाहिए। कोई विकर्म किया तो 100 गुणा दण्ड पड़

जायेगा। पवित्रता की प्रतिज्ञा करके कोई विकर्म करते तो 100 गुणा दण्ड पड़ जाता है।... बाप का बनकर फिर अगर डिससर्विस करते तो उनको ट्रेटर कहा जाता है। उन पर बड़ा दण्ड पड़ जाता है।''

सा.बाबा 6.04.12 रिवा.

''अभी ईश्वरीय कुल की वृद्धि हो रही है, तुम ईश्वरीय सन्तान हो। तुमको सब इच्छायें छोड एक बाप को याद करना है। किसको कोई बन्धन आदि है, यह सब कर्मों का हिसाब है। ... कई काला मुँह करते रहते हैं, फिर भी सेन्टर पर आते रहते हैं। ऐसे बन्दर बुद्धि वायुमण्डल को खराब करते हैं। ... बाबा समझाते हैं - ऐसा करने से तुम राजाई पद पा नहीं सकेंगे। इन्द्रप्रस्थ की एक कहानी भी है।''

सा.बाबा 21.01.12 रिवा.

''तुम कल्प-कल्प पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि और पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि बनते आये हो। बाप ही आकर पत्थरबुद्धि से पारसबुद्धि बनाते हैं। पारसबुद्धि से पत्थरबुद्धि ड्रामा अनुसार बन जाते हो। ... मूल बात है पवित्रता की। जो कल्प पहले रहे थे, वे ही अभी भी रह सकते हैं। बहुत बच्चियाँ लिखती हैं - बाबा पता नहीं कब बन्धन टूटेगा, कोई युक्ति बताओ। बाबा कहते - बन्धन तो अपने समय पर ही टूटेगा।''

सा.बाबा 23.01.12 रिवा.

''अभी तुमको पता पड़ा है कि हम ही पूज्य देवता थे, फिर पुजारी बनें। हमने यह सारा चक्र लगाया है। अभी फिर देवता बनने के लिए पढ़ रहे हैं।... अभी बाबा ने पतित से पावन बनने की युक्ति बताई है। कल्प-कल्प ऐसे ही बाप युक्ति बताते हैं। बाप कहते हैं - अपने को आत्मा बिन्दु समझ मुझ बिन्दुरूप बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे।''

सा.बाबा 9.06.10 रिवा.

''कई बच्चे समझते हैं - हम सम्पूर्ण बन गये, हम कम्पलीट तैयार हो गये। ऐसे समझ अपनी दिल को खुश कर लेते हैं। यह भी मियाँ मिट्ठू बनना है। अभी तो बहुत पुरुषार्थ करना है। पावन बन जायेंगे तो फिर दुनिया भी पावन चाहिए। ... कोई कितनी भी कोशिश करे कि हम जल्दी कर्मातीत बन जायें, परन्तु होगा नहीं। राजधानी स्थापन होनी है। भल कोई कोई स्टूडेण्ट पढ़ाई में कितना भी होशियार हो जाये परन्तु इम्तहान तो अपने टाइम पर ही होगा ना। ... यह भी ऐसे है।''

सा.बाबा 8.04.10 रिवा.

''बाबा ने समझाया है कि अभी कोई भी कर्मातीत नहीं बना है, इसलिए सबमें कुछ न कुछ खामियाँ जरूर हैं। ... कर्मातीत अवस्था को पाने में टाइम लगता है। कर्मातीत अवस्था को पाकर वापस तो कोई जा न सके। पहले साजन चले, फिर बारात चले। ... बाप ज्ञान चिता पर बिठाये, गुल-गुल बनाये सभी को ले जाते हैं।''

सा.बाबा 14.04.10 रिवा.

''सज़ाओं से छूटने के लिए कम से कम 8 घण्टा कर्मयोगी बन कर्म करने का अभ्यास करो।

इसी प्रैक्टिस से तुम पावन बन जायेंगे। नींद करते हो तो वह कोई बाप की याद नहीं है। ... नहीं, अपने को आत्मा समझ मुझे वहाँ याद करो। जब तक तुम योगबल से पवित्र नहीं बनो, तब तक घर में जा नहीं सकते। नहीं तो फिर अन्त में सज़ायें खाकर जाना होगा।''

सा.बाबा 24.03.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और भारत / पवित्रता-ब्रह्मचर्य और गीता

भारत ही सबसे पवित्र खण्ड है, फिर भारत ही सबसे पतित बनता है। सन्यासी भी पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य के बल से भारत को थमाते हैं। बाबा ने कहा है - अगर सन्यासी नहीं होते तो भारत और काम चिता पर जल मरता।

गीता में भी काम महाशत्रु कहा गया है, परन्तु उस गीता में यह स्पष्ट नहीं होता है कि इस काम महाशत्रु पर जीत कैसे पायें, जो परमपिता परमात्मा ही आकर बताते हैं।

''मनुष्य विकार को सुख समझते हैं, परन्तु तुम समझते हो कि यह विकार में जाना तो दुख ही है, तब तो सन्यासी घर-गृहस्थ का सन्यास करते हैं। उनका है निवृत्ति मार्ग। सतयुग में होता है पवित्र प्रवृत्ति मार्ग। ... भारत में राजा-रानी दैवी सम्प्रदाय थे। भल राजायें तो और धर्मों में भी होते हैं परन्तु कोई धर्म में ऐसे डबल सिरताज राजा-रानी नहीं होते हैं।''

सा.बाबा 24.04.12 रिवा.

''भारत का प्राचीन राजयोग और ज्ञान मशहूर है, जिससे भारत स्वर्ग बनता है, सभी उस ज्ञान-योग को सीखना चाहते हैं। ... यह सारा 84 जन्मों का खेल बना हुआ है। पतित बनने में 84 जन्म लगते हैं। मनुष्य पतित न बनें तो मैं पतित-पावन बाप कैसे आऊं! ... रचयिता बाप ही आकर बताते हैं कि मैं आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कैसे करता हूँ।''

सा.बाबा 24.03.12 रिवा.

''यह सब बना-बनाया बड़ा बेहद का ड्रामा है। जो सेकेण्ड पास होता है, वह फिर रिपीट होगा। यह बेहद ड्रामा का राज़ बाप ही समझाते हैं। ... रुद्र यज्ञ रचते हैं तो शिव और सालिग्राम की पूजा करते हैं परन्तु क्यों पूजा करते हैं, यह नहीं समझते हैं। तुम बच्चे बरोबर बाप के साथ भारत को पवित्र बनाने की सर्विस कर रहे हो। तुम हो खुदाई खिदमतगार।''

सा.बाबा 3.02.12 रिवा.

''मुख्य बात है गीता माता का भगवान कौन ?... दो युगों तक सूर्यवंशियों, चन्द्रवंशियों का राज्य चलता है, फिर दो युगों में अनेक धर्म स्थापन होते हैं। सृष्टि-चक्र के 4 भाग पूरे हैं। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत स्वर्ग था। ये सब बातें अच्छी तरह समझकर

समझाना पड़े।... जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तब ये सन्यासी पवित्रता के बल से भारत को थमाते हैं।''

सा.बाबा 13.01.12 रिवा.

''तुम भारतवासी ही जो सतयुग में सतोप्रधान थे, इस समय उनकी आत्मा 84 जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन गयी है, अब सतोप्रधान कैसे बनें, वह बाप ही बताते हैं। ... इस योग अग्नि से ही तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे और आत्मा सतोप्रधान बन जायेगी। सतोप्रधान आत्मा फिर स्वर्ग में 21 जन्मों के लिए वर्सा पायेगी। बाकी सारी दुनिया का विनाश हो जायेगा।''

सा.बाबा 19.10.11 रिवा.

''किसको भी बोलो - वाइसलेस वर्ल्ड था, अभी है विशश वर्ल्ड। दोनों में रात-दिन का फर्क है। अभी विशश वर्ल्ड को वाइसलेस वर्ल्ड कौन बनाये ?... अभी बाप फिर से जो भारतवासी 84 जन्म भोग पतित बनें हैं, उनको पावन बनाकर स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं अर्थात् असुर से देवता बना रहे हैं। ... काम चिता पर बैठने से जो काले बन गये, अब ज्ञान चिता बैठो तो पावन बन जायेंगे।''

सा.बाबा 19.10.11 रिवा.

''सतयुग में यथा राजा-रानी, तथा प्रजा सब पावन थे, इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। यह है तुम्हारी एम एण्ड आब्जेक्ट। ... लक्ष्मी-नारायण का राज्य कब था, यह किसको भी पता नहीं है। भारत में ही डबल सिरताज वालों की पूजा करते हैं।... लाइट पवित्रता की निशानी है। पवित्र की पूजा होती है।''

सा.बाबा 7.10.11 रिवा.

''रुहानी पाठशाला में रुहानी बाप रुहानी बच्चों को राजयोग सिखला रहे हैं। तुम बच्चे जानते हो हम नर से नारायण अथवा देवी-देवता पद प्राप्त करने के लिए रुहानी बाप के पास आये हैं। ... यह नई बात नहीं है। भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, वे डबल सिरताज थे। ... पहले-पहले होता है लाइट का ताज। यह लाइट का ताज पवित्रता की निशानी है।''

सा.बाबा 7.10.11 रिवा.

''अभी यह दुनिया है काँटों का जंगल। एक दो को काँटा लगाते रहते हैं काँटा अर्थात् काम कटारी चलाते हैं। सतयुग है गॉर्डन ऑफ अल्लाह। ... रावण है भारत का पुराना दुश्मन। तुम्हारी लड़ाई माया रावण से है, जिसने तुमको आधा कल्प दुख दिया है। ... अभी तुम रावण पर जीत पहन स्वर्ग के मालिक बनते हो। अभी सच्चा-सच्चा दशहरा होना है अर्थात् रावणराज्य खलास हो रामराज्य होना है।''

सा.बाबा 29.09.11 रिवा.

''पतित बनते ही हैं काम-चिता से। क्रोध व लोभ से पतित नहीं बनते हैं। साधू-सन्त आदि पावन हैं, देवतायें पावन हैं तो पतित मनुष्य जाकर उनको माथा टेकते हैं।... भारत में पवित्रता

थी तो पीस, प्रॉस्पेरिटी तीनों ही थे। प्योरिटी है फर्स्ट। अभी प्योरिटी नहीं है तो पीस एण्ड प्रॉस्पेरिटी भी नहीं है।''

सा.बाबा 21.09.11 रिवा.

''अभी सब काम चिता पर बैठ एकदम जल मरे हैं। क्रोध को चिता नहीं कहा जाता है, काम को चिता कहा जाता है। ... बेहद का बाप कहते हैं - तुम काला मुँह करते हो तो ब्राह्मण कुल, जो देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं, उनका नाम बदनाम करते हो। तुम बच्चे जानते हो - हम पवित्रता की ताक़त से ही भारत को फिर से श्रेष्ठाचारी स्वर्ग बनाते हैं।''

सा.बाबा 31.08.11 रिवा.

''बाप जो ज्ञान का सागर है, वह तुम बच्चों को पढ़ाते हैं, ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं, मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बताते हैं। ... कोई देहधारी गुरु मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता बता न सके। उनका भी ड्रामा में पार्ट है, भारत को पवित्रता से थमाने का। वे भल पवित्र तो रहते हैं परन्तु ज्ञान-योग से पवित्र नहीं बनते हैं, इसलिए उनको ताक़त नहीं मिलती है।''

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

''तुम भारतवासी ही देवी-देवतायें स्वर्गवासी थे, फिर 84 जन्म भोग नर्कवासी बनते हो। यहाँ भारत में ही शिवबाबा जन्म लेते हैं, शिवरात्रि और शिवजयन्ति भी यहाँ ही मनाई जाती है। ... अभी तुम सब एक बाप के बच्चे ब्रह्मा कुमार-कुमारी भाई-बहन ठहरे। भाई-बहन कब क्रिमिनल एसॉल्ट कर नहीं सकते। तुमको पवित्र जरूर बनना है। स्त्री-पुरुष पवित्र कैसे बनें, उसके लिए यह युक्ति ड्रामा में नूँधी हुई है।''

सा.बाबा 19.07.11 रिवा.

''वापस तो सबको जाना है, परन्तु प्रलय भी नहीं होनी है। भारत खण्ड तो रहता ही है। भारत खण्ड का कभी विनाश नहीं होता है। सतयुग आदि में सिर्फ भारत खण्ड ही रहता है। ... तुम अभी आदि सनातन देवी-देवता धर्म स्थापन करने में बाप को मदद कर रहे हो। ... ऐसे कोई साथ चल न सके, जब तक पुरानी दुनिया से वैराग्य न हो, आत्मा पावन न बनें।''

सा.बाबा 18.06.11 रिवा.

''इन सन्यासियों ने भी पवित्रता के आधार पर भारत को थमाया जरूर है। इन्होंने भी भारत की सेवा की है। यह सन्यास धर्म नहीं होता, तो भारत एकदम विकारों में जल मरता, पतित बन जाता। यह भी ड्रामा बना हुआ है। पहले उन्हों में पवित्रता की ताक़त थी। ... भारत में इन देवी-देवताओं का जब राज्य था तो भारत कितना साहूकार था, अभी फिर बाप आया है, वह राज्य स्थापन करने तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।''

सा.बाबा 20.06.11 रिवा.

''पहले तुम सतोप्रधान थे। भक्ति मार्ग में यज्ञ-तप, दान-पुण्य, तीर्थ आदि करते और ही नीचे

गिरते आये हो। ... आज से 5000 वर्ष पहले की बात है, यह भारत स्वर्ग था। उस समय और कोई धर्म नहीं था, सिर्फ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, जो परमपिता परमात्मा ने स्थापन किया था।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

''यह सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही हेविन और भारत ही हेल बनता है। और धर्म वालों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। वे तो हेविन में होते ही नहीं है। ... सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आने में, यह सीढ़ी उतरने में 5 हजार वर्ष लगते हैं। धीरे-धीरे आत्मा में खाद पड़ती जाती है। अभी तुमको फिर से आत्माभिमानी बनना है।''

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

''84 जन्म तुम भारतवासियों के ही होते हैं। तुम एक-एक जन्म लेते सीढ़ी नीचे उतरते आते हो। उतरने में तुमको 5 हजार वर्ष लगते हैं, अभी तुम फिर सेकेण्ड में ऊपर चढ़ जाते हो, इसलिए सेकेण्ड में जीवनमुक्ति कहा जाता है।... तुमको यह बुद्धि में याद रखना है कि अब यह नाटक पूरा हुआ, अब हमको वापस घर जाना है। अभी हमको बाप को और घर को याद करना है।''

सा.बाबा 9.03.11 रिवा.

''अभी शिवबाबा भारत में आया हुआ है, उसने आकर राजस्व अश्वमेध अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ रचा है। कल्प पहले भी यज्ञ में विघ्न पड़े थे, अभी भी पड़ रहे हैं। द्रोपदी ने पुकारा था, बाबा हमारी रक्षा करो। ... बाप कहते हैं - पवित्र जरूर रहना है। जो कल्प पहले बने थे, वे अभी भी पवित्रता की प्रतिज्ञा कर पवित्र रहेंगे।''

सा.बाबा 16.02.11 रिवा.

''तुम अभी समझते हो - इसी गीता ज्ञान से मनुष्य से देवता बनें थे, जो अभी तुमको बाप दे रहे हैं और राजयोग सिखला रहे हैं। बाप कहते हैं - मुख्य है पवित्रता की बात। काम महाशत्रु है, इस द्वारा ही तुमने हार खाई है, अब फिर उस पर जीत पाने से तुम जगतजीत अर्थात् विश्व के मालिक बन जाते हो।''

सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

''अभी हम इस पूज्य देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। फिर वहाँ और कोई धर्म नहीं रहता है। ... मुख्य बात है - भारतवासियों को यह खुशखबरी सुनाओ कि हम यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। इस डीटी डिनायस्टी की स्थापना होती है, और सब विनाश हो जायेंगे।... शिवबाबा वाइसलेस वर्ल्ड स्थापन कर रहे हैं। इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनेंगे, तब पवित्र विश्व के मालिक बन सकेंगे।''

सा.बाबा 18.11.10 रिवा.

''भारत अविनाशी खण्ड है, जो कभी लोप नहीं होता है। आधा कल्प यह एक ही खण्ड रहता है। और सब खण्ड बाद में नम्बरवार इमर्ज होते हैं।... सबको बोलो-वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी

कैसे चक्र लगाती है, वह आकर समझो। प्राचीन ऋषि-मुनियों का कितना मान है, परन्तु वे भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते थे। हाँ, उनमें पवित्रता की ताक़त रहती है, जिससे भारत को थमाते हैं।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''सभी आत्मायें पार्ट बजाते-बजाते सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाते हैं, फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते हैं। तो यह भारत कितना बड़ा तीर्थ है। भारत बाप की जन्म-भूमि है। ... सतयुग में दुख का नाम-निशान नहीं होता है। पाँच तत्व भी सतोप्रधान बन जाते हैं, वे भी तुम्हारी सर्विस में सदा हाजिर रहते हैं।... बाप तुमको स्वर्ग के लायक बनाते हैं।''

सा.बाबा 16.10.10 रिवा.

''तुम्हारा है राजयोग, सन्यासियों का है हठयोग। भारत को थमाने के लिए यह हठयोगियों का भी एक धर्म है। भारत को थमाने के लिए पवित्रता तो चाहिए ना। ... सतयुग में गृहस्थ धर्म पावन था। अभी फिर से वही पावन गृहस्थ धर्म की स्थापना हो रही है। ... काम पर जीत पाने में मेहनत लगती है। तुम अभी डबल अहिंसक बनते हो।''

सा.बाबा 23.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और स्वप्न

स्वप्न में भी अगर अपवित्र संकल्प आता है तो भी ब्रह्मचर्य को खण्डित माना जायेगा क्योंकि स्वप्न का आधार भी दिन में कहाँ न कहाँ आकर्षण है अर्थात् दिन में किसी के प्रति आकर्षण होता है, तब ही सोते समय ऐसा स्वप्न आता है, इसलिए ब्रह्मचर्य की यथार्थ धारणा के लिए अपनी दिनचर्या पर भी ध्यान रखना है, तब ही पवित्रता के भवन का निर्माण हो सकेगा।

''याद रखना अगर किसी के प्रति भी स्वप्न मात्र भी लगाव हो, स्वार्थ हो तो स्वप्न में भी समाप्त कर देना। ... अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं, फिर भी स्वप्न आ गया। ... फरमान को न मानने से अरमान रह जाता है, जिसका ये दण्ड है कि पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई।''

अ.बापदादा 16.11.95

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और त्रिलोक

परमधाम में आत्मा सम्पूर्ण पवित्र होती है, फिर वहाँ से इस साकार लोक में पार्ट बजाती है तो पवित्र से अपवित्र बनती है, फिर कल्पान्त में बाप आकर पवित्र बनाते हैं। परमधाम में पवित्रता और अपवित्रता की बात नहीं होती। पवित्रता और अपवित्रता की बात इस साकार लोक में ही होती है। साकार लोक और परमधाम के बीच में है सूक्ष्मवतन अर्थात् सूक्ष्म लोक। सूक्ष्म लोक में संगम के समय ही पार्ट चलता है। जब परमात्मा आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं, तो आत्मायें साकार लोक से अपना पार्ट पूरा करके अर्थात् पवित्र बनकर सूक्ष्मलोक में जाती हैं, जहाँ से परमधाम में जाती हैं। सूक्ष्मलोक है फरिश्तों की दुनिया, फरिश्ते पवित्र ही होते हैं।

''दुनिया में किसकी भी बुद्धि में नहीं है कि हम निर्विकारी थे, फिर यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाते-बजाते विकारी बनें हैं। आत्मा शान्तिधाम से आती है तो जरूर पवित्र होगी, फिर अपवित्र बनती है। पवित्र दुनिया में पहले-पहले 9 लाख होते हैं, और सब आत्मायें शान्तिधाम में रहती है, फिर नम्बरवार आकर पार्ट बजाती हैं।''

सा.बाबा 28.11.11 रिवा.

''बाप समझाते हैं - तुमको उस अवस्था में ही जाना है, जिस सतोप्रधान अवस्था में तुम यहाँ आये थे। उस अवस्था में जाकर फिर उसी अवस्था में आना है सतयुग में। ... अभी छोटे-बड़े सबकी वानप्रस्थ अवस्था है क्योंकि सबको वापस वाणी से परे अपने घर शान्तिधाम जाना है। सच्ची-सच्ची वानप्रस्थ अवस्था तुम्हारी है। बेहद का बाप सबको वापस ले जाने आया है।''

सा.बाबा 24.01.12 रिवा.

''जब आत्मा यहाँ पार्ट बजाने आती है तो सच्चा सोना होती है, फिर आहिस्ते-आहिस्ते उसमें खाद पड़ती जाती है, कलायें घटती जाती हैं और आत्मा इम्प्योर होती जाती है।... अभी बाप कहते हैं - अभी तुमको सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। मुझे याद करो तो तुम पवित्र बन जायेंगे और मैं तुमको स्वर्ग का वर्सा दूँगा।''

सा.बाबा 24.11.11 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को घर की स्मृति आई है, तुम जानते हो हम पवित्र बनकर अपने परमधाम घर जायेंगे। बाप ही आकर आत्माओं को पावन बनाते हैं। बाप शिव के साथ तुम सालिग्रामों की भी पूजा होती है।... अभी तुम सारे ड्रामा के खेल को जान गये हो। तुम समझते हो यह सारा खेल भारत पर ही बना हुआ है।''

सा.बाबा 4.7.11 रिवा.

''साक्षात्कार हुआ तो ऐसे नहीं कि तुम बैकुण्ठ में चले जायेंगे। नहीं, उसके लिए तो फिर

मेहनत करनी पड़े। बाबा ने यह भी समझाया है कि पहले तुम स्वीट होम में जायेंगे, फिर बैकुण्ठ में आयेंगे। स्वीट होम में सब आत्मायें पार्ट बजाने से मुक्त होकर मुक्त स्थिति में रहती हैं। जब तक आत्मा पवित्र नहीं बनी, तब तक वहाँ जा नहीं सकती।''

सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

''आत्माओं का बाप परमात्मा आकर आत्माओं को प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा अपना बनाते हैं। शिवबाबा की तो सर्व आत्मायें सन्तान हैं, उनको सब याद करते हैं। ... बाप कहते हैं - हे आत्मायें, तुम सतोप्रधान थीं, अभी तमोप्रधान बनी हो। जब शान्तिधाम में थी तो पवित्र थी। प्योरिटी के बिगर कोई आत्मा ऊपर घर में जा नहीं सकती। इसलिए सभी पतित-पावन बाप को बुलाती हैं।''

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

''सुखधाम में सिर्फ भारतवासी ही होते हैं, बाकी सब शान्तिधाम में जाते हैं। शान्तिधाम में सब प्योर रहते हैं, फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते-बजाते आहिस्ते-आहिस्ते इम्प्योर बनते जाते हैं। हर एक आत्मा सतो, रजो, तमो जरूर बनती है। ... आने से ही तमोप्रधान नहीं होंगे। हर चीज़ पहले सतोप्रधान होती है, फिर सतो, रजो, तमो में आती है।''

सा.बाबा 27.09.10 रिवा.

''तुम बच्चों को यह नशा रहना चाहिए कि हम बाप को याद कर जन्म-जन्मान्तर के लिए पवित्र बनते हैं। ... बाप जो समझाते हैं, उसको अच्छी रीति मन्थन कर धारण करना चाहिए। ... पवित्र बन पहले मुक्तिधाम में जाना है और नॉलेज से फिर देवता बनते हैं। ... देवताओं को याद नहीं करना पड़ता है क्योंकि वे हैं ही पावन। तुम पतित हो, इसलिए पावन बनने के लिए याद करना पड़ता है।''

सा.बाबा 7.09.10 रिवा.

''महफिल में जल उठी शमा ... भक्त यह परमपिता परमात्मा की स्तुति करते हैं। अभी बाप शमा बनकर आये हैं परवानों के लिए। ... उनको हुसैन भी कहा जाता है क्योंकि वह एवर-प्योर है। शान्तिधाम में आत्मायें प्योर रहती हैं, फिर यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। पार्ट बजाते हैं तो सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आती हैं।''

सा.बाबा 28.7.10 रिवा.

''बाप तुम बच्चों को श्रेष्ठ बनने का सहज रास्ता बताते हैं - एक तो कर्मेन्द्रियों को वश करो, दूसरा दैवी गुण धारण करो ... मैं तुम बच्चों को शान्तिधाम ले जाने आया हूँ। वहाँ पतित आत्मा तो जा न सके, इसलिए आकर सबको पावन बनाता हूँ। जिसको जो पार्ट मिला हुआ है, वह पूरा कर अब सबको वापस जाना है।''

सा.बाबा 03.05.10 रिवा.

''सभी आत्मयें गॉड फादर को बुलाते हैं कि आकर हमको लिबरेट करो अर्थात् दुख से मुक्त करो। लिबरेट करना और पावन बनाना दोनों का अर्थ अलग-अलग है। पतित से पावन भी बनाओ और लिबरेट भी करो। यहाँ से लिबरेट कर शान्तिधाम ले चलो।''

सा.बाबा 15.04.10 रिवा.

''शिवबाबा कहते हैं - पतित-पावन, ज्ञान का सागर तो मैं ही हूँ, कृष्ण के लिए तो ऐसा कह न सकें। गीता का भगवान कौन ? यह बहुत अच्छा चित्र है। ... मुख्य बात है पवित्र बनने की। वह है ही पवित्र धाम, जहाँ सभी आत्मायें रहती हैं। यहाँ आकर तुम पार्ट बजाते-बजाते पतित बने हो। जो सबसे जास्ती पावन बनते हैं, वे ही सबसे जास्ती पतित बने हैं।''

सा.बाबा 16.04.10 रिवा.

पवित्रता अर्थात् सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, अहिसा परमोधर्म - हर आत्मा परमधाम में जाते और परमधाम से आते समय सम्पूर्ण पवित्र होती है। परमात्मा आकर सर्वात्माओं को पावन बनाकर घर ले जाते हैं, जहाँ से सब नम्बरवार पार्ट बजाने आते हैं।

''तुम बच्चे पढ़ते भी हो तो पढ़ाते भी हो। बेहद का बाप सिर्फ पढ़ाते हैं। ... एक बाप सदा विदेही है, वह तुम बच्चों को भी कहते हैं - तुमको विदेही बनना है, मैं आया हूँ तुमको विदेही बनाने। पवित्र बनकर ही घर वापस जायेंगे।... पवित्र होने का यह मन्त्र है। इस मन्त्र में बहुत खूबियाँ भरी हुई हैं।''

सा.बाबा 3.09.09 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और डबल सिरताज एवं सिंगल ताज राजायें

सतयुग में जब आत्मा में पवित्रता होती है तो डबल ताजधारी राजायें होते हैं अर्थात् उनको राजाई का रतजजड़ित ताज और पवित्रता का ताज दोनों होते हैं। द्वापर से जब विकारी बनते हैं तो पवित्रता का ताज खत्म हो जाता है, सिंगल ताज ही रहता है और सिंगल ताज वाले डबल सिरताज राजाओं की पूजा करते हैं।

''हम डबल सिरताज थे, अभी फिर बन रहे हैं। अभी तुमको कोई ताज नहीं है। इन चित्रों में जहाँ तुम तपस्या में बैठे हो, वहाँ भी लाइट का ताज नहीं देना चाहिए। ... अभी तुम डबल सिरताज महाराजा, महारानी बनते हैं, यह खुशी तुमको होनी चाहिए। शिवबाबा को याद करने से हम पतित से पावन बन स्वर्ग के मालिक बन जायेंगे।''

सा.बाबा 22.09.11 रिवा.

''तुमने 84 जन्म लिए। जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बन गये। अब तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। ... वहाँ है राजा, रानी और प्रजा। सतयुग में वज़ीर होता ही नहीं है क्योंकि राजा में ही पॉवर रहती है। ... वज़ीर तब रखते हैं, जब पतित बन जाते हैं, ताक़त कम हो जाती है।''

सा.बाबा 16.06.10 रिवा.

''भारत की ही बात है, और कोई खण्ड की नहीं, जहाँ राजायें, राजाओं को माथा टेकते हैं। यहाँ भी दिखाया जाता है - ज्ञान मार्ग में पूज्य और अज्ञान मार्ग अर्थात् भक्ति मार्ग में पुजारी। सिंगल ताज वाले डबल ताज वालों को माथा टेकते हैं। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई है नहीं।''

सा.बाबा 16.06.10 रिवा.

''यह भी स्मृति में रहे कि हम गॉडली स्टूडेण्ट हैं, भगवान बाप हमको पढ़ाते हैं, तो भी अहो सौभाग्य। ... बाप को याद करने से ही पाप कटते हैं, फिर तुमको लाइट का ताज मिल जाता है। यह भी एक निशानी है पवित्रता की।''

सा.बाबा 19.05.10 रिवा.

''काम चिता पर बैठने से तुम काले बन जाते हो, फिर ज्ञान चिता पर बैठने से गोरे बनते हो। ... सर्वशक्तिवान बाबा ही सारी दुनिया को पावन बनाते हैं। बाप कहते हैं - भल साथ में रहो परन्तु नग्न नहीं होना है। ... ज्ञान और योग से तुम एवरहेल्दी बनते हो 21 जन्म के लिए। इसमें ही मेहनत है।''

सा.बाबा 08.05.10 रिवा.

''सतयुग में कोई भी राम और रावण को जानते नहीं हैं। सतयुग में राम और रावण दोनों ही

गुम हो जाते हैं। ... अभी संगमयुग पर राज्य न पाण्डवों को है और कौरवों को है। दोनों को ताज नहीं है। ... कौरवों को लाइट का ताज नहीं दे सकते क्योंकि पतित हैं, पाण्डवों को भी लाइट का ताज नहीं दे सकते हैं क्योंकि पुरुषार्थी हैं। चलते-चलते गिर पड़ते हैं। लाइट का ताज है पवित्रता की निशानी।''

सा.बाबा 14.05.10 रिवा.

''डबल सिरताज राजाओं के आगे सिंगल ताज वाले राजायें माथा झुकाते हैं, नमन करते हैं क्योंकि वे पवित्र हैं। ... परन्तु उनको यह पता थोड़ेही है कि वे कौन हैं, हम उनको माथा क्यों टेकते हैं। ... ये बड़ी गुह्य बातें हैं। गीता आदि में थोड़ेही ये बातें हैं।''

सा.बाबा 23.03.10 रिवा.

''देवतायें डबल सिरताज होते हैं। फिर जब देवतायें वाम मार्ग में गिरते हैं तो रावण राज्य शुरू हो जाता है। डबल ताज वाले ही फिर सिंगल ताज वाले बनते हैं। डबल ताज सतयुग में पवित्रता की निशानी है। देवतायें तो सब हैं पवित्र, यहाँ पवित्र कोई है नहीं। सन्यासी आदि सब जन्म तो विकार से ही लेते हैं।''

सा.बाबा 12.03.10 रिवा.

''देवी-देवतायें डबल सिरताज वाले थे। फिर आधा कल्प बाद लाइट का ताज उड़ जाता है। इस समय लाइट का ताज कोई पर भी नहीं है। सिर्फ धर्म-स्थापक जो हैं, उनको हो सकता है क्योंकि वे पवित्र आत्मायें शरीर में आकर प्रवेश करती हैं।''

सा.बाबा 11.03.10 रिवा.

''यही भारत है, जिसमें डबल सिरताज वाले देवी-देवतायें भी थे, सिंगल ताज वाले भी थे। अभी तक भी डबल सिरताज वालों के आगे सिंगल ताज वाले माथा टेकते हैं। ... यह भी ईश्वरीय दरबार है, इसको इन्द्र सभा भी गाया जाता है।''

सा.बाबा 11.03.10 रिवा.

''भारत में पवित्र राजायें थे, अभी अपवित्र राजायें उन पवित्र राजाओं की पूजा करते हैं। अब बाबा आकर तुमको पवित्र महाराजा-महारानी बनाते हैं, तो ऐसा बनने का पुरुषार्थ करना चाहिए। ... जब तक तुम ब्राह्मण न बनो तब तक देवता बन नहीं सकते। ब्राह्मण ही यज्ञ की सम्भाल करते हैं, तो इसमें पवित्र बनना पड़े।''

सा.बाबा 16.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और अन्न एवं संग

पवित्रता की आधार शिला है ब्रह्मचर्य और ब्रह्मचर्य की धारणा के लिए जैसे बाबा के साथ योग आवश्यक है, वैसे ही बाबा ने जो शिक्षायें दी हैं, वे भी आवश्यक हैं। बाबा ने कहा है - अन्न और संग ब्रह्मचर्य और पवित्रता की धारणा के लिए अति आवश्यक है। साथ ही बाबा कहते हैं - तुमको संग की भी बहुत सम्भाल करनी है।

''यह काम, क्रोध आदि सब ग्लानि की चीजें हैं। उन सबसे अधिक ग्लानि की चीज है यह काम विकार। सन्यासियों में भी थोड़ा क्रोध तो रहता है क्योंकि जैसा अन्न वैसा मन का गायन है। गृहस्थियों का ही खाते हैं। भल कोई अनाज नहीं खाते लेकिन पैसे तो लेते हैं ना। पतितों का उस पर प्रभाव तो रहता है ना। पतित का अन्न पतित ही बनायेगा।''

सा.बाबा 14.09.11 रिवा.

''तुमको बाप और वर्से को याद करना है और अन्न और संग की भी परहेज़ रखनी है। नहीं तो जैसा अन्न, वैसा मन हो जाता है। सन्यासी गृहस्थियों का अन्न खाते हैं तो उनको फिर गृहस्थियों के पास जन्म लेना पड़ता है। उनका है रजोप्रधान सन्यास, तुम्हारा है सतोप्रधान सन्यास। तुम सारी पुरानी दुनिया का बुद्धि से सन्यास करते हो। उस सन्यास में भी कितना बल है। प्रेसीडेण्ट आदि भी गुरुओं के आगे माथा टेकते हैं।''

सा.बाबा 1.05.12 रिवा.

''लॉ कहता है कि किचिन के सामने कोई भी अपवित्र आना नहीं चाहिए। ... यहाँ सन्यासी आदि पुरुषार्थ अनुसार विकारों का सन्यास करते हैं, फिर भी उनके शरीर तो पतित हैं ना। विकारों का सन्यास करते तो निर्विकारी के आगे विकारी मनुष्य माथा टेकते हैं क्योंकि उनको धर्मात्मा समझते हैं।''

सा.बाबा 21.08.10 रिवा.

''अभी भी जब होली अर्थात् पवित्रता की स्टेज पर ठहरते हो वा बाप के संग के रंग में रंगे हुए होते हो तो इस ईश्वरीय मस्ती में यह देह का भान वा भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का भान, छोटे-बड़े का भान विस्मृत हो एक ही आत्मिक स्वरूप का भान रहता है ना। (आत्मिक स्वरूप में छोटे-बड़े का प्रश्न ही नहीं उठता है)''

अ.बापदादा 27.2.72

''संग की बहुत सम्भाल करनी है। बाबा बाइसकोप आदि देखने की मना करते हैं। जिसको बाइसकोप देखने की आदत पड़ी, वह पतित बनने बिगर रह रहीं सकेंगे। ... कोई भी देहधारी को याद नहीं करो। एक पतित-पावन बाप को ही याद करो तो तुम पावन दुनिया के मालिक बन जायेंगे। अन्त मती सो गति हो जायेगी।''

सा.बाबा 26.05.10 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और पुरुषार्थ

पवित्रता अर्थात् सम्पूर्णता अर्थात् सतोप्रधानता हर आत्मा के जीवन का लक्ष्य है और हर आत्मा उसके लिए अपनी शक्ति और समझ के अनुसार पुरुषार्थ करती है, परन्तु विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्मा पुरुषार्थ करते हुए भी इस सृष्टि-रंगमंच पर पार्ट बजाते हुए अपवित्रता अर्थात् अपूर्णता अर्थात् तमोप्रधानता की ओर ही जाती है और कल्पान्त में तमोप्रधान बन जाती है, तब ज्ञान-सागर, पतित-पावन परमात्मा आकर जब यथार्थ ज्ञान देते हैं और पवित्रता का विधि-विधान बताते हैं, तब उस विधि-विधान के अनुसार जो आत्मायें पुरुषार्थ करती हैं, उनकी गति तमोप्रधानता से सतोप्रधानता अर्थात् पवित्रता की ओर अग्रसर होती है और उनके सहयोग से सभी आत्मायें अपने पार्ट अनुसार सतोप्रधानता को पाकर वापस परमधाम जाती हैं।

अभी परमात्मा ने आकर पवित्रता के विधि-विधान का ज्ञान दिया है, उस विधि-विधान को समझकर परमात्मा की श्रीमत अनुसार जो आत्मायें पुरुषार्थ करती हैं, वे इस जीवन में भी पवित्रता अर्थात् सतोप्रधानता अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति के परम-सुख को अनुभव करती हैं, जिससे उनकी अपनी और सारे विश्व की आत्मायें पवित्र बनती हैं। इस पवित्रता के पुरुषार्थ में ब्रह्मचर्य का विशेष महत्व है, जिसकी धारणा करने वाले ही पवित्रता के लिए यथार्थ पुरुषार्थ कर सकते हैं।

निराकार ज्ञान-सागर, पतित-पावन परमात्मा आकर जब पवित्रता का ज्ञान देते हैं, तब उस ज्ञान को पाकर जो आत्मायें उनको पहचानती हैं, उनके द्वारा दिये गये ज्ञान को समझकर निश्चयबुद्धि बनते हैं, वे ही पवित्रता के लिए यथार्थ रीति पुरुषार्थ करते हैं और पवित्रता के परम-सुख को इस जीवन में भी अनुभव करते हैं और भविष्य जन्म-जन्मान्तर के लिए पवित्रता के सुख का संचय करते हैं।

''ज्ञान सागर बाबा ही नर से नारायण बनने के लिए यह ज्ञान सुनाते हैं। यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। ... लक्ष्मी-नारायण जो सतोप्रधान थे, विश्व पर राज्य करते थे, वे 84 जन्म लेकर बिल्कुल ही तमोप्रधान बन गये हैं। अभी मैं फिर से वही राज्य स्थापन करता हूँ। तुम कैसे पतित से पावन और फिर पावन से पतित बनते हो, वह सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप समझाते हैं।''

सा.बाबा 7.09.11 रिवा.

''सतयुग में भी पुनर्जन्म तो लेते हैं परन्तु विकार से जन्म नहीं लेते हैं। सतयुग है निर्विकारी दुनिया, वहाँ होते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी। भल त्रेता में दो कलायें कम हो जाती हैं परन्तु वे

विकारी नहीं बनते हैं। ... जब तक पतित-पावन परमात्मा बाप आकर पावन न बनाये, तब तक कोई मुक्ति-जीवनमुक्ति में जा नहीं सकते। बाप ही मुक्ति-जीवनमुक्ति धाम का गाइड है।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो कट उतर जायेगी। बादशाही ऐसे ही थोड़ेही मिल जायेगी। याद की मेहनत करनी होती है। ... योगबल से ही विकर्माजीत बनना है। लक्ष्मी-नारायण इतने पवित्र कैसे बनें, जब कि कलियुग के अन्त में कोई पवित्र नहीं है ? जरूर याद की मेहनत की होगी। इस समय गीता ज्ञान का एपीसोड रिपीट हो रहा है।''

सा.बाबा 3.09.11 रिवा.

''माया बहुत तूफान लायेगी, परन्तु तुमको माया के तूफानों से डरना नहीं है। उन पर विजय प्राप्त करनी है। यह है गुप्त मेहनत। ज्ञान भी गुप्त है। मुरली चलाना तो प्रत्यक्ष है। परन्तु इस वाणी चलाने से तुम पावन नहीं बनेंगे। पावन तो याद से ही बनेंगे। बाप को याद करना है और बाप का मददगार भी बनना है। यह रुहानी हॉस्पिटल-कम-युनिवर्सिटी खोलने का भी पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 1.09.11 रिवा.

''तुमको यह नशा रहता है कि हम पतित मनुष्य से सतयुगी पावन देवता बन रहे हैं। असुर और देवताओं में कितना फर्क है। दोनों ही मनुष्य हैं परन्तु सीरत में फर्क है। पतित हैं तो असुर कहा जाता है और पावन सतोप्रधान हैं तो देवता कहा जाता है। ... पहले-पहले यह निश्चय चाहिए कि हमको पढ़ाते कौन हैं। हमको पढ़ाने वाला श्री श्री शिवबाबा ज्ञान का सागर है।''

सा.बाबा 2.09.11 रिवा.

''इसमें बड़ी बहादुरी चाहिए। तुम हो ही महावीर, महावीरनियाँ। सिवाए एक बाप के और कोई की परवाह नहीं। ... जिनकी तकदीर में नहीं है तो समझें भी कैसे। पवित्र रहना है तो रहो, नहीं तो जाकर अपना प्रबन्ध करो। इसमें हिम्मत चाहिये ना। इस बाबा के सामने कितने हंगामें हुए, बाबा को कभी रंज हुआ देखा!... कोई बात में डरो मत। डरने से इतना ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 9.02.11 रिवा.

''अभी तुम सब मिलकर स्वर्ग की इमारत बना रहे हो, यह भी तुमको बहुत खुशी होनी चाहिए। भारत जो अनहोलीएस्ट बन पड़ा है, उसको हम होलीएस्ट ऑफ होली बनाते हैं, तो अपने ऊपर कितनी खबरदारी रखनी चाहिए। ... अभी तुमको होलीएस्ट ऑफ होली थोड़े ही कहेंगे। बन जायेंगे फिर तो यह शरीर भी नहीं रहेगा।''

सा.बाबा 2.12.10 रिवा.

''तुम बच्चों को जितना हो सके याद की यात्रा को बढ़ाना है। मूल फिकरात रखनी है कि

पतित से पावन कैसे बनें! बाबा का बनकर और फिर बाबा के आगे जाकर सज़ा खायें, यह तो बड़ी दुर्गति की बात है। ... मैं ज्ञान का सागर भी हूँ। अभी तुम्हारी आत्मा में सारा ज्ञान भरते हैं। अभी 84 जन्मों का सारा राज़ तुम्हारी बुद्धि में है।''

सा.बाबा 28.11.10 रिवा.

''रावण राज्य में सब नीच हैं, उनको ऊंच का पता ही नहीं है। ऊंच वालों को भी नीच का पता नहीं रहता है। तुमको ऊंच और नीच दोनों का पता है, इसलिए तुम ऊंच बनने का पुरुषार्थ करते हो। ऊंच ते ऊंच है बेहद का बाप, वह हमको ऊंच ते ऊंच बनाते हैं। ... ऊंच ते ऊंच तब बनेंगे, जब याद की यात्रा में मस्त रहेंगे। याद से ही ऊंच पद पाना है।''

सा.बाबा 11.11.10 रिवा.

''बाप पावन बनने की बहुत सहज युक्ति बताते हैं। बाप को याद करना है और शरीर का भान खत्म करना है। ... मुख्य बात है याद की। तुम 84 जन्म लेते-लेते पतित बने हो, अब फिर पवित्र बनना है। यह ड्रामा का चक्र है, जो चलता रहता है।''

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

''बाप को भी नई दुनिया बनाने में मेहनत लगती है। ऐसे नहीं कि झट से नई दुनिया बन जाती है। तुमको देवता बनने में टाइम लगता है। अभी जो अच्छे कर्म करते हैं, वे अच्छे कुल में जन्म लेते हैं। ... अभी तुम्हारी आत्मा अच्छे कर्म सीख रही है। आत्मा ही अच्छे या बुरे संस्कार ले जाती है। अभी तुम गुल-गुल बन अच्छे घर में जन्म लेते रहेंगे। यहाँ जो अच्छा पुरुषार्थ करते हैं, तो जरूर अच्छे कुल में जन्म लेते होंगे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''एक मात्रा की गलती अर्थात् शिव के बजाए शव को देखते अर्थात् लॉ ब्रेक करने वाले बन जाते हो। ... शिव शब्द बदलकर विष बन जाता है। विष अर्थात् विकारों की विष। ... इसलिए कब भी शव को न देखो अर्थात् इस देह को न देखो। देह को देखने से अर्थात् शरीर के भान में आने से लॉ ब्रेक होता है। अगर इस लॉ पर सदा अपने को कायम रखो तो कब हार नहीं होगी, माया वार नहीं करेगी।''

अ.बापदादा 3.05.72

''गायन है सच् की नैया डोलती है परन्तु डूबती नहीं है। तूफान तो आते हैं ना। ... सबसे पहले नम्बर का तूफान है देहाभिमान का। वह है सबसे बुरा, फिर है काम। काम महाशत्रु है, इसने ही सबको पतित बनाया है। ... हर एक को अपने चार्ट को देखना है कि हमने कहाँ तक इस काम विकार पर विजय पाई है, हम कहाँ तक योग में रहते हैं।''

सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

''तुम्हारी याद की यात्रा पूरी तब होगी, जब तुम्हारी कोई भी कर्मेन्द्रियाँ धोखा न दें, कर्मातीत अवस्था हो जाये। अभी यात्रा पूरी नहीं हुई है। अभी तुमको बहुत पुरुषार्थ करना है, नाउम्मीद नहीं बनना है। सर्विस भी बहुत करनी है। बाप भी आकर इस बूढ़े तन से सर्विस कर रहे हैं।''

सा.बाबा 16.07.10 रिवा.

''मणि को देखने से सांप का जो विष है, वह हल्का हो जायेगा। अगर शरीर रूपी सांप को देखा तो फिर उसके बन जायेंगे और मणि को देखेंगे तो बापदादा की माला के मणि बन जायेंगे। ... बापदादा से तो बहुत प्रतिज्ञायें कीं लेकिन आज अपने आपसे प्रतिज्ञा करो कि अब से लेकर सिवाए मणि के और कुछ नहीं देखेंगे और बाप की माला के मणि बनकर सारे सृष्टि के बीच चमकेंगे।''

अ.बापदादा 16.10.69

''इस रुहानी रॉयल्टी का फाउण्डेशन क्या है? सम्पूर्ण प्योरिटी। ... हर एक नॉलेज के दर्पण में अपने को देखो कि मेरे चेहरे, चलन में रॉयल्टी दिखाई देती है?''

अ.बापदादा 3.11.92

''आप जो श्रेष्ठ आत्मायें हो वह सदैव वैष्णव अर्थात् तमोगुणी संकल्प वा तमोगुणी संस्कारों को भी टच नहीं कर सकते हो। ... इसी प्रकार अगर अपनी कमजारी के कारण कोई भी पुराना तमोगुणी संस्कार वा संकल्प भी टच कर देते हैं तो विशेष रुप से ज्ञान-स्नान करना चाहिए अर्थात् बुद्धि में विशेष रूप से बाप की याद अथवा बाप से रुहरिहान करनी चाहिए।''

अ.बापदादा 15.5.72

''जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का ज़रा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।''

अ.बापदादा 14.11.87

''बाप तुमको कितना सहज विश्व की बादशाही देते हैं। बाबा पहले तुमको घर ले जायेगा, फिर वहाँ से स्वर्ग में भेज देगा। ... बाप तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराते हैं। इस समय का तुम्हारा पुरुषार्थ कल्प-कल्प का बन जायेगा। पवित्रता जरूर चाहिए। पढ़ाई ब्रह्मचर्य में ही पढ़ते हैं। ... भगवान पढ़ाते हैं तो एक दिन भी पढ़ाई मिस नहीं करना चाहिए। यह मोस्ट वेल्यूएबुल पढ़ाई है।''

सा.बाबा 31.05.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और सुख-दुख

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा को दुख नहीं हो सकता है परन्तु एक ब्रह्मचारी व्यक्ति को दुख हो सकता है। जब आत्मा परमधाम से आती है तो सम्पूर्ण पवित्र होती है, उसका कोई विकर्मों का खाता नहीं होता है, इसलिए उसको पहले सुख मिलता है, फिर जब विकर्मों में प्रवृत्त होती है तो दुख होता है।

''जो आत्मा ऊपर से सतोप्रधान आती है, वह सज़ायें तो भोग नहीं सकती। क्राइस्ट की आत्मा धर्म स्थापन करने आई, उनको कोई सज़ा मिल न सके। ... वह जिसके शरीर में प्रवेश करते हैं, उनको दुख होता है, वही दुख सहन करते हैं। जैसे इस तन में बाबा आते हैं, वह तो सतोप्रधान है। कोई दुख या तकलीफ इनकी आत्मा को होती है, शिवबाबा को नहीं हो सकता।''

सा.बाबा 11.04.11 रिवा.

''तुम डबल अहिंसक हो। काम कटारी चलाना, यह तो सबसे बड़ा पाप है। बाप कहते हैं - यह काम कटारी आत्मा को आदि-मध्य-अन्त दुख देती है। ... तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया अब खत्म होनी है। बाप जब नया घर बनाते हैं तो पुराने घर से वैराग्य हो जाता है। अभी यह है बेहद का वैराग्य। सारी पुरानी दुनिया से वैराग्य है, इसको भूल जाना है।''

सा.बाबा 21.02.11 रिवा.

''सोई हुई तकदीर को जगाने वाला और श्रीमत देने वाला अर्थात् तकदीर बनाने वाला एक ही बाप है। ... बच्चे जानते हैं - कल्प-कल्प हमारी तकदीर जगती है और फिर सो जाती है। पावन बनते हैं तो तकदीर जगती है और पतित बनते हैं तो तकदीर सो जाती है। गृहस्थ आश्रम कहा जाता है और उसके अगेन्स्ट फिर है अपवित्र पतित गृहस्थ धर्म।''

सा.बाबा 23.02.11 रिवा.

''कृष्ण के जन्म और क्राइस्ट के जन्म में बहुत फर्क है। क्राइस्ट का जन्म कोई छोटे बच्चे के रूप में नहीं होता है। क्राइस्ट की आत्मा ने तो कोई में जाकर प्रवेश किया है, वह विष से पैदा हो न सके। ... क्राइस्ट को क्रास पर दिखाते हैं। बच्चे जानते हैं धर्म-स्थापक को कोई ऐसे मार न सके। तो किसको मारा ? जिसमें प्रवेश किया, उसको दुख मिला। सतोप्रधान आत्मा को दुख कैसे मिल सकता है।''

सा.बाबा 29.09.10 रिवा.

''पवित्रता आत्मा की सुख-शान्ति का मुख्य आधार है। पवित्र आत्मा को कब दुख-अशान्ति हो नहीं सकती। मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर

यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।''

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति है। अगर पवित्रता नहीं तो सुख-शान्ति नहीं। ... कोई भी विकार का अंश-मात्र भी न रहे, इसको कहा जाता है पवित्रता। ... लक्ष्य को सामने रख लक्ष्य प्रमाण लक्षण धारण कर उड़ते चलो।''

अ.बापदादा 7.3.93 पार्टी 5

''पवित्रता की शक्ति के कारण जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है। पवित्रता फाउण्डेशन है। पवित्रता को माता कहते हैं और सुख-शान्ति उनके बच्चे कहते हैं। तो जहाँ पवित्रता है, वहाँ सुख-शान्ति स्वत: ही है।''

अ.बापदादा 22.03.86

''भारत में लक्ष्मी-नारायण आदि का पवित्र प्रवृत्ति मार्ग का धर्म था, जिसको आदि सनातन देवी-देवता धर्म कहा जाता है। भारत में पवित्रता, सुख-शान्ति, सम्पत्ति सब था। पवित्रता नहीं है तो न शान्ति है और न ही सुख है। ... भारत ही स्वर्ग था, जहाँ पवित्र जीवात्मायें रहती थीं, बाकी और सभी धर्म की आत्मायें निर्वाणधाम में थीं।''

सा.बाबा 23.05.12 रिवा.

''तुम भारतवासी सुखधाम में होंगे, बाकी सब शान्तिधाम में होंगे। यह ड्रामा की नॉलेज बाप के सिवाए कोई समझा न सके। ... तुम पवित्र दैवी धर्म वाले थे, बहुत सुख में थे। फिर अपवित्र बन दुख में आये हो। तुम स्वर्ग में निर्विकारी थे, अभी विकारी बनने से दुखी हुए हो। अब बाप तुमको पुरुषार्थ कराते हैं फिर से स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनने के लिए। तुम्हारे मम्मा-बाबा बनते हैं तो तुम भी पुरुषार्थ करो।''

सा.बाबा 15.10.11 रिवा.

''बाबा ने बच्चों को समझाया है कि यह नाटक सुख और दुख का बना हुआ है। ... रावण की प्रवेशता के कारण सभी पतित दुखी बन पड़े हैं। बाप कहते हैं यह देहाभिमान तुम्हारा नम्बरवन दुश्मन है। फिर हैं काम, क्रोधादि 5 विकार दुश्मन। अभी सभी मनुष्य विषय सागर में गोते खाते रहते हैं।''

सा.बाबा 11.2.12 रिवा.

पवित्रता-ब्रह्मचर्य और विश्व-कल्याण

परमात्मा आकर विश्व-कल्याण का पाठ पढ़ाते हैं। विश्व-कल्याण अर्थात् जड़-जंगम और चेतन सबकी सतोप्रधान स्थिति, उसका आधार है ब्रह्मचर्य व्रत की पालना। जो आत्मायें स्वयं पवित्रता के लिए पुरुषार्थ करते हैं, वे परमात्मा की मत पर अन्य आत्माओं को भी उसका सन्देश देते हैं, उनको भी पावन बनने की प्रेरणा देते हैं, पावन बनाने का सहयोग देते हैं।

''कुम्भ का मेला आदि होता है तो बहुत मनुष्य जाते हैं स्नान करने। क्यों ? पावन होना चाहते हैं। समझते हैं स्नान करने से पावन बन जायेंगे। वहाँ तुम बहुत सर्विस कर सकते हो। मनुष्यों को समझाना चाहिए कि पतित-पावन पानी नहीं है, ज्ञान सागर परमात्मा है।... सब प्वाइन्ट्स लिखनी है। फिर आपही जज करेंगे कि पातित-पावन कौन ?''

सा.बाबा 6.08.10 रिवा.

''यह है ज्ञान यज्ञ। यज्ञ में आहुति डालनी होती है। ज्ञान सागर बाप ही आकर यज्ञ रचते हैं। यह बड़ा भारी यज्ञ है, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। ... इस बेहद की सर्विस में कितनी विशालबुद्धि होनी चाहिए। हम विश्व पर जीत पाते हैं। काल पर भी जीत पाकर अमर बन जाते हैं। ... तुम किसको भी विश्व का मालिक बना सकते हो।''

सा.बाबा 9.07.10 रिवा.

''तुम बच्चों को अन्दर में आना चाहिए कि ऊंच ते ऊंच बाप की कितनी महिमा है। वह सारे विश्व को पावन बनाने वाला है। प्रकृति भी पावन बन जाती है। ... तुम कितना ऊंच कार्य कर रहे हो! अभी तुम सारे विश्व को पावन बना रहे हो।''

सा.बाबा 21.11.09 रिवा.

विविध प्रश्न और उनके सम्भावित उत्तर

Q. माया से हारने और माया से युद्ध करने में क्या अन्तर है?

माया से हारने वाले से दिल में हीनता आती है और माया से युद्ध करने वाले के मन में माया पर जीत पाने का हौंसला, उमंग-उत्साह होगा। परमात्मा की याद में माया से युद्ध करने वाले को निश्चय रहता है कि एक दिन हम विजयी अवश्य होंगे क्योंकि सर्वशक्तिमान परमात्मा हमारा साथी है। हार वाला दिल शिकस्त होता है परन्तु युद्ध करने वाला दिल शिकस्त नहीं होता है, बहादुर होता है। परन्तु माया पर जीत पाने वाला दोनों से श्रेष्ठ है।

Q. नई दुनिया स्वर्ग की स्थापना कौन करता है, शिवबाबा और ब्रह्माबाबा के पार्ट में क्या अन्तर है या दोनों का पार्ट एक ही है?

नई दुनिया की स्थापना करने वाला है शिवबाबा, वह आकर ज्ञान देता है, जिसको ब्रह्मा बाबा पहले-पहले धारण कर नई दुनिया का सेम्पुल बनकर शिवबाबा का साथ देता है। शिवबाबा ज्ञान का सागर है, ब्रह्मा बाबा अनुभवों का सागर है क्योंकि वे कल्प के आदि से अन्त तक पार्ट बजाते हैं, इसलए उनकी आत्मा में सारे कल्प का अनुभव सार रूप में संचित होता है। शिवबाबा ज्ञान देता है और ब्रह्मा बाबा अपना अनुभव बताकर नई दुनिया की स्थापना में सहयोगी बनते हैं। इसलिए भारत में परमात्मा के निराकार और साकार दोनों रूपों का महत्व है।

वास्तव में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा दोनों का पार्ट एक ही शरीर के द्वारा चलता है, परन्तु दोनों की अपनी-अपनी स्वतन्त्र आत्मायें हैं, इसलिए दोनों का पार्ट अलग-अलग है और दोनों अपना-अपना पार्ट बजाते हैं।

''ब्रह्मा द्वारा स्थापना, विष्णु द्वारा पालना कहते हैं परन्तु ब्रह्मा तो स्थापना करते नहीं है। स्वर्ग की स्थापना ब्रह्मा नहीं करेंगे, स्वर्ग की स्थापना तो परमपिता परमात्मा शिव ही करते हैं। यह ब्रह्मा की आत्मा तो पतित है, तो पावन दुनिया की स्थापना कैसे करेंगे। ... ये जो ज्ञान के अलंकार, जो विष्णु को दिये हैं, वे वास्तव में तुम्हारे हैं।''

सा.बाबा 28.07.11 रिवा.

Q. पवित्रता की कसौटी क्या है?

पवित्रता के लिए बाबा ने कहा है यदि अंशमात्र भी आत्मा को दुख की महसूसता होती है, राग-द्वेष, भय-चिन्ता, ईर्ष्या-आवेश, अहंकार-हीनता का अंश है तो वह पवित्रता की कमी की निशानी है। इन सबसे हम अपनी पवित्रता का माप सकते हैं और जब ऐसी चेकिंग करेंगे तब

ही सम्पूर्ण पवित्रता के लिए अभीष्ट पुरुषार्थ कर सकते हैं, उस पुरुषार्थ के लिए भी बाबा ने श्रीमत दी है। बाबा ने आवाज़ से हँसने को भी अपवित्रता कहा है क्योंकि यह भी देहाभिमान की ही निशानी है अर्थात् देहाभिमान का अंश है। बाबा सदैव कहते - देवतायें कब जोर से नहीं हँसते, वे सदैव मुस्कराते हैं। इस सत्य का प्रमाण साकार ब्रह्मा बाबा और अभी गुल्जार दादी के तन में पधारे अव्यक्त बापदादा को देखने से अनुभव होता है।

पवित्रता के लिए बाबा ने कहा है - सम्पूर्ण पवित्र आत्मा जब परमधाम से आती है और जब परमधाम जाती है तब ही होती है। आने के बाद हर क्षण आत्मा में अपवित्रता अर्थात् देहभान बढ़ता जाता है, जो ही बाद में देहाभिमान में बदल जाता है। यथार्थ रीति पवित्रता की अनुभूति हम अभी कर सकते हैं, जिस अनुभूति को बढ़ाते-बढ़ाते सम्पूर्णता को पाना है अर्थात् सम्पूर्ण पवित्र बनना है।

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा जिस समय जिस स्थिति में अपनी मन-बुद्धि को एकाग्र करना चाहे कर सकती है।

सम्पूर्ण पवित्र आत्मा की हर आत्मा के प्रति शुभ-भावना, शुभ-कामना होती है, जिसके फलस्वरूप हर आत्मा की उसके प्रति शुभ-भावना और शुभ-कामना होती है।

''महादानी-वरदानी, जगत माता वा जगत पिता वा पतित-पावनी के रूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को अगर आप दृष्टि देंगी तो दृष्टि से भी उनको वरदान की प्राप्ति करा सकती हो। वृत्ति से भी प्राप्ति करा सकती हो अर्थात् पालना कर सकती हो। ... आप ब्राह्मण कथा वा ज्ञान सुनाकर स्थापना तो बहुत जल्दी कर लेते हो, लेकिन विनाश वा पालना का का जो कर्तव्य है, उसमें और अटेन्शन चाहिए।''

अ.बापदादा 12.03.72

''पालना करने के समय कल्याणकारी भावना वा वृत्ति रखकर किसी भी आत्मा की पालना करो तो कैसी भी अपकारी आत्मा पर अपनी पालना से उनको उपकारी बना सकते हो। कैसे भी पतित आत्मा पतित-पावनी वृत्ति से पावन हो सकते हैं। अगर उनका पतितपना देखेंगे तो नहीं हो सकेगा। (अर्थात् वे पावन नहीं बन सकेंगे।)''

अ.बापदादा 12.03.72

''दूसरों के स्वभाव-संस्कार देखने में बुद्धि न जाये, तब ही एक तरफ बुद्धि स्थिर हो सकती है। कमजोर आत्मा की कमजोरी को न देखे। सदा यह स्मृति में रहे कि वैराइटी आत्मायें हैं। सदा आत्मिक दृष्टि रहे। आत्मा के रूप में उनको स्मृति में लाने से पॉवर दे सकेंगे।... आत्मा शब्द स्मृति में आने से ही रुहानियत की शुभ भावना आ जाती है। दृष्टि पवित्र हो जाती है।''

अ.बापदादा 12.03.72

''पतित-पावनी कब पतित संकल्पों के प्रभाव में आ नहीं सकती। पतित-पावनी के स्वप्न में भी पतित संकल्प वा सीन आ नहीं सकते। ... अगर आते हैं, तो उनको भी हल्का नहीं छोड़ना है। इतनी कड़ी दृष्टि अपने ऊपर रहना चाहिए। ... शक्तियाँ कोमल नहीं होती। माया पर तरस कभी नहीं करना। माया का तिरस्कार करेंगी, तो भक्तों द्वारा व दैवी परिवार द्वारा सत्कार प्राप्त करेंगी।''

अ.बापदादा 4.03.72

Q. क्या सभी देवताओं को पवित्र कहेंगे ? यदि कहेंगे तो कैसे और नहीं कहेंगे तो क्यों ?

देवी-देवता धर्म में जो आत्मायें परमधाम से आती हैं, उस समय उनको पवित्र कहेंगे, उसके बाद तो उनकी पवित्रता की डिग्री कम होती जाती है, इसलिए उनको सम्पूर्ण पवित्र नहीं कहेंगे, परन्तु सभी देवतायें ब्रह्मचारी होते हैं अर्थात् वे काम-विकार में नहीं जाते हैं।

सतयुग से लेकर त्रेता के अन्त तक जो भी मनुष्यात्मायें होती हैं, वे सभी देवतायें कहे जाते हैं, परन्तु सभी को सम्पूर्ण पवित्र नहीं कह सकते हैं।

''देवतायें हैं पूज्य, वे किसकी पूजा नहीं करते हैं। फिर जब वाम मार्ग में आने से पुजारी बनते हैं, तब पूज्य देवताओं के चित्रों के आगे नमन करते हैं। ... पहले-पहले शिव की पूजा होती है, वह है अव्यभिचारी पूजा। वह है सतोप्रधान पूजा, फिर देवताओं की पूजा करते हैं, ... अनेकों की पूजा करने लगते हैं और सीढ़ी नीचे उतरते तमोप्रधान बनते जाते हैं।''

सा.बाबा 11.09.10 रिवा.

''क्रिमिनल आई बहुत धोखा देती है। क्रिमिनल आई को सिविल आई बनाने में बहुत मेहनत लगती है। देवताओं के कितने अच्छे करेक्टर्स हैं। अब तुमको ऐसा देवता बनाने वाला जरूर चाहिए। बाप ही आकर मनुष्य से देवता बनाते हैं, रावण की जेल से छुड़ाते हैं।''

सा.बाबा 11.09.10 रिवा.

Q. सन्यासियों को पवित्र कहेंगे ? यदि कहेंगे तो कब और कैसे और यदि नहीं कहेंगे तो क्यों ?

सन्यासियों की आत्मा जिस समय परमधाम से आती है, उस समय सम्पूर्ण पवित्र होती है, फिर

तो उसमें देहभान और फिर देहाभिमान की खाद पड़ती जाती है, इसलिए उनको सम्पूर्ण पवित्र नहीं कह सकते हैं, भल वे ब्रह्मचारी रहते हैं, इसलिए उनकी मान्यता होती है।

''सन्यासियों को सम्पूर्ण निर्विकारी नहीं कहेंगे। सतयुग में आत्मा और शरीर दोनों पवित्र होते हैं। वे सम्पूर्ण निर्विकारी होने के कारण सम्पूर्ण विश्व के मालिक बनते हैं। ... यहाँ राजा-रानी बनने की बात नहीं है। राजाई न पाण्डवों की है और न कौरवों की है। यह ब्राह्मण कुल तो संगम पर थोड़ा समय ही चलता है। तुम ब्रह्मा मुख वंशावली भाई बहन हो गये।''

सा.बाबा 10.09.10 रिवा.

''सतयुग में तुम 100 परसेन्ट पवित्र थे तो 100 प्योरिटी, पीस और प्रॉस्पेरिटी थी। अभी 100 परसेन्ट अपवित्र बने हो, इसलिए दुख-अशान्ति है। ... देवताओं के आगे गाते हैं सर्वगुण सम्पन्न ... सम्पूर्ण निर्विकारी, परन्तु सन्यासियों के आगे यह महिमा नहीं करेंगे।... कुमारी पवित्र है तो सब माथा टेकते हैं, फिर अपवित्र बनती है तो सबके आगे माथा टेकना होता है।''

सा.बाबा 28.08.10 रिवा.

Q. क्या कलियुग में पवित्र आत्मायें हो सकती हैं? यदि हाँ तो कैसे और यदि नहीं तो क्यों और कैसे?

हो सकती हैं क्योंकि कलियुग में भी जो आत्मायें परमधाम से नई आती हैं, वे उस समय सम्पूर्ण पवित्र होती हैं, फिर जन्म लेने के बाद उनमें देहभान और देहाभिमान की खाद पड़ती है अर्थात् पवित्र की डिग्री कम होती जाती है।

''सभी आत्मायें नम्बरवार जीवनमुक्ति में आते हैं। ऐसे नहीं कि जो सतयुग में नहीं आते हैं, वे जीवनमुक्त नहीं कहला सकते। पहले-पहले जो भी आत्मा आती है, वह जीवनमुक्ति में हैं। ... बाप समझाते हैं - मैं आकर सभी बच्चों को मुक्ति-जीवनमुक्ति दोनों ही देता हूँ। पहले-पहले जो भी आयेंगे, जरूर सुख में आयेंगे, पीछे दुख में आते हैं।''

सा.बाबा 20.04.12 रिवा.

''एक जन्म वाले को भी पहले सुख का वर्सा देते हैं, फिर दुख में आता है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा में उनका इतना ही पार्ट है। ... हर आत्मा को मुक्तिधाम से हमेशा पहले जीवनमुक्ति में जाना होता है, फिर जीवनबन्ध अर्थात् दुख में आयेंगे। ... हर आत्मा अपना सुख-दुख का पार्ट बजाये पहले मुक्ति में जायेंगे, फिर जीवनमुक्ति में आयेंगे।''

सा.बाबा 20.04.12 रिवा.

Q. क्या सभी बालकों को पवित्र कहा जायेगा ? यदि कहा जायेगा तो क्यों और नहीं तो कैसे ?

नहीं। वास्तव में सभी बालको को ब्रह्मचारी कह सकते हैं परन्तु पवित्र नहीं क्योंकि जन्म और पुनर्जन्म लेते उनमें अपवित्रता अर्थात् देहाभिमान तो आ ही जाता है, आत्रमा में विकारों की प्रवेशता होती ही है परन्तु अंग छोटे होने के कारण मस्तिष्क का विकास न होने के कारण, ज्ञान कम होने के कारण उनको काम-विकार का ज्ञान नहीं होता है। इसलिए ही बाबा ने कहा है कि बालक तो महात्मा है और महात्मा से भी महान है क्योंकि उसको विकारों का ज्ञान ही नहीं, जब कि महात्मा को विकारों का ज्ञान और अनुभव होता है। बाद में जब वे सन्यास करते हैं, तब विकारों को छोड़ते हैं परन्तु बाद में भी उसकी आकर्षण होती रहती है, जिसके लिए पुरुषार्थ करते हैं और बाद में मुक्त होते हैं।

Q. योग साधना के लिए ब्रह्मचर्य आवश्यक क्यों ?

ब्रह्मचर्य योग साधना के लिए आधार शिला है, बिना ब्रह्मचर्य की पालना के कोई योगी नहीं हो सकता है। बाबा ने कहा है जो ब्रह्मचर्य का पालन नहीं करते, वे ब्राह्मण नहीं हैं, वे शूद्र हैं और शूद्र योगी कैसे हो सकते हैं।

योग की साधना के लिए मन-बुद्धि की एकाग्रता अति आवश्यक है। मन-बुद्धि की एकाग्रता के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अति आवश्यक है।

इस संगमयुगी योगी जीवन में ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ अनुभव होता है, इसलिए मुक्ति-जीवनमुक्ति का परम-सुख अनुभव करने के लिए ब्रह्मचर्य की अति आवश्यकता है क्योंकि पुरुषोत्तम संगमयुग ही योग की साधना का समय है।

''आत्मिक शक्ति के ह्रास और आत्मिक शक्ति के विकास के लिए योग अति आवश्यक है और योगी बनने के लिए ब्रह्मचर्य अति आवश्यक है।''

सा.बाबा 8.12.05 रिवा.

पवित्रता परमात्मा की श्रीमत है और पवित्रता की धारणा के लिए परमात्मा की श्रीमत पर चलना अति आवश्यक है। जो परमात्मा की श्रीमत पर चलता है, उसको परमात्मा की दुआयें स्वत: मिलती हैं।

ब्रह्मचर्य दैवी जीवन का मूल गुण है, इसलिए गायन है कि देवताओं ने ब्रह्मचर्य के बल पर मृत्यु को जीता है।

बाबा ने ब्रह्मचर्य की धारणा के लिए श्रीमत दी है और उसके महत्व को बताया है, वह सब हमारी बुद्धि में होगा तो ब्रह्मचर्य की धारणा सहज होगी।

''नम्बर वन है काम, उनको ही पतित कहा जाता है। क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे। ... सतोप्रधान को पुण्यात्मा और तमोप्रधान को पापात्मा कहा जाता है। विकार में जाना पाप है। बाप कहते हैं अब पवित्र बनो।'' सा.बाबा 7.5.05 रिवा.

''पवित्रता आत्मा की सुख-शान्ति का मुख्य आधार है। पवित्र आत्मा को कब दुख-अशान्ति हो नहीं सकती। मुख्य बात है पवित्रता की। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है- इस पर जीत पहनो। इस पर जीत पाने से ही तुम पवित्र बनेंगे। ... जब आत्मा सम्पूर्ण बन जायेगी तो फिर यह पतित शरीर नहीं रहेगा। फिर जाकर पावन शरीर लेंगे।''

सा.बाबा 11.10.04 रिवा.

''मूल बात है पतितों को पावन बनाने की। वैसे दुनिया में पावन तो बहुत होते हैं। सन्यासी भी पवित्र रहते हैं। ... वे कोई दुनिया को पवित्रता की मदद नहीं दे सकते हैं। मदद तब हो जब श्रीमत पर पावन बनें और दुनिया को पावन बनायें।... शिवबाबा की याद बिगर हम सम्पूर्ण पावन बन नहीं सकते।'' सा.बाबा 16.9.04 रिवा.

Q. सम्पूर्ण पवित्रता क्या है ? क्या ब्रह्मचर्य के पालन करने वाले को पवित्र कहेंगे ? यदि हाँ तो क्यों और यदि नहीं तो क्यों ? क्या देवताओं को सम्पूर्ण पावन कहेंगे ? यदि देवतायें सम्पूर्ण पावन हैं तो कब तक और कहाँ तक ? क्या सम्पूर्ण निर्विकारी और सम्पूर्ण पवित्र में कोई अन्तर है ? सतयुग में जो आत्मा दूसरा जन्म लेती है, उसको सम्पूर्ण पवित्र कहेंगे ? निर्विकारी और सम्पूर्ण निर्विकारी में कोई अन्तर है ?

अपवित्रता आत्मा में सतयुग से ही आना आरम्भ हो जाती है, जबकि ब्रह्मचर्य का खण्डन अर्थात् विकारीपन द्वापर से आरम्भ होता है, इसलिए ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले सभी को सम्पूर्ण पवित्र नहीं कह सकते हैं। देवताओं में भी जिस आत्मा का पहला जन्म होता है तो उसके जन्म लेने के समय पर वह सम्पूर्ण पवित्र होती है, उसके बाद पवित्रता की कमी होती जाती है। इसलिए बाबा ने कहा है सम्पूर्ण पवित्र श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, श्री नारायण को नहीं।

''स्टूडेण्ट लाइफ इज़ दि बेस्ट कहा जाता है। यह है गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ। जितना पढ़ेंगे, पढ़ायेंगे और मैनर्स सुधारेंगे, उतना दि बेस्ट बनेंगे। अभी तुम्हारी रिटर्न जर्नी है। जैसे सतयुग से उतरते-उतरते आइरन एज तक पहुँचे हो, ऐसे अब तुमको आइरन एज से ऊपर चढ़ते गोल्डन एज तक जाना है। जब तुम सिल्वर एज तक पहुँचेंगे तो फिर इन कर्मेन्द्रियों की चंचलता खत्म हो जायेगी।''

सा.बाबा 25.08.11 रिवा.

''मूल बात है पवित्रता की। जितना-जितना याद में जास्ती रहेंगे, तो इन्द्रियाँ भी शान्त हो जायेंगी। जब तक योग की पूरी सिद्धि नहीं होती है, तब तक इन्द्रियाँ शान्त नहीं होती हैं। ... हर एक अपनी आपही जाँच करे कि काम विकार मुझे धोखा तो नहीं देता है ? अगर मैं पक्का योगी हूँ तो कर्मेन्द्रियों की कोई चंचलता नहीं होनी चाहिए।''

सा.बाबा 27.08.11 रिवा.

Q. पवित्रता में ब्रह्मचर्य समाया है या ब्रह्मचर्य में पवित्रता समाई है ?

पवित्रता में ब्रह्मचर्य समाया है, परन्तु पवित्रता की आधारशिला ब्रह्मचर्य ब्रत है। ब्रह्मचर्य की धारणा वाला ही पवित्रता का यथार्थ सुख अनुभव करता है अर्थात् जीवन में सम्पूर्णता और सम्पन्नता का अनुभव करता है।

Q. पवित्रता की यथार्थ अनुभूति देवता स्वरूप में होगी या फरिश्ता स्वरूप में होगी या अभी ब्रह्मण स्वरूप में होगी ?

वास्तव में यह ब्राह्मण स्वरूप ही पवित्रता की यथार्थ अनुभूति का समय है। जब आत्मा में चार कलायें कम हो जायेंगी और हम त्रेता के अन्त के जन्म में होंगे, तब भी देवता ही कहलायेंगे। इसलिए ही बाबा कहते हैं - तुम सम्पूर्ण और सम्पन्न होकर जीवनमुक्त होकर इस जीवन का आनन्द लो।

विविध ईश्वरीय महावाक्य

''आपको स्व-धर्म, स्व-देश, स्व का पिता और स्व स्वरूप, स्व कर्म सबकी नॉलेज मिली है तो नॉलेज की शक्ति से मुश्किल अति सहज हो गया। ... सारे विश्व के आगे चेलेन्ज से कह सकते हो कि पवित्रता तो हमारा स्व-स्वरूप है।''

अ.बापदादा 22.03.86

''आप सभी पवित्रता को धारण करना कितना सहज समझते हो क्योंकि बापदादा द्वारा नॉलेज मिली और नॉलेज की शक्ति से जान लिया कि मुझ आत्मा का अनादि और आदि स्वरूप है ही पवित्र।... वास्तविक को अपनाना सहज हो गया ना।''

अ.बापदादा 22.03.86

''बाप आकर विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाते हैं परन्तु विषय सागर, क्षीर सागर कोई है नहीं। यह पतित और पावन का गायन है। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पानी है। यह तो सन्यासी भी समझते हैं, इसलिए घरबार छोड़ देते हैं। उनका निवृत्ति मार्ग का पार्ट भी ड्रामा में नूँध है। ... सबको पुनर्जन्म लेते-लेते तमोप्रधान बनना ही है।''

सा.बाबा 13.03.12 रिवा.

''सब आपके गुण गायेंगे कि ये प्रवृत्ति में रहते भी निर्विघ्न पवित्रता के बल से आगे बढ़ रहे हैं। एक दिन आयेगा, जो आप सबके आगे ये महात्मायें भी झुकेंगे, लेकिन अपना वायदा याद रखना अर्थात् लगाव मुक्त रहना। ... अगर आपस में कमजोर होते रहेंगे तो महात्मायें कैसे आपके चरणों में आयेंगे। जितना-जितना पवित्रता के पिलर को पक्का करेंगे, उतना-उतना ये पवित्रता का पिलर लाइट-हाउस का काम करेगा।''

अ.बापदादा 16.11.95

''पतित-पावन बाप को बुलाते हैं। पतित कामी को कहा जाता है। ... मनुष्य की सत्यानाश यह काम विकार ही करता है। सतयुग में कोई भूत होता नहीं है। वहाँ रावण ही नहीं होता है। ... संगमयुग पर ही रामराज्य और रावण राज्य का पता पड़ता है।''

सा.बाबा 6.03.12 रिवा.

''बापदादा तो सभी को देखते हैं कि कैसे सोते हैं। एक सेकेण्ड में बापदादा सारे विश्व का चक्कर लगाते हैं और टी.वी. से भी देखते हैं कि कैसे सो रहे हैं। ... जब आदि अर्थात् अमृतवेला और अन्त अर्थात् सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वत: ही ठीक होगा।.. अमृतवेले उठकर बैठते हैं परन्तु आधा समय निद्रालोक में और आधा समय योग में होते हैं।''

अ.बापदादा 16.11.95

''शास्त्र आदि पढ़ते तो तमोप्रधान बन गये हो, अभी कलियुग का अन्त आ गया है। ... पतित से पावन बनाने वाला एक बेहद का बाप ही है, तो जरूर कोई पतित बनाने वाले भी होंगे। रावण राज्य में सभी पतित हैं। पतित बनाने वाला है रावण अर्थात् 5 विकार। ... बाप कहते हैं - मैं तुमको वापस घर ले चलने आया हूँ, अब तुम पावन बनो क्योंकि पतित कोई वहाँ चल नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 3.03.12 रिवा.

''शिवबाबा है एवरप्योर, वह ब्रह्मा द्वारा पतितों को पावन बनाने की सर्विस करते हैं। ... तुम्हारे मुख से सदैव रतन निकलने चाहिए, पत्थर नहीं। तुम्हारा नाम ही है रूप-बसन्त। बाबा भी रूप-बसन्त है। उनका रूप ज्योतिर्लिंगम दिखाया है परन्तु वह है स्टॉर। पूजा के लिए बड़ा बना दिया है। वह ज्ञान का सागर, पतित-पावन है।''

सा.बाबा 16.02.12 रिवा.

''पवित्र आत्मा कह नहीं सकती - क्या करें, हो गया या हो जाता है, चाहते तो नहीं लेकिन हो जाता, ... क्या ये पवित्र आत्मा बोलती है या कमजोर आत्मा बोलती है ? ... अगर महारथी से भी ग़लती होती है तो उस समय वह महारथी नहीं है, परवश है। ... तो नये साल में व्यर्थ की समाप्ति का नया खाता बनाना है। कारण नहीं लेकिन निवारण स्वरूप बनना है, समस्या नहीं समाधान स्वरूप बनना है।''

अ.बापदादा 7.11.95

''भारत में माता-पिता कहते हैं। तो निराकार बाप ही आकर समझाते हैं कि मैं कैसे मदर को बनाता हूँ। मैं इनमें प्रवेश कर इनको एडॉप्ट करता हूँ, फिर इन द्वारा तुमको एडॉप्ट करता हूँ। ... परमात्मा को पतित-पावन कहते हैं तो सिद्ध होता है कि बाप को पतित सृष्टि में ही आना होता है और पतितों को ही पावन बनाना होता है।''

सा.बाबा 15.02.12 रिवा.

''प्रलय कब होती नहीं है। जब सृष्टि पतित हो जाती है तब मैं आता हूँ पतितों को पावन बनाने। तुम अभी पावन बन रहे हो। ... ऊंच ते ऊंच बाबा हमको पूजनीय बनाते हैं, फिर आधा कल्प के बाद हम पुजारी बन जाते हैं। अभी हम पूज्य नहीं हैं, पूज्य बन रहे हैं। ... अभी बाप डॉयरेक्ट बच्चों से बात करते हैं। बाहर वालों के सामने बाबा को नहीं बोलना है।''

सा.बाबा 15.02.12 रिवा.

''बाप इस तन द्वारा समझाते हैं कि यह सब जो भी मनुष्यात्मायें हैं, इन सबको पावन बनाये वापस घर ले जाना ही है। ... बाप कहते हैं - बच्चे, इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनो तो पवित्र दुनिया की स्थापना में मदद होगी।''

सा.बाबा 3.02.12 रिवा.

''फर्स्ट चेलेन्ज है प्योरिटी की और फर्स्ट वायदा है और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे ... मेरा तो

एक, दूसरा न कोई। तो यह फर्स्ट वायदा और फर्स्ट चैलेन्ज एक-दूसरे से सम्बन्ध रखते हैं। ... यही असम्भव को सम्भव करने वाली एक बात है। तो क्या फर्स्ट चेलेन्ज करने की प्वाइन्ट मज़बूत है?''

अ.बापदादा 28.04.74

''प्योरिटी की लाइट, सतोप्रधान दिव्य-दृष्टि की लाइट और मस्तक मणि की लाइट - यह तीनों ही सम्पूर्ण बनने की निशानी है। ये तीनों लाइट्स जगमगाती हुई दिखाई दें तब ही सबको साक्षात्कार करा सकेंगे। ... यह प्योरिटी सबसे श्रेष्ठ और सहज पब्लिसिटी है और यही अन्तिम पब्लिसिटी का रूप है। ... वैसे ही आप सबके मस्तक और नयन ऐसा विचित्र अनुभव करने की फिल्म दिखायें।''

अ.बापदादा 24.04.74

''बाप की याद से ही विकर्म विनाश होंगे क्योंकि जब से विकारी बने हैं, तब से पाप करते ही आये हैं। जन्म-जन्मान्तर के पापों का बोझा सिर पर है। तमोप्रधान बनने में तुमको आधा कल्प लगा है। (आधा कल्प आत्मा संगम पर जमा किया हुआ उपभोग करती है, फिर द्वापर से बोझा चढ़ना आरम्भ होता है) ... अब तमोप्रधान से सतोप्रधान कैसे बनें, वह शिक्षा बाप ही देते हैं।''

सा.बाबा 14.12.11 रिवा.

''जब तक आत्मा यहाँ इस शरीर में है, तब तक कुछ न कुछ काँटेपने का अंश रहता है। पूरा फूल बन गये, फिर तुम यहाँ रह नहीं सकेंगे। ... जो काँटे से फूल बनते और बहुतों को काँटों से फूल बनाते, उनको ही खुशबूदार फूल कहेंगे। वे ही सतयुग में ऊंच पद पायेंगे।''

सा.बाबा 16.12.11 रिवा.

''मीरा को श्रीकृष्ण का साक्षात्कार हुआ, उसको कृष्ण से प्यार था। मीरा पवित्र रही, इसिए उसकी महिमा है। भक्ति मार्ग में अल्काल क्षणभंगुर की भावना पूरी हो जाती है। ये सब राज़ बाप ही बताते हैं। ... साक्षात्कार करना चाहते हैं तो ड्रामा अनुसार उनकी वह मनोकामना पूरी हो जाती है। भक्ति मार्ग की भी ड्रामा में नूँध है।''

सा.बाबा 7.12.11 रिवा.

''अभी तुम पूजा लायक नहीं हो। तुम अभी काँटे से फूल बन रहे हो। ... शिवबाबा पर काँटे ही बलि चढ़ते हैं, जिनको बाबा काँटों से फूल बनाते हैं, परन्तु फूलों में वैरायटी बन जाती है। ... कोई तो तख्तनशीन बनेंगे, कोई क्या बनेंगे। सब नम्बरवार बनेंगे। बाप तुमको ज्ञान देकर ऐसे कर्म सिखाते हैं, जो तुम सतयुग के देवी-देवता बन जाते हो।''

सा.बाबा 10.11.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मेरा बनकर श्रीमत पर नहीं चलेंगे तो बहुत सज़ायें खानी पड़ेंगी। ... कई बच्चे ब्लड से प्रतिज्ञा लिखकर देते हैं, फिर भी काम विकार से हार जाते हैं। मनुष्य तो यह भी

नहीं समझते कि पतित किसको कहा जाता है। बाप समझाते हैं - जो विकार में जाते हैं, वे पतित हैं। समझते हैं विकार छोड़ना इम्पॉसिबुल है। बोलो - देवी-देवतायें तो सम्पूर्ण निर्विकारी थे।''

सा.बाबा 2.11.11 रिवा.

''अभी तुम बच्चे समझते हो - बरोबर मायाजीत बनने से हम जगतजीत बनेंगे। रावण को जीत रामराज्य पायेंगे, वहाँ ये विकार हो नहीं सकते। ... जो कहे विकार छोड़ना इम्पॉसिबुल है, तो समझना चाहिए कि वह हमारे आदि सनातन देवी-देवता धर्म का नहीं है।''

सा.बाबा 2.11.11 रिवा.

''बहुत लोग कहते हैं - विकार बिना दुनिया कैसे चलेगी। अरे देवताओं को सम्पूर्ण निर्विकारी कहा जाता है। किसको भी यह पता नहीं कि वहाँ विकार होता ही नहीं है। कल्प पहले वाले झट इन बातों को समझ जाते हैं। गायन भी है - भगवानुवाच, काम महाशत्रु है। परन्तु भगवान ने कब कहा, यह किसको भी पता नहीं है।''

सा.बाबा 1.11.11 रिवा.

''अगर कोई विकार में जाता होगा तो फिर बहुत तूफान आयेंगे। पवित्रता है मुख्य। ... बाप को याद करते रहेंगे तो कोई भी समय शरीर छूट जायेगा तो स्वर्ग चलने लायक बन जायेंगे। अन्त मति सो गति हो जायेगी। ... समझो कोई शरीर छोड़ते हैं, ज्ञान के संस्कार ले जाते हैं तो छोटेपन से ही संस्कार अच्छे होंगे। जैसे संस्कार लेकर जाते हैं, उस अनुसार जन्म होता है।''

सा.बाबा 28.10.11 रिवा.

''भक्ति करते हैं भगवान के पास जाने के लिए। समझते हैं भक्ति करने से भगवान के पास पहुँच जायेंगे, परन्तु कोई जाते नहीं हैं। ... भक्ति से कोई पावन नहीं बनते हैं। भक्ति करते-करते तो तुम और ही पतित बन गये हो, तुम्हारे पंख टूट गये, जिससे तुम उड़ नहीं सकते हो। ... आत्मा की ज्योति अभी बुझ गई है, फिर मैं आकर इसमें ज्ञान-घृत भरता हूँ।''

सा.बाबा 24.10.11 रिवा.

''पारलौकिक बाप को फॉलो करने से तुम पवित्र बनेंगे और स्वर्ग के मालिक बनेंगे।... बाप गॉरण्टी करते हैं, तुम भी गारण्टी ले सकते हो।... सारे बात ही है प्योरिटी पर। तुम बच्चों को दिन प्रतिदिन बहुत खुशी रहनी चाहिए। तुम जानते हो - हमको बाप स्वर्ग का वर्सा दे रहे हैं।''

सा.बाबा 26.09.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - यह एक-एक रतन लाखों रुपयों का है। बाप से तुमको कितने ज्ञान रत्न मिलते हैं। ... लौकिक बाप वर्सा देते हैं पतित बनने का, पारलौकिक बाप वर्सा देते हैं पावन बनने का। ... विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है। तुम्हारी मिशन है पतितों को पावन बनाने का रास्ता बताने वाली। पारलौकिक बाप कहते हैं - बच्चे पावन बनो, विनाश सामने

खड़ा है।''

सा.बाबा 26.09.11 रिवा.

''सबसे बड़ा विकर्म है काम विकार का, उससे ही पतित बनते हैं और उस पर ही जास्ती झगड़ा होता है। ... यह पुरुषोत्तम संगम युग है पुरुषोत्तम बनने का, जबकि तुम नर्कवासी मनुष्य से स्वर्गवासी देवता बनते हो। बाप का यह सन्देश सबको देना है।''

सा.बाबा 14.09.11 रिवा.

''कहाँ भी जाओ, बाप का फरमान है - अब पतित नहीं बनना है। पवित्र बनने से ही तुम कृष्णपुरी के मालिक बनेंगे। शिवबाबा को याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और तुम विश्व के मालिक बन जायेंगे। ... यह भी व्यापार है, कोई विरला व्यापारी यह व्यापार करे अर्थात् बैकुण्ठ की बादशाही लेवे। बाप को याद करना है और श्रीमत पर चलना है।''

सा.बाबा 20.09.11 रिवा.

''पवित्रता का बहुत मान है। सन्यासियों की भी पवित्रता के कारण ही मान्यता है। परन्तु वे बाप द्वारा पवित्र नहीं बनते हैं, इसलिए वे स्वर्ग में नहीं जाते। तुम बच्चे जानते हो - अभी हमको निराकार परमपिता परमात्मा पावन बना रहे हैं। पतित-पावन बाप द्वारा ही पावन दुनिया का वर्सा मिलता है। बाप कहते हैं - काम तुम्हारा महा दुश्मन है, इस पर जीत पहनो।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''काम के लिए कहते हैं काला मुँह कर दिया, क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि काला मुँह कर दिया। इन बातों को तुम बच्चे ही जानते हो, दुनिया में और कोई नहीं जानता है। ड्रामा अनुसार जिनको ब्राह्मण बनना है, वे आते जायेंगे।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''पवित्रता का बहुत मान है। सन्यासी पावन हैं, तब तो पतित मनुष्य उनके आगे माथा झुकाते हैं। कन्या पवित्र है तो सब उनके आगे सिर झुकाते हैं, वही कन्या शादी कर जब ससुर घर जाती है तो सबके आगे माथा टेकना पड़ता है।''

सा.बाबा 8.09.11 रिवा.

''ड्रामा प्लैन अनुसार रावण राज्य होने के कारण सभी मनुष्य पतित हैं और पतित-पावन बाप को पुकारते रहते हैं। पतित उनको कहा जाता है, जो विकार में जाते हैं। दुनिया में और भी ऐसे बहुत हैं, जो विकार में नहीं जाते हैं, ब्रह्मचारी रहते हैं परन्तु वे पावन दुनिया का मालिक नहीं बनते क्योंकि उनको पतित-पावन बाप तो पावन नहीं बनाते हैं। इसलिए वे पावन दुनिया में भी नहीं जा सकते।''

सा.बाबा 12.09.11 रिवा.

''वास्तव में जगदम्बा है पुरुषार्थी, फिर वही लक्ष्मी बनती है, वह है प्रॉलब्ध। महिमा जास्ती

किसकी है? जगदम्बा पर देखो कितना मेला लगता है, लक्ष्मी से केवल धन माँगते हैं।... जगदम्बा आदि देवी ही ज्ञान चिता पर बैठ काले से गोरी बनती है। पहले है ज्ञान-ज्ञानेश्वरी, फिर बनती है राज-राजेश्वरी। ... अभी तुम बच्चों के कपाट खुल गये हैं कि काम महाशत्रु है, इस पर जीत पानी है।'' सा.बाबा 5.09.11 रिवा.

''सतयुग-त्रेता में देवी-देवतायें जो पवित्र थे, वे द्वापर से अपवित्र बन जाते हैं। ... सतयुग-त्रेता है वाइसलेस सम्पूर्ण निर्विकारी दुनिया। वहाँ बच्चे भी योगबल से पैदा होते हैं। वहाँ विकार होता ही नहीं है।'' सा.बाबा 7.09.11 रिवा.

''सन्यासी द्वापर में आते हैं, सन्यास धारण कर उत्तम अर्थात् पवित्र बनते हैं, इसलिए पतित मनुष्य जाकर उनको माथा टेकते हैं। पवित्र के आगे अपवित्र माथा टेकते हैं। यह कॉमन बात है। ... बाप सब बातें क्लियर कर समझाते हैं, फिर भी कोटों में कोई, कोई में भी कोई ही समझते हैं। ... जो बाप का बनकर डिससर्विस करते हैं, यज्ञ में विघ्न डालते हैं, उनके लिए ट्रिब्युनल बैठती है।'' सा.बाबा 1.09.11 रिवा.

''यह है मुक्तिधाम की यात्रा। तुम वहाँ के रहवासी हो। अभी तुम वहाँ जा रहे हो। बाप रोज़-रोज़ कहते हैं मुझे याद करो तो विकर्म विनाश होंगे और तुम आगे जाते रहेंगे। तुम घर बैठे यात्रा करते हो, तो यह हुई वण्डरफुल यात्रा।... बाप को कहते हैं - पतित-पावन, वे ही तुम बच्चों को पवित्रता की शिक्षा देते हैं। अभी तुम पवित्र बन रहे हो।''

सा.बाबा 2.05.12 रिवा.

''कोई बच्ची को बचाने के लिए बाबा स्वयंवर भी कराते हैं, जिसको गन्धर्वी विवाह कहते हैं। फिर उसमें कोई फेल भी हो जाते हैं। ... पवित्र रह फिर नॉलेज भी लेनी है। नॉलेज धारण कर औरों को भी आप समान बनाये, तब ऊंच पद पा सके। इस ज्ञान यज्ञ में विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। यह सब होगा, यह सब ड्रामा में नूँध है। गन्धर्वी विवाह कर पवित्र रहने के लिए बहुत हिम्मत चाहिए।'' सा.बाबा 26.04.12 रिवा.

''बाप है सर्व का कल्याणकारी, नर्क को स्वर्ग बनाने वाला है। जितना तुम श्रीमत पर चलेंगे, सबसे ममत्व मिटता जायेगा। हर हालत में बाप से राय लेनी है। तुमको सन्यासियों मिसल घरबार का सन्यास नहीं करना है। ... वे घरबार का सन्यास करते हैं तो बड़ा नुकसान कर देते हैं, फिर पवित्र रहते हैं तो कुछ मदद करते हैं। बाकी वे गुरु बनकर किसकी गति-सद्गति नहीं कर सकते।'' सा.बाबा 27.04.12 रिवा.

''पतित अक्षर विकार पर ही कहा जाता है। सतयुग में वाइसलेस वर्ल्ड थी, यह है विशश वर्ल्ड। सभी पतित विकारी हैं। कृष्ण को 16108 रानियाँ दे दी हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है।...

बाप समझाते हैं - बच्चे, तुमको अन्धों की लाठी बनना है। जो खुद ही सज्जे नहीं हैं, वे फिर औरों की लाठी क्या बनेंगे! ... हर एक की चलन से मालूम पड़ जाता है कि यह क्या पद पायेंगे।''

सा.बाबा 23.04.12 रिवा.

''लाख गुणा बोझ चढ़ा हुआ होने से चढ़ती कला में कदम आगे कैसे बढ़ा सकते हो और निशाने के समीप कैसे आ सकते हो ? ... बापदादा के आगे झूठ बोलना व किसी प्रकार से बात को चला देना, तो मालूम है कि इसका कितना पाप होता है ? ... बाप के रूप में भोलानाथ है, साथ-साथ हिसाब-किताब चुक्तू कराने के समय फिर लॉफुल भी तो है।''

अ.बापदादा 4.07.74

''सब हिन्दू हैं देवी-देवता धर्म वाले, परन्तु अपने को देवता कह नहीं सकते क्योंकि पवित्र नहीं है। पवित्रता के बिगर अपने को देवता कहलाना बेकायदे हो जाता है। ... ये सब बातें और धर्म वाले नहीं समझेंगे। देवी-देवता धर्मवाले ही यहाँ आयेंगे, बाकी तो बाद में आते रहेंगे। आगे चलकर बहुत वृद्धि होगी।... तुम पुरुषार्थ करते हो सूर्यवंशी राजधानी में आने का। उसमें भी मुख्य आठ हैं।''

सा.बाबा 18.04.12 रिवा.

''बाप आकर 21 जन्मों के लिए नगन होने से बचाते हैं। गायन भी है ना कि द्रोपदी ने पुकारा था कि दु:शासन हमको नगन करते हैं। ... तुमको सहन करना है, परन्तु पतित नहीं बनना है। पवित्र होने बिगर तुम पवित्र दुनिया के मालिक बन नहीं सकती। कल्प-कल्प तुम मातायें ही शिव शक्तियाँ बनी हो। ... यह है आसुरी रावण राज्य, सतयुग-त्रेता है रामराज्य, ईश्वरीय राज्य।''

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

''विनाश सामने खड़ा है। पहले खून की नदियाँ बहेंगी, फिर दूध की नदियाँ बहेंगी। बाप तुमको विषय सागर से निकाल क्षीर सागर में ले जाते हैं। ... बाप कहते हैं - तुम इस एक जन्म पवित्र रह, पवित्रता की मदद करो। तुमको ज्ञान-योग से काम विकार पर जीत पानी है। ... ड्रामा अनुसार सबको गिरना ही है। सारे कल्प तुम पुनर्जन्म लेते सीढ़ी नीचे ही उतरते आये हो, अभी बाप की श्रीमत पर चढ़ना है।''

सा.बाबा 12.04.12 रिवा.

''रचता भाग जाये तो रचना का क्या हाल होगा परन्तु यहाँ सन्यासियों का यह पार्ट था, उस समय पवित्रता की दरकार थी। यह सारा खेल बना हुआ है। अभी सारी राजधानी स्थापन हो रही है। ... संगमयुग मशहूर है। अभी यहाँ तुम्हारी सर्व मनोकामनायें पूर्ण होती है। ... बाबा समझाते हैं - तुम ईश्वरीय सन्तान में बड़ी रॉयलिटी और सयानापन चाहिए। बहुत प्यार से किसको बाप की पहचान देनी है।''

सा.बाबा 11.04.12 रिवा.

''ग्रहचारी बैठती है तो साहूकार से गरीब बन पड़ते हैं। कोई कारण तो होता है ना। बहुतों को बाबा समझाते भी रहते हैं कि बच्चे नाम-रूप में कभी नहीं फँसना। ... माया ऐसी प्रबल है, जो माता, माता के नाम-रूप में, कन्या, कन्या के नाम-रूप में फँस पड़ती है।... बाप बच्चों को सावधान करते हैं कि बच्चे, माया के धोखे से बचते रहना।''

सा.बाबा 29.08.11 रिवा.

''महाभारी महाभारत लड़ाई लगी थी तो द्रोपदी ने पुकारा था कि बाबा हमको बचाओ, यह दुःशासन हमको नंगन करते हैं। इस विकार के कारण ही अबलाओं पर अत्याचार होते हैं। ... ये सब विनाश को पाने ही हैं। इस समय है आसुरी, रावण राज्य, फिर होगा ईश्वरीय राज्य। अभी तुम इस सारे चक्र को जान गये हो कि हम कैसे 84 जन्म लेते हैं।''

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

''हर एक चित्र के ऊपर लिखो - पतित-पावन गीता ज्ञान दाता शिव भगवानुवाच। तो कृष्ण का नाम आपही उड़ जायेगा। भगवान कहते हैं - काम महाशत्रु है। ... बाप समझाते हैं - बच्चे, हमारे कुल को कलंक नहीं लगाना। विकार में नहीं जाना, कोई खराब काम नहीं करना। यह बाबा भी कहते हैं - बच्चे, विकार में नहीं जाना। पवित्र बनने बिगर तुम ऊंच पद पा नहीं सकेंगे।''

सा.बाबा 22.08.11 रिवा.

''विनाश के भी आसार देखने में आ रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। विनाश जरूर होना है। सतयुग में बहुत थोड़े श्रेष्ठाचारी मनुष्य होते हैं। श्रेष्ठाचारी बनने में मेहनत लगती है। ... बड़े ते बड़ी चोट है काम विकार की, इसलिए काम महाशत्रु कहा जाता है। यह काम ही पतित बनाता है। झगड़ा भी विकार पर ही होता है। इसमें हिम्मत बहुत चाहिए।''

सा.बाबा 20.08.11 रिवा.

''विनाश में सबसे अधिक काम यह अर्थक्वेक करेगी। विनाश होने से पहले बाप से पूरा वर्सा ले लेना है, उसके लिए बाप को बहुत प्यार से याद करना है। ... सबको कहो - सर्व का सद्गति दाता एक बाप है, वह कहते हैं सिर्फ मुझे याद करो तो आत्मा की कट उतर जायेगी और आत्मा पावन बन जायेगी। यह पैग़ाम सबको देते रहो।''

सा.बाबा 13.08.11 रिवा.

''सतयुग में मीठी नदियों के किनारे तुम्हारे महल होंगे, मनुष्य बहुत थोड़े होंगे, प्रकृति दासी होगी। वहाँ फल-फूल बहुत अच्छे मिलते हैं। ... बाप ग़रीब निवाज़ है। जो यहाँ आयेंगे, उनको जरूर साहूकार बनायेंगे। तुम जानते हो पावन से पतित बनने में 5 हजार वर्ष लगते हैं और पतित से पावन फट से बाप बना देते हैं। एक सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है।''

सा.बाबा 16.08.11 रिवा.

''कलियुग में सबकी तक़दीर सोई हुई है, सतयुग में सबकी तक़दीर जगी हुई रहती है। सोई हुई तक़दीर को जगाने वाला और मत देने वाला अथवा तक़दीर बनाने वाला एक ही बाप है। ... तुम बच्चे जानते हो - कल्प-कल्प हमारी तक़दीर जगती है और फिर सो जाती है, फिर बाप आकर जगाते हैं। पावन बनते हैं तो तक़दीर जगती है।''

सा.बाबा 6.08.11 रिवा.

''अभी तुम काल पर जीत पाते हो। बाप को कालों का काल महाकाल भी कहा जाता है। काल न आत्मा को और न शरीर को खा सकता है। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा लेकर अपना पार्ट बजाती है। ... मूल बात है ही काम विकार की। तुम हो राजऋषि। तुमने बाप से प्रतिज्ञा की है कि हम काम विकार में कभी नहीं जायेंगे।''

सा.बाबा 6.08.11 रिवा.

''बाप गारण्टी करते हैं - मुझे याद करते रहो तो तुम्हारे आधाकल्प के पाप जलकर भस्म हो जायेंगे। सोना आग में डालने से जरूर सच्चा सोना बन ही जायेगा।... अभी तुमने बाप द्वारा रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जाना है। इन बातों का सुमिरण करते रहेंगे तो तुम बहुत खुशी में रहेंगे।''

सा.बाबा 2.08.11 रिवा.

''अभी तुम बच्चों को अच्छी रीति पुरुषार्थ करना है, दैवीगुण धारण करने हैं। दैवीगुण किसको कहा जाता है, वह भी बाप ने समझाया है। सम्पूर्ण निर्विकारी जरूर बनना है। यह है मुख्य पहला दैवीगुण। ... बच्चों को बहुत बहादुर होना चाहिए, पान का बीड़ा उठाना है कि हम इस भारत को स्वर्गवासी बनाकर ही छोड़ेंगे। तुम्हारा धर्म ही है नर्कवासी को स्वर्गवासी, भ्रष्टाचारी को श्रेष्ठाचारी बनाना।''

सा.बाबा 4.08.11 रिवा.

''यहाँ यह है इन्द्र सभा, इन्द्र शिवबाबा है, जो ज्ञान वर्षा बरसाते हैं। इस सभा में कोई पतित आ नहीं सकता। कोई ब्राह्मणी किसी विकार में जाने वाले को नहीं ला सकती है। अगर ले आती है तो दोनों रेस्पासिबुल हो जाते हैं। ... दोनों पर दाग़ लग जाता है। फिर बहुत भारी सज़ा के भागी बन जाते हैं। ब्राह्मणियों पर बहुत रेस्पॉन्सबिलिटी है।''

सा.बाबा 30.07.11 रिवा.

''पवित्रता के श्रृंगार की अनुभूति चेहरे से, चलन से औरों को हो। दृष्टि में, मुख में, हाथों में, पांवो में सदा पवित्रता का श्रृंगार प्रत्यक्ष हो। ... जैसे कर्मों की गति गहन है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी बड़ी गुह्य है। पवित्रता ही फाउण्डेशन है।''

अ.बापदादा 17.10.87

''दशायें भी होती हैं। बृहस्पति की दशा सबसे श्रेष्ठ मानी जाती है, राहू का ग्रहण कहा जाता है। अभी तुम्हारे ऊपर है बृहस्पति की दशा। ... भारत में ही पारसबुद्धि देवी-देवता थे, इस समय सब पत्थरबुद्धि पतित बन गये हैं। पतित कैसे बनते हैं, यह भी बाप ने समझाया है। द्वापर से जब काम चिता पर बैठते हैं तो पतित काले बन जाते हैं।''

सा.बाबा 23.07.11 रिवा.

''अभी तुम तो सच्चे-सच्चे फॉलोवर्स हो। शिवबाबा कहते हैं - मैं आया हूँ तुम सबको वापस घर जाने के लिए। तुम मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जायेंगे, तुम पावन बन जायेंगे। पावन बनने बिगर तो फॉलो कर नहीं सकेंगे। ... बाप कहते हैं - मुझे फॉलो करो तो तुमको साथ ले जाऊंगा।''

सा.बाबा 25.07.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - अभी तुमको पावन बनना है, मेरे को फॉलो करना है, तब ही तुम साथ चल सकेंगे। ... कल्प-कल्प मैं आता हूँ, आकर तुमको साथ ले जाता हूँ। फिर तुम सतयुग में आते हो तो बहुत सुखी रहते हो। ... ये लक्ष्मी-नारायण स्वर्ग के मालिक थे, इनको इतना सुख देने वाला कौन? हेविनली गॉड फादर ही कहेंगे। यादगार में तुम हमारी जयन्ति भी मनाते हो।''

सा.बाबा 25.07.11 रिवा.

''इस समय जो भी हैं, सबकी तकदीर बिगड़ी हुई है, सिवाए तुम ब्राह्मणों के। तुम्हारी अब बिगडी से सुधर रही है। बाप को कहा ही जाता है तकदीर बनाने वाला। ... रावण राज्य में लड़ाई ही चलती है क्योंकि विकारों की प्रवेशता है। काम विकार पर भी कितना लड़ाई झगड़ा होता है। ... काम महाशत्रु कहा जाता है, क्रोध वाले को क्रोधी, लोभ वाले को लोभी कहेंगे। कामी के बहुत नाम रखे हुए हैं।''

सा.बाबा 21.07.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - अगर मेरे से वर्सा लेना है तो पावन बनो। द्वापर से लेकर तुम पतित बनते, तमोप्रधान पतित बन पड़े हो, तब तो गाते हैं - पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ।... विकारी बनने से ही दुखी हुए हो, निर्विकारी होने से सुख ही सुख है। अब बाप कहते हैं - मैं आया हूँ तुम बच्चों को निर्विकारी बनाने।''

सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

''तुम जानते हो - इस समय बाप आकर हम बच्चों को ब्रह्मा द्वारा एडॉप्ट करते हैं। यूँ तो सब आत्मायें शिवबाबा के बच्चे हैं। ... शिवबाबा हमको ब्रह्मा तन से एडॉप्ट कर कहते हैं मैं तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम्हारी आत्मा जो अभी पतित है, वह न मुक्तिधाम में और न जीवनमुक्तिधाम में जा सकती है। सभी आत्मायें एक बाप के बच्चे हैं, सबको बाप की मिल्कियत लेनी है।''

सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

''कृष्ण प्रिन्स था, राज्य लक्ष्मी-नारायण का कहेंगे। कृष्ण प्रिन्स की ही महिमा गाई जाती है - वह है सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण ... अभी तुम फिर से सतयुग का राज्य-भाग्य ले रहे हो। भारतवासी सतयुग में 5 हजार वर्ष पहले विश्व के मालिक थे, वहाँ कोई पार्टीशन आदि नहीं था। ... गाया भी जाता है ब्रह्मा द्वारा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना, सो अब बाप ब्रह्मा द्वारा करा रहे हैं।'' सा.बाबा 13.07.11 रिवा.

''अब बाप कहते हैं - दे दान तो छूटे ग्रहण। कौनसा दान दो ? यह 5 विकार दान में दो तो ग्रहचारी छूट जाये और तुम 16 कला सम्पूर्ण बन जाओ। ... एक ही आश रखनी है कि हम शिवबाबा से अपना स्वर्ग का वर्सा लेवें। किसको भी कभी दुख नहीं देना है। एक-दो पर काम कटारी चलाना, सबसे बड़ा दुख देना है। इसलिए ही सन्यासी लोग स्त्री से अलग हो जाते हैं।''

सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

''बाप ज्ञान-अमृत देते हैं, जो एक-दो को पिलाओ। गाया भी जाता है - अमृत छोड़ विष काहे को खाये। ... 63 जन्म जो तुमने पाप किये हैं, वे याद से ही खलास होंगे। अब निर्विकारी बनना है। भल माया के तूफान आयें, परन्तु तुमको पतित नहीं बनना है। ... जब पावन थे तो निरोगी थे, फिर पतित बनने से रोगी बनते हैं। अब फिर से निरोगी बन रहे हैं। जब निरोगी थे तो आयु भी बड़ी थी।'' सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

''अभी पतित-पावन बाप कहते हैं - बच्चे, पतित नहीं बनो अर्थात् विकार में नहीं जाओ। ... माया आत्मा को दुख देती है, उस माया पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनते हो। मनुष्य तो माया का अर्थ भी नहीं समझते हैं। वे तो धन को ही माया कह देते हैं। ... आधा कल्प से रावणराज्य शुरू होता है, देह अहंकार आने से फिर और सब विकार आ जाते हैं।''

सा.बाबा 30.06.11 रिवा.

''विनाश की ड्रामा में पहले से ही नूँध है, जो जरूर होगा। विनाश की सारी तैयारियाँ हो रही है। अब तुम बच्चों को बाप समझाते हैं - तुम्हारी आत्मा जो तमोप्रधान बनी है, उसको भी यहाँ ही सतोप्रधान बनाना है। ... बच्चों की बूँद-बूँद से तलाव भरता रहता है। बच्चे अपना तन-मन-धन सब इस यज्ञ में सफल करते रहते हैं।'' सा.बाबा 1.7.11 रिवा.

''देह सहित देह के जो भी सम्बन्धी हैं, उनको भूल अपने को आत्मा निश्चय करो और शिवबाबा को याद करो। ... गोरा बनाने वाला एक बाप ही है, जितना याद करेंगे, उतना गोरे स्वर्ग के मालिक बनेंगे। बाप आते ही हैं पतितों को पावन बनाने, बाकी तुम्हारे धन्धे-धोरी आदि से बाबा का कोई सम्बन्ध नहीं है। वह तो तुमको अपने शरीर निर्वाह अर्थ करना ही है।''

सा.बाबा 27.06.11 रिवा.

''परमपिता परमात्मा परमधाम से आते हैं हमको पढ़ाने, राजयोग सिखाने, जो अभी आये हुए हैं। महिमा सारी उस एक की ही है। इनकी महिमा कुछ नहीं है। ... इस गीत से सर्वव्यापी का ज्ञान उड़ जाता है। हर एक आत्मा का अपना-अपना पार्ट है। बाप कहते हैं - बच्चे, देहाभिमान छोड़कर तुम आत्माभिमानी बनो, इस शिक्षा को धारण करो।''

सा.बाबा 8.06.11 रिवा.

''बच्चे समझते हैं - अभी पतित दुनिया का अन्त और पावन दुनिया की आदि हो रही है। यह बात सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो। ... पतित विकारी को कहा जाता है। यह पतित दुनिया विनाश जरूर होनी है। बाप समझाते हैं - तुम जन्म-जन्मान्तर एक-दो को पतित बनाते दुख देते आये हो, इसलिए आदि-मध्य-अन्त दुख पाते हो।''

सा.बाबा 11.06.11 रिवा.

''सन्यासियों का है हद का सन्यास, तुम्हारा यह है बेहद का सन्यास। उन सन्यासियों को भी कितना मान मिलता है। ... यहाँ तुम बैठकर मुरली सुनते हो, योग तो तुम्हारा चलते-फिरते भी रहता ही है। चलते-फिरते बाप की याद में रहना है और बाप की श्रीमत पर चलना है।''

सा.बाबा 01.06.11 रिवा.

''अभी पतित बने हैं तो दुखी है। जब पावन थे तो सुख थे। आत्मा ही कहती है - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ, तो हम दुख से छूट जायें। ... रावण राज्य में सब देहाभिमानी होते हैं। आत्माभिमानी बाप ही अभी आकर बनाते हैं।''

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

''यह सब भारत की ही बात है। भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था, उनके चित्र मन्दिरों में पूजे जाते हैं। ... क्योंकि वे महाराजा-महारानी पवित्र थे। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब पूज्य होते हैं। तुम ही पूज्य, फिर पुजारी बनते हो। बाप को याद करने से ही धारणा होगी। एक बाप के साथ प्रीत न होने से औरों के साथ प्रीत लग जाती है।''

सा.बाबा 12.05.11 रिवा.

''विकार में जाने वाले को पतित कहा जाता है, क्रोधी को पतित नहीं कहेंगे। इस समय हमको बाप से ज्ञानामृत मिलता है। ... यह भारत ही ऊंच ते ऊंच सतोप्रधान था, जो अभी तमोप्रधान बना है, बाप फिर से इसको सतोप्रधान बनाते हैं। यह ज्ञान तुम्हारी बुद्धि में ही है।''

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

''आत्मा को ही श्याम और सुन्दर कहा जाता है। आत्मा पवित्र थी तो सुन्दर थी, फिर काम चिता पर बैठने से काली हो जाती है। अब फिर बाप ज्ञान चिता पर बिठाते हैं, सुन्दर बनाने के

लिए। पतित-पावन बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो आत्मा से खाद निकल जायेगी। ... अभी तुम बाप से ज्ञान रत्नों की झोली भर रहे हो। बाप तो ज्ञान का सागर है, जितना चाहो, उतना लो।''

सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

''काम चिता पर बैठने से श्याम बन जाते हैं, फिर बाप ज्ञान चिता पर बिठाये श्याम से सुन्दर बनाते हैं। ... यह पुरानी दुनिया, पुराना शरीर सब खत्म हो जाने हैं। इसलिए बाप कहते हैं - देह सहित देह के सब सम्बन्ध छोड़कर, अपने को आत्मा निश्चय कर, एक मुझ बाप को याद करो। सबसे बुद्धि का योग तोड़कर एक मेरे साथ जोड़ो। ... इस याद से ही तुम आत्मायें सतोप्रधान सुन्दर बन जायेंगे।''

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

''जो सदैव खुशी में रहते हैं, जिनमें दैवी गुण होते हैं, वे बहुत रमणीक होते हैं। यह राधे-कृष्ण आदि रमणीक हैं ना। उनमें बहुत-बहुत कशिश है। कौनसी कशिश ? पवित्रता की। ... पवित्र आत्मायें अपवित्र आत्माओं को कशिश करती हैं। ... देवताओं में जितनी कशिश है, उतनी तुम्हारे में भी होनी चाहिए। तुम्हारी इस समय की कशिश फिर अविनाशी हो जाती है।''

सा.बाबा 27.04.11 रिवा.

''अभी तुम काम चिता से उतर, ज्ञान चिता पर बैठे हो गोरे बनने के लिए। ... विकारी ब्राह्मण हथियाला बाँधते हैं एक-दो को विकार देने का। तुम निर्विकारी ब्राह्मण काम चिता पर बैठने का हथियाला केन्सिल कर, ज्ञान चिता पर बिठाते हो, पावन बनने के लिए।''

सा.बाबा 29.04.11 रिवा.

''भारतवासी स्वर्ग में थे। फिर 84 जन्म लेते-लेते सीढ़ी तो जरूर नीचे उतरनी पड़ेगी। उससे ऊपर चढ़ने की जगह ही नहीं है। उतरते-उतरते पतित बनना है। यह बात कोई की बुद्धि में नहीं है। ... बाप को आकर पढ़ाना पड़ता है, शूद्र से देवता बनाने के लिए। बाप को ही लिबरेटर-गाइड कहा जाता है।''

सा.बाबा 14.04.11 रिवा.

''भक्ति मार्ग में दान-पुण्य करते भी सीढ़ी नीचे ही उतरनी है। सतयुग में सूर्यवंशी बनें, फिर सीढ़ी उतरनी पड़े। धीरे-धीरे गिरते जाते हैं। भल कोई कितना भी यज्ञ-तप आदि करे, फिर नीचे गिरना ही है। हाँ, उसका अल्पकाल के लिए फल मिल जाता है। अच्छा या बुरा जो भी कर्म करते हैं, उसका एवज़ा जरूर मिलता है।''

सा.बाबा 15.04.11 रिवा.

''बाप पारसबुद्धि बनाते हैं, कुमारियों को दहेज आदि मिलता है तो शादी कर काला मुँह कर देतीं, फिर सबके आगे झुकना पड़ता है। ... अभी रामराज्य स्थापन होता है। परन्तु तुम मेहनत करो, तब तो ऊंच पद पायेंगे। अगर पढ़ेंगे नहीं तो वहाँ जाकर पाई-पैसे की प्रजा बनेंगे।

पढ़ाई से मनुष्य क्या से क्या बन जाता है।''

सा.बाबा 6.04.11 रिवा.

''तुम बच्चे ही 84 के चक्र में आकर पावन से पतित बनते हो, फिर चिल्लाते हो कि बाबा आकर हमको पावन बनाओ। ... बाप आकर ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान की प्रालब्ध आधाकल्प चलती है। आधा कल्प बाद देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, पतित बनना शुरू होता है और भक्ति मार्ग शुरू होता है। ... इसको ही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कहा जाता है।''

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

''जैसे आत्मा कहती है - मेरा शरीर, वैसे शरीर भी कहेगा कि मेरी आत्मा। लेकिन आत्मा जानती है - मैं अविनाशी हूँ, शरीर विनाशी है। आत्मा बिगर शरीर कुछ कर न सके। ... अभी तुम जानते हो - हमारी आत्मा जो सतोप्रधान थी, वह अब तमोप्रधान बनी है। हर चीज़ ऐसे होती है। तमोप्रधान को सतोप्रधान बनाने वाला एक भगवान बाप ही है।''

सा.बाबा 11.04.11 रिवा.

''पतित मनुष्य बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ, आकर सभी को पावन बनाये साथ ले जाओ। ... बाप सहज दवाई देते हैं, पावन बनने की। जितना याद करेंगे, उतना खुशी का पारा चढ़ेगा। और कोई साधू-सन्त आदि इस दवाई को जानते ही नहीं है। ... इतनी छोटी सी आत्मा में कितना पार्ट भरा हुआ है, वह बजाती रहती है। वण्डर है ना।''

सा.बाबा 28.03.11 रिवा.

''माया कहाँ से घुसकर आयेगी। बाप बच्चों को सब सावधानी देते हैं। कोई गफलत नहीं करो। यहाँ पतित से पावन बनने आये हो तो कोई भी पतित काम नहीं करो। न नाम-रूप में फंसना, न देहाभिमान में आना। देही-अभिमानी हो बाप को याद करते रहो और श्रीमत पर चलते रहो। देखो, बाबा कितना निरहंकारी है, कब किस पर गुस्सा नहीं करते।''

सा.बाबा 27.03.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं कल्प पहले तुमको सद्गति दी थी, फिर तुमको इस दुर्गति में किसने पहुँचाया ? ... तुम जो 100 प्रतिशत पवित्र, सॉलवेन्ट, एवर-हेल्दी, एवर-वेल्दी थे। वहाँ कोई रोग-शोक, दुख की बात नहीं थी। ड्रामा अनुसार फिर 84 जन्म लेते सीढ़ी उतरना पड़े। ... यह काम महाशत्रु है, इसने तुमको आदि, मध्य, अन्त दुख दिया है, अब इस पर जीत पहनों।''

सा.बाबा 15.03.11 रिवा.

''तुम जानते हो हमको सीढ़ी उतरने में पूरा कल्प लगा है। सतयुग से लेकर सीढ़ी उतरते आये हैं। आत्मा में थोड़ी-थोड़ी खाद पड़ती रहती है। सतोप्रधान से तमोप्रधान बन जाते हैं। फिर

तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए बाप जम्प कराते हैं। सेकण्ड में तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो।''

सा.बाबा 13.03.11 रिवा.

''तुम सब हो पाण्डव सेना। बाप आकर तुमको माया पर जीत पहनना सिखलाते हैं। तुम आदि सनातन देवी देवता धर्म वाले अहिंसक हो। अहिंसा परमो धर्म। मुख्य बात है तुमको काम कटारी नहीं चलाना है। ... इसको बड़े ते बड़ी हिंसा कहा जाता है, जो आत्मा को आदि-मध्य-अन्त दुख देती है। ... 84 जन्म तुम भारतवासियों के ही होते हैं। तुम एक-एक जन्म लेते सीढ़ी नीचे उतरते आते हो।''

सा.बाबा 9.03.11 रिवा.

''भक्त भी कम बुद्धि वाले नहीं हैं। उन्होंने आपके कर्तव्य की यादगार कापी बहुत अच्छी बनाई है। ... आपका प्रैक्टिकल है, उनका यादगार है। ... आपने एक जन्म पवित्रता का व्रत लिया, वह 21 जन्म चलता है। उन्होंका अल्पकाल के लिए है। ऐसे ही जागरण करते, आप रोशनी में आये तो सारे विश्व का अन्धकार मिटाया।''

अ.बापदादा 2.03.11

''यह भी गाया हुआ है कि ज्ञान यज्ञ में आसुरी सम्प्रदाय के विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। बेचारे पत्थरबुद्धि मनुष्य जानते नहीं कि यह क्या है? ... यह तुम समझते हो कि यह नई दुनिया के लिए नई बातें हैं। बाप ज्ञान-योग सिखला रहे हैं। सर्व का सद्गतिदाता, पतित-पावन एक बाप ही है, तो जरूर पतितों को ही ज्ञान देंगे ना।''

सा.बाबा 14.02.11 रिवा.

''इनकी आत्मा भी उस बाप को याद करती है। वह बाप कहते हैं - यह ब्रह्मा भी मुझे याद करेंगे, तब यह पद पायेंगे। तुम भी याद करेंगे तब पद पायेंगे। पहले-पहले तुम परमधाम से अशरीरी आये थे, फिर अशरीरी बनकर ही वापस जाना है।... यह काम महाशत्रु है, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि वह आदि-मध्य-अन्त दुख देता है। पतित अक्षर काम विकार पर लगता है।''

सा.बाबा 19.02.11 रिवा.

''उस पढ़ाई में भी भल कोई मॉनीटर होगा, परन्तु किसी सब्जेक्ट में कमजोर होगा तो नीचे चला जायेगा। विरला कोई स्कॉलरशिप लेते हैं। ... इस पढ़ाई में पहली-पहली सब्जेक्ट है पवित्रता की। बाप को बुलाया ही है पावन बनने के लिए। अगर क्रिमिनल आई काम करती होगी, खुद फील करते होंगे। ... बाप कहते हैं पवित्र बनो और मामेकम् याद करो तो इन लक्ष्मी-नारायण के घराने में जा सकते हो।''

सा.बाबा 26.01.11 रिवा.

''अभी तुम समझते हो कि यही भारत स्वर्ग था, सो अभी नर्क है। यह चक्र देखने से ही सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। ... अभी तुम संगम पर हो, सतयुग में जाने का पुरुषार्थ कर रहे हो। तुम ही पारसबुद्धि थे, फिर पत्थरबुद्धि बने, अब फिर पारसबुद्धि बनने का पुरुषार्थ कर रहे हो।... बाप कहते हैं - तुम काम को जीतो तो जगतजीत बनेंगे। यह मुख्य विकार है।''

सा.बाबा 15.01.11 रिवा.

''तुम्हारा सारा दिन यही ख्यालात चलता होगा कि हम आत्मा हैं, हमारी आत्मा जो पतित बनी है, सो अब पावन बनने के लिए पावन बाप को याद करती है। ... याद में ही माया की लड़ाई होती है। तुम खुद समझते हो कि यह यात्रा नहीं परन्तु जैसेकि लड़ाई है। इसमें माया के बहुत विघ्न पड़ते हैं। नम्बरवन तूफान है देहाभिमान का, फिर और सब विकार आते हैं।''

सा.बाबा 17.01.11 रिवा.

''इसमें याद की ही मेहनत है। याद का पुरुषार्थ करना है, यह भी ज्ञान है ना। याद के लिए भी ज्ञान चाहिए। चक्र को समझना भी ज्ञान है। ... यह है सच्चा-सच्चा नेचर क्योर। इस ज्ञान और योग से तुम्हारी आत्मा बिल्कुल प्योर हो जाती है। वह होता है शरीर के लिए नेचर क्योर, यह है आत्मा का नेचर क्योर। आत्मा में ही देहाभिमान की खाद पड़ी है।''

सा.बाबा 8.01.11 रिवा.

''रोग को जानकर तुरन्त उसकी दवाई करो। सभी प्रकार की दवाई मिल चुकी है, सभी प्राप्तियाँ हैं। ... समय पर स्मृति न रहने का कारण बुद्धि इतनी विशाल और नॉलेजफुल नहीं बनी है। ... अलबेले रहते हो, हल्की बात समझते हो। वर्तमान समय हल्की व्याधि भी बड़ी है, इसलिए हल्की व्याधि को भी बड़ा समझ वहाँ ही खत्म कर दो तो आत्मा कब निर्बल नहीं होगी, हेल्दी-वेल्दी रहेगी।''

अ.बापदादा 14.06.72

''यह वही महाभारत लड़ाई है। विनाश के बाद फिर वाइसलेस दुनिया होनी है। यह है विशश दुनिया। यह मनुष्य नहीं जानते कि भारत ही वाइसलेस था। किसकी भी बुद्धि चलती नहीं है। ... इसलिए उनको ज्ञान दाता, दिव्य-चक्षु विधाता कहा जाता है। वह ज्ञान का तीसरा नेत्र देते हैं। ... बाप ही नॉलेजफुल है, वही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझाते हैं।''

सा.बाबा 6.01.11 रिवा.

बाप इनके लिए भी सुनाते हैं कि इसने भी बहुत भक्ति की है। इनका यह है बहुत जन्मों के अन्त का जन्म। यही पहले पावन थे, अब पतित बने हैं। ... पहली-पहली बात है - तुमको पवित्र बनना है, तब ही धारणा होगी।''

सा.बाबा 7.01.11 रिवा.

''बाप कहते हैं - मैं अन्तर्यामी नहीं हूँ। हर एक की चलन से सब मालूम पड़ता है। बहुत छी-

छी चलन चलते हैं। बाप बच्चों को खबरदार करते हैं। माया से सम्भालना है। माया किसी को भी छोड़ती नहीं है। ... काम महाशत्रु है। मालूम भी न पड़े कि हम विकार में गये हैं। ... इसलिए बाप कहते हैं कोई भूल आदि होती है तो साफ बताओ, छिपाओ मत। नहीं तो सौगुणा पाप हो जायेगा। जो अन्दर खाता रहेगा।''

सा.बाबा 1.01.11 रिवा.

''ओम शान्ति कहने से सारा ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मैं आत्मा शान्त स्वरूप हूँ, शान्ति के सागर बाप का बच्चा हूँ। ... मुख्य बात है पवित्रता की। दुनिया एक ही है, जो पवित्र और अपवित्र बनती है। पवित्र दुनिया में एक भी विकारी नहीं होता है। ... वह है निर्विकारी दुनिया। निर्विकारी दुनिया से सीढ़ी उतरते-उतरते फिर नीचे विकारी दुनिया में आते हैं।''

सा.बाबा 4.01.11 रिवा.

''यह समझ तुम ब्राह्मणों को ही मिलती है। ब्राह्मण ही आकर बाप से यह ड्रिल सीखते हैं। ... बाप तुमको यह ड्रिल सिखलाते हैं, तुम फिर औरों को सिखलाते हो। तुम 84 जन्म लेकर पतित बनें हो, अब फिर तुमको पावन बनना है। उसके लिए रुहानी बाप को याद करो।''

सा.बाबा 7.12.10 रिवा.

''यह ज्ञान मार्ग बिल्कुल अलग चीज़ है। इसमें सिर्फ अपने को आत्मा समझना है, जो भूल गये हो और बाप परम-आत्मा को याद करना है। ... कोई भी देवी या देवता हो, जिसको अपना शरीर है, उनको पतित-पावन नहीं कहेंगे। ... तुम पतित-पावन बाप की औलाद बाप के मददगार हो, यह किसको भी पता नहीं है।''

सा.बाबा 1.12.10 रिवा.

''तुम कहते हो आकर पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते कि लक्ष्मी-नारायण बनाओ। ... नर से नारायण बनाओ, ऐसा नहीं कहते हैं। बाबा सत्य नारायण की कथा सुनाकर तुमको पावन बनाते हैं, तुम फिर औरों को यह सत्य कथा सुनाकर पावन बनने का रास्ता बताते हो।''

सा.बाबा 1.12.10 रिवा.

''ये सब बातें अच्छी रीति धारण कर औरों को भी समझाओ। तुम आत्मायें वहाँ से आई थी तो पवित्र आई थी, फिर यहाँ आकर पार्ट बजाते अपवित्र भी जरूर होना है। सतयुग है वाइसलेस वर्ल्ड, कलियुग को कहा जाता है विशश वर्ल्ड।''

सा.बाबा 26.11.10 रिवा.

''बाप सभी आत्माओं को कहते हैं - तुम अशरीरी आये थे, अब फिर अशरीरी बनकर ही जाना है। अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। ... भल कल भी कोई आते हैं तो भी

पहले वे पवित्र हैं, तो उनकी महिमा जरूर होगी। सन्यासी, उदासी, गृहस्थी, जिनका भी नाम होता है, तो समझा जाता है कि जरूर उनका यह पहला जन्म है।''

सा.बाबा 26.11.10 रिवा.

''गृहस्थ व्यवहार में रहते लौकिक बाप का कर्जा भी बच्चों को उतारना है। बहुत लॉ-फुल चलना है। ... एक बाप के बच्चे भाई-बहन हो गये तो विकार में कैसे जा सकते हैं। तुम भाई-भाई भी हो तो भाई-बहन भी हो। ... आंखे बहुत धोखा देती हैं। अभी इन क्रिमिनल आईज़ को बदलना पड़ता है। अभी तुम्हारी क्रिमिनल आई निकल जानी चाहिए।''

सा.बाबा 20.11.10 रिवा.

''तुमको शरीर होते भी अशरीरी बनना है। बुद्धि में रखना है कि हम आत्मा शरीर से न्यारी शान्त स्वरूप हूँ, ज्ञान स्वरूप हूँ। आत्मा सत्, चित्, आनन्द स्वरूप है। ... जितना हो सके तुमको याद की यात्रा में रहना है। ऐसे नहीं कि बाप हमारे ऊपर रहम करते, कृपा करते हैं। ... तुमको तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाने का भी उनका ड्रामा में पार्ट है।''

सा.बाबा 13.11.10 रिवा.

''वे आशिक-माशूक भी विकार के लिए फिदा नहीं होते हैं। उनका जिस्म का प्यार होता है। तुम हो रुहानी आशिक, सब एक माशूक को याद करते हो। ... वह है एवर गोरा। तुम साँवरे बन गये हो, वह तुमको साँवरे से गोरा बनाते हैं। अभी तुम समझते हो कि वह बाप हमको गोरा बना रहे हैं।''

सा.बाबा 11.11.10 रिवा.

''अभी तुमको पवित्र भी बनना है और दैवी गुण भी धारण करने हैं। इसलिए बाबा कहते हैं अपना चार्ट रखो और देखो हम आत्मा ने कोई आसुरी एक्ट तो नहीं की। ... जितना-जितना तुम ज्ञान और योग में रहेंगे, उतना पवित्र बनेंगे। यह है राजयोग की पढ़ाई, जिससे कितनी बड़ी राजाई मिलेगी। मनुष्य तो मून आदि में प्लॉट्स ढूँढते हैं, वह है वेस्ट आफ टाइम।''

सा.बाबा 10.11.10 रिवा.

''भक्त लोग हमेशा सिर झुकाते हैं। नीच के आगे थोड़ेही सिर झुकाना होता है। ऊंच अर्थात् पवित्र के आगे नींच को सिर झुकाना होता है। सतयुग में कभी ऐसा सिर झुकाने की बात होती नहीं है। ... अभी तुम गॉड फादरली युनिवर्सिटी में पढ़ रहे हो, तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए। यहाँ तुमको ऊंच ते ऊंच शिवबाबा पढ़ाते हैं।''

सा.बाबा 11.11.10 रिवा.

''जो आत्मायें काम चिता पर बैठ काले हो गये हैं, बाप उनको ज्ञान चिता पर बिठाये, हिसाब-किताब चुक्ता कराये वापस ले जाते हैं। अभी इस बेहद के ड्रामा का राज़ तुम बच्चों की बुद्धि

में है, जो और कोई नहीं जानते हैं। तुम जानते हो - हम कल्प-कल्प बेहद के बाप के पास आते हैं, बेहद का वर्सा लेने के लिए।... बाप कहते - बच्चे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो, देही-अभिमानी बनो।'' सा.बाबा 5.11.10 रिवा.

''तुम आगे चलकर बहुत साक्षात्कार करेंगे। अन्त में तुमको अपनी पढ़ाई का सब पता पड़ेगा। अभी जो गफलत करते हैं, वे उस समय बहुत पछतायेंगे, रोयेंगे। सज़ायें भी बहुत खानी होती है, फिर पद भी भ्रष्ट हो जाता है। ... पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो अन्त में कोई सज़ा न खानी पड़े। सज़ा नहीं खायेंगे, तब ही पूजन लायक बनेंगे। अगर सज़ा खाई तो पूजे थोड़ेही जायेंगे।'' सा.बाबा 4.11.10 रिवा.

''तुम किसको भी समझा कर यह राखी बाँधो। राखी उनको बाँधनी है, जो पवित्रता की प्रतिज्ञा करे। ... बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर तुमको विजय पानी है। इस पर जीत पाने से ही तुम जगतजीत बनेंगे। इन लक्ष्मी-नारायण ने जरूर अपने आगे के जन्म में यह पुरुषार्थ किया है, तब तो ऐसा बने हैं।'' सा.बाबा 4.11.10 रिवा.

''साइन्स वाले मून में जाने के लिए कितना टाइम वेस्ट करते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। यह साइन्स का हुनर भी विनाश में मदद करता है। वह है साइन्स, तुम्हारी है साइलेन्स। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है, देह को भूल जाना है। यह है डेड साइलेन्स। मैं आत्मा शरीर से अलग हूँ, यह शरीर तो एक वस्त्र है। देह का भान खत्म करना है।''

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

''देहाभिमान के बाद ही कर्मेन्द्रियों में चंचलता होती है। बाप तुमको देही-अभिमानी बनाते हैं, जिससे तुमको आधा कल्प के लिए वर्सा मिल जाता है। जो जितनी मेहनत करते हैं, वे उतना ऊंच पद पाते हैं। मेहनत करनी है देही-अभिमानी बनने की। देही-अभिमानी बनेंगे, फिर कर्मेन्द्रियाँ धोखा नहीं देंगी। अन्त तक युद्ध चलती रहेगी। अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी।''

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

''तुम श्रीमत पर सबको रास्ता बताते हो कि तुम माया रावण की दुबन से कैसे निकल सकते हो। ... बाबा किसकी ग्लानि नहीं करते हैं परन्तु इस बेहद के ड्रामा का राज़ समझाते हैं। यह भी समझाने के लिए ही कहते हैं कि इस समय सभी मनुष्य 5 विकारों रूपी दलदल में फँसे हुए आसुरी सम्प्रदाय हैं। ... आसुरी सम्प्रदाय दैवी सम्प्रदाय को माथा झुकाते हैं क्योंकि वे सम्पूर्ण निर्विकारी हैं।'' सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

''बाप ही आकर तुमको राजयोग सिखाकर डबल सिरताज देवी-देवता बनाते हैं। ... देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, उनका भी मन्दिर है। परन्तु वे कैसे और कब वाम मार्ग में जाते हैं, उसकी

कोई तिथि-तारीख नहीं है। चित्रों को देखने से सिद्ध होता है कि काम चिता पर बैठने से काले बनते हैं, जिससे नाम-रूप बदल जाता है।''

सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

''इस समय ही बाप आते हैं, पुरानी दुनिया को चेन्ज करने। बाप ब्रह्मा द्वारा ही नई सृष्टि रचते हैं। ... सभी ब्रह्मा कुमार-कुमारी हैं। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना है और अपने को भाई-बहन समझना है। क्रिमिनल आई नहीं रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

''ईश्वर सर्वशक्तिमान है, वह सबकुछ कर सकता है - यह फालतू महिमा हो जाती है। ईश्वर कहने से इतना लव भी नहीं रहता है। ... गऊमुख का भी गायन है। तुम शिवशक्तियाँ हो, तुम्हारे मुख कमल से ज्ञानामृत निकलता है। तुम्हारा नाम बाला करने के लिए गऊमुख कह दिया है। ... ज्ञानामृत पिया तो फिर विष पी नहीं सकते हैं। ज्ञानामृत पीने से तुम देवता बन जाते हो। बाप आये हैं असुरों को देवता बनाने।''

सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

''तुम किसको भी यह समझा सकते हो कि हम यह बनने के लिए पढ़ रहे हैं। अभी विश्व में इनका राज्य स्थापन हो रहा है। अभी तुमको दैवी सम्प्रदाय नहीं कहेंगे। तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय। देवता बनने वाले हो। दैवी सम्प्रदाय बन जायेंगे, फिर तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों स्वच्छ होंगे।... याद से विकर्माजीत बनना है। यह सारी मेहनत की बात है।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''अभी तुम हो संगमयुग पर। और सब हैं कलियुग में। कोई जब तक यहाँ न आये तब तक समझ नहीं सकते कि अभी संगमयुग है या कलियुग। ... कोई भी ऐसा नहीं है, जो समझे कि हम आत्मा पहले सतोप्रधान थी, फिर तमोप्रधान बनी, अभी फिर सतोप्रधान बनना है। ... बाप कहते हैं - ज्ञान सागर मैं ही हूँ। जो इस देवी-देवता धर्म के होंगे, वे सब आकर फिर से अपना वर्सा लेंगे।''

सा.बाबा 25.10.10 रिवा.

''ये बड़ी समझने की बातें हैं। जितना समझेंगे और औरों को समझायेंगे, उतना प्रजा बनती जायेगी और तुम ऊंच पद पायेंगे। ... अभी तुम सन्तुष्ट देवता बन रहे हो। अभी तुमको व्रत भी रखना चाहिए सदैव पवित्र रहने का। पावन दुनिया में जाना है तो कभी पतित नहीं बनना है। बाप ने यह व्रत सिखाया है, मनुष्यों ने उसकी याद में अनेक प्रकार के व्रत बना दिये हैं।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

''हर चीज़ सतो, रजो, तमो में आती है। छोटे बच्चे को सतोप्रधान कहेंगे, उनको महात्मा से भी

ऊंच कहा जाता है। ... छोटे बच्चे को तो विकारों का पता ही नहीं है, बिल्कुल इनोसेन्ट है, इसलिए उनको महात्मा से भी ऊंच कहा जाता है। ... बाप ने हिंसा और अहिंसा का भी अर्थ समझाया है। सबसे बड़ी हिंसा है काम कटारी चलाना। देवतायें डबल अहिंसक होते हैं, वे कोई भी हिंसा नहीं करते हैं।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - देह सहित देह के सर्व सम्बन्धों को भूल जाना है, एक बाप को ही याद करना है। आत्मा को यहाँ ही पवित्र बनना है। ... यह है रुहानी ज्ञान, जो रुहानी बाप से ही रुहानी बच्चों को मिलता है। रूह अर्थात् निराकार। शिव परमात्मा भी निराकार है। ... साक्षात्कार से सिर्फ खुश हो जाते हैं, फायदा कुछ भी नहीं होता। फिर भी पाप करते रहते हैं। पढ़ाई बिगर कुछ बन थोड़ेही सकेंगे।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

''सबसे गन्दी बीमारी है बाइसकोप। अच्छे-अच्छे बच्चे भी बाइसकोप में जाने से खराब हो जाते हैं। इसलिए बी.के को बाइसकोप में जाने की मना है। ... वह है हद का बाइसकोप, यह है बेहद का बाइसकोप। बेहद के बाइसकोप से ही हद के झूठे बाइसकोप निकले हैं।''

सा.बाबा 23.10.10 रिवा.

''सतयुग में सतोप्रधान श्रेष्ठाचारी मातायें होती है, जो समय पर आपही बच्चे को दूध पिलाती हैं, इसलिए कब बच्चे को रोने की दरकार नहीं होती है। ऐसे-ऐसे विचार-सागर मन्थन करना होता है। सवेरे को बाबा से बातें करने में बड़ा मज़ा आता है। ... यह खुशी की खुराक है, इसलिए गायन है - अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप-गोपियों से पूछो।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''बाप कहते हैं - बच्चे, कब माया से हार नहीं खाओ। नहीं तो नाम बदनाम कर देते हो।... वहाँ हार खाने वालों का मुँह पीला हो जाता है। यहाँ हार खाने वालों को कहा जाता है - तुमने काला मुँह कर दिया।... बाप का मददगार बन फिर हार खा लेते हैं तो नाम बदनाम कर देते हैं। दो पार्टी हैं। एक हैं माया के मुरीद, दूसरे हैं ईश्वर के मुरीद।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''गायन भी है विनाश काले विप्रीतबुद्धि विनश्यन्ति। तुम बच्चे हो प्रीतबुद्धि। तो तुमको नाम बदनाम थोड़ेही करना चाहिए। ... अभी तुमको माया को जीतना है जरूर, उसके लिए बाप कहते हैं - देह सहित जो कुछ देखते हो, वह सब भूल जाओ, मामेकम् याद करो। माया ने तुमको सतोप्रधान से तमोप्रधान बना दिया है, अभी तुमको फिर सतोप्रधान बनना है।''

सा.बाबा 22.10.10 रिवा.

''भक्ति में कहते हैं, परमात्मा सर्वशक्तिवान है, तो क्या नहीं कर सकते हैं। ... बाप कहते हैं

- ड्रामा अनुसार सबकुछ होता है, मैं कुछ भी करता नहीं हूँ। मैं भी ड्रामा के बन्धन में बाँधा हुआ हूँ। सिर्फ तुम बाप को याद करने से मास्टर सर्वशक्तिवान बन जाते हो, पतित से पावन और तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जाते हो।''

सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

''ये बहुत-बहुत समझने की बातें हैं, जो बाप के सिवाए कोई समझा न सके। एक बाप ज्ञान का सागर है, सर्व का सद्गतिदाता, पतित-पावन भी है। ... बाप कहते हैं - बच्चे, अब पावन बनना है, उसके लिए बाप एकही दवाई देते हैं। कहते हैं - इस योग से तुम भविष्य 21 जन्म निरोगी बन जायेंगे। ... बाप अविनाशी सर्जन है, उसके पास ये एक ही दवाई है।''

सा.बाबा 19.10.10 रिवा.

''अगर कोई बहुत समय से ऐसी सम्पूर्ण निर्विकारी स्थिति में स्थित नहीं रहता है, तो ऐसी आत्माओं का गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ... बहुत काल को ध्यान में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट वा हाइएस्ट बनाओ। ... अगर नाम ऊंचा है और काम नीचा है तो क्या हुआ ? अपने नाम को आपही बदनाम करते हो।''

अ.बापदादा 9.05.72

''तुम जानते हो - ब्रह्मा की सन्तान ब्राह्मण-ब्राह्मणियाँ बनकर हम देवता बनते हैं। बाप आकर ब्राह्मण, देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। यह समझ की बात है - हम ब्रह्मा की सन्तान भाई-बहन हो गये तो कुदृष्टि कभी नहीं जानी चाहिए।... सत् बाप के आगे सच न बताया, झूट बोला तो बहुत दण्ड पड़ जायेगा।''

सा.बाबा 12.10.10 रिवा.

''जैसे तुम्हारी आत्मा बिन्दी है, वैसे बाप भी बिन्दी है। इसमें मूँझने की कोई दरकार नहीं है। ... मेरे में सारा पार्ट भरा हुआ है, जो मैं अब यथार्थ रीति तुमको समझाता हूँ। ... तुमने ही 84 जन्म लिये हैं। पहले-पहले तुम सतोप्रधान थे, फिर नीचे उतरते आये हो।''

सा.बाबा 13.10.10 रिवा.

''यह भी कमाई है। इस कमाई में अगर देही-अभिमानी नहीं होंगे, तो घाटा पड़ जायेगा। ... कुमारी निर्विकारी है तो पूजी जाती है, फिर विकारी बनती है तो पाँव पड़ना पड़ता है। तुम्हारा नाम है बी.के.। तुम महिमा लायक बन फिर पूजा लायक बनते हो। ... तुम बच्चों को नशा रहना चाहिए कि हम भगवान के स्टूडेण्ट हैं, भगवान जरूर भगवान-भगवती ही बनायेंगे।''

सा.बाबा 13.10.10 रिवा.

''पाँच मन्जिल से गिरते हैं तो हडगुड टूट जाते हैं। पाँचवीं मन्जिल है देहाभिमान, चौथी मन्जिल

है काम विकार, फिर उतरते जाओ। काम महाशत्रु है। लिखते भी हैं बाबा हम गिर पड़े। क्रोध के लिए ऐसे नहीं कहेंगे कि हम गिर पड़े। काला मुँह करने से बड़ी चोट लगती है। ... क्रिमिनल आई की बहुत सम्भाल करनी है। सतुयुग में नग्न होने की बात ही नहीं।''

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

''अभी तुम्हारी आत्मा को सिविल आई मिलती है, जो 21 जन्मों तक काम करती है। वहाँ कोई भी क्रिमिनल नहीं बनते हैं। ... जो नारायण है, वही अन्त में आकर भाग्यशाली रथ बनते हैं, उनमें ही बाप की प्रवेशता होती है, तो भाग्यशाली हुए ना। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, यह 84 जन्मों की हिस्ट्री बुद्धि में रहनी चाहिए।''

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

''मोस्ट वैल्यूएबुल है शिवबाबा, जो स्वर्ग की स्थापना करते हैं। ... यह भी तुम्हारी बुद्धि में है कि अभी स्वर्ग की राजाई की स्थापना हो रही है। यह है संगमयुग, कलियुग और सतयुग के बीच, पुरुषोत्तम बनने का संगमयुग। पतित और पावन में कितना फर्क है। ... तमोप्रधान मनुष्य और सतोप्रधान देवताओं में कितना फर्क है।''

सा.बाबा 9.10.10 रिवा.

''बाप समझाते हैं ड्रामा अनुसार जो पास्ट हुआ, सो फिर रिपीट होना है। ... पतित बनाने में नम्बरवन है काम, जिसके लिए कहा जाता है काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे। रावण राज्य में विकार के बिगर तो कोई का भी शरीर पैदा नहीं होता है। सतयुग में रावण राज्य होता नहीं है। वहाँ भी अगर रावण होता तो बाकी भगवान ने रामराज्य स्थापन करके क्या किया ?''

सा.बाबा 1.10.10 रिवा.

''यह महाभारी महाभारत लड़ाई स्वर्ग के द्वारा खोलती है। अब हमको पतित से पावन बनना है, उसके लिए एक बाप को ही याद करना है, किसी देहधारी को याद नहीं करना है। एक बाप ही सर्व की सद्गति करते हैं।... काम चिता से उतर, ज्ञान चिता पर बैठेंगे तो गोरा बन जायेंगे।''

सा.बाबा 31.08.10 रिवा.

''ये बातें जो पूरी रीति नहीं समझते हैं, तब तो वह खुशी का पारा नहीं चढ़ता है। गोप-गोपियाँ तुम अभी हो, सतयुग में थोड़ेही होंगे। गोप-गोपियों का गोपी-वल्लभ भी अभी है। प्रजापिता ब्रह्मा है सर्व मनुष्यात्माओं का बाप, फिर सब आत्माओं का बाप है निराकार शिव। ... काम चिता पर बैठने से काले बन गये हो, अभी तुम ज्ञान चिता पर बैठने से गोरे बनते हो।''

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

''बहुत हैं, जिनमें याद की शक्ति नहीं है। गोया फाउण्डेशन है नहीं। ... पवित्रता के साथ याद

की यात्रा भी चाहिए। पवित्र रहने से ही याद में रह सकेंगे। यह प्वाइन्ट अच्छी रीति धारण करनी है। ... याद का जौहर अभी बहुत कम है। कोई भी देहधारी को याद नहीं करना है। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने के लिए याद की बहुत मेहनत करनी है।''

सा.बाबा 7.08.10 रिवा.

''सभी आत्मायें इस ड्रामा में पार्टधारी हैं। इसमें ऊंच ते ऊंच पार्ट भी है तो नीच ते नीच पार्ट भी है। ... मेरा यह पार्ट नहीं है कि मैं बीमार को अच्छा कर दूँ। हमारा पार्ट है रास्ता बताना कि तुम पवित्र कैसे बनो। पवित्र बनने से ही तुम अपने घर जा सकेंगे और राजधानी में आ सकेंगे। ऐसी कोई उम्मीद न रखो कि बाप की हमको आशीर्वाद मिलेगी, तो बीमारी आदि ठीक हो जायेगी।''

सा.बाबा 10.08.10 रिवा.

''मेरे से ऐसी कोई उम्मीद न रखे कि बाप हमको आशीर्वाद करेंगे तो हमारी बीमारी आदि ठीक हो जायेगी। नहीं, आशीर्वाद, कृपा आदि की बात मेरे पास कुछ भी नहीं है।... मुझे तो बुलाते ही हैं कि पतित-पावन आओ, आकर हमको पावन बनाओ। उसके लिए तुमको रास्ता बता रहा हूँ।''

सा.बाबा 10.08.10 रिवा.

''सबसे बड़ा विकर्म है देहाभिमानी बनना और सबसे बड़ा पाप है काम कटारी चलाना, जो आदि-मध्य-अन्त दुख देने वाला है।... इसलिए ही सन्यासियों को वैराग्य आता है और वे जंगलों में चले जाते हैं। उनका है हद का वैराग्य, तुम्हारा है बेहद का वैराग्य।''

सा.बाबा 6.08.10 रिवा.

''यह कभी ख्याल नहीं करो कि बाबा तो सब कुछ जानते हैं। बाबा को जानने की क्या दरकार है। जो करेंगे, सो पायेंगे। बाबा तो साक्षी होकर देखते रहते हैं। ... योगबल से तुम विश्व पर विजय प्राप्त करते हो, बाकी ज्ञान से नई दुनिया में ऊंच पद पायेंगे। पहले तो पवित्र बनना है, पवित्र बनने बिगर ऊंच पद मिल न सके।''

सा.बाबा 15.07.10 रिवा.

''सतयुग में सब पावन हैं, इसलिए वहाँ कोई किसकी महिमा नहीं करते। यहाँ पवित्र सन्यासी भी हैं और अपवित्र गृहस्थी भी हैं, तो अपवित्र, पवित्र की महिमा करते हैं। वहाँ तो यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब पवित्र होते हैं। और कोई धर्म ही नहीं है, जिसके लिए पवित्र और अपवित्र कहा जाये।''

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

''तुम जानते हो - इस समय हमारी चढ़ती कला है याद से। जितना याद करेंगे, उतना ऊंच चढती कला होगी। सम्पूर्ण बनना है ना। ... तुम फट से 5 विकारों का दान दे नहीं सकते हो। ऑखें कितना धोखा देती हैं।... भल कोई मुरली बहुत अच्छी सुनाते हैं, बहुतों को समझाते हैं

परन्तु वह अवस्था नहीं है, बुरी दृष्टि हो जाती है।''

सा.बाबा 8.07.10 रिवा.

''विशश से वाइसलेस कैसे बनते हैं, यह तुम बच्चों की बुद्धि में जरूर होना चाहिए। मनुष्य न वाइसलेस को जानते हैं और न विशश को जानते हैं। ... नई दुनिया में वाइसलेस होते हैं और पुरानी दुनिया में विशश होते हैं।''

सा.बाबा 22.06.10 रिवा.

''तुम पवित्र आये थे, फिर पवित्र होकर ही वापस जाना है। कर्मातीत अवस्था में ही वापस जाना है। बाप से पूरा वर्सा लेना है, वह तब मिलेगा, जब आत्मा याद के बल से सतोप्रधान बनेगी। ... आत्मा कर्मातीत पवित्र हो जायेगी तो यह शरीर ही छूट जायेगा।''

सा.बाबा 1.07.10 रिवा.

''तुम्हारा पिछाड़ी में बहुत प्रभाव निकलने का है। गाया भी जाता है - अहो प्रभु तेरी लीला।... तुम जानते हो और सबको कह सकते हो - परमपिता परमात्मा के सिवाए विश्व में कोई शान्ति स्थापन कर न सके, वह 100 परसेन्ट पवित्रता-सुख-शान्ति 5000 वर्ष पहले के मुआफिक ड्रामा अनुसार स्थापन कर रहे हैं। कैसे ? सो आकर समझो।''

सा.बाबा 17.06.10 रिवा.

''यह सब शरीर इस यज्ञ में स्वाहा हो जायेंगे, बाकी आत्मायें भागेंगी अपने घर। ... यह है सब ड्रामा, तुम सब ड्रामा के वश चल रहे हो। बाप कहते हैं - हमने राजस्व यज्ञ रचा है। यह भी ड्रामा प्लेन अनुसार रचा गया है। ऐसे नहीं कहेंगे कि मैंने यज्ञ रचा है। नहीं, ड्रामा प्लेन अनुसार तुम बच्चों को पढ़ाने के लिए कल्प पहले मुआफिक ज्ञान यज्ञ रचा गया है।''

सा.बाबा 28.06.10 रिवा.

''कल्प-कल्प यह ज्ञान यज्ञ रचा जाता है। यह ड्रामा बना हुआ है। ड्रामा प्लेन अनुसार कल्प में एक ही बार यह यज्ञ रचा जाता है। यह कोई नई बात नहीं है। ... अब चक्र फिर से रिपीट हो रहा है, फिर से नई दुनिया स्थापन हो रही है। तुम नई दुनिया में स्वराज्य पाने के लिए पढ़ रहे हो। पवित्र भी जरूर बनना है। बनते भी वे ही हैं, जो ड्रामा अनुसार कल्प पहले बने थे।''

सा.बाबा 28.06.10 रिवा.

''नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जो ऊंच बनते हैं। ऊंच बनने वालों को मेहनत भी जास्ती करनी पड़ेगी, याद में जास्ती रहना पड़ेगा। ... यह संगमयुग ही पुरुषोत्तम युग है, ऊंच बनने का युग है। अभी हमको बेहद का बाप पढ़ा रहे हैं। आगे चलकर सन्यासी लोग भी मानेंगे। वह भी समय आयेगा ना। अभी तुम्हारा इतना प्रभाव निकल नहीं सकता क्योंकि अभी राजधानी स्थापन हो रही है, अभी टाइम पड़ा है।''

सा.बाबा 28.6.10 रिवा.

''अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि कब हमारे स्वर्ग की स्थापना पूरी हो, तो हम सुखधाम में जायें। इस दुखधाम से तो सबको जाना है। ... अब तुम्हारा बुद्धियोग स्वर्ग की तरफ जाना चाहिए। हेविन में जाने वाले को कहा जाता है पवित्र, हेल में जाने वाले को अपवित्र कहा जाता है।''

सा.बाबा 27.05.10 रिवा.

''कुमारी है तो माँ-बाप आदि सब माथा टेकते हैं क्योंकि पवित्र है। शादी की, अपवित्र बनी और सबके आगे माथा टेकना शुरू कर देती। ... आज दुनिया में कितना गन्द लगा हुआ है। इसको कहा ही जाता है वेश्यालय। सब विष से पैदा होते हैं।''

सा.बाबा 19.05.10 रिवा.

''बच्चों को सिखलाने के लिए कई गीत बड़े अच्छे हैं। गीत का अर्थ करने से वाणी खुल जायेगी। बच्चों की बुद्धि में यह तो है कि हम सभी दिन की यात्रा पर हैं, रात की यात्रा पूरी होती है। भक्ति मार्ग है रात की यात्रा। ... तुम जानते हो - याद की यात्रा से हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन फिर सतोप्रधान सतयुग के मालिक बनते हैं।''

सा.बाबा 22.05.10 रिवा.

''बाप ने समझाया है कि सतयुग में पहले 9 लाख ही होंगे, फिर उनसे वृद्धि भी होगी ना। दास-दासियाँ भी बहुत होंगे ना, जो भी पूरे 84 जन्म लेते हैं। ... जो अच्छी रीति इम्तहान पास करेंगे, वे पहले-पहले आयेंगे। ... सतयुग में 5 तत्व भी नये होते हैं। ऐसे-ऐसे विचार सागर मन्थन करना चाहिए। (पहले-पहले आने वाली सर्व आत्माओं को सर्वगुण सम्पन्न बनने का इम्तहान पास करना होता है)''

सा.बाबा 26.04.10 रिवा.

''मैं जब आता हूँ तब सबको पावन बनाकर वापस ले जाता हूँ। मुझे बुलाते ही हैं - हे पतित-पावन आओ, पावन बनाकर हमको पावन दुनिया में ले चलो। ... अभी तुम रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। जैसे बाप नॉलेजफुल है, वैसे तुम भी मास्टर नॉलेजफुल हो गये।''

सा.बाबा 12.03.10 रिवा.

''योग में बैठे बाप की याद के बदले कोई की देह तरफ ख्याल जाता है तो समझना चाहिए कि यह माया का वार हो रहा हे, मैं पाप कर रहा हूँ। इसमें तो बुद्धि बड़ी शुद्ध होनी चाहिए। ... हँसी भी ऐसी नहीं करनी चाहिए, जिसमें विकारों की वायु हो। बहुत खबरदार रहना है।''

सा.बाबा 12.02.10 रिवा.

''बापदादा ने देखा - भक्तों की अनुभूति भी कोई कम नहीं है। आप जो प्रक्टिकल में मना रहे हो, उसकी यादगार रूप में कितनी अच्छी विधि से यादगार बनाया है। ... आपने एक जन्म के लिए पवित्रता का व्रत लिया है, वे एक दिन का व्रत रखते हैं। आपका एक जन्म का पवित्रता

का व्रत 21 जन्म चलेगा।'' अ.बापदादा 11.02.10

''भगवान आत्माओं का बाप हमको पढ़ाते हैं। विनाश तो होने का ही है ना। विनाश काले एक हैं विप्रीतबुद्धि और दूसरे हैं विनाश काले प्रीतबुद्धि।... आत्मा अलग है, जीव अलग है। आत्मा छोटी-बड़ी नहीं होती है, जीव छोटा-बड़ा होता है। आत्मा ही पतित और पावन बनती है, आत्मा ही बाप को बुलाती है - हे पतित-पावन आओ। इन सब बातों को अच्छी रीति समझना है।'' सा.बाबा 11.09.09 रिवा.

''बाप तुमको कितना सहज विश्व की बादशाही देते हैं। बाबा पहले तुमको घर ले जायेगा, फिर वहाँ से स्वर्ग में भेज देगा। ... बाप तुम बच्चों को पुरुषार्थ कराते हैं। इस समय का तुम्हारा पुरुषार्थ कल्प-कल्प का बन जायेगा। पवित्रता जरूर चाहिए। पढ़ाई ब्रह्मचर्य में ही पढ़ते हैं। ... भगवान पढ़ाते हैं तो एक दिन भी पढ़ाई मिस नहीं करना चाहिए। यह मोस्ट वेल्यूएबुल पढ़ाई है।'' सा.बाबा 31.05.12 रिवा.

''तुम अभी आत्माभिमानी बने हो। तुम जानते हो आत्मा अविनाशी है, शरीर विनाशी है। शरीर को कपड़ा कहा जाता है। अभी यह कपड़ा मूत-पलीती है क्योंकि शरीर विकार से पैदा हुआ है और आत्मा विकार में जाती रहती है। पावन और पतित अक्षर विकार के लिए कहा जाता है। ... अभी बाप तुमको दुख से लिबरेट कर शान्तिधाम ले जाते हैं, फिर वहाँ से आकर नये सिर अपना पार्ट रिपीट करना है।'' सा.बाबा 1.06.12 रिवा.

''वरदाता द्वारा सर्व वरदानों में मुख्य दो वरदान (योगी भव और पवित्र भव) हैं, जिनमें सर्व वरदान समाये हुए हैं। ... तो अपने से पूछो कि क्या मुख्य दो वरदान-स्वरूप बनें हैं अर्थात् योगी भव और पवित्र भव - इस विशेष कोर्स के स्वरूप बने हो ? ... सप्ताह कोर्स का रहस्य इन दो वरदानों में समाया हुआ है। जो भी यहाँ बैठे हो, उन सबने सप्ताह कोर्स कर लिया है ? कोर्स अर्थात् फोर्स भर जाना।'' अ.बापदादा 27.12.74

''मास्टर सर्वशक्तिवान अर्थात शक्ति-स्वरूप। शक्ति-स्वरूप का अनुभव नहीं होता है, तो उसको मास्टर सर्वशक्तिवान नहीं कहेंगे। ... क्योंकि स्वयं का स्वरूप सदा और स्वत: स्मृति में रहता ही है। जैसे अपना साकार स्वरूप सदा और स्वत: याद रहता है। ... ऐसे ही अपना निजी स्वरूप व वरदानी स्वरूप सदा ही स्मृति में रहना चाहिए। अपवित्रता और विस्मृति का नाम-निशान न रहे।'' अ.बापदादा 27.12.74

''जो ब्राह्मण बच्चे यह योगी भव और पवित्र भव का प्रैक्टिकल कोर्स समाप्त नहीं करते तो बापदादा व ड्रामा भी उनको फर्स्ट क्लास में आने नहीं देते। फर्स्टक्लास अर्थात् वे सतयुग के आदि में नहीं आ सकते। ... फर्स्टक्लास में आने के लिए ये मुख्य दो वरदान प्रैक्टिकल रूप

में चाहिए। विस्मृति या अपवित्रता क्या होती है, इसकी अविद्या हो जाये।''

अ.बापदादा 27.12.74

''ऐसा अनुभव हो कि यह विस्मृति व अपवित्रता का संस्कार व स्वरूप मेरा नहीं है लेकिन मेरे पास्ट जन्म का है। अभी तो मैं ब्राह्मण हूँ और यह तो शूद्रों के संस्कार व स्वरूप हैं। ऐसे अपने से भिन्न अर्थात् दूसरों के संस्कार अनुभव हों, इसको कहा जाता है न्यारा और प्यारा।... शूद्रों के संस्कारों को मेरा समझने से माया के वश व परेशान हो जाते हो अर्थात् ब्राह्मणपन की शान से परे हो जाते हो।''

अ.बापदादा 27.12.74

''ईश्वरीय लॉ कहता है कि ब्रह्मा के बच्चे भाई-बहन हो गये, फिर क्रिमिनल एसॉल्ट हो न सके अर्थात् विकार में जा नहीं सकते। ... सपूत बच्चों का काम है बाप का कहना मानना। जो नहीं मानते हैं, वे कपूत ही ठहरे। कपूत बच्चों को वर्सा देने में बाप जरूर आनाकानी करेंगे। सपूत बच्चे ही स्वर्ग में ऊंच पद पाते हैं।''

सा.बाबा 6.06.12 रिवा.

''यह विकार है प्वाइज़न, ज्ञान है अमृत, जिससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो। ... बाप बच्चों को कोई कष्ट नहीं देते हैं। घूमों-फिरो, आराम से रहो परन्तु खान-पान की परहेज़ भी जरूर रखनी है। भोजन भी बाप की याद में दृष्टि देकर खाओ, परन्तु बच्चे यह भी भूल जाते हैं।... ध्यान रखेंगे तो याद करने की आदत पड़ जायेगी और खुशी का पारा चढ़ता रहेगा।''

सा.बाबा 7.06.12 रिवा.

परम-सत्य

''जन्म लेते ही बापदादा हर ब्राह्मण को माया के वार से बचने के लिए व माया को परखने के लिए यह दिव्य-बुद्धि का नेत्र देते हैं। ... पहले यह देखो कि क्या अपना दिव्य-बुद्धि रूपी नेत्र अपने पास कायम है, कहीं दिव्य-बुद्धि रूपी नेत्र पर माया के संगदोष व वातावरण का प्रभाव तो नहीं पड़ गया है। ... जितनी वाणी से लगन है, उतनी वाणी से परे स्थिति में स्थित होने की लगन व रस कम अनुभव करते हो?'' अ.बापदादा 18.07.74

दिव्य बुद्धि अर्थात् यथार्थ ज्ञान और उसको सोचने-समझने और निर्णय करने की शक्ति।

देह और देह की दुनिया से न्यारा आत्मिक स्वरूप निर्संकल्प परम-शान्त और परम-शक्ति सम्पन्न है। देह और देह की दुनिया से न्यारा अव्यक्त स्वरूप और अव्यक्त बापदादा का साथ परमानन्दमय है। यह विश्व-नाटक और ये पुरुषोत्तम संगमयुगी ईश्वरीय जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण परम सुखमय है। इस सत्यता को जानकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति, परमानन्द और परम-सुख का अनुभव करना और कराना ही इस ईश्वरीय जीवन का परम कर्तव्य है।

यह विश्व-नाटक अनादि-अविनाशी है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, इसमें जो हुआ, वह बच नहीं सकता और जो नहीं हुआ, वह हो नहीं सकता है, परन्तु जो हुआ, वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है, वह अच्छा है और जो होगा, वह भी निश्चित ही अच्छा होगा क्योंकि यह विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और परम-कल्याणकारी (Just, Accurat and Auspicious) है और सतत परिवर्तनशील है। हर आत्मा विश्व-नाटक में निश्चित अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और उस अनुसार उसका फल भोग रही है।

इस विश्व में जो कुछ है, वह सर्वात्माओं की सामूहिक सम्पत्ति (Joint Property) है, आत्मा को जिस समय, जो कुछ भी मिलता है, वह इस विश्व-नाटक में पार्ट बजाने के लिए मिलता है और पार्ट के परिवर्तन के साथ वह सब परिवर्तन होता है। उसको अपना समझकर, उस पर अपना अधिकार समझना भूल है, जिसका आत्मा को पश्चाताप करना पड़ता है।

इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया को भूलकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति और परम-शक्ति को अनुभव करना, बापदादा के साथ विश्व-कल्याण की सेवा में रहकर परमानन्द को अनुभव करना और इस विश्व-नाटक की यथार्थता को बुद्धि में रखकर इसको साक्षी होकर देखते और अकाल तख्तनशीन होकर ट्रस्टी बनकर पार्ट बजाते हुए परम-सुख को अनुभव करना और कराना ही दिव्य-बुद्धि है।

जो आत्मा इस विश्व-नाटक की इस सत्यता को जानकर साक्षी होकर इसको देखने और अकाल तख्तनशीन ट्रस्टी होकर पार्ट बजाती है, उसे परम-सुख की अनुभूति अवश्य होती है।

यही समय है निर्संकल्प और निर्विकल्प स्थिति में स्थित हो यथार्थ मुक्ति-जीवनमुक्ति के अनुभव का, जिसके यादगार के रूप में भक्ति मार्ग में हठयोगी निर्संकल्प और निर्विकल्प समाधि के रूप में पुरुषार्थ करते हैं और अल्पकाल के लिए उसको अनुभव भी करते हैं।

परमपिता परमात्मा का साथ परमानन्दमय है, उसका हाथ अर्थात् उसकी छत्रछाया सदा हमारे सिर पर है। यह पुरुषोत्तम संगमयुगी ईश्वरीय जीवन परम-प्राप्तियों से परिपूर्ण परम गौरवमय (Graceful) है, निश्चयबुद्धि निर्भय, निश्चिन्त, निर्संकल्प होकर इस गौरवमय स्थिति अर्थात् परम-शान्त, परम-शक्ति, परमानन्द, परम सुखमय स्थिति का अनुभव करना और कराना ही परम गौरवमय कर्तव्य है, जो तीनों लोकों और तीनों कालों की गौरवमय स्थिति का एकमात्र आधार है।

विचार करो - परमात्मा पिता ने हमको क्या नहीं दिया है! इस विश्व-नाटक का सत्य ज्ञान और परमात्मा का साथ मानव जीवन की परम-प्राप्ति है, जो सर्व प्राप्तियों का आधार है। हम इस अनुभूति में रहें और हमारे संकल्प-बोल-कर्म से अन्य आत्मायें भी इस सत्य का अनुभव करें, यही इस संगमयुगी जीवन का परम-कर्तव्य है और इस ईश्वरीय जीवन की सफलता है।

क्या कोई व्यक्ति या वस्तु हमको ये अनुभूति करा सकती है या करने से रोक सकती है? फिर हमको राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा, अहंकार-हीनता, शुभाशुभ की आशंका और उससे जनित व्यर्थ संकल्प क्यों? हमको भूतकाल का चिन्तन और भविष्य की चिन्ता क्यों?

अमृत-धारा

यह अटल सत्य है, जो ज्ञान-सागर बाप ने बताया है कि इस विश्व-नाटक में जो हुआ वह टल नहीं सकता और जो नहीं हुआ वह हो नहीं सकता। जो हुआ वह अच्छा हुआ, जो हो रहा है वह अच्छा है और जो होगा वह भी अच्छा होगा क्योंकि ये विश्व-नाटक सत्य, न्यायपूर्ण और कल्याणकारी है। पवित्रता ही जीवन है। पवित्रता अर्थात् आत्मिक स्वरूप में स्थिति, आत्मिक स्मृति, आत्मिक दृष्टि और आत्मिक वृत्ति। जहाँ पवित्रता है, वहाँ सर्व प्राप्तियां, सर्व सुख स्वत: होते हैं, इच्छामात्रम् अविद्या होती है। सर्व सम्बन्धों में मधुरता होती है, ब्रह्मचर्य की स्वभाविक धारणा होती है। राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, इच्छा-आकांक्षा का नाम-निशान नहीं होता है। पवित्र आत्मा में समय पर कृत्य का संकल्प स्वत: जाग्रत होता है, उसकी शुभ में अभिरुचि और अशुभ में अरुचि स्वत: होती है, इसलिए सदा निर्संकल्प होती है। सर्व आत्माओं के प्रति उसकी शुभ भावना, शुभ कामना होती है, जिसके परिणाम स्वरूप सर्व की उसके प्रति शुभ भावना, शुभ कामना अवश्य होती है।

इस विश्व-नाटक में न कोई अपना है और न कोई पराया है, न कोई अपना मित्र है और न कोई अपना शत्रु है। जो आज अपना है, वह कल पराया होगा और पराया अपना होगा। न कोई हमको कुछ दे सकता है और न कोई हमारा कुछ ले सकता है। न किसी ने हमको कुछ दिया है और न ही हमारा किसी ने कुछ लिया है। हर आत्मा अपना अनादि-अविनाशी पार्ट बजा रही है और अपने कर्मों अनुसार सुख या दुख को पा रही है। इसलिए किससे राग-द्वेष, भय-चिन्ता का कोई प्रश्न ही नहीं।

दाता एक परमात्मा है, उसने हमको जो दिया है, वही हमारे लिए हितकर है। भगवानोवाच्य - बच्चे, तुम परमधाम के रहने वाले हो, इस सृष्टि पर पार्ट बजाने आये हो, अभी तुमको वापस घर चलना है। इस सत्यता को समझकर देह और देह की दुनिया से न्यारे होकर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति का अनुभव करो, बाप के साथ विश्व-कल्याण की सेवा कर परमानन्द का अनुभव करो और साक्षी होकर इस विश्व-नाटक को देखो और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाते हुए परम सुख का अनुभव करो। यही सुख-शान्तिमय जीवन का सुगम पथ है।

जब इस सत्य का यथार्थ ज्ञान होगा, इस पर दृढ़ निश्चय होगा और सतत् अभ्यास द्वारा सहज स्थिति होगी तब ही हम अपनी अन्तिम मंजिल सुखमय जीवन और सुखद मृत्यु को सहज प्राप्त कर सकेंगे अर्थात् राग-द्वेष, भय-चिन्ता से मुक्त होंगे। यही जीवन की परम-प्राप्ति, परमात्मा का परम वरदान है, इस सत्य का अनुभव करना और कराना ब्राह्मण जीवन का परम-पुरुषार्थ और परम-कर्तव्य है।

"जैसे कर्मों की गति गहन गाई है, वैसे पवित्रता की परिभाषा भी अति गुह्य है। पवित्रता माया के अनेक विघ्नों से बचने की छत्रछाया है। पवित्रता को ही सुख-शान्ति की जननी कहा जाता है। ... किसी भी कारण से दुख का जरा भी अनुभव होता है तो सम्पूर्ण पवित्रता की कमी है।"

अ.बापदादा 14.11.87

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:-

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईल: 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org